मयुक्त राज्य का विकास
नॉर्थ डकोटा
वायोमिंग
विस्कौन्सिन
ओहायो
वर्जीनिया
नॉर्थ करोलिना
साउथ करोलिना
जार्जिया
फ्लोरिडा
टेक्सास
मिसौरी
कालिफोर्निया
फ्लोरिडा

संयुक्त राज्य अमेरिका

का

संक्षिप्त इतिहास

लेखक :

फ्रैंकलिन एस्चर

एस. आर. सुनेजा पब्लिकेशन्स

२४।६०, कनाट सरकस

नई दिल्ली।

प्रकाशक :

एस. आर. सुनेजा पब्लिकेशन्स

२४/६०, कनाट सरकस

नई दिल्ली

मुद्रक :

नीलकमल प्रिंटर्स प्राईवेट लि०, दिल्ली ।

भूमिका

यह पुस्तक उन लोगों के लिए लिखी गई है जो अमेरिका का इतिहास, या तो लगभग भूल चुके हैं, या फिर इस विषय में कुछ नहीं जानते। इसमें अधिक महत्व उन बड़ी शक्तियों और प्रश्नों को दिया गया है, जो संयुक्त-राज्य को उसका आधुनिक रूप प्राप्त करने में सहायक हुए हैं। इनके भौतिक, नैतिक और आर्थिक पक्ष हैं, और उन्होंने अमेरिका को वर्तमान विशिष्ट स्थान दिलवाने में बड़ा महत्वपूर्ण काम किया है।

जरा सोचिए कि लोग उत्तरी अमेरिका के वन्य प्रदेशों में बसने के लिए क्यों आये? वे पुरानी दुनिया की संस्थाओं और उसके नियमों से भागना चाहते थे? और अपने एक नये समाज का निर्माण करना चाहते थे। इन लोगों को स्वतन्त्रता इतनी प्रिय थी, कि वे अपनी ही सत्ता का भार वहन न करना चाहते थे, और एक के बाद दूसरा जन-समूह पश्चिम की ओर बढ़ कर नये सिद्धान्तों और नई जीवन-विधि की स्थापना करने लगा। "मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो" की भावना ने उपनिवेशों के संगठन को दुष्कर बना दिया, एक ऐसे समय में भी जब कि उनकी मातृभूमि इंग्लैंड ने ही उनकी सामूहिक स्वतन्त्रता के लिए भय पैदा कर दिया था। परन्तु अन्त में लोकतन्त्रीय ढंग से सहयोग करने की विधि अपना ली गयी और राष्ट्र ने स्वतन्त्रता प्राप्त कर संविधान के अधीन प्रगति शुरू कर दी।

अमेरिका के इतिहास को समझने के लिए कई सूत्र मिलेंगे जिनमें दासता, औद्योगिक पूँजीवाद अथवा 'बड़े-बड़े उद्योग' और उनके फल स्वरूप सुधार तथा प्रतिरोध की भावना और देश का विश्व-नेता के रूप में विकास उल्लेखनीय हैं। ये सभी प्रसंग बड़े नाटकीय और रोचक हैं। इनको मिलाने से अमेरिका के इतिहास का इस भाँति आभास मिलता है जैसा कि किसी घटना-शृङ्खला के वर्णन से नहीं हो सकता।

विश्वास है कि जहां पाठक इन पृष्ठों को पढ़ कर प्रसन्नता प्राप्त करेंगे, वहां उन्हें लाभ भी होगा।

पुस्तक के सम्बन्ध में

परिचय

इस छोटी-सी पुस्तिका के अल्प मूल्य में पाठकों के समक्ष अमेरिकी इतिहास का सम्पूर्ण दृश्य आ जाता है और इस प्रकार संसार के विशद् महोद्यम की घटनावलि उनको प्रत्यक्ष हो जाती है। यह एक असामान्य, संक्षिप्त और मुख्य रूप में पठनीय राष्ट्र जीवनी है जिसमें उसके स्वातंत्र्य-युद्ध और उसके अद्वितीय एवं आश्चर्यजनक विकास की कहानी का वर्णन है।

इस पुस्तिका के विद्वान् लेखक फ्रैंकलिन एस्चर जूनियर ने अमेरिकी इतिहास का क्रम-निर्धारण किया है जिससे पाठक अपने समकालीन संकटपूर्ण संघर्षों को अच्छी तरह समझ सकने के लिए पृष्ठभूमि प्राप्त करते हैं। इस छोटी पुस्तक में संयुक्तराष्ट्र अमेरिका के इतिहास की साँस रोकने वाली घटनाएँ सघन और ठोस रूप में बुनकर पेश की गयी हैं।

लेखक के सम्बन्ध में

फ्रैंकलिन एस्चर (जूनियर) का जन्म १९१५ में न्यूयार्क नगर म हुआ। उन्होंने सरकारी स्कूलों तथा येल विश्वविद्यालय में शिक्षा पायी। वह 'येल-रिकार्ड' के सम्पादक-मण्डल में भी काम करते रहे। कई वर्ष तक उन्होंने समाचारपत्रों में सम्वाददाता तथा सम्पादक के रूप में भी काम किया। १९४२ में वह सेना में भर्ती हो गये और दक्षिणी-प्रशान्तमहासागर में युद्ध से सम्बन्धित सेवाएँ करते रहे। युद्ध के उपरान्त वह तरुणों के एक पत्र 'यंग अमेरिका' का प्रबन्ध-सम्पादक रहे। अब वह पाठ्य-पुस्तकों की एक प्रमुख प्रकाशक संस्था में सम्पादक का काम करते हैं।

अध्याय १

नई दुनिया में प्रारम्भिक बस्तियाँ

उत्तरी अमेरिका का प्राचीन इतिहास अभी रहस्य में ही है। प्रायः यही विश्वास किया जाता है कि वहाँ के मूलनिवासी इण्डियन लोग उत्तरी एशिया से एलास्का गये होंगे, और वहाँ से दक्षिण की ओर उष्ण जलवायु के प्रदेशों की ओर चले गये होंगे। अमेरिका में रहने वाले इण्डियन लोगों के रंगरूप—काले बाल, ताम्रवर्ण और गाल की उभरी हड्डियों से भी यही प्रकट होता है कि वे मूलतः पूर्व के ही निवासी होंगे। इस विचार की पुष्टि वैज्ञानिकों के इस मन्तव्य से भी हो जाती है कि आज से लगभग बीस हजार वर्ष पहले के अन्तिम हिम-युग में उत्तरी अमेरिका और एशिया बेरिङ्ग जलडमरुमध्य में मिले हुए थे।

अमेरिका के तट पर श्वेत जाति के जो लोग सबसे पहले आये वे शायद स्कन्डेनेविया के नार्समन थे। ये दुर्जय और साहसी लोग ९८५ ई० के लगभग अपने गोल, एक मस्तूल वाले व्यापारी जहाजों में बैठकर हिमसागर से होते हुए ग्रीनलैण्ड गये थे। फिर उस बड़े टापू से उनके जहाज़ पश्चिम की ओर आगे बढ़े और इसके भी कुछ प्रमाण मिलते हैं कि १००० ई० में लीफ़ एरिकसन और उसके साथी उस भू-भाग में भी उतरे जहाँ आज संयुक्तराज्य अमेरिका है।

यद्यपि नार्स जाति के लोग नई दुनिया में पहुँचे, परन्तु वे न तो वहाँ अपने पांव ही जमा सके और न उन्होंने अपनी यात्रा का प्रामाणिक विवरण ही लिखा है। इसलिए अमेरिका की खोज करने और उसका पता देने का श्रेय क्रिस्टोफर कोलम्बस को है। वह १४९० ई० के उपरान्त वैस्ट इण्डीज़ आया। उसने उस प्रदेश का वर्णन किया और वहाँ पर उपनिवेश बनाने में वह

सहायक हुआ। कोलम्बस इटली का रहने वाला था और स्पेन के राजा फर्डीनैण्ड और रानी इज़ाबेला का जहाज़ी सेवक था।

अमेरिका की खोज एक आकस्मिक घटना ही थी और तुर्की इसका हेतु बना। वास्तव में बात यह थी कि १५वीं शताब्दी में तुर्की का साम्राज्य बहुत बढ़ रहा था, जिससे पश्चिमी यूरोप के एशिया के साथ व्यापार में बाधा पड़ रही थी। स्थल-मार्ग से यह व्यापार मार्कोपोलो के समय से होता चला आ रहा था। पश्चिमी यूरोप के देश इस समय अन्धकार के युग से निकलकर नवचेतना का अनुभव कर रहे थे, परन्तु तुर्की-साम्राज्य के आतंक से उन्होंने दूसरे ही मार्ग से होकर एशिया पहुँचने का निश्चय किया। उस समय के भी भूगोलवेत्ता यही मानते थे कि ज़मीन गोल है और यदि ऐसा है तो स्पेन से पश्चिम की ओर चलते जाने से ज़रूर स्थल आयेगा और यही एशिया होगा। उस समय न तो कोलम्बस और न उसके समकालीन ही यह जानते थे कि पश्चिम की ओर से एशिया जाने में उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका बीच में पड़ते हैं।

ऐसी अवस्था में कोलम्बस और उसके साहसी साथी अन्धमहासागर को पार कर बहामा, पानामा और दक्षिणी अमेरिका जा पहुँचे और समझ बैठे कि वे अपने लक्ष्य पर पहुँच गये हैं। कोलम्बस जब तक जीवित रहा उसे अपनी इस भूल का पता न चला कि जहाँ वह पहुँचा है वह वैस्ट इण्डीज़ ही है; ईस्ट इण्डीज़ नहीं। इस भूल का पता १५१९-२२ में उस समय चला जबकि स्पेन के फर्डीनैण्ड मैगेलन के नेतृत्व में एक अभियान दक्षिणी अमेरिका के अन्तिम दक्षिणी छोर से होती हुई और असीम प्रतीत होने वाले प्रशान्त महासागर को पार कर एशिया जा पहुँची। फिलीपीन के आदि-वासियों ने मैगेलन को मार डाला परन्तु उसके साथी अपनी यात्रा पर आगे बढ़ते गये। वे अफ्रीका का चक्कर लगाते हुए वापस स्पेन पहुँच गये। इस प्रकार उन्होंने न केवल यह सिद्ध कर दिया कि ज़मीन गोल है बल्कि यह भी बता दिया कि और भी बहुत से ऐसे प्रदेश हैं जिनका उस समय तक भूगोलवेत्ताओं को पता ही न था।

अमेरिका का नाम अमेरिगो वेस्पुची नामक इटालियन के नाम पर पड़ा। वह इटली का रहने वाला था और उसने १५०१ में ब्राज़ील के तट तक यात्रा की थी। यूरोप वापस आने पर उसने अपनी यात्राओं का इतना विशद् वर्णन किया कि उसका नाम कोलम्बस के नाम से भी अधिक प्रसिद्ध हो गया। मानचित्र बनाने वालों ने नये-संसार का नाम रखने में वेस्पुची को समादृत करने का निर्णय किया। कोलम्बस के कार्य की महानता को देखते हुए, यह नामकरण एक व्यङ्ग प्रतीत होता है।

नये-नये देश ढूँढने के प्रारम्भिक काल में स्पेन अन्य राष्ट्रों मे आगे रहा। हरनान्दो कार्तेज़ ने सेना लेकर मैक्सिको पर चढ़ाई कर दी, जिससे १५२१ में एज़टिक का सभ्य राज्य लुढ़क गया और मैक्सिको स्पेन के उपनिवेश में परिणत हो गया। फ्राँसिस्को पिज़ारो ने १५३३ में पीरू के इन्का साम्राज्य को ख़त्म कर दिया और स्पेन के बादशाह के लिए सोने और चाँदी के खजाने की दौलत ढूँढ़ निकाली।

जब स्पेन के लोग अमेरिका के गर्म प्रदेशों के हरे-भरे जंगलों में आगे बढ़े, तो उनमें से कुछ लोग उत्तर की ओर वहाँ भी गये जहाँ आज संयुक्त-राज्य स्थित है। पोंस दि ल्याँ फ्लोरिडा में इण्डियन लोगों के बताये हुए अनन्त यौवन-सोते की खोज में गया और उसने १५२१ में टम्पा के स्थान पर उपनिवेश बसाने का असफल प्रयास किया। काबेज़ा दि बाचा का जहाज़ मैक्सिको की खाड़ी में टूट गया और वह टैक्सास होता हुआ कैलिफोर्निया तक चला गया। उसके साथ कुछ इण्डियन भी थे जो उसे देवता समझते थे। स्पेन के ये सवार निःसन्देह देखने में उस समय बड़े बाँके लगते थे, जब वे लम्बे कोट व कवच पहने हुए और बन्दूकें उठाये घोड़ों तथा अन्य पशुओं के साथ घने बीहड़ वनों को चीरते हुए आगे बढ़ रहे थे। इसमे पहले इण्डियन लोगों ने अमेरिका में घोड़े देखे ही नहीं थे।

उत्तरी अमेरिका के बीचों-बीच बहने वाले महानद मिसिसिपी का पता हेरनान्दो दि सोटो ने १५४१ ई० में चलाया। अपनी यात्रा में ही दि सोटो की ज्वर से मृत्यु हो गयी और विरोधी इण्डियन लोगों से समाचार छिपाने के

लिए उसका शरीर मिसिसिपी में बहा दिया गया। साहसी कोरोनाडो ने उस प्रदेश में सोने की तलाश की जहाँ आज कैन्सास स्थित है।

भावी संयुक्तराज्य की पहली स्थायी बस्ती फ्लोरिडा में सैण्ट आगस्टाइन १५६५ में बसायी गई। वहाँ स्पेन वालों ने इण्डियन आक्रान्ताओं और विदेशी शक्तियों से गाँव की रक्षा के लिए एक बड़ा दुर्ग बनाया था।

उन्हीं दिनों फ्राँस, इंग्लैण्ड, हालैण्ड, स्वीडन और पुर्तगाल भी नये संसार में अधिकाधिक रुचि लेने लगे थे। उनके जहाज़ भी वीरान तटों पर आते, पत्तनों पर ठहरते, नदियों में जाते और जिस नये प्रदेश पर पहुँचते उसका विवरण तैयार करते। इटलीनिवासी जान कैबट इंग्लैण्ड का एक जहाज़ लेकर अतलान्तक महासागर को पार करके उत्तर में पहुँचा और बड़ी सावधानी और कुशलता के साथ १४९७ में लैब्रेडार और न्यू फाउन्डलैण्ड जा पहुँचा था। उसकी इसी यात्रा से इङ्गलैण्ड को उत्तरी अमेरिका के महाद्वीप पर अपना अधिकार जमाने का आधार मिल गया। वेराज़ानो फ्राँस का झण्डा लेकर अतलान्तक महासागर के उत्तरी तट पर १५२४ में कैरोलाइना से न्यू फाउन्डलैण्ड तक गया और जेक कार्टी ने भी फ्राँस के लिए सैण्ट लारैन्स नदी के रास्ते १५३५ में कैनेडा स्थित माण्ट्रील तक के प्रदेश ढूँढ़े।

उधर यूरोप में कुछ ऐसी घटनाएँ हो रही थीं जिनसे नये संसार में साम्राज्य-विभाजन होना निश्चित था। कैरिबियन सागर से स्पेन के जहाज़ों का सोने से लद कर आना इङ्गलैण्ड को एक आँख न भाता था। ईर्ष्या के साथ-साथ स्पेन की हर बात में इंग्लैण्ड को घृणा थी। इसका कारण यह था कि इंग्लैण्ड प्रोटेस्टैण्ट देश बन गया था और स्पेन प्रमुख कैथोलिक देश था।

१६वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में रानी एलिज़बेथ के शासनकाल में अंग्रेज़ "सागर-श्वानों"—समुद्री डाकुओं ने स्पेन के जहाज़ों को लूटना शुरु कर दिया। हाकिन्स, कवेन्डिश सरीखे बहादुर तथा सर फ्रान्सिस ड्रेक जैसे अद्वितीय नाविक स्पेन वालों से सोना छीनने के लिए उनके व्यापारी जहाज़ों की खोज में समुद्रों में घूमते रहते। "सागर-श्वान" डाकू और लुटेरे तो थे ही परन्तु उन्हें अपने इस उच्छृङ्खल व्यवहार में रानी एलिज़बेथ का आशीर्वाद भी प्राप्त था।

उधर से स्पेन का राजा फिलिप इन आक्रमणों पर क्रोधित हो उठा; इनसे उसके व्यापार को बड़ी क्षति पहुँच रही थी। उसने १५८८ में एक बड़ा जंगी बेड़ा ले जाकर इंग्लैण्ड पर चढ़ाई करके इन आक्रमणों को सदा के लिए समाप्त कर देने का निर्णय कर लिया। बेड़े के इंगलिश-चैनल में पहुँचने पर अंग्रेज़ों के तीव्रगामी और भारी मार देने वाले हल्के जहाज़ों ने फिलिप के बेड़े को नष्ट कर डाला। उसी समय एक आंधी भी चली जिससे स्पेन का जंगी बेड़ा पूर्णतया नष्ट हो गया। इस हार से स्पेन की सामुद्रिक-शक्ति समाप्त हो गई। इसके उपरान्त वह उत्तरी अमेरिका के तट के आधिपत्य के लिए अंग्रेज़ों के मुकाबले में खड़ा न हो सका। और उधर नये संसार में उपनिवेश एक नये युग में पदार्पण कर रहे थे।

इंगलैण्ड की ओर से औपनिवेशिक साम्राज्य के लिए उस समय यत्न हुआ जब १५७८ में रानी एलिज़बेथ ने अनुभवी योद्धा सर हम्फरी गिल्बर्ट को आदेश दिया कि वह "दूर-दूर तक के उन सभी प्रदेशों को बसाकर अपने अधिकार में कर ले जो अभी तक किसी ईसाई राजा के अधीन नहीं हैं।" गिल्बर्ट का अभियान न्यू फाउन्डलैण्ड गया परन्तु जाड़े के कारण असफल रहा। वापस आते समय समुद्र में ही उसकी मृत्यु हो गई।

इसके छः वर्ष उपरान्त एलिज़बेथ ने उत्तर में सैण्ट लारेन्स नदी और दक्षिण में फ्लोरिडा के बीच के प्रदेश में अंग्रेज़ों को बस जाने की अनुमति दी और इसका नाम वर्जिनिया रखा गया। इसमें नये संसार का लगभग सारा तटीय प्रदेश आगया। इस प्रदेश में कहीं बस्ती बसाने का काम रानी एलिज़बेथ ने अपने विश्वासपात्र दरबारी सर वाल्टर रैले को सौंपा।

१५८५ से १५८७ तक कई मुहिमें उत्तरी कैरोलाइना के तट के परे रोनोक टापू की ओर भेजी गई। पहली बार तो अंग्रेज़ वापस आ गये। इण्डियन लोगों के विरोध और जीवन की परिस्थितियों ने उन्हें लौटने पर मजबूर कर दिया। इस पर भी मुश्किल यह थी कि जिन चीजों की आवश्यकता थी वे भी समय पर पहुँच नहीं पाई। अन्तिम बार जो कुछ हुआ वह अभी तक रहस्य में है; उसको भी दुःखान्त ही मानना चाहिए। वहाँ जाकर बसने

वाले, जिनमें अंग्रेज़ माँ बाप से वहाँ उत्पन्न हुआ प्रथम बालक वर्जिनिया डेयर भी था, कुछ ऐसे लुप्त हुए कि उनका फिर कोई पता न चल सका।

ये विफलताएँ अंग्रेज़ों को हताश न कर सकीं। रानी एलिज़बेथ के नेतृत्व और विशेषतया स्पेन के बड़े जंगी बेड़े की पराजय से उनमें एक नव-शक्ति का संचार हो गया था। यह नव-शक्ति राष्ट्र की बदलती हुई व्यवस्था में प्रतिबिम्बित हो रही थी; बहुत से नये-नये प्रोटेस्टैन्ट सुधारक और प्यूरिटन-गुरुतावादी सम्प्रदाय बना रहे थे; जिनमें लोग राज्य के प्रचलित धर्म से मतभेद रखने का साहस कर रहे थे; वे धर्मपरायणता की अपनी ही विधियाँ निर्धारित कर रहे थे। शक्ति की यह नवचेतना मध्य श्रेणी के व्यापारिक वर्ग के उत्थान में भी प्रतिविम्बित थी। इस वर्ग के लोगों ने अपने लिए पर्याप्त धन कमा लिया और समुद्र पार के देशों में लगाने के लिए कुछ पूंजी बचा भी ली।

इंगलैण्ड के व्यापारियों ने अमेरिका में उपनिवेश बढ़ाने के लिए कम्पनियां संगठित कीं। वहाँ जाकर बसने वाले लोगों को इकट्ठा करने और उनको प्रेरित करने में उन्हें कोई कठिना नहीं हुई, क्योंकि उस समय उनके देश में घोर आर्थिक उथल-पुथल हो रही थी और बेकार पड़े हुए कामगारों की संख्या अधिक थी। पुराने सामन्तवाद के पतन के फलस्वरूप बहुत से कृपक बेकार थे और नया संसार सुअवसर प्रदान कर रहा था, जहाँ जाकर वे नये सिरे से अपने घर-बार बनाकर बस सकते थे। कई दूसरे लोगों की प्रचलित धर्मसंस्थान से निभ न सकी, और वे उत्तरी अमेरिका के बीहड़ वनों को अपनी धार्मिक स्वतन्त्रता का आश्रय समझने लगे।

१६०६ में राजा जेम्स प्रथ   ने लन्दन और प्लाईमॉथ की कम्पनियों को यह अनुमति द कि वे कुछ निश्चित प्रदेशों में उपनिवेश बनायें और लाभ के लिए व्यापार करें। एक समझौते के अनुसार लन्दन कम्पनी वालों को बसने के लिए ३४° से ४१° अक्षाँश के बीच का प्रदेश दिया गया; यह प्रदेश आज के न्यूयार्क सिटी से लेकर दक्षिण में कैरोलाइना में फीयर अन्तरीप तक फैला है; प्लाईमॉथ कम्पनी के लिए ३८° से ४५° अक्षाँश तक का प्रदेश निश्चित

किया गया; जिसमें आज उत्तरी न्यू इंगलैण्ड और न्यूयार्क राज्य में पोटोमेक नदी के बीच का प्रदेश आ जाता है। ३८° और ४१° के बीच के अतिव्याप्त प्रदेश में दोनों कम्पनियाँ उपनिवेश बना सकती थीं, परन्तु शर्त यह थी कि कोई भी उपनिवेश दूसरी कम्पनी की किसी बस्ती से एक सौ मील के कम अन्तर पर स्थित न हो। प्रादेशिक झमेलों को रोकने के लिए ही ऐसा किया गया।

यद्यपि कैबट उत्तारी अमेरिका पहुँच चुका था, फिर भी स्पेन वाले सारे उत्तरी अमेरिका पर अपना ही अधिकार जताते थे, उनकी ओर से आपत्ति के होते हुए भी लन्दन कम्पनी ने १६०७ में कप्तान क्रिस्टोफर न्यू पोर्ट की कमान में तीन छोटे जहाज वर्जिनिया में चैसापीक की खड़ी में भेज दिये। जेम्स नदी में से होते हुए कोई एक सौ बीस लोग एक छोटे से प्रायःद्वीप में उतरे जिसका अपने राजा के सम्मान में उन्होंने जेम्सटाऊन नाम रखा। संयुक्त राज्य में अंग्रेज़ों की यह पहली स्थायी बस्ती थी।

आरम्भ से ही इस छोटी और बाहरी बस्ती में विपत्ति के बादल घिरते रहे। आसपास की दलदल के कारण भयानक मलेरिया ज्वर ने काफी जानी नुकसान किया। इण्डियन लोग भी आक्रमण करते रहते। इसके अतिरिक्त वहाँ बसने वालों को जितनी चिंता ढूंढने और एशिया जाने के जलमार्ग खोज निकालने की थी, उतनी अनाज उगाने और मकान बनाने की नहीं थी। पहले छः महीनों में ही उनमें से कोई तीन चौथाई व्यक्ति मर गये।

यह बस्ती यदि बनी रही तो उसका कारण यह था कि कप्तान जॉन स्मिथ ने इसके लिए महान् प्रयत्न किये। स्मिथ एक योग्य सिपाही, भूगोलवेत्ता और लेखक था। उसने इण्डियन लोगों को फुसला कर उनसे अनाज प्राप्त किया और वहाँ आबाद होने वालों को भूखों मरने से बचाया। उसके सदुपदेश और उत्तम परामर्श से निर्बल और निराश हृदयों में उत्साह की लहर आ गयी और इन लोगों ने अपने अस्तित्व के लिए अधिक प्रयास शुरू कर दिये। इसका श्रेय जॉन रोल्फ को भी है, जिसने तम्बाकू की व्यापारिक सम्भावनाएँ मालूम कीं। तम्बाकू की पैदावार इंगलैंड में एक दम लोकप्रिय हो गई और इससे इस बस्ती

के आर्थिक-दृष्टि से स्वावलम्बी बनने में बड़ी सहायता हुई। रोल्फ ने इण्डियन सरदार पौहाटन की पुत्री पोकाहोन्टास से जो विवाह किया उससे औपनिवेशिकों और अमेरिका के आदिवासियों में कई सालों तक शान्ति रही। यह विवाह एक बड़ी अनूठी गाथा बन गया। यह इण्डियन राजकुमारी लन्दन आई, और सरकार की ओर से समादृत हुई तथा बाकी जीवन अपने देश से बहुत दूर इङ्गलैण्ड की राजधानी में ही रही। जब जेम्सटाउन में झौंपड़े और किले बनाये जा रहे थे तो उस समय उनके बनाने तथा उनकी रक्षा के लिए अधिक जनशक्ति और श्रमिकों की आवश्यकता हुई। १६१९ में नीग्रो गुलामों को एक जहाज में वहाँ लाया गया। और इस प्रकार एक ऐसी रूढ़ि का प्रारम्भ हुआ, जिसने कि भविष्य में शताब्दियों उपरान्त अमेरिका को गृहयुद्ध में झोंक दिया। निस्सन्देह यह एक ऐसी समस्या बन गई जिसके कई प्रश्न और जिसकी कई उलझनें आज भी अमेरिकी लोगों को निबेड़ना बाकी हैं, और जिसके लिए वे यत्नशील भी हैं।

जिस वर्ष जेम्सटाउन में गुलाम आये, उसी वर्ष वहाँ पर लोकतन्त्री सरकार स्थापित हो गयी। राजा जेम्स के एक आदेशानुसार उपनिवेशवासियों को यह अधिकार दिया गया कि वे प्रत्येक नगर या बस्ती से दो प्रतिनिधि चुनें जोकि जेम्सटाउन के छोटे गिरजे में गवर्नर से भेंट किया करें। कई एक कानून पास कर लेने के उपरान्त २७ सदस्यों की इस प्रतिनिधि सभा का पहला अधिवेशन ४ अगस्त १६१९ को विसर्जित कर दिया गया। "इसका कारण यह था कि इस में पहले भी बहुत गरमागरमी हुई और भविष्य में भी ऐसा ही अपेक्षित था।" बाद में राजा जेम्स को इस बात पर खेद हुआ कि उसने लोगों को अपने मामलों पर विचार प्रकट करने का अधिकार ही क्यों दिया और उसने प्रतिनिधि सभा को दबाने का यत्न किया। परन्तु इससे पूर्व कि वह अपने एक सत्कर्म को बिगाड़ सकता, उसकी मृत्यु हो गई, और आज़ादी का दीप जलता रहा।

१६२५ तक वर्जिनिया में एक हजार से ऊपर लोग बस गये थे। नये-नये नगर बसाने के लिए सामान और लोग आ रहे थे। १६२२ में इण्डियन लोगों

ने विदेशी आक्रान्ताओं और नवागतों को मिटा देने की अन्तिम कोशिश की; उन्होंने अचानक हमला कर विदेशियों को खत्म करना चाहा, लेकिन उनके अपने एक साथी चाँकों ने, जो कि ईसाई धर्म का अनुयायी बन चुका था, इस योजना से अंग्रेजों को ठीक समय पर सूचित कर दिया। इस तरह पूर्ण विनाश टल गया और तब से औपनिवेशिकों का पल्ला आसपास के कबीलों से भारी होता गया।

दूसरी ओर उत्तर के प्रदेशों में कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ घट रही थीं। प्लाइमॉथ कम्पनी का मेन नामक स्थान में एक बस्ती बनाने का प्रयास निष्फल हुआ। डच सरकार की ओर से एक अंग्रेज हैनरी हडसन ने, हडसन नदी का पता चलाया और इस पर हालैण्ड की सरकार का दावा जताया। बहुत से राष्ट्रों के जहाज़ न्यू इङ्गलैण्ड के तट पर आते थे, कुछ मछलियां पकड़ते तो कुछ समूरऊन का व्यापार करते या केवल नये-नये प्रदेशों की खोज करते। और इस प्रकार मैसाचूसेट्स के आसपास का प्रदेश प्रसिद्ध हो गया।

इसी तट पर १६२० को एक छोटे जहाज 'मेफ्लावर' में एक सौ नर-नारी आये जो इतिहास में 'यात्री' के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनकी गाथाओं से सभी जगह लोगों में शौक पैदा हुआ। अमेरिका का राष्ट्रीय उत्सव "उपकार-स्तुति" उस दिन की याद में मनाया जाता है, जबकि उन लोगों ने उजाड़ जंगल में कष्ट और कठिनाइयों का एक वर्ष पूरा कर लेने पर ईश्वर के धन्यवाद के उपलक्ष्य में भोज किये थे।

प्रतीत तो ऐसे होता है कि 'यात्रियों' का मैसाचूसेट्स पहुँचना एक आकस्मिक घटना थी; उनका मूलविचार जेम्सटाउन के आसपास कहीं पर बस जाने का था, परन्तु तूफानों के कारण या फिर उनकी अपनी योजनाओं में किसी परिवर्तन के कारण, वे उत्तर की ओर बहुत दूर तक चले गये और नवम्बर में एक बर्फीले दिन वे कॉड-अन्तरीप में उतर पड़े। उन्हें साफ़ बताया गया था कि वे दूर दक्षिण में उतरें, परन्तु बिना कोई अनुमति लिए उन उत्साही और दुर्दम्य व्यक्तियों ने स्वशासन संविधान तैयार किया जिसे उन्होंने 'मेफ्लावर कम्पैक्ट' का नाम दिया और वहीं पास प्लाईमॉथ का गांव बसाया।

यद्यपि उन्होंने बहुत कष्ट उठाये थे परन्तु उनकी वास्तविक विपत्ति तो अब शुरू हो रही थी।

इनमें भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग थे। एक ओर पृथकतावादी थे जिन्हें इङ्गलैण्ड के एपिस्कोपल चर्च का प्रतिरोध करने पर कोई बारह वर्ष पहले इङ्गलैण्ड से निकाल दिया गया था और ये लोग हॉलैण्ड में बस गये थे। इनमें कई बड़े विद्वान् और बड़े-बड़े घरानों से थे; उनमें कैम्ब्रिज स्नातक विलियम ब्रियूस्टर और विलियम ब्रेड्फोर्ड भी थे।

नये संसार में जाकर बस जाने की इच्छा से ये पृथकतावादी इङ्गलैण्ड के एक व्यापारी वर्ग से अपनी योजना के लिए वित्तीय महायता प्राप्त करने में सफल हुए, जिसके बदले में उन्होंने व्यापारियों को आश्वासन दिया कि आबाद होने पर इङ्गलैण्ड जाने वाले निर्यात का अधिक भाग उन्हीं को दिया जायेगा। उन्होंने लन्दन और अन्य नगरों के ऐसे साधारण व्यक्ति अपने साथ ले जाने के लिए चुने जो नये संसार में जाकर जीवन में अधिक सम्भावनाओं के अवसर का स्वागत करते थे। उदाहरणतः, उनमें जॉन एल्डन नाम का टोकरियां बुनने वाला भी था जिसे समुद्र पार जाने का अपना किराया चुकाने के लिए कई वर्ष तक अपने ऋणदाता के यहाँ नौकरी करनी पड़ी।

एक-से भाग्य में वँध कर विभिन्न प्रकार के इन लोगों ने आपस में मिल कर जिस प्रकार रहना शुरू किया, वह लोकतन्त्र और अमेरिकी आदर्श का ही गुण है। जाति और शिक्षा के भेदभावों को भुलाना अनिवार्य था। एक ऐसी भयानक स्थिति में जब कि इण्डियन लोगों की ओर से समूची बस्ती को भय था, जब कि खाद्यपदार्थ अत्यन्त दुष्प्राप्य थे; और सब को एक समान मिट्टी में मिला देने वाली मौत इन भद्दी कोठरियों में एक के बाद दूसरे को अपना शिकार बनाती जा रही थी, जन्म व घराने का महत्व नगण्य था, व्यक्ति की योग्यता और सामर्थ्य की ही क़द्र थी।

पहले ही जाड़े में कड़ाके की सर्दी के कारण आधे से अधिक उपनिवेश-वासी ज्वर से मर गये। परन्तु जब बसन्त ऋतु आई तो सहायक इण्डियनों ने बाकी बचे लोगों को अनाज की काश्त सिखा दी और वहाँ की प्राकृतिक

परिस्थिति का मुकाबला करने की विधियाँ भी समझा दीं। जब गर्मी आई तो यात्रियों के हृदय में नवोत्साह पैदा हुआ और उन्होंने अनुभव किया कि उनके अत्यन्त दुःखद संकट का अन्त हो गया है।

मैसाचूसेटस तट पर यह छोटी-सी बस्ती आने वाले कुछ वर्षों में सुदृढ़ बन गई। इङ्गलैण्ड में फिर से धार्मिक झगड़े शुरू हो गये; पृथक्तावादियों की भान्ति प्यूरिटन-गुरुतावादियों ने सरकार द्वारा स्थापित चर्च और उसके बिशप प्रधान प्रबन्ध पर आपत्ति की, जिस पर सरकार ने उनको चेतावनी दे दी कि या तो वे राष्ट्रीय चर्च का समर्थन करें या फिर देश से निकल जायें। आर्कबिशप लॉर्ड इस पर क्रोधित हो, सरकारी चर्च से मतभेद रखनेवालों को अपने साथ लेकर देश छोड़ चल दिया।

इस प्रकार वे अधिकाधिक संख्या में समुद्रपार नये प्रदेशों में बसने लगे। उन्होंने इङ्गलैण्ड की सरकार से अतलान्तकमहासागर के उत्तरी तट के विभिन्न प्रदेशों में बस जाने की अनुमति ले ली थी। इसी प्रकार राजा चार्ल्स प्रथम ने मैसाचूसेट्स-बे कम्पनी को बोस्टन के आसपास के प्रदेश में कुछ प्यूरिटन लोगों को भेजने का अधिकार दिया जहाँ वे अंग्रेजी कानून का पालन करते हुए अपना शासन स्वयं चलायें। १६२८ में जान एन्डीकॉट अग्रिम दल लेकर उधर बढ़ा और उसके दो वर्ष उपरान्त जॉन विन्थ्राप दो हज़ार व्यक्तियों का मुख्य दल लेकर वहाँ गया। विन्थ्राप ही वहाँ का गवर्नर बना।

नीचे दक्षिण की ओर भी अधिक-अधिक लोग आ रहे थे। इङ्गलैण्ड से आये हुए कैथोलिक लोगों ने चारों ओर प्रोटेस्टैन्ट लोगों से घिरे होने के कारण अपने को बड़ा दुःखी ओर परेशान पाया और १६३४ में उन्होंने लार्ड बाल्टिमोर के नेतृत्व में मैरीलैंड में अपनी अलग बस्ती बनाई। क्वेकर लोग अपने नेता विलियम पैन के साथ पैनसिलवेनिया में गये और वहीं आबाद हो गये। इन नई-नई बस्तियों के कारण उपनिवेश-वासी साथ के प्रदेशों में बढ़ने लगे। इस प्रकार अंग्रेजों का एक सुगठित वर्ग १७०० तक अतलान्तकमहासागर के तट पर मैसाचुसेट्स से कैरोलाइना तक बस गया था।

इन्हीं दिनों हालैण्ड वालों ने हैनरी हडसन के दावे पर चलते हुए न्यू-

एमैस्ट्रडम में एक समृद्ध बस्ती बसायी। आज इसी का नाम न्यूयार्क है। स्वीडन से आने वाले न्यूजर्सी और डिलावेवर में बस गये; परन्तु अन्त में अंग्रेज़ों ने बड़े ढंग से इस प्रकार सब को हराया कि वे शस्त्र डालने पर विवश हो गये और इस प्रकार तेरह (१३) बस्तियों का एक ठोस गुट बनाने में अंग्रेज़ सफल हुए।

नये संसार में फ्राँस भी काफ़ी व्यस्त रहा। शैम्पलें ने १६०८ में कैनेडा के नगर क्यूबक को बसाया और वहाँ से उत्साही और कर्मठ धर्म-प्रचारक मिसिसिपी होते हुए पश्चिम में मध्य तक पहुँच गये; वे इण्डियनों को प्रार्थना सिखाकर तथा मालाएँ देकर उन्हें ईसाई बनाते और फ्राँस-सरकार के लिए नये-नये प्रदेशों पर अधिकार जताते। फिर भी फ्राँस वाले मुख्यतः व्यापारी थे जो इंडियन लोगों को फाँसते थे। उन्हें वहाँ बसना नहीं था; उनकी संख्या भी अधिक न थी और मिसिसिपी की घाटी में उन्होंने कैनेडा का जो साम्राज्य बनाया उसका आधार श्वेत जाति के लोगों की बस्तियाँ नहीं, बल्कि इंडियन जातियों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध और उनमें फ्राँसीसियों का अपना रसूख ही सहायक था।

१७वी शताब्दी के शुरू में स्पेनवालों ने मध्य और दक्षिणी अमेरिका में अपना सुदृढ़ अधिकार बनाये रखा; परन्तु आज के संयुक्त राज्यवाले प्रदेश में उनके प्रदेश बहुत कम थे—केवल फ्लोरिडा, टैक्सास और न्यू मैक्सिको में, या फिर कैरोलाइना के तट पर प्रचारकों की कुछ अग्रिम चौकियाँ; फिर भी औपनिवेशिक दौड़ में स्पेन वाले अपने मुख्य प्रतिद्वन्दियों ब्रिटेन और फ्राँस से पीछे नहीं रहे।

संयुक्त-राज्य—वह १७वी शताब्दी में कैसा दीखता था? यह एक सुन्दर प्रदेश था; मिसिसिपी के पूर्व में इतने घने जंगल थे कि हज़ारों मील तक गिलहरियाँ एक से दूसरे पेड़ पर कूदती हुई जा सकती थीं। और उसे भूमि पर उतरने की आवश्यकता नहीं थी। अतलान्तकमहासागर के तट और अप्पेल-च्यान पर्वतों के बीच एक तंग व लम्बा मैदान था। इन पर्वतों और कोई एक हज़ार मील पश्चिम की ओर रॉकी-पर्वत श्रृङ्खला के बीच मिसिसिपी

घाटी में बन और उपजाऊ भूमि थी। लोगों के बसने के लिए वह पूर्णतया उपयुक्त स्थान था। रॉकी-पर्वतों के पार भी शान्तमहासागर के तट पर एक और रम्य तथा अत्युत्तम प्रदेश था; जिसमें अच्छी बन्दरगाहें थीं; सुन्दर बन थे। यह भूभाग स्वर्ग-सदृश था। इण्डियन लोगों को यह प्रदेश बहुत प्रिय था जहाँ वे शिकार खेलते और मछलियाँ पकड़ते थे। इस प्रकार एक संघर्ष के लिए मैदान तैयार हो गया था कि इस शानदार महाद्वीप पर किसका अधिकार हो।

अध्याय २

औपनिवेशिक काल

अंग्रेज़ बस्तियों में शुरू-शुरू में तो जीवन निःसन्देह कटु और कठिन था और इसका वहाँ के लोगों पर प्रभाव भी पड़ा। विशेषकर न्यू इंगलैण्ड के लोगों पर इसकी छाप पड़ी जहाँ की पत्थरीली ज़मीन और शीतल जलवायु के कारण कृषि पर जीवन-निर्वाह कठिन था। परिस्थितियों का सामना करते-करते उपनिवेश-वासी स्वयं कठोर, सहानुभूति शून्य और चलते-पुर्जे हो गये। आज अमेरिका के लोकजीवन में जिस कठोर प्यूरिटन चरित्र का प्रभाव है उसका निर्माण उन्हीं दिनों इन बस्तियों में हो रहा था।

मैसाचूसेट्स में बसनेवाले प्यूरिटन लोग इसलिए अमेरिका आये थे कि वे धार्मिक यातना से बचकर अपने ढंग से ईश्वर-उपासना कर सकें। पर यहाँ आकर धार्मिक-स्वतन्त्रता में विश्वास रखना तो दूर रहा, उन्होंने प्यूरिटन सिद्धान्तों का बड़ी सख्ती से पालन कराना शुरू किया और १६३१ में जनरल कोर्ट ने आज्ञा दी कि वही लोग सरकार चुनने में मतदान कर सकते हैं, जो गिरजों के बहुत पहले से सदस्य हैं। इस प्रकार जो लोग पुरानी दुनियाँ में स्वयं अत्याचार का शिकार बने थे, अब नई दुनिया में स्वयं सख्ती ढाने वाले और अत्याचारी बन गये।

मैसाचूसेट्स में बसने वाले सभी लोग इस प्रकार की किसी चर्च की अधीनता या धार्मिक सरकार में विश्वास नहीं करते थे, जिसमें मतभेद रखने वालों को देश से निकाल दिया जाता हो या फिर यातना देकर मार डाला जाय। आरम्भ से ही देश में ऐसे स्पष्टवादी नर-नारी रहे हैं जो किसी सत्ता के अधिकारों को सीमा से बढ़ जाने पर उसका प्रतिरोध करने के लिए तैयार रहते। उनमें पहला रोजर विलियमस था। वह एक कुलीन घराने का व्यक्ति

था, और स्वभाव का बड़ा नम्र। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी का स्नातक होने के उपरान्त वह पादरी बना। उसे धार्मिक सहिष्णुता में अडिग विश्वास था और इस पक्ष में था कि राज्य और धर्म को अलग-अलग होना चाहिए।

विलियमस ने यह भी कहा कि इण्डियनों के साथ अच्छा बर्ताव होना चाहिए क्योंकि अमेरिका की भूमि के असली मालिक वही हैं, ब्रिटेन के राजा नहीं। १६३५ में उस पर सरकार का रोष हुआ और उसे जेल में डाल दिया गया जहाँ से वह भाग निकला और अपने अनुयायियों को रोड टापू में परावीडेन्स तक ले गया। वहाँ उन्होंने इंडियन लोगों से छीनने की बजाय भूमि को मोल लिया। इस नई बस्ती में उपासना की पूर्ण आज़ादी थी; यहाँ पर नव-विचार वालों, क्वेकरों और यूरोप से बेघरबार होकर आये हुए यहूदियों का स्वागत हुआ। वे यहाँ आकर आबाद हो सकते थे और लोकतन्त्रीय सरकार में भागी हो सकते थे। अस्सी साल से भी बड़ी अवस्था में विलियमस की रोड टापू में ही मृत्यु हो गई। तब तक उसके उदार विचारों से मतभेद रखने वाले भी उसके प्रशंसक बनने लग गये थे।

जो लोग धार्मिक मतभेदों के कारण मैसाचूसेट्स से चले गये उनमें एन हचिंसन और टामस हूकर भी थे। श्रीमती हचिंसन तो एक महान् महिला थीं। इंगलैण्ड में उनके १४ बच्चे हुए और चालीस वर्ष की आयु में वह अमेरिका में आकर एक प्रमुख मनीःषि और धार्मिक नेता बन गयीं। उसके उत्सुक मन में बार-बार यह प्रश्न आता कि व्यक्तिगत उपासक के ईश्वर के साथ जो सम्बन्ध हैं उनमें पादरी का क्या स्थान है—और अन्त में १६३५ में वह गिरजेवालों का कोपभाजन बनीं। श्रीमती हचिंसन के कुछ अनुयायी नई बस्ती बसाने के लिए न्यू हैम्पशायर गये। वह स्वयं अपने कुछ परिवार को लेकर न्यूयार्क में पेल्हम नामक स्थान में आ गईं, जहाँ पर १६४३ में इंडियनों ने उन सबका वध कर दिया।

टामस हूकर उत्साहियों का एक दल लेकर १६३६ में कनैक्टिकट नदी की घाटी से होता हुआ आगे बड़ा और उसने हार्टफोर्ड का नगर बसाया। वे लोग कुछ छकड़ों में और कुछ पैदल चलकर आये थे; उनके पशु भी साथ थे।

ठीक उसी भाँति उनके वंशज दो सौ वर्ष उपरान्त महाद्वीप को पार करते हुए प्रशान्तमहासागर तक पहुँचे थे। हूकर और उसके साथियों ने सरकार की "मूल आज्ञाओं" को स्वीकृत किया, जिसमें उन लोगों को मतदान करने का अधिकार दिया गया जो गिरजे के सदस्य नहीं थे तथा यह अधिकार माना गया कि सब को स्वशासन का अधिकार है। इस घोषणा-पत्र में इंगलैण्ड के राजा की सत्ता की कोई चर्चा न थी।

दूसरी बस्तियों में धार्मिक यातना इतनी कटु न थी। मैरीलैण्ड में थोड़े समय के लिए संकट के बादल घिर आये जबकि समीप के प्रदेशों से अकस्मात् प्रोटेस्टेन्ट लोगों के आ जाने से उनकी संख्या कैथोलिक लोगों से बढ़ गई और कैथोलिक लोगों पर यातनाएँ अनिवार्य दीखने लगीं, पर प्रतिनिधि सभा के सदस्यों ने बुद्धिमानी से काम लिया और १६४९ में सहिष्णुता-कानून स्वीकृत हुआ जिसके अनुसार सभी ईसाई जातियों को उपासना की पूर्ण स्वतन्त्रता दे दी गई।

वास्तव में बस्तियों को ऐसे लोगों की आवश्यकता थी जो वहाँ कृषि तथा अन्य काम करते। धीरे-धीरे इस बात का महत्व घटता गया कि उनके धार्मिक विश्वास क्या हैं, और इसका महत्व बढ़ता गया कि वे अपने हाथों से कर क्या सकते हैं। वर्जिनिया में लूथर के अनुयायी की आवश्यकता थी या कैथोलिक की? इसका आधार इस बात पर था कि वह अपनी कुशलता व निपुणता से वहाँ की परिस्थिति सुधारने में कहाँ तक समर्थ है। अतः नये प्रदेश भर में, मेन से लेकर कैरोलाइना और जार्जिया की बस्ती तक, धार्मिक प्रतिबन्ध धीरे-धीरे परन्तु निरन्तर गति से शिथिल पड़ते गये। बहुत-से लोगों के विचार में इस लोक की बातें भी उतनी ही महत्वपूर्ण हो गईं जितनी कि दूसरे लोक से सम्बन्धित बातें हो सकती थीं।

इस प्रकार चाहे कहीं-कहीं धार्मिक यातना रही, पर फिर भी पुरानी दुनिया में लोग यही समझने लगे कि अमेरिका आश्रय पाने की एक अच्छी जगह है। यूरोप के इतिहास में कभी भी इतनी उथल-पुथल और गड़बड़ न रही जितनी १६१८ से १६९७ तक निरन्तर होती रही। कोई भी स्वस्थ

शरीर वाला व्यक्ति न बचा होगा जिसे तीस वर्षीय युद्ध, धार्मिक गृह युद्धों और सामन्ती-समरों में भाग न लेना पड़ा हो। कैथोलिक-सनातनी ईसाई देशों ने अपने प्रोटेस्टेन्ट-सुधारक पड़ोसी देशों से युद्ध किये और कई प्रोटेस्टेन्ट देश आपस में ही उलझते रहे।

यही कारण थे कि उपनिवेश बनने के पहले ही सौ वर्षों में विभिन्न जातियों और धर्मों के हजारों लोग बसने के लिए अमेरिका आ गये। यदि नई दुनिया में जीवन कठिन था तो पुरानी दुनिया की कठिनाइयों का कहना ही क्या। यूरोप के लोगों में अपनी विपत्तियों से भागने और सम्भावनाओं से भरी नई दुनिया में जा बसने की उत्कट इच्छा प्रत्यक्ष थी, और निस्सन्देह यह आज भी उत्कट है।

मनहाटन टापू के अग्रिम भाग पर १६६४ तक न्यूयार्क एक छोटा लेकिन अत्यन्त रम्य नगर बन चुका था; जिसमें पन्द्रह सौ के लगभग निवासी थे; सकोण छत्तों, पवनचक्कियों और दुकानों के कारण यह डच गाँव-सा लगता था। हालैण्ड के व्यापारिक संस्थान हडसन नदी के मार्ग से कोई डेढ़ सौ मील ऊपर अल्बानी तक फैले हुए थे, और न्यूजर्सी के एक बड़े भाग पर भी उनका अधिकार था। निस्सन्देह हॉलैण्ड वालों के लिए वह दुर्दिन था जबकि एक अंग्रेज़ी समुद्री-बेड़ा न्यूयार्क पहुँचा और उसने उनसे नये संसार में सभी अधिकार समर्पित कर देने की माँग कर दी। इस प्रकार की सशस्त्र शक्ति के आगे विवश होकर डच अधिकारियों को आत्म-समर्पण करना पड़ा और इस प्रकार न्यू-इंगलैण्ड और दक्षिण को मिलाने वाला अमेरिका का मध्यवर्ती प्रदेश ब्रिटिश साम्राज्य का एक उपनिवेश बन गया।

अंग्रेज़-बस्तियों में परिस्थिति निरन्तर डाँवाडोल और अनिश्चित बनी रही और उधर इंगलैण्ड में एक के बाद दूसरा शासक आता गया। पहले प्रोटेस्टेन्ट मत के स्टुअर्ट राजा थे—जेम्स प्रथम और चार्लस प्रथम फिर १६५३ में एक भयानक गृह-युद्ध के उपरान्त प्यूरिटन विशुद्धिवादी मत का आलिवर क्रामवैल डिक्टेटर या तानाशाह बना। उसकी मृत्यु के दो वर्ष बाद १६५८ में स्टुअर्ट फिर से आये, पर "शानदार क्रान्ति" द्वारा उनको हटा

दिया गया। तब शासन सँभालने के लिए ओरेन्ज के विलियम और मेरा को आमन्त्रित किया गया, जिन्होंने अंग्रेजों को अधिक प्रतिनिधि-सरकार बनाने का वचन देना स्वीकार कर लिया था।

ये सभी ब्रिटिश शासक अमेरिका के बढ़ते हुए महत्व को भली प्रकार जानते थे। उन्होंने औपनिवेशिक मामलों पर कड़ा नियन्त्रण रखने की चेष्टा की; परन्तु उस समय की उथल-पुथल और दूरी के कारण यह नियन्त्रण कुछ सीमित ही रहा।

पर फिर भी कुछ सख्त क़दम उठाये गये। पहले इन बस्तियां पर वे व्यापारी और दरबार के चहैते व्यक्ति शासन करते थे जिन्हें राजा से आज्ञाएँ मिलती थी। कुछ भी हो, इन आज्ञाओं द्वारा काफ़ी हद तक उपनिवेश-वासियों को स्वराज्य मिला था और अधिकारी तब तक लोगों को अपने मामले स्वयं हल करने की अनुमति दे देते थे, जब तक कि वे लाभप्रद कार्य करते. अंग्रेज़ी कानून का पालन करते और राजा के आज्ञाकारी रहते। परन्तु जैसे-जैसे समय बीतता गया; कम्पनियों को दी गई बहुत सी आज्ञाएँ रद्द कर दी गई और उपनिवेश सीधे ब्रिटिश सरकार के अधीन कर दिये गये। इससे स्वशासन को गम्भीर खतरा बन गया और इसका अर्थ ब्रिटिश शासक का अधिक बड़ा नियन्त्रण था।

औपनिवेशिकों के लिए उस समय परिस्थिति असह्य हो गयी जब अन्तिम स्टुअर्ट राजा जेम्स द्वितीय ने बिना कहे-सुने न्यू-इंगलैण्ड, न्यूयार्क और न्यूजर्सी को १६८६ में एक ब्रिटिश प्रान्त के रूप में संघटित कर दिया। राजा ने एक कठोर अनुशासक सर एडमण्ड एन्ड्रॉस को गवर्नर बनाकर भेजा, और उसे यह आदेश था कि वह जितना भी धन ब्रिटिश सरकार के लिए प्राप्त कर सकता है, कर ले। एन्ड्रॉस ने औपनिवेशिक अदालत को विसर्जित कर दिया; और स्वयं जज बन बैठा। अखबारों पर उसने सेन्सर बिठा दिया, बहुत-से कर लगा दिये, और प्रायः लोगों की इच्छा का कोई मान किये बिना ही वह शासन चलाता रहा।

बस्तियों के लिए वह दिन खुशी का था और एन्ड्रॉस के लिए बुरा जबकि

यह सूचना पहुँची, कि राजा जेम्स को सिंहासन से हटा दिया गया है। बड़ी शीघ्रता में प्रतिशोध के लिए मैसाचूसेट्स के लोगों ने एन्ड्रॉस को पकड़ लिया और कैद करके नये राजा द्वारा न्याय के लिए वापस इंगलैण्ड भेज दिया। न्यूयार्क के स्वतन्त्रताप्रिय लोगों ने एन्ड्रॉस के डिप्टी फ्रान्सिस निकलसन को निकाल दिया और दो वर्ष तक उन पर अपने एक नेता जेकब लीज़लर का शासन रहा।

ब्रिटिश सरकार की ओर से नियुक्त गवर्नर सर विलियम बर्कली के अधीन वर्जिनिया में भी बहुत गड़बड़ी रही। बर्कली को इतना ख्याल बस्ती की भलाई का नहीं था जितना कि इण्डियन लोगों के साथ समूर-ऊन का व्यापार करने का। इसके फलस्वरूप उसने १६७५ में सस्क्यूहनॉक क़बीले के विरुद्ध एक सैन्यदल भेजने से इन्कार कर दिया। इस क़बीले के लोग सीमा पर स्थित कई बस्तियों में उपद्रव मचा रहे थे। जब एक युवक नटनाइल बेकन ने स्वयंसेवकों का एक दल संगठित करके आक्रान्ताओं को कुचल डाला तो बर्कली ने उसको 'द्रोही' घोषित कर दिया और उसके सिर के लिए इनाम रख दिया। इसके उपरान्त जो गृह-युद्ध हुआ उसमें बेकन के साथियों ने गवर्नर को हरा दिया परन्तु विजय के साथ ही ज्वर से बेकन की अचानक मृत्यु हो गयी और उसके नेताहीन साथियों को बर्कली ने पराजित कर दिया। इसमें इतना रक्तपात हुआ कि बर्कली को अपमानित कर वापस बुला लिया गया।

परन्तु उपनिवेश-वासियों को अपनी मातृभूमि के विरुद्ध पूर्ण रूप से विद्रोह करने में एक शताब्दी लगी। अधिकांश लोग अब भी इंगलैंड के प्रति राजभक्त थे और जिनमें सामर्थ्य थी वे अपने बेटों को पढ़ने के लिए आक्सफोर्ड या कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयों में भेजते और स्वयं इंगलैंड का चक्कर लगाते रहते थे।

अमेरिका में धन और सम्पत्ति की निरन्तर वृद्धि हो रही थी। मुख्य आर्थिक आधार कृषि था। तम्बाकू और धान की प्रचुर उपज से दक्षिणी प्रदेशों के लोग भूमि को कृषि-योग्य बनाने के उपरान्त दो-एक पीढ़ियों में ही समृद्ध हो गये। दक्षिण का विस्तृत समतल भाग और किसी हद तक मध्य के उपनिवेश बड़े-बड़े खेतों और बस्तियों के लिए उपयुक्त थे। परन्तु न्यू-इंगलैंड

में यह बात न थी। वहाँ पर तंग घाटियों और पहाड़ों की ऊसर भूमि के कारण बड़े पैमाने पर खेती नहीं हो सकती थी।

यद्यपि कृषि की उपज से न्यू-इंगलैंडवासी धनाढ्य न बन सके, फिर भी उन्होंने अपनी चतुरता से धनोपार्जन के अन्य साधन ढूँढ़ निकाले। उन्होंने व्यापार शुरू किया। उनके चारों ओर लकड़ी थी; उन्होंने जहाज़ बनाये और कच्चे माल के रूप में लकड़ी निर्यात भी की। तट के पास ही बहुत मछलियाँ थीं। महाद्वीप के अन्दर भी इंडियन लोगों से एक साधारण आभूषण या एक बोतल शराब के बदले में बहुमूल्य समूर-कोमल रोयें खरीदे जा सकते थे।

यह तो आरम्भ से ही प्रकट था कि इन बस्तियों में प्रचुर साधन हैं और इसी कारण इंगलैंड की सरकार ने इनको सीधे अपने अधीन रखा जिससे कि वह इनसे अधिक लाभ उठा सके।

इन नई तथा अविकसित बस्तियों में लोग अपने पहले देश से ही तैयार हुई वस्तुएँ पाने की आशा रखते थे, जिनका मूल्य वे ऐसा कच्चा माल भेज कर चुकाते थे जैसे तम्बाकू, लकड़ी और खालें। यह व्यापार प्रायः इंगलैंड के लिए ही लाभकर था और वास्तव में बस्तियाँ बसाने में पूँजी लगाने का कारण भी यही था। बस्तियों के लोगों को अपने कच्चे माल के लिए जो भी मूल्य मिलता वह उन्हें लेना ही पड़ता और तैयार हुई वस्तु का जो मूल्य इंगलैंड के व्यापारी माँगते वह देना पड़ता। ब्रिटेन को एकाधिकार देने के विचार से ही कानून बनते और बस्तियों के लोगों को दूसरे देशों के साथ व्यापार करने या फिर स्वयं माल तैयार करने से रोका जाता था।

परन्तु जब अंग्रेज़ों की बस्तियाँ सम्पन्न होने लगीं और स्वावलम्बी बनीं तो यत्नशील व्यापारियों को अपने पर लगे हुए प्रतिबन्धों पर खीझ आने लगी। १६६०-६३ के जलयान-क़ानून जिन्हें चार्लेस द्वितीय ने बड़ी सख्ती से लागू किया, विशेषकर न्यू-इंगलैंड को कटु तथा अप्रिय लगा। वह तो अपने उद्योग व व्यापार शुरू करके इंगलैंड के मुकाबले में आना चाहता था। इन बस्तियों का सौभाग्य था कि इन कानूनों पर सख्ती से अमल न होता था

और फ्रांस और स्पेन के अधिकृत टापुओं के साथ अवैध रूप से व्यापार होता ही रहता था।

१८वीं शताब्दी के मध्य तक इन बस्तियों की जनसंख्या पन्द्रह लाख तक पहुँच ही गई थी। यद्यपि न्यूयार्क और न्यूजर्सी में बहुत डच थे, कई स्थानों पर फ्रांस के ह्यूनाट (प्रोटेस्टेन्ट) थे और पेनसिलवेनिया में जर्मन बसे थे, परन्तु अधिक जोर अंग्रेज़ों का ही था। स्काटलैण्ड और आयरलैंड के परिश्रमी लोग भी काफी संख्या में आये। पेनसिलवेनिया से दक्षिण की ओर शेनानडोहा घाटी से होते हुए वे वर्जिनिया और कैरोलाइना की सीमाओं तक पहुँच गये।

इन स्वतन्त्र लोगों के अतिरिक्त नीग्रो गुलाम भी थे, जो अफ्रीका से लाये गये थे। इन अभागे हब्शियों के पूर्वज समुद्रपार अपने गांवों से पकड़कर जहाज़ों के अन्धेरे व दुर्गन्धमय कमरों में पशुओं की भान्ति बन्द करके अमेरिका लाये गये थे। कुछ तो न्यू-इंगलैंड में बेच डाले गये, एक बड़ी संख्या में मध्य की बस्तियों में लाये गये, परन्तु अधिकांश खेतों पर काम करने के लिए दक्षिणी प्रदेशों में भेजे गये। १७५० तक ढाई लाख के लगभग गुलाम इन बस्तियों में आ गये थे।

अमेरिका के अन्य निवासी इण्डियन लोग थे जो धीरे-धीरे पश्चिम की ओर सरकते जा रहे थे। जब श्वेत जाति के लोग सर्वप्रथम अमेरिका आये तो उनकी कुलसंख्या का अनुमान आठ लाख के लगभग था। उपनिवेशवासी इन आदि-वासियों से बहुत बुरा व्यवहार करते, प्रायः उनको धोखा भी देते। इण्डियन लोग भी कई बार आवेश में आकर अपने पर अत्याचार करने वालों के विरुद्ध युद्ध-तत्पर हो जाते और भयंकर नरहत्या करते, परन्तु औपनिवेशिक भी वैसा ही बदला लेते, कई बार तो उनकी ओर से प्रतिहिंसा अधिक भयानक होती। इतिहास में प्रतिहिंसा की सबसे भयानक घटना १६३७ में पेक्योट के युद्ध में घटी जबकि न्यू-इंगलैंड के एक सैन्यदल ने कटघरे से आवृत इंडियन नगर पर कप्तान जॉन मेसन के नेतृत्व में अचानक हमला कर दिया और बाहर निकलने के सभी द्वार बन्द करके नगर को आग लगा दी, जिसमें ५०० इंडियन स्त्री-पुरुष और बच्चे जल मरे।

मैसाचूसेट्स के प्यूरिटन लोगों का चरित्र व आचार अन्य प्रदेशों में बसे हुए लोगों से भिन्न था इसमें द्विविधता थी; उनके आचार जहाँ सराहनीय थे वहाँ भयोत्पादक भी थे। एक ओर तो प्यूरिटन शिक्षा में दृढ़ विश्वास रखते थे; हावर्ड कालेज १६३६ में स्थापित हुआ जब गांवों के बाहिर पास ही भेड़ियों का रात को चिल्लाना सुनाई देता था। और फिर १६५० में सार्वजनिक स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करना अनिवार्य कर दिया गया। पर इसके साथ ही दूसरी ओर न्यू इंगलैड के वासी धर्मोन्मत्त थे। यहां तक कि इस उन्माद में आकर उन्होंने १६६२ में मैसाचूसेट्स के सलेम नामक स्थान में मृत्युदण्ड दिये और बड़े अत्याचार किये।

न्यू-इंगलैंड के छोटे-छोटे नगरों में जीवन गिरजे, स्कूल और ग्राम के हरे-भरे मैदानों में ही केन्द्रित था। इस प्रकार गहरे सम्पर्क के कारण उनमें पारस्परिक निर्भरता के भाव अधिक होते गये; ये भाव दक्षिण के प्रदेशों में इतने प्रबल न हो सके थे। नगर की सभा में वे आपस में वातचीत करके समझौते करते और इस भान्ति स्थानीय प्रशासन की समस्याओं का समाधान करते। बहुत पहले से ही न्यू-इंगलैंड में इस प्रकार द्वेष और समता सदृश विरोधी भाव साथ-साथ पनपने लगे थे।

पोटोमेक नदी के दक्षिण में जहां कि वर्जिनिया और कैरोलाइना के वासी दूर दूर तक बसे थे, लोकतन्त्रीय स्वशासन का चलन इतना अधिक नहीं था। प्रायः सभाओं के लिए लोगों का एकत्रित करना दुष्कर था और इसका कारण केवल यही था कि वे मीलों दूर बसे थे जिससे किसी केन्द्रीय स्थान में इकट्ठे होने और वहां से घर लौटने में काफ़ी समय लग जाता। इसी कारण सार्वजनिक स्कूल चल न सके--दूरी के कारण ही उनमें बाधा आती थी; जिसका परिणाम यह हुआ कि प्रत्येक बस्ती पुराने समय के सामन्तीय उपराज्यों की तरह स्वायत्तशासित बनती गई।

इस ढंग से प्रगति करते हुए दक्षिण में अमीर और गरीब का भेद अधिक बढ़ता गया। वहां एक ओर धनाढ्य रईस थे जो अपने खेतों पर काम करने के लिए श्रमिक दासों को लगाते थे और दूसरी ओर ऐसे कृषक थे जिनमें कई

बहुत गरीब थे और उन्हें अपने हाथों कठोर परिश्रम करके निर्वाह करना पड़ता था। न्यू-इंगलैंड में जैसा मध्यवर्ग था वह यहां पर नगरों के अतिरिक्त कहीं था ही नहीं। यह विविधता दोनों प्रदेशों के भवनों में भी दृष्टिगोचर होती है। उत्तर में अधिकांश लोगों के पास साफ़ सुथरे लकड़ी के मकान थे। दक्षिण के ग्रामों में या तो बड़ी-बड़ी अट्टालिकाएँ थीं जिनके मालिक थोड़े से उपनिवेशवासी थे, जो कि अधिक उपजाऊ भूमि में रहते थे, या फिर पहाड़ी खेतों में पुराने ढंग के कमरे थे जैसे कि श्वेतजाति के किसान बड़े प्रयत्नों से बनाने की सामर्थ्य रख सके थे। जहा तक नीग्रो लोगों का सम्बन्ध है, उनके निवास का प्रबन्ध इससे अधिक कुछ न था जिसके बारे में जार्ज वाशिङ्गटन ने कहा था कि वह "इतने गुलामों के सिर छुपाने का आश्रय" है।

यद्यपि दक्षिण में धर्म को कम महत्व न दिया जाता था फिर भी वहां इसका पालन इतनी सख्ती से नहीं होता था जितनी कि न्यू-इंगलैंड में। वहाँ खेतों में जीवन सुखकर और लाभप्रद था, लोग निश्चित थे और यद्यपि कुछ दासों के साथ दुर्व्यवहार होता और वे दुःखी भी थे; फिर भी वे अधिकतर जीवन में सुरक्षित और आराम से रहने पर अधिक कठिनाई अनुभव न करते थे। धनाढ्य लोगों में नाच, शराब, शिकार, द्वन्द्व और घुड़दौड़ की मनोहर प्रवृत्ति प्रचलित थी और ऐसे आमोद-प्रमोद पर न्यू-इंगलैंड के संयमशील लोग नाक-भौं चढ़ाया करते थे। मध्य के उपनिवेशों में जहाँ बड़े-बड़े खेत थे, वहाँ मध्यम और छोटी किस्म के भी खेत थे। क्वेकर विलियम पैन के उदार नेतृत्व में पेनसिलवेनिया एक ऐसी बस्ती बन गई जहाँ वे अपने पड़ोसी इण्डियन लोगों के साथ शान्तिपूर्ण ढंग से रहते थे। कानून न्यायोचित थे; शिक्षा के साधन प्राप्य थे और इस प्रान्त में उपासना की आज़ादी थी। भ्रातृ-स्नेह का नगर फिलेडैल्फिया १८वीं शताब्दी में अमेरिका के एक प्रमुख नगर के रूप में फलने-फूलने लगा और एक बड़े मुद्रक और कूटनीतिज्ञ बैन्जमिन फ्रैंकलिन ने इस नगर की उन्नति के लिए बड़ा काम किया।

न्यूयार्क नगर शुरू से ही वणिज और व्यापार का केन्द्र बन गया था; आज इस नगर की जो व्यापारिक महत्ता है वह उन्हीं दिनों से अंकुरित होनी

शुरू हो गई थी। जिस संकीर्णता-मुक्ति और व्यापारिक चतुराई के लिए न्यूयार्क प्रसिद्ध है वे डच-शासन काल से आरम्भ होती है। इस नगर को पहले तो एक उत्तम बन्दरगाह होने के कारण बढ़ावा मिला और दूसरे हडसन नदी पर स्थित होने के कारण देश के अन्दर दूर तक इसका सम्पर्क हो गया।

देश में विभिन्न प्रकार के यह लोग जिस भाँति आगे चलकर स्वतन्त्रता के लिए एक हुए वह अमेरिका के औपनिवेशिक इतिहास का सार है। पहले तो उन्हें आपस में एक दूसरे को समझना पड़ा। परन्तु क्रान्ति से पहले और निस्सन्देह उसके बहुत साल बाद भी यात्रा करना दुष्कर था। सड़कें थोड़ी थीं और जो थीं भी वे बड़ी खराब हालत में थी। घोड़ा-गाड़ी में बैठकर कुछ सौ मील जाने में कई सप्ताह लग जाते थे। उत्तर से दक्षिणी कैरोलाइना या जार्जिया जाने का एक मात्र ठीक रास्ता अतलान्तकमहासागर के तट से होते हुए जहाज़ द्वारा जाने का था।

पृथक्-पृथक् होते हुए भी, बस्तियों में आत्मीयता बढ़ रही थी। डाक-संचार का प्रबन्ध हो गया; छपाई की मशीन मंगवाई गई। जैसे ही लोगों के पास पत्र, अख़बार और परचे जाने लगे वैसे ही धीरे-धीरे विचार-विनिमय बढ़ने लगा।

इसके अतिरिक्त ये लोग एक हज़ार मील लम्बे तट पर फैले हुए थे और आरम्भ में बहुत-सी बातें इनमें संयुक्त थीं। अधिकांश अंग्रेज थे, जो स्वशासन की अंग्रेज़ परम्पराओं को अपनाये हुए थे। उनके न्याय का काम ज्यूरी द्वारा होता और उन्हें वे सब सुविधाएँ प्राप्त थीं जो स्वाधीन अंग्रेज़ को मिलती हैं। सरकारी धन पर औपनिवेशिक सभाएं नियन्त्रण रखती और कई बार विधान-कार्य में विघ्न डालने पर ब्रिटिश सरकार द्वारा नियुक्त किये हुए गवर्नर का वेतन उन्होंने रोक लिया। ऐसा करने का साहस स्वतन्त्र अंग्रेजों के अतिरिक्त और किसको हो सकता है।

समय बीतने के साथ बस्तियाँ आपस में व्यवहार बढ़ाने और मिले-जुले हितों के बारे में सहयोग से काम करने लगीं। इस दिशा में पहला प्रयास १६४३

म हुआ जब कि मैसाचूसेट्स, प्लाइमौथ, कनैक्टिकट और न्यूहेवन के उपनिवेशों ने न्यू-इंगलैंड परिसंघ (Confederation) में मिलकर यह निर्णय किया "आपस में दृढ़ और निरन्तर मैत्री और सौहार्द्र के सम्बन्ध हों जो उचित अवसर पर आक्रमण और बचाव, आपस में परामर्श और सहायता देने के काम आयें जिससे जहाँ धर्म की सत्यता और स्वतन्त्रता को बनाये रखने और उनके प्रचार के काम हों वहाँ उनकी अपनी सुरक्षा और क्षेम का भी प्रबन्ध हो"। कई वर्षो तक न्यू-इंगलैड-परिसंघ के अधिवेशन होते रहे। अन्त में मैसाचूसेट्स और प्लाईमोथ मिलकर एक बस्ती बन गये, और इसी प्रकार कनैक्टिकट और न्यूहेवन एक अन्य बस्ती।

वर्जिनिया, मैसाचूसेट्स और न्यूयार्क के प्रतिनिधियों ने एक और पारस्परिक कल्याण की संस्था बनाई जिसका उद्देश्य व्यापार की वृद्धि ही था। यद्यपि इससे वस्तुतः कुछ भी कार्य न हो सका, फिर भी उपनिवेशों में भावी सहयोग और दृढ़ता का एक उदाहरण स्थापित हो गया।

पर जिस शक्ति ने ब्रिटिश अमेरिका को संगठित करने का काम किया वह अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियों का भयानक संघर्ष था जिसके द्वारा वे महाद्वीप पर आधिपत्य जमाने की चेष्टाएँ कर रही थीं। १६६० से पूर्व नये संसार में फ्रांस और स्पेन ने जो अपने साम्राज्य बढ़ाये उनकी ओर उपनिवेश-वासी अंग्रेज़ों ने ध्यान नहीं दिया था; परन्तु जब वे भूमि के लिए इंगलैंड के साथ पूर्ण रूप से प्रतिद्वन्दता पर उतर आये और उनकी सीमा पर स्थित प्रदेशों में छापे मारे जाने लगे; फ्रांस और स्पेन की चाकरी में लगे इण्डियन जब उन पर आक्रमण करने लगे और अन्त में जब भावी विजेताओं के आतङ्क से तट पर उनकी स्थिति के लिए आतङ्क पैदा हो गया तब लोग अपने संयुक्त खतरे के प्रति सचेत हुए और उन्होंने मिलकर काम करना शुरू किया।

१६८९ तक नये संसार में फ्रांस साम्राज्य ने कैनेडा के बहुत से भाग, मिसिसिपी नदी की घाटी और वर्तमान संयुक्तराज्य के सारे पश्चिमी मध्य-भाग को हस्तगत कर लिया था। यह प्रदेश अलेघेनी पर्वतों से लेकर रॉकी-पर्वत माला तक और फिर कैनेडा से लेकर दक्षिण में मैक्सिको की खाड़ी

तक फैला हुआ था; अलेघेनी पर्वतों के पूर्व में तटवर्ती तंग मैदान से, जिस पर अंग्रेजों का आधिपत्य था, फ्रांसीसी साम्राज्य कई गुना अधिक बड़ा था।

इस प्रदेश पर फ्रांस के अधिकार का आधार बहुत से प्रचारकों और सरदारों की ओर से की गई खोज पर था। सम्भवत: उनमें मुख्य रेने राबेरट केवेलियर था जो १६८२ में ग्रेटलेक्स से चला। उसने मिसिसिपी नदी का पता लगाया और उसके रास्ते मैक्सिको की खाड़ी तक चला गया। इस प्रकार उसने उत्तर से लेकर दक्षिण तक सारे प्रदेश की यात्रा की थी। फ्रांस के झण्डे को मिसिसिपी के मुहाने पर गाड़ कर उसने इस प्रदेश पर फ्रांस के राजा लुई चतुर्दश के लिए अधिकार किया और उसके सम्मान में इसका नाम लूईज़ियाना रखा।

यद्यपि फ्रांस-साम्राज्य नये संसार में महान् था, पर उसमें लगभग १८,००० लोग थे; इसके मुकाबले में इसके पूर्व की ब्रिटिश बस्तियों में २,००,००० अंग्रेज बसे थे। परन्तु संख्या के इस अन्तर को फ्रांस की इण्डियन लोगों को मित्र बनाने की योग्यता ने नगण्य बना दिया। इण्डियन लोगों से फ्रांसीसी भाइयों-सा बर्ताव करते, उनके यहां विवाह करते और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उनको भर्ती करके काम लेते। अंग्रेज अपने-आपको नये संसार की परिस्थितियों के अनुरूप न बना सके।

अमेरिका महाद्वीप के लिए संघर्ष १६८९ में शुरू हुआ और तीन-चौथाई शताब्दी तक रहा। इसका आरम्भ इस प्रकार हुआ कि कैथोलिक फ्रांस और प्रोटेस्टेन्ट इंगलैंड में युद्ध छिड़ गया जिसे 'विलियम का युद्ध' भी कहा जाता है। युद्ध की लपटें बहुत ही शीघ्र अमेरिका में भी पहुँच गई और अंग्रेज औपनिवेशिकों को अपनी रक्षा के लिए युद्ध करना पड़ा।

अलेघेनी पर्वत की घाटी से पश्चिम की ओर ग्रेटलेक्स तक और उत्तर में कैनेडा की सीमा तक न्यूयार्क की बस्ती फैली थी। फ्रांसीसियों ने सोचा कि यदि इंगलैंड से यह उपनिवेश छिन जाय तो अमेरिका में अंग्रेज़ों का प्रदेश दो भागों में बट जायेगा। फिर न्यूयार्क से फ्रांस की सेनाएँ अतलान्तक महासागर

के तट के साथ-साथ उत्तर और दक्षिण दोनों ओर बढ़ सकेंगी और नये संसार में अंग्रेजों का अधिकार सदा के लिए समाप्त हो जायेगा।

इसके अनुसार कैनेडा के फ्रांसीसी गवर्नर काउन्ट फरान्तेना ने कैनेडा के दक्षिण में न्यूयार्क और न्यू-इंगलैंड पर भारी आक्रमण करने का आदेश दे दिया। फ्रांसीसियों और उनके इण्डियन साथियों ने रोनेक्टाडी, न्यूयार्क, डावर और न्यू-हैम्पशायर में खूब मार-काट की। बड़े कौशलपूर्ण और विनाशक आक्रमण करके इन नगरों को तबाह कर दिया गया।

राजा विलियम का यह युद्ध १६९७ में समाप्त हुआ परन्तु यह निर्णायक सिद्ध न हो सका। इसके बाद स्पेन के उत्तराधिकार का युद्ध शुरू हुआ जिसका कारण यह था कि लूई चतुर्दश स्पेन के रिक्त सिंहासन पर अधिकार जता रहा था और उस पर अपने पोते को बिठाना चाहता था। उसे आशा थी कि ऐसा करने से प्रोटेस्टेन्ट इंगलैंड के विरुद्ध कैथोलिक फ्रांस और स्पेन को संगठित करके इंगलैंड पर विजय प्राप्त की जा सकेगी। पर इस युद्ध के लिए इंगलैंड खूब तैयार था और यूरोप की लड़ाइयों में मार्लबरो के ड्यूक ने फ्रांस को करारी हार दी। यह युद्ध अमेरिका में भी छिड़ा। कैरोलाइना और न्यू-इंगलेंड पर इण्डियन लोगों को हमले करने में कुछ सफलता मिली परन्तु १७१३ में फ्रांस को यूट्रैक्ट की सन्धि अनुसार विजयी इंगलैंड को न्यू फाऊण्डलैण्ड तथा कई अन्य महत्वपूर्ण स्थान देने पड़े।

फिर १७४४-४८ में राजा जार्ज का युद्ध हुआ जिसके अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष में अमेरिका को भाग लेना पड़ा। इसमें औपनिवेशिक सेनाओं ने बड़ा महत्वपूर्ण भाग लिया।

पहले युद्धों में अंग्रेजों ने कई बार औपनिवेशिक सेनायें भर्ती कीं और छोटी-छोटी लड़ाइयों में अपने समुद्री बेड़े से उन्हें सहायता भी दी। परन्तु इसके परिणाम अधिक अच्छे नहीं रहे थे; कारण सहयोग का अभाव था। राजा जार्ज के युद्धकाल में सेन्टलारेन्स नदी के मुहाने पर स्थित ब्रिटेन के अन्तरीप पर बना हुआ लुईबर्ग का महान् दुर्ग मेन के कर्नल विलियम पेपरल ने चार हज़ार सिपाहियों की सहायता से जीत लिया। यह सेना न्यू-इंगलैंड

की विधानसभा ने संगठित करवाई थी और कामोडोर वारेन के अधीन ब्रिटिश नौ-सेना ने इसे सहायता पहुँचाई। फ्रांस के मोर्चों पर सफल घेरा डालकर अमेरिकी लोगों ने अत्यन्त साहस और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया। जहां उन्हें इस विजय का श्रेय मिला वहां न्यू-इंगलैंड में उनके मित्रों और सम्बन्धियों को बड़ा गौरव प्राप्त हुआ।

पर जब युद्ध समाप्त हुआ तो उपनिवेशों में निरशा और क्रोध की लहर दौड़ गई--शान्तिसन्धि में लूईवर्ग फ्रांस को लौटा दिया गया और ऐसा प्रतीत हुआ कि औपनिवेशिकों के बलिदान व्यर्थ हुए। उनको सन्तुष्ट करने के लिए इंगलैंड ने महृदयता से युद्ध का व्यय दे दिया; परन्तु इससे यथेष्ट फल न प्राप्त हो सका।

नये संसार के लिए फ्रांस और इंगलैंड के बीच अन्तिम और महान् संघर्ष अब छिड़ने ही वाला था, जो इतिहास में सप्तवर्षीय युद्ध या १७५६-६३ के "फ्रांसीसी और भारतीय" युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है।

यह महान् संघर्ष न केवल उत्तरी अमेरिका वरन् सारे ससार में हुआ इसमें दोनों देशों की साम्राज्यीय महत्वकांक्षाएँ दूर-दूर जैसे कैरिबियन सागर और कहाँ भारत तक टकराईं। जहाँ दोनों प्रतिद्वन्दियों में नई मण्डियां, नई दौलत और नये उपनिवेशों की खोज में संघर्ष हुए।

इगलैंड को मालूम था कि इस युद्ध के होने से उसके भण्डार अत्यन्त क्षीण हो जायेंगे और साम्राज्य से जितनी अधिक सहायता प्राप्त की जायेगी उतना ही इंगलैंड का पल्ला भारी होने की सम्भावना रहेगी। अतः १७५४ में अमेरिकी उपनिवेशों का यह अधिकार दिया गया कि वे सारी प्राप्य शक्ति को एकत्रित करे। न्यूयार्क में एल्बानी नामक स्थान में एक सभा बुलाई गई। उसमें अमेरिका के बड़े-बड़े मनस्वी उपस्थित थे। उनमें पैनसिलवेनिया की ओर से बैन्जमन फ्रेंकलिन, रोड टापू से स्टीफन हापकिन्स और मैसाचूसेट्स से हचिस्न उल्लेखनीय हैं। वे बड़े बुद्धिमान और निष्पक्ष विचारक थे। वे यह सोचने के लिए इकट्ठे हुए थे कि फ्रांसीसी और भारतीय युद्ध से किस प्रकार

अमेरिका को बचाया जा सकता है। शीघ्र ही उन्होंने अमेरिका में अंग्रेजी बस्तियों की भावी व्यवस्था पर भी विचार करना शुरू कर दिया।

फ्रेंकलिन ने संघ की एक रोचक योजना पेश की। वह यह कि औपनिवेशिक प्रतिनिधि सभाएँ एक बृहत् परिषद् चुनें जिसमें ४८ सदस्य हों। परिषद् में प्रत्येक उपनिवेश के सदस्य उसकी दौलत और जनसंख्या के आधार पर लिये जाएँ। परिषद् का काम यह था कि एक औपनिवेशिक सेना की व्यवस्था करे, कर लगाये और राज्यों के मामलों को हल करे। इसके प्रमुख-पद पर एक बड़ा प्रधान हो, जिसे इंगलैंड के राजा नियुक्त करें और जिसे परिषद् की सम्मति से विधानकार्य पर निर्णय देने और सैन्य अधिकारी नियुक्त करने का अधिकार प्राप्त हो।

फ्रेंकलिन-योजना लगती तो क्रियात्मक थी; परन्तु वह अस्वीकृत हो गई। औपनिवेशिक गवर्नरों और प्रतिनिधि-सभाओं ने यह कहकर इसे रद्द कर दिया कि इसके द्वारा सत्ता का बहुत अधिक केन्द्रीयकरण होता है और स्थानीय सरकार के अधिकार छिनते हैं। इस योजना से इंगलैंड को यह भय था कि इससे उपनिवेशों को अपने निजी मामलों में विचार प्रकट करने की अपेक्षा उससे अधिक अधिकार मिलते हैं जितने कि उन परिस्थितियों में वांछनीय प्रतीत होते थे। यद्यपि यह अल्बानी-योजना असफल रही, परन्तु अमेरिका के इतिहास में इसका बड़ा महत्व है; क्योंकि इससे उपनिवेशों के लोगों को एक संघ का विचार मिला जिसने बाद में महाद्वीपीय काँग्रेस का रूप धारण करके स्वतन्त्रता के पहले वर्षों में शासन-भार सँभाला।

इस प्रकार यह बात उपनिवेशों पर ही छोड़ दी गई कि वे व्यक्तिगत रूप में इंगलैंड के साथ सहयोग करें या फिर फ्राँसीसी-भारतीय युद्ध में भाग न लें। अनौपचारिक रूप में यह संघर्ष पहले ही अलघेनी पर्वत के पश्चिम में ओहायो घाटी में शुरू हो ही चुका था।

ब्रिटेन और फ्राँस दोनों के लिए इस प्रदेश को अपने अधिकार में कर लेना अत्यन्त महत्व का विषय बन चुका था। यदि इंगलैंड इस पर अधिकार कर लेता तो किसी दिन उसके उत्तरोत्तर बढ़ते हुए उपनिवेश अलघेनी पर्वतों

के पार फैलकर दूर तक विस्तृत हो सकते थे। यदि फ्राँस इसे अपने अधीन कर लेता तो वह अंग्रेज़ों को उस समय तक तट पर रोक सकता था जब तक कि उसके पास इतनी शक्ति सम्पादित नहीं हो जाती जिससे वह नये संसार में अंग्रेजी सत्ता समाप्त कर डाले।

फ्राँस वालों ने जब ओहायो नदी और उसकी सहायक नदियों पर दुर्गों की एक शृङ्खला बनानी शुरू की तो वर्जिनिया के गवर्नर डिन्विड्डी ने अपने सैन्यदल के एक इक्कीस वर्षीय मेजर जार्ज वाशिङ्गटन को चेतावनी देने के लिए भेजा कि इस प्रदेश पर "तो ब्रिटेन के ताज का आधिपत्य एक मशहूर तथ्य है"। इस प्रकार अमेरिका के इतिहास में वाशिंगटन का नाम पहली बार आता है। जब वह फ्राँसीसियों को हटा न सका तो उसने ब्रिटिश अधिकार जताने के लिए फोर्ट नेसैसेटी बनाया और उसमें सेना रखी। परन्तु उसके पास इस सीमास्थित किले की रक्षा के लिए पर्याप्त सैनिक न थे, इस कारण जब फ्राँस वालों ने एक भारी संख्या में सेना लेकर इस पर आक्रमण किया तो वाशिंगटन को आत्मसमर्पण करना पड़ा।

इस पराजय पर क्रोधित होकर अंग्रेज़ों ने १७५५ में जनरल ब्रेडॉक के नेतृत्व में दो रेजिमेन्टें भेजीं ताकि वे डूक्वीन के किले से फ्रान्सीसियों को भगा दें। ब्रेडॉक ने वाशिंगटन की सलाह की अवहेलना करते हुए यूरोपीय ढंग से युद्ध करने के लिए सेनाओं को एकत्रित रखा। फ्रान्सीसी और इंडियन पेड़ों के पीछे छिपकर आक्रमण करते थे, ब्रिटिश सेना के लाल कोटों के कारण उन्होंने बड़ी सरलता से निशाने लगाये। वाशिंगटन के वीरतापूर्ण प्रयत्नों के होते हुए भी, ब्रेडॉक बुरी तरह हारा और लगभग एक हज़ार सिपाहियों के साथ खेत रहा। स्वयं वाशिंगटन की वर्दी में गोलियाँ लगीं और उसके दो घोड़े मारे गये।

इसके बाद फ्रान्स की कई और भी स्थानों पर विजय हुई; इसका मुख्य कारण अंग्रेज़ सेनाओं और औपनिवेशिक दलों में सहयोग का अभाव था। अधिकाँश औपनिवेशिक प्रतिनिधि-सभाओं ने थोड़े बहुत सैनिक दिये थे; परन्तु वे इस बात पर ज़ोर देती हुई आदेश करती थीं कि वे सैनिक कहाँ भेजे जायँ और उनका नेतृत्व कौन करे। इसके अतिरिक्त ब्रिटिश जनरल औपनिवेशिक

सिपाहियों को घटिया समझते थे और उनसे तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करते।

१७५७ में जब इंगलैंड के लिए चारों ओर निराशा फैली हुई थी, विलियम पिट युद्ध-मन्त्री बना। उसकी गणना इंगलैंड के सर्वश्रेष्ठ युद्ध-मन्त्रियों में होती रहेगी। वह बड़ा निपुण, दृढ़संकल्प और उत्साही था। उसने ब्रिटिश तथा औपनिवेशिक सेनाओं में नई जान डाल दी। उसने इन सेनाओं को उत्तर की ओर ग्रेटलेक्स तथा कैनेडा की सीमा पर भिजवाया जहाँ वे प्रचण्डतापूर्वक चढ़ दौड़ीं। फ्रान्स के बहुत से शक्तिशाली गढ़ों पर उन्होंने अधिकार कर लिया, इनमें डूक्वीन का किला भी था; जिसका नाम ब्रिटिश नेता के सम्मान में पिटस्बर्ग रखा गया।

अन्त में कैनेडा या न्यूफ्रॉस पर आक्रमण हुआ। क्यूबेक में १७५६ को एक निर्णायक युद्ध हुआ जिसमें जनरल वुल्फ ने फ्रान्सीसी कमान्डर मारक्वीस मॉन्टकाम को एक दिन पौ फटने के पहले ही आक्रमण करके हरा दिया। इस आश्चर्यजनक विजय के उपरान्त चार वर्ष तक कैनेडा में फ्रान्सीसियों को ढूँढ़-ढूँढ़ कर पकड़ा जाता रहा।

संसार में सभी जगह ब्रिटिश सेनाओं ने फ्राँस की सेनाओं को हरा दिया। जब स्पेन ने फ्रान्स को सहायता देनी शुरू की तो उस समय ब्रिटेन ने वेस्ट इण्डीज़ में स्पेन-अधिकृत स्थानों के अतिरिक्त फिलिपीन के हवाना, क्यूबा और मनीला पर अधिकार कर लिया। भारत में भी ब्रिटेन की फ्रान्स पर पूर्णरूप से विजय हुई।

१७६३ में पेरिस-सन्धि के अनुसार फ्रान्स ने समस्त कैनेडा और मिसिसिपी नदी के पूर्व का भाग इंगलैंड को दे दिया; इसमें से केवल न्यू-ओरलियनस् स्पेन को दिया गया। मिसिसिपी के पश्चिम में अपने अधिकार फ्रान्स वालों ने स्पेन को दे दिये। फ्रान्स के पास न्यूफाउन्डलैण्ड के समीप दो दुर्गहीन टापू रहे जहाँ वे मछलियाँ पकड़ने के जहाज़ी बेड़े रखते। इन पर आज तक फ्राँस का ही अधिकार है।

सप्तवर्षीय युद्ध ने नये संसार में फ्राँस के भाग्य का अन्त कर दिया, और अब अकेला स्पेन ही इंगलैंड का प्रतिद्वन्दी रह गया। परन्तु जहाँ आज

संयुक्तराज्य है वहाँ वस्तुतः स्पेन का कोई वास्तविक कब्ज़ा बहुत कम था। उसे तो मेक्सिको और दक्षिणी अमेरिका में ही अपना साम्राज्य बढ़ाने की चिन्ता थी।

अमेरिका के उपनिवेश-वासियों के लिए फ्राँस पर विजय का महत्व कई प्रकार से था। इस संघर्ष में भाग लेकर उन्होंने अन्तरौपनिवेशिक सहयोग के सम्बन्ध में बहुत कुछ सीख लिया कि किस प्रकार सेनाएँ और साधन संगठित करके एक सह-उद्देश्य के लिए युद्ध किया जा सकता है। पृथक्-पृथक् शासन वाले तेरह विभिन्न राज्यों में एकता पैदा करने में अभी कुछ वर्ष का समय चाहिए था, परन्तु इस ओर एक बड़ा क़दम इस प्रकार उठ गया।

इस युद्ध का एक परिणाम यह भी हुआ कि उपनिवेशों को अपनी शक्ति का अनुभव हुआ। अमेरिका के 'भद्दे' सिपाहियों पर ब्रिटिश कितना भी नाक-भौं क्यों न चढ़ायें, यह एक सत्य है कि औपनिवेशिक सेनाओं ने प्रत्येक युद्ध में सुशिक्षित ब्रिटिश सैनिकों के साथ-साथ बड़ी योग्यता से काम किया था और यह भी सत्य है कि ब्रिटिश सरकार ने अमेरिका में जो सैनिक भेजे थे, जार्ज वाशिंगटन उनमें से किसी से भी अच्छा सैनिक था।

अन्त में इस युद्ध से अलेघनी पर्वतों के पश्चिम की ओर महाद्वीप के अन्दर दूर तक विस्तार के लिए सम्भावनाएँ पैदा हो गईं। सैकड़ों मील तक वहाँ नये प्रदेश और नये अवसर खुले पड़े थे, और इस महान् प्रदेश में आज़ादी और अवसर की समानता का अमेरिकी आदर्श सबके लिए प्राप्त हो सकता था।

अध्याय ३

स्वतन्त्रता की प्राप्ति

अमेरिकी क्रान्ति के कारणों के सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा गया है कि किस प्रकार राजा जार्ज तृतीय तथा पार्लिमेण्ट ने उपनिवेशों को अधिकारों तथा स्वतन्त्रताओं से वंचित किया, सरकार में उनके प्रतिनिधि लिये बिना उन पर कर लगाये, उनके घरों में सैनिक टुकड़ियाँ बिठा दीं और अन्त में उनको क्रान्ति के लिए विवश कर दिया। ये तो केवल बाह्य लक्षण थे; उसके आधारभूत कारण कुछ और ही थे। उनमें से सम्भवतः मुख्य कारण ब्रिटिश साम्राज्य और उपनिवेशों के उसके साथ सम्बन्धों के बारे में सैद्धान्तिक मतभेद था।

अमेरिका में लोगों का विचार था कि उनके तेरह उपनिवेश ब्रिटिश साम्राज्य के ही स्वायत्तशासित विभाग हैं; ठीक उसी भाँति जैसे आज कैनेडा और आस्ट्रेलिया उपनिवेश ब्रिटिश ताज के वफ़ादार हैं। इन बस्तियों में रहने वाले लोग अंग्रेज़ थे और उन्हें समानता के वे सभी अधिकार प्राप्त थे जिनके लिए अंग्रेज़ मैगनाकार्टा (विशिष्ट संविधान-पत्र) के समय से प्रयत्नशील रहे थे। अमेरिका के लोग अपनी प्रतिनिधि सभाओं की प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजे गये शाही गवर्नरों की उपस्थिति को स्वीकार करने के लिए उसी समय तक तैयार थे जब तक कि वे प्रतिनिधि सभाओं की इच्छानुसार काम करते। प्रायः होता भी ऐसा ही था क्योंकि उन्हें अपने वेतन के लिए उपनिवेशों पर ही निर्भर रहना पड़ता था। स्थानीय झमेलों में वे दूरस्थ और व्यस्त राजा की सहायता और उसके समर्थन पर अधिक भरोसा न कर पाते थे।

जिन दिनों जेम्सटाउन नगर बसा, तभी इन बस्तियों के सम्बन्ध में ब्रिटिश सरकार का दृष्टिकोण इससे कुछ भिन्न था। इन उपनिवेशों को पूर्ण स्वराज्य

का अधिकार नहीं था और उनके लोग ब्रिटेन में रहनेवाले राजभक्त अंग्रेज़ों के बराबर नहीं समझे जाते थे। उनका काम मुख्यतः यह था कि माल के लिए नई मण्डियाँ बनाकर और ब्रिटिश उद्योग के लिए कच्चे माल का प्रबन्ध कर इंगलैंड का हित करें। इंगलैंड को दीर्घकालीन युद्धजनित विकट परिस्थितियों के कारण लगभग १५० वर्ष कठिनाई रही और इस अवस्था में उपनिवेशों पर दृढ़ता से शासन कर उनसे धन प्राप्त करने का काम सरल न था। परन्तु १७६३ में फ्रान्स और स्पेन को हरा देने के बाद ब्रिटिश सरकार के लिए अपनी आस्तीनें चढ़ा कर अपनी सत्ता का प्रदर्शन करने का समय आ गया था।

यही समय था जब जलयान-सम्बन्धी कानून को लागू करके अमेरिका के व्यापारिक हितों को मातृभूमि इंगलैंड के हित के लिए दबाया जा सकता था। युद्ध से रिक्त हुए ब्रिटिश कोष को नये कर लगाकर फिर से भरने का समय भी अभी आया था।

इंगलैंड और अमेरिका के बीच संघर्ष में कौन ठीक था और कौन 'ग़लत'? इसका कोई उत्तर नहीं हो सकता। अमेरिका का विचार था कि साम्राज्य में राजभक्त, स्वतन्त्र उपनिवेशों का एक संघ होना चाहिए; उधर इंगलैंड को सशक्त केन्द्रीय सरकार में आस्था थी। दोनों पक्ष अपने-अपने हित की करते और जो कुछ परिणाम हुए उन पर दोनों को बड़ी मिथ्या धारणाएं थीं। जैसा कि प्रायः हुआ करता है दोनों ओर के उग्रवादियों ने अन्त में झगड़ा बढ़ा ही दिया।

जब से अमेरिकी स्वतन्त्र हुए तब से ब्रिटेन ने वही विचार अपना लिया है, जिसे अमेरिकी प्रतिनिधियों ने पेश किया था। स्वाधीन देशों की ब्रिटिश कामनवेल्थ में बहुत-सी बातें वही हैं जो कि बेन्जमिन फ्रेंकलिन ने ब्रिटिश सरकार को मनवाने की असफल चेष्टा उस समय की थी जब कि वह १७६० के उपरान्त असन्तुष्ट उपनिवेशवासियों के प्रतिनिधि के रूप में लन्दन गया था।

समूचे साम्राज्य के बारे में इंगलैंड यही सोचता था कि वह ब्रिटिश ताज के अधीन है और वह स्वायत्तशासित खण्ड नहीं है। इसका प्रमाण चीनी

और शीरे के व्यापार सम्बन्धी क़ानून से मिल गया, जिससे अमेरिका के व्यापार पर प्रतिबन्ध लगाया गया था। न्यू-इंगलैंड विशेषकर फ्राँस अधिकृत वेस्ट इण्डीज़ से व्यापार कर शीरा मंगवाता था, उस शीरे से शराब तैयार की जाती और वह शराब बेचने से न्यू-इंगलैंड बड़ा लाभ उठाता था। इस व्यापार में न्यू-इंगलैंड वालों ने ब्रिटिश इण्डीज़ से कोई सम्बन्ध न रखा था, जहाँ उनका माल उतने मँहगे दामों न बिकता। ब्रिटिश वेस्ट इण्डीज़ के खेतिहरों की इस शिकायत पर कि उनके व्यापार को क्षति पहुँच रही है, पार्लिमेण्ट ने न्यूइंगलैंड पर दबाव डाला कि वह फ्राँस के टापुओं के बजाय वेस्ट इण्डीज़ के साथ व्यापार करे और अपने "परिवार में ही सारा व्यापार रखे"। इस उद्देश्य से पार्लिमेण्ट ने फ्राँस से आने वाले माल पर भारी कर लगा दिये।

पश्चिमी प्रदेश के अधिकार में आ जाने से ब्रिटेन के सामने एक और समस्या खड़ी हो गई जिसने अमेरिका पर नियन्त्रण कड़ा करने के लिए विवश कर दिया और जिससे तनाव बढ़ने लगा। इन नये प्रदेशों में हारे हुए फ्राँसीसी और उनके साथी इण्डियन बसे हुए थे, जिन्हें अपने विजेताओं के प्रति कोई लगाव न था। फ्राँसीसियों ने इण्डियन लोगों को भड़काया और बहकाया कि उन्हें जल्दी ही अंग्रेज़ अपने घरों से भगा देंगे। इस पर इण्डियन लोगों ने अपने योग्य नेता चीफ पोन्टयाक के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया और कई ब्रिटिश किलों पर अधिकार कर लिया।

प्रकट है कि इन परिस्थितियों में पश्चिमी प्रदेश में पूर्वी प्रदेशों की भाँति स्वशासन स्थापित नहीं हो सकता था। वहाँ तो सेनाओं, शिविरों और अलेघनी पर्वत के पार बसनेवाले विरोधी लोगों पर कड़ा नियन्त्रण रखने की आवश्यकता थी।

इसके अनुसार जार्ज तृतीय और उसके मन्त्रियों ने पश्चिमी प्रदेशों का शासन अपने हाथ में ले लिया और वहाँ पर और अधिक बस्तियाँ बसाने का निषेध कर दिया। जो लोग पहले ही अलेघनी पर्वतों के पार चले गये थे, उन्हें पूर्व को लौट आने की आज्ञा दी गयी। राजा की ओर से यह भी

घोषणा की गई कि भविष्य में इण्डियन लोग भूमि का विक्रय सीधा ब्रिटिश सरकार को करेंगे और ब्रिटिश सरकार की ओर से समूर-ऊन का व्यापार करने के लिए अपने प्रतिनिधि भी नियुक्त कर दिये गये। यह व्यापार अत्यन्त लाभप्रद था। इस पर अमेरिकी बड़े निराश हुए और क्रोध में आकर उन्होंने इसके विरोध में प्रदर्शन भी किया।

यदि पक्षपात रहित होकर देखा जाय तो ऐसा प्रतीत होता है कि राजा के ये कार्य किसी हद तक तर्कसंगत और आवश्यक थे। यदि उपनिवेशवासियों को अन्धाधुन्ध पश्चिम की ओर बढ़कर भूमि का और वहाँ के वासियों का शोषण करने दिया जाता तो उसका परिणाम अस्तव्यस्तता ही होता। दूसरी ओर यह भी कहा जा सकता है कि राजा और उसके मन्त्री अमेरिका के लोगों को बिल्कुल ही पृथक् रख अधिक मनमानी कर रहे थे। उनकी सेनाओं ने भी फ्रांस को हराने में मदद दी थी और वे आशा करते थे कि विजय के लाभ में वे भी सहयोगी होंगे।

पर अब ये साधन अमेरिकी उपनिवेशों के अधिकार में नहीं बल्कि ब्रिटिश ताज के अधीन थे। इससे बुरी बात अमेरिकनों के लिए यह हुई कि नये संसार में प्राप्त किये हुए हितों की रक्षा के लिए कई हज़ार रेडकोट सेना इंगलैंड से भेजी गई और उसके ख़र्च का एक भाग उपनिवेशों को देना पड़ा। इस पर ही उपनिवेशों में बसने वालों के कष्ट समाप्त नहीं हुए, इंगलैंड ने क्वार्टरिंग ऐक्ट के द्वारा उन्हें यह आज्ञा दी कि सिपाहियों को निवास-स्थान तथा खाना देने में सहायता दी जाय।

उपनिवेशों पर नियन्त्रण करने के लिए ब्रिटिश सरकार द्वारा किये गये प्रत्येक यत्न पर लोगों में तब जो उत्तेजना प्रदर्शित होती थी; उससे राजा और पार्लिमेण्ट को यह चेतावनी हो जानी चाहिए थी कि वे सावधानी से काम लें। दूसरी ओर अमेरिका के लोगों को स्वतन्त्र नागरिकों के रूप में अपने अधिकारों का इतना अनुभव था कि लेशमात्र नियन्त्रण पर भी वे चिल्ला उठते, सूई की चुभन को तलवार का प्रहार समझते थे।

१७६४ में ब्रिटेन का प्रधान मन्त्री जार्ज ग्रेनविल था; उसे अमेरिका के सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञात न था और जो कुछ उसने सुन रखा था, उससे वह अमेरिका से घृणा करता था। कस्टम आफ़िसर तथा नौ सेना के दल भेजकर एक ओर तो उसने नैवीगेशन ऐक्ट (जहाज़रानी कानून) का कठोर नियम पालन कराना शुरु किया, तो दूसरी ओर अखबारों, पुस्तिकाओं और अदालती-पत्रों पर स्टैम्प-कर लगाने की योजना बनाई, जिसकी आमदनी से ब्रिटिश सेना का खर्च चलाने की व्यवस्था की।

जब पार्लिमैण्ट में स्टैम्प ऐक्ट पास हुआ तो अतलान्तकमहासागर के दोनों ओर किसी ने भी यह कल्पना न की थी कि इस पर इतना बखेड़ा खड़ा हो जायेगा। उदाहरणत: बैंन्जमिन फ्रेंकलिन ने स्वयं अपने दो मित्रों को सलाह दी कि वे स्टैम्प बेचने वालों के पद के लिए आवेदन-पत्र दें; उसने यही सोचा था कि इस कार्यवाही पर कोई गड़बड़ न होगी।

परन्तु देश के सभी भागों में तत्काल इस ऐक्ट का विरोध शुरू हो गया। वर्जिनिया का पैट्रिक हैनरी बर्गीज सभा में ही आपे से बाहर हो गया और उसने घोषणा की कि वर्जिनिया के लोगों पर कर लगाने का अधिकार वर्जिनिया की प्रतिनिधि सभा के सिवाय किसीको नहीं है। बड़े आवेश में आकर हैनरी ने एक प्रस्ताव पास करवाया जिसमें कहा गया था "इस प्रकार के अधिकार में यदि किसी व्यक्ति या किन्ही व्यक्तियों को देने की चेष्टा हुई....तो वह कानून के विरुद्ध अवैध और अन्यायपूर्ण होगा और ऐसी चेष्टा में ब्रिटिश और अमेरिकी दोनों में स्वतन्त्रता का हनन करने की प्रवृत्ति स्पष्ट है।"

मैसाचूसेट्स में स्टैम्प एक्ट का विरोध बढ़ा वहाँ पर जेम्स ओटिस और सैम्युल ऐडम्स के प्रयत्नों ने जलते पर तेल का काम किया। ऐडम्स में नेता के गुण थे, और उसने बिटेन की व्यापार-व्यवस्था की निन्दा करके नाम पैदा कर लिया था। ब्रिटिश सिंह पर उत्तेजना में आकर आक्षेप करते हुए उसने कहा था नियमानुकूल प्रतिनिधि लिये बिना, कर लगा देना लोगों को गुलाम बनाने का ढंग है।

न्यू-इंगलैंड, न्यूयार्क और पेनसिलेवेनिया में दंगा हो गया। सार्वजनिक दबाव में आकर स्टैम्प बेचने वाले अपने पद छोड़ गये। अधिक गड़बड़ और मारपीट को बड़ावा देने के लिए "आज़ादी के सपूतों" के स्वतन्त्रता-प्रिय दल संगठित किये जाने लगे। स्टैम्प ऐक्ट पर विचार करने लिए बुलाई गई एक सभा में नौ उपनिवेशों ने उसी भाँति विरोध किया जैसा कि वर्जिनिया ने किया था और यह दावा किया कि उपनिवेशों पर उनकी प्रतिनिधि-सभाएँ ही कर लगा सकती है अन्य कोई नहीं।

समुद्रपार के साधारण अंग्रेज को बस्तियों में इस हड़बड़ी पर पहले तो विश्वास ही न होता था और जब विश्वास हुआ तो इसे बिल्कुल अयुक्त समझा जाने लगा। वे समझते कि साम्राज्य पर शासन पार्लिमेण्ट का ही है, और प्रत्येक के हितों की रक्षा वही करती है। निस्सन्देह इंगलैंड के कई भाग ऐसे भी थे जिनका पार्लिमेण्ट में कोई प्रतिनिधि नहीं था, परन्तु सभी प्रभावशाली वर्गों—व्यापारी, कृषक और पेशावरों—को हाऊस आफ़ कामन्स में अपने विचार पहुँचाने के साधन होने के कारण इसकी पर्याप्त गारंटी थी कि वहाँ सभी के लोकतन्त्रीय अधिकारों का मान होता है।

देश के सभी वयस्क नागरिकों को मताधिकार देने का विचार अभी परिपूर्ण नहीं हुआ था, इसके लिए तो १८वीं से लेकर २०वीं शताब्दी तक वादानुवाद चलते रहे। इस दिशा में एक पग अमेरिकी लोगों का यह अनुरोध भी था कि जब तक प्रदेश-विशेष के प्रतिनिधि सरकार में न हों उस पर कर न लगाये जाएँ। इंगलैंड और अमेरिका की तात्कालिक राजनीतिक विचारधाराओं में यह बुनियादी मतभेद था जिसको अन्त में युद्धभूमि में जाकर ही निबेड़ना पड़ा था।

एक वर्ष लागू रहने के उपरान्त स्टैम्प ऐक्ट मन्सूख कर दिया गया। इस पर अत्यन्त हर्ष मनाये गये पर शीघ्र ही नये कानून बनाये गये जो कि अमेरिकी लोगों को उतने ही अप्रिय और असह्य थे। टाउनशेन्ड ऐक्ट के अनुसार न केवल काँच, सीसे, रोगन, कागज़ और चाय के आयात पर कर लगाये गये बल्कि यह भी व्यवस्था की गई कि इन से जो आमदनी हो वह ब्रिटिश सरकार की

ओर से नियुक्त गर्वनरों के वेतन देने में बर्ती जाए। इस प्रकार औपनिवेशिक विधान सभाओं का गवर्नरों पर अधिकार न रहा और ऐसा करके पार्लिमेण्ट ने यह भी दिखा दिया कि वह अमेरिका के मामलों में और अधिक नियन्त्रण रखने की सोच रही है।

सारे अमेरिका में फिर से विरोध हुआ। सैम्युल ऐडम्स ने उपनिवेशों के नाम एक पत्र भेजा जिसमें टाउनशेन्ड ऐक्ट्स और नेवीगेशन एक्ट (जहाज़ी कानून) के विरुद्ध प्रारम्भिक कार्यवाही करने के लिए कहा गया था क्योंकि इन कानूनों से अमेरिकी वणिज को क्षति पहुँच रही थी। अंग्रेज़ी माल का बहिष्कार करने का आन्दोलन ज़ोर पकड़ गया। इस पर ब्रिटेन क्रोधित हो उठा। मैसाचूसेट्स की विधानसभा को तोड़ दिया गया और ब्रिटिश सेना की दो पलटनें बोस्टन भेज दी गई।

मार्च १७७० में इंगलैंड ढीला पड़ गया और उसी रोज़ जिस दिन कि ये पलटनें बोस्टन भेजी गई, उसने और तो सभी कर हटा दिए। केवल थोड़ा सा कर चाय पर रखा। परन्तु ब्रिटिश सिपाहियों और अमेरिकी लोगों में एक टक्कर हो गई जो कि अमेरिका के देशभक्तों की भाषा में 'बोस्टन-हत्याकाण्ड' के नाम से मशहूर है। कुछ युवकों ने एक प्रहरी पर बर्फ के गोले फेंके। प्रहरी ने रक्षक दस्ते को बुला लिया। पहले तो इस झगड़े में बर्फ और मुक्कों से ही काम लिया गया, परन्तु अन्त में घबराये हुए ब्रिटिश सिपाहियों ने गोली चला दी। इस 'हत्याकाण्ड' में पाँच बोस्टन निवासी मारे गये, जिसका परिणाम यह निकला कि सैम्युल ऐडम्स की मांग पर ब्रिटिश सिपाहियों को इस नगर से हटा लिया गया।

इंगलैंड का उपनिवेशों के प्रति व्यवहार बदलता रहा। कभी सख्त तो कभी नर्म। क्रान्ति से दस वर्ष पहले से यही हालत चली आ रही थी, इससे यह विदित होता है कि ब्रिटेन की नीति के निर्धारक इस सम्बन्ध में सहमत नही थे कि अमेरिका के प्रति क्या रवैया होना चाहिए। विलियम पिट्ट और लार्ड नार्थ जैसे नेता समझौते के पक्ष में थे, और उन्होंने यही यत्न किया कि ग्रेन्विल और टाउनशेण्ड जैसे उग्र मन्त्रियों की ओर से लगाये गये कर या तो

हटा दिये जायँ या फिर उनमें उचित संशोधन किया जाय। इंगलैंड के व्यापारी-वर्ग के प्रतिनिधि ह्विग दल में अमेरिका के प्रति प्रचुर सद्भावना थी। वे सम्पन्न और सन्तुष्ट अमेरिका के साथ व्यापार करने के पक्ष में थे; ऐसे देश के साथ नहीं जिसके लोग क्रोध में आकर विद्रोह पर उतर आये और उनके माल का बहिष्कार कर दें।

दूसरी ओर अमेरिका में ब्रिटेन के प्रति काफी सद्भावना थी, विशेषकर धनाढ्य वर्गों में। वे स्वतन्त्रता के पक्षपातियों की ओर से कराये गये दंगों तथा बहिष्कार के विरुद्ध थे, क्योंकि गड़बड़ से व्यापार को हानि पहुँचती है।

क्रान्ति से पूर्व अधिकाँश अमेरिकी लोगों का भाव इंगलैंड के प्रति कुछ ऐसा था कि जब कर-कानून बनाये गये तो वे उत्तेजित हुए और जब उन्हें मन्सूख कर दिया गया तो उन्होंने सन्तोष और कृतज्ञता के भाव प्रकट किये। साधारण अमेरिकी को इंगलैंड से पूर्ण स्वाधीन हो जाने की अधिक इच्छा न थी; वह तो केवल यह चाहता था कि अपने खेत या अपनी दुकान पर आज़ादी से काम करे और शान्ति से अपना निर्वाह करे। ऐसा प्रतीत होता है कि इतिहास की गति के निर्णायक प्रायः उग्र व्यक्ति रहे हैं। जब वे शान्ति-प्रिय लोगों में सैद्धान्तिक मतभेद देखते हैं तो उसे बढ़ाने का भरसक प्रयास करते हैं, यहाँ तक कि समस्या का मार-काट के सिवा कोई हल बाकी नहीं रहता।

अमेरिका में उत्तेजित अतिवादियों का एक सबसे बड़ा कारनामा 'बोस्टन चाय पार्टी' के नाम से प्रसिद्ध है। यह घटना १७७३ में हुई। ईस्ट इण्डिया कम्पनी आर्थिक संकट में थी और उसने चाय निर्यात् की थी। पार्लिमेण्ट के प्रबन्ध में यह चाय लाई गई। राजा जार्ज और पार्लिमेण्ट में उसके खुशामदियों ने यह निर्णय किया कि कम्पनी की इतनी अधिक फालतू चाय का निपटारा ऐसे किया जाय कि सस्ते दामों अमेरिका में बेच दी जाय। यद्यपि एक पौंड चाय पर तीन पेन्स का महसूल लिया गया फिर भी यह इतनी कम कीमत पर दी जा रही थी कि अमेरिका में लोगों को इससे सस्ती कहीं नहीं मिल सकती थी।

परन्तु अमेरिका के देशभक्तों का ध्यान सस्ते दामों पर नहीं गया बल्कि इसके सिद्धान्त पर गया कि उन्हें महसूल देना पड़ रहा है। जब चाय पहुँची

तो 'एकाधिकार' और 'पार्लिमेण्ट टैक्स न लगाये' के नारे लगाते हुए उन्होंने उसे लेने से इन्कार कर दिया। बोस्टन में बहुत-सी सार्वजनिक सभाएँ हुई जिनके उपरान्त कुछ नागरिक इण्डियन वेष बदलकर जहाज़ों में गये और उनमें भरी हुई चाय को उन्होंने समुद्र में फेंक दिया।

इस उग्र कार्यवाही पर राजा जार्ज अत्यन्त उत्तेजित हुआ। बस्तियों से तो उसे सहानुभूति कभी थी ही नहीं, उसने अब मैसाचूसेट्स और विशेषकर 'अपराध' के घटनास्थल बोस्टन को दण्ड देने का निश्चय कर लिया। जब १७७४ में पार्लिमेण्ट का अधिवेशन हुआ तो इसमें राजा की माँगों को स्वीकार करते हुए 'असहिष्णु क़ानून' पास किये जिनके द्वारा बोस्टन में समुद्र के रास्ते व्यापार करने का उस समय तक निषेध कर दिया गया जब तक कि चाय का मूल्य चुकता नहीं कर दिया जाता। नगर में सभाओं पर गवर्नर का नियन्त्रण हो गया। मैसाचूसेट्स जनरल गेज के अधीन ब्रिटिश सैन्य का गढ़ सा बन गया।

घटनाचक्र की इस तेज़ी पर चौंक कर अन्य उपनिवेश मैसाचूसेट्स की सहायता के लिए इकट्ठे हो गये, उन्होंने सहानुभूति प्रकट की और अत्यावश्यक खाद्य पदार्थ भेजे जिनकी उपनिवेश में बड़ी आवश्यकता थी। आन्दोलन बढ़ते ही वर्जिनिया की लोक सभा ने सभी उपनिवेशों के प्रतिनिधियों का फिलेडेल्फ़िया में एक अधिवेशन बुलाने का सुझाव रखा। महाद्वीप की इस प्रथम कांग्रेस अधिवेशन सितम्बर १७७४ में हुआ और इसमें मैसाचूसेट्स के जॉन ऐडम्स और सैम्युल ऐडम्स, वर्जिनिया के जार्ज वाशिंगटन और पैट्रिक हैनरी और दक्षिणी कैरोलाइना के जॉन रूटलेज और क्रिस्टोफर गेडस्डेन भी सम्मिलित थे।

कांग्रेस के अधिवेशन सावधानी, धैर्य और गम्भीरता से काम लिया गया। इसे बुलाने का उद्देश्य था "उपनिवेशों की वर्तमान स्थिति पर विचार करना·· ·उनके न्यायोचित अधिकारों और स्वतन्त्रताओं की पुनः प्राप्ति और स्थापना के लिए उचित और ठीक विधियों पर विचार करना· और ग्रेट ब्रिटेन तथा उपनिवेशों के साथ फिर से एकता और अच्छे सम्बन्ध बनाना, जिनकी सभी सत्पुरुषों को उत्कट इच्छा है।" एक अधिकार घोषणापत्र तैयार

करके इंगलैंड भेजा गया। इसमें पार्लिमेण्ट की ओर उनकी आज़ादी पर अतिक्रमण के विरुद्ध उपनिवेशवासियों की ओर से रोष प्रकट किया गया था और यह घोषणा की गई थी कि हर नगर और गाँव-गाँव में सुरक्षा समितियाँ ब्रिटिश माल का बहिष्कार करायेंगी। इन समितियों को ब्रिटिश माल का उपयोग करनेवालों की सूचना देनी थी जिससे काँग्रेस को पता चल सके कि अमेरिका के हित का शत्रु कौन है और सहायक कौन; जिन लोगों को उपनिवेशों में होने वाली बुराइयों में रुचि न थी, उनको डराने के लिए यह एक अच्छी चाल थी। और अन्त में यदि सारी गड़बड़ समाप्त न हो तो मई १७७५ में एक और सम्मेलन बुलाने का निश्चय किया गया था।

गड़बड़ समाप्त न हुई। मैसाचूसेट्स में तनाव ज़ोरों पर था और उस क्षेत्र के स्वयंसेवक दल ने कनकार्ड में गोला बारूद का संग्रह किया। ये स्वयंसेवक 'मिनट-मैन' कहलाते थे क्योंकि एक मिनट की सूचना पर लड़ाई के लिए तैयार हो जाते। १९ अप्रैल १७७५ को जनरल गेज ने इस युद्ध-सामग्री के संग्रह पर अधिकार करने और 'विद्रोही' जॉन हैनकॉक और सैम्युल ऐडम्स को गिरफ्तार करने की आज्ञा दे दी।

देशभक्त पाल रैवरी और विलियम डावेस एक रात पहले ही घोड़ों को दौड़ाते हुए वहाँ पहुँचे और स्वयंसेवकों को सचेत कर दिया जिनकी एक छोटी टुकड़ी ने ब्रिटिश सेना का मार्ग रोक लिया। 'तितर-बितर' होने की आज्ञा का पालन होते न देखकर ब्रिटिश सेना ने गोली चलादी। गोली की यह आवाज एकदम दुनियाभर में फैल गयी; और क्रान्ति आरम्भ हो गई। इस भिड़न्त में आठ अमेरिकी मारे गये।

ब्रिटिश सेना बिना किसी बड़े विरोध के कनकार्ड तक बढ़ गई, परन्तु जब वह वापस लौटी तो पहली ही भिड़न्त में स्वयंसेवकों की हानि की अपेक्षा ब्रिटिश सेना की कई गुना अधिक क्षति हुई। सेब के पेड़ों और सड़क पर पत्थर की बाढ़ के पीछे छिप कर लड़ाई के लिए तैयार हुए किसानों ने मार्च करते हुए ब्रिटिश सिपाहियों पर गोलियाँ चलाईं और बहुत-से सिपाहियों को अपना निशाना बनाया। अन्त में जब बड़े संघर्ष के उपरान्त वे शहर में पहुँचे

तो उन्हें ज्ञात हुआ कि १६,००० औपनिवेशिक स्वयंसेवकों ने उनको घेरे में ले लिया है ।

लड़ाई शुरू होने की खबर शीघ्र ही अन्य उपनिवेशों में पहुँच गई । इस पर लोगों ने मिश्रित भाव ही प्रकट किये । कई लोगों को युद्ध छिड़ जाने की खुशी हुई, दूसरों ने स्वयंसेवकों के उतावलेपन की निन्दा की, परन्तु अधिकाँश लोगों को यही आशा थी कि अब भी कोई न कोई शान्तिपूर्ण समझौता हो जायेगा ।

बड़ी अनिश्चितता में १० मई को द्वितीय महाद्वीपीय काँग्रेस की बैठक हुई । इसमें जहाँ इंगलैंड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की गई, वहाँ राजा जार्ज से यह प्रार्थना की गई कि वह शान्ति स्थापित करें । फिर भी सावधानी के लिए उन्होंने सेना खड़ी करने की योजनाओं पर अमल शुरू कर दिया और जार्ज वाशिंगटन को प्रधान सेनापति बना दिया। मैसाचूसेट्स में शुरू हुए युद्ध में नेतृत्व करने के लिए एक वर्जीनिया-निवासी को चुनना यह सिद्ध करता है कि उपनिवेश, सहयोग और एकता की ओर अग्रसर हो रहे थे ।

दूसरी ओर ब्रिटिश अधिकारियों ने शान्ति के लिए औपनिवेशकों की ओर से बेदिली से की गईं प्रार्थनाओं को अस्वीकार कर दिया, और द्रोह को सैनिक शक्ति से दबा देने की तैयारी की । राजा जार्ज ने हैसे, अन्हाल्ट और ब्रन्सविक के राजाओं से २०,००० जर्मन सिपाही किराये पर मंगा कर अमेरिका में अपनी सैन्य-शक्ति को बढ़ा लिया

इसके साथ-साथ अमेरिकी सेनाओं ने देश के विभिन्न भागों में लड़ाई शुरू कर दी । बोस्टन में उन्होंने बंकर हिल पर अधिकार कर लिया । और ब्रिटिश सेनाओं ने बड़े आक्रमण किये, यहाँ तक कि उनका गोलाबारूद समाप्त हो गया फिर भी अमेरिकी सेनाएँ वहीं डटी रहीं । कुछ समय बाद एक सेना कैनेडा पर आक्रमण करने के लिए भेजी गई, उसने माँट्याल पर अधिकार कर लिया; पर बाद में पराजित हुई । परन्तु इसके साथ ही दूसरी ओर अमेरिकी सेनाओं ने नारफोक, वर्जिनिया, चार्लेस्टन और दक्षिणी कैरोलाइना में ब्रिटिश सेनाओं को हरा दिया ।

अमेरिकी लोगों ने स्वतन्त्रता के लिए उतावलेपन से काम नहीं लिया। वे बड़ी अनिच्छा से इसके लिए विवश हो गये। १७७५ की लड़ाइयों में उनका उद्देश्य केवल यही था कि अमेरिकी हैसियत में नहीं, बल्कि अंग्रेज़ों की हैसियत में वे अपने अधिकारों की रक्षा कर सकें। यहाँ तक कि जनरल वाशिंगटन ने बोस्टन में सेना की कमान सम्हालते समय घोषणा की थी कि आज़ादी प्राप्त करना इस समय मेरे निकट एक घृणित विचार है।

इस क्रान्ति में किसी भी समय युद्ध करने योग्य सभी व्यक्ति सम्मिलित नहीं हुए, और इस प्रकार इसने राष्ट्र भर के युद्ध का पूर्ण रूप कभी धारण न किया। ३० लाख की कुल जनसंख्या में से वाशिंगटन की सेना में कभी भी २५,००० से अधिक सैनिक नहीं हुए और बुरे से बुरे समय में भी उनकी संख्या ३,००० से कम न थी। अमेरिका के किसान कभी सेना में भर्ती होते तो कभी छोड़ जाते, जब उनके घरों पर शत्रु का भय हो जाता तो वे सेना में शामिल हो जाते और जब खतरा टल जाता तो वे सैनिक सेवा छोड़ कर अपने घरों को चले जाते।

दूसरी ओर बहुत से अमेरिकी लोग ब्रिटेन के पक्ष में हो गये। इस प्रकार यह क्रान्ति कुछ-कुछ गृह-युद्ध का रूप धारण करने लगी थी। इनमें से अधिक लोग उच्च वर्गों में से थे, जिन्हें अमेरिका में लोकतन्त्रीय शासन का भय था। वे डरते थे कि कहीं अमेरिका में 'भीड़ का राज्य' न हो जाये। उन्हें राजा जार्ज और उसके क्रोधित मन्त्रियों का इतना भय नहीं था।

सैम ऐडम्स-पैट्रिक हैनरी-सदृश स्वप्नदर्शी देशभक्तों का दल १७७५—८१ में युद्ध-कार्य को बढ़ावा देता रहा। उन्होंने पूर्ण स्वतन्त्र अमेरिकी स्वाधीनता की कल्पना की थी। निःसन्देह वे स्वप्नवादी थे, उन्होंने यह न सोचा था कि मार्ग में कितनी बाधाएँ आयेंगी, परन्तु उन्हें अपने ध्येय में पूर्ण विश्वास था जिसके लिए उन्होंने कटिबद्ध रहने का निश्चय कर लिया था। इन देशभक्तों और आन्दोलन चलानेवालों ने क्रान्तिकारी समितियाँ सुगठित की थीं, जिन्होंने प्रतिनिधि सभाओं को लड़ाई के लिए प्रेरित किया। राजभक्ति की भावना

को निष्ठुरता से दबा दिया गया और उत्साहहीन लोगों पर ज़ोर डाला गया कि वे आगे बढ़कर अपनी स्वाधीनता के लिए लड़ें।

सब से बड़े क्रान्तिकारियों में एक अंग्रेज टामस पेन भी था। वह १७७४ में फिलेडैल्फ़िया गया और उसने शीघ्र ही ग्रेट ब्रिटेन से पूर्ण आज़ाद हो जाने के विचार का दृढ़ समर्थन किया। पेन एक बड़ा अच्छा लेखक था और वह राजकीय शासन-पद्धति के इतना विरुद्ध था कि उसके नाम से भी चिढ़ता था। जनवरी १७७६ में अपनी एक पुस्तिका 'कॉमन सेन्स' में पेन ने अमेरिका के लोगों को बताया कि उनकी सारी स्थिति बेमेल और असंगत है—एक ओर वे राजा की सेनाओं से युद्ध कर रहे हैं और दूसरी ओर उसके साथ मेल-जोल के लिए कह रहे हैं। पेन ने ज़ोरदार शब्दों में कहा—"इंगलैंड यूरोप में रहे, अमेरिका अपने को स्वयं सम्हाल लेगा। इंगलैंड से हमारे सम्बन्ध का अन्तिम तन्तु भी अब टूट चुका है।"

"कामन सेन्स" पुस्तिका धड़ाधड़ बिक गयी और इससे लोग भड़क उठे। जैसे ही लोगों में उत्तेजना बढ़ी और युद्ध की भावना ने ज़ोर पकड़ा। शान्ति की सम्भावना जाती रही। तब काँग्रेस दृढ़तापूर्वक पृथक् होने के पक्ष में हो गई। जून में काँग्रेस ने पाँच सदस्यों की एक समिति बनाई जिसको आज़ादी का घोषणापत्र तैयार करने के लिए कहा गया। इस समिति में बैन्जमिन फ्रैंकलिन, टामस जैफरसन और जॉन एडम्स भी थे।

पहला मसौदा जैफ़रसन ने तैयार किया, अन्य सदस्यों ने इसमें कुछ संशोधन किया। इस पर काँग्रेस ने विचार करके फिर इसमें कुछ तबदीली की और अन्त में ४ जुलाई १७७६ को यह घोषणा-पत्र स्वीकृत हो गया। अमेरिकन स्वतन्त्रता का जन्म उसी दिन हो गया।

बड़े ज़ोरदार और साफ़-साफ़ शब्दों में आज़ादी के घोषणा-पत्र में संसार को यह बता दिया गया कि उपनिवेश अपनी मूल-भूमि से क्यों सम्बन्ध-विच्छेद कर रहे हैं और उसमें अमेरिका की राजनीतिक धारणाओं की भी रूपरेखा दे दी गयी "हम इन सत्यों को स्वयं सिद्ध मानते हैं : कि सभी मनुष्य समान उत्पन्न हुए हैं; सृष्टि रचयिता ने उनको कुछ अनपहरणीय अधिकारों से

सम्पन्न किया है, इन अधिकारों में जीवन, आज़ादी और सुख-प्राप्ति के प्रयत्न सम्मिलित हैं।" इस घोषणा-पत्र में यह भी कहा गया कि सरकारों की स्थापना इन अधिकारों की रक्षा के लिए होती है और उन्हें अपने उचित अधिकार व अख्त्यार प्रजा की स्वीकृति से ही मिलते हैं। जब शासनतन्त्र इन उद्देश्यों का विघातक बन जाय तो "लोगों को यह अधिकार है कि वे उसे बदल द या समाप्त कर दे" और उसके स्थान पर नये शासन की स्थापना करें जो उनके हित में अच्छा काम कर सकें।

आज़ादी के घोषणा-पत्र में वही लोकतन्त्रीय बीज अंकुरित हुए जो यूरोप में अंधकारमय युगों से फूटते आ रहे थे। इस बात पर ज़ोर देकर कि हकूमत को लोगों का स्वामी नहीं सेवक होना चाहिए, घोषणा-पत्र ने एकतन्त्रीय सत्ता पर वह चोट पहुंचाई जो आज भी लोगों के कानों में गूंज रही है और तब तक बराबर गूंजती रहेगी जब तक कि मनुष्य आज़ादी की क़द्र करते रहेंगे।

इंगलैंड के साथ सम्बन्ध-विच्छेद कर लेने और अमेरिका के संयुक्त-राज्य की स्थापना के उपरान्त, नये राष्ट्र को जीवित रहने के लिए उत्कट संघर्ष करना पड़ा। जार्ज वाशिंगटन की कुशलता, वीरता और अद्वितीय नेतृत्व भी उस स्थिति को सम्हालने में असमर्थ प्रतीत होने लगे।

वाशिंगटन ने जनरल 'हो' और उसके ११,००० सैनिकों को बोस्टन से तो भगा दिया, परन्तु जब वह न्यूयार्क के महत्वपूर्ण स्थान पर अधिकार करने के लिए पुनः वाशिंगटन की सेनाओं के मुक़ाबले आया तो हालात बिल्कुल बदल गये। ब्रिटिश और जर्मन सेनाओं ने बहुत-सी नई कुमक की सहायता से अमेरिकी सेनाओं को हार पर हार दी और उन्हें न्यूजर्सी की ओर भगा दिया। महाद्वीपीय काँग्रेस ने अपनी सेनाओं को अधिक सहायता न दी। तेरह नये राज्यों में एकता अभी बहुत दूर थी। प्रतिनिधि नये कर लगाने से डरते थे कि कहीं लोग उसी प्रकार उनके विरुद्ध भी खड़े न हो जायें जिस प्रकार वे ब्रिटेन के खिलाफ़ उद्यत हो गये थे। इसलिए खाद्य और बारूद की सम्हाल में

कमी हो गई। इससे सिपाहियों के हौसले गिरने लगे और वे सेनाओं से भागने लगे।

वाशिंगटन उस समय डेलवेयर नदी के पार पेनसिलवेनिया में था। उसकी स्थिति उस समय बड़ी निराशाजनक थी, पर उसने १७७६ के बड़े दिन की रात को अपने सिपाहियों को इकट्ठा किया और एक प्रत्याक्रमण करके अपने महान् युद्धकौशल का परिचय दिया। बर्फ भरी डेलवेयर नदी को हाथ से खेने की नावों द्वारा पार कर वाशिंगटन और उसके सिपाही ट्रेन्टन में हेस से आये हुए भाड़े के उन सिपाहियों के एक दस्ते पर टूट पड़े जो उस समय बड़े दिन के उत्सव के उपलक्ष्य में शराब में मदमस्त था। इनमें भगदड़ मच गई और वे बुरी तरह हारे। इस वीरतापूर्ण प्रहार के बाद प्रिन्सटन में भी अमेरिकी सेनाओं की जीत हुई और कुछ समय के लिए न्यूजर्सी फिर अमेरिकी अधिकार म आ गया।

१७७७ म घनघोर और निर्णायक लड़ाइयाँ हुई। जनरल 'हो' की सेनाएँ न्यूयार्क से समुद्र के रास्ते फिलेडैल्फ़िया जा पहुँची और उन्होंने अमेरिका की राजधानी पर क़ब्ज़ा कर लिया। वाशिंगटन और उसके सिपाही शहर के बाहर वैली फ़ोर्ज में चले गये, जहाँ पर उन्हें प्रचण्ड शीत में पर्याप्त सामग्री और आश्रय के बिना बड़ा कष्ट भोगना पड़ा। यदि ब्रिटिश सिपाही अपना आक्रमण जारी रखते तो हो सकता था कि अपने शत्रु को सदा के लिए कुचल देते, परन्तु 'हो' इतना अधिक परिश्रमी न था और यह भी विश्वास किया जा सकता है कि उसकी राजनीतिक सहानुभूति अमेरिकी लोगों के साथ थी।

वाशिंगटन पर मिडिल स्टेटस् में आक्रमण पर आक्रमण होते जा रहे थे, परन्तु इस युद्ध की एक निर्णायक लड़ाई सैकड़ों मील उत्तर न्यूयार्क में साराटोगा में हुई। अयोग्य सैन्याधिकारियों और तीन हज़ार मील दूर से युद्ध सामग्री पर निर्भर होने के कारण ब्रिटिश सेना वहाँ संकट में पड़ गई और सारी की सारी वहीं नष्ट हो गई।

ब्रिटेन ने न्यूयार्क राज्य में सभी विरोधियों को कुचल डालने की योजना बनाई थी, जिससे अमेरिका को दो भागों में बाँट दिया जाता, ठीक उसी

भाँति जैसे उस शताब्दी के आरम्भ में फ्रान्स ने करने की सोची थी। न्यूयार्क पर तीन दिशाओं से आक्रमण होना था, और सेनाएँ न्यूयार्क से १५० मील उत्तर को हडसन नदी की घाटी में अल्बानी पर मिलने वाली थीं। जनरल बुरगायन को कैनेडा से दक्षिण की ओर आना था, जनरल 'हो' को न्यूयार्क से उत्तर को सेनाएँ भेजनी थीं और जनरल सैन्ट लेजर को राज्य की दूसरी ओर से पूर्व की ओर बढ़ना था।

यह सारी योजना बुरी तरह असफल हुई। सैन्ट लेजर को पश्चिमी वनों में ओरिकानी के स्थान पर रोक दिया गया और 'हो' की सेना पहुँची ही नहीं। साराटोगा में बुरगायन के ६००० सिपाहियों को बीस हज़ार अमेरिकी किसानों और स्वयंसेवकों ने घेर लिया और उनको अक्टूबर १७७७ में आत्मसमर्पण करने पर विवश कर दिया।

साराटोगा में इंगलैंड को जिस बात ने आघात पहुँचाया वह सैनिकों का नुक़सान नहीं था, बल्कि उससे भी बुरी बात यह थी कि इंगलैंड की प्रतिष्ठा को धक्का लगा। उसके पुराने वैरी फ्रान्स, और स्पेन अब अमेरिका की माँग पर मदद देने को उद्यत हो गये।

अमेरिका के लोगों के लिए विदेशों के साथ राजनीतिक ढंग से व्यवहार करना एक नया अनुभव था। अब तक तो उनके ऐसे मामले ब्रिटेन ही निपटा दिया करता था। पर इस नये राष्ट्र ने भी बैन्जमिन फ्रैंकलिन सरीखा दक्ष नीतिज्ञ पैदा किया जो अत्यन्त निपुण तथा कुशाग्र बुद्धि था और अवसर से लाभ उठाना खूब जानता था। कुछ समय से यूरोप से थोड़ी-बहुत सामग्री के रूप में अमेरिका को सहायता मिल रही थी। फ्राँस के माकुई-द-लफ़ायते, जर्मनी के बैरन फ़ान स्टमयूबन और बैरन फान कल्व तथा पोलैण्ड के काउन्ट फलास्की सरीखे यूरोपीय सैनिक अफसरों ने अमेरिकी सेना को अपनी सेवाएँ भेंट की और उसे प्रशिक्षण दिया तथा उसमें अनुशासन भी पैदा किया, जिसकी अत्यन्त आवश्यकता थी। फिर भी यूरोप के देश पूर्ण रूप से मदद देने से झिझकते थे, उन्हें डर था कि इंगलैंड के साथ फिर युद्ध करके उन्हें क्षति न उठानी पड़े।

पर साराटोगा की लड़ाई के बाद बैंन्जमिन फ्रैंकलिन ने फ्रान्स के राजा को विश्वास दिलाया कि फ्रान्स और अमेरिका के गँठजोड़ से इंगलैंड को हराया जा सकता है । इस बातचीत की भनक पड़ते ही इंगलैंड ने अपनी पूर्ववर्ती बस्तियों के साथ किसी भी शर्त पर सुलह करनी चाही जिसमें कि वे ब्रिटिश साम्राज्य में ही रहें । दो वर्ष पहले यह सुझाव बड़ी खुशी से मान लिया गया होता, पर अब यह प्रस्ताव रद्द कर दिया गया। फरवरी १७७८ में फ्रान्स और अमेरिका के बीच एक समझौता हुआ जिसमें दोनों देशों ने उस समय तक युद्ध में एक दूसरे का साथ देने का वचन दिया जब तक कि उसमें एक सुलह के लिए तैयार न हो जाय । इसके उपरान्त स्पेन और हालैण्ड ने अमेरिका को उसकी उद्देश्य प्राप्ति में अपनी जल-सेना से सहायता दी । उन्हें आशा थी कि शायद उन्हें कुछ प्रदेश फिर से मिल जायेंगे जो वे हारकर इंगलैंड को दे चुके थे ।

फ्रान्स से उधार, सामग्री और सैनिक मिल गये; परन्तु उसकी सब से बड़ी देन फ्रान्स का शक्तिशाली समुद्री बेड़ा था जो कि इंगलैण्ड को छोड़ बाकी सब से जबर्दस्त था । फ्रान्स की ओर से नाकाबन्दी के भय से ब्रिटिश सिपाही राजधानी फिलेडैल्फिया से निकाल लिये गये । इसके साथ-साथ फ्रान्स ने अपनी कई बन्दरगाहें अमेरिकनों के लिए खोल दीं और अपने कई जहाज अमेरिका को भेज दिये । फ्रान्स के जहाज़ों ने इंगलिश चैनल में कई साहसपूर्ण काम किये । कप्तान जॉन पॉल जोन्स ने इंगलैण्ड के तट पर आक्रमण भी किया । ह्वाइटहेवन में एक सैन्य टुकड़ी ले जाकर तबाही मचाई । इसी नगर में वह कई वर्ष रह भी चुका था । उसके जहाज़ 'बानहोम रिचर्ड' ने ब्रिटेन के जंगी जहाज़ 'सेरापिस' पर एक बड़ी विजय पाई । यह लड़ाई यार्कशॉयर के तट के पास हुई और सैकड़ों दर्शकों ने तट पर खड़े होकर इसे देखा ।

एक अमेरिकी जिसने अपने आपको वीर सिद्ध न किया वह था जनरल बैनीडिक्ट आर्नाल्ड । सेना में उच्च पद प्राप्त न कर सकने पर वह रुष्ट हो गया । हडसन नदी पर वैस्ट पोआइन्ट का महत्वपूर्ण दुर्ग उसी की कमान में था (आज उसी स्थान पर संयुक्त राज्य की सैनिक शिक्षण संस्था है) ; असन्तुष्ट होने

पर वह दुर्ग को ब्रिटिश सेना के हवाले करने की सोचने लगा; परन्तु उसकी लिखित योजनाएँ ठीक समय पर पकड़ ली गई। वह भाग कर ब्रिटिश सेना में पहुँच गया और उसमें ब्रिगेडियर जनरल बना। उसने वर्जिनिया के युद्ध में अपने भूतपूर्व देशवासियों के विरुद्ध लड़ाई में भाग लिया।

१७७८ के अन्त तक लड़ाई का जोर उत्तर में घट गया। वाशिंगटन की सेनाएँ न्यूयार्क के पास ही रही, ताकि ब्रिटिश सेनाओं को उसी नगर में उलझाये रखे और वे देश के आन्तरिक भागों में न बढ़ने पायें। यह क्रम बहुत देर तक ऐसे ही चलता रहा और लड़ाई का जोर दक्षिण और पश्चिमी सीमाओं पर बढ़ गया।

ब्रिटेन ने पश्चिम में औपनिवेशिक बसावट की मनाही तो कर दी थी, परन्तु उसका पूरा-पूरा पालन न हुआ। पेनसिलेवेनिया से केरोलाइना तक हठीले अग्रदूतों के दल धीरे-धीरे अलेघनी, ब्लूरिज और स्मोकी पर्वतों के पार जाने लगे और वहाँ की उर्वर भूमि पर अपने अधिकार जमाने लगे। उनमें से सबसे प्रसिद्ध इंडियन योद्धा डेनियल बून १७६१ में कैन्टूकी तक चला गया। इसके कुछ वर्ष उपरान्त टेनेसी नगर बसाया गया।

अमेरिका के सीमावर्ती लोग बड़े देशभक्त थे और जब से क्रान्ति शुरू हुई वे पूर्व में अपने देशवासियों को अपनी सेवाएँ भेंट कर रहे थे। शीघ्र ही यह विदित हो गया कि यदि वे सीमा की ब्रिटिश चौकियों पर आक्रमण कर दें तो वे बड़ा उपयोगी काम कर सकते हैं, ताकि जब पूर्ण आजादी प्राप्त हो जाय तब अमेरिका पश्चिम के प्रदेश पर भी अधिकार कर सके।

इस पर कैन्टूकी में बसे हुए वर्जिनिया के एक युवक जार्ज रोजर्स क्लार्क को २०० व्यक्तियों की टुकड़ी के साथ मिसिसिपी नदी के उत्तर और पश्चिम की ओर भेजा गया जहाँ से आगे स्पेन के अधिकृत प्रदेश थे। एक ऐसे प्रदेश को जीतने के लिए जिसका क्षेत्रफल, न्यू इंगलैंड, न्यूयार्क और पेनसिलेवेनिया को मिलाकर भी अधिक हो, दो सौ की संख्या बहुत कम प्रतीत होती है, परन्तु इतने ही लोग इस काम पर भेजे जाने के लिए दिये जा सके और उन्होंने वह कार्य कर भी डाला।

क्लार्क को कई बार 'पश्चिम का वाशिंगटन' भी कहा जाता है। उसने इलीनॉय के प्रदेश में फ्रान्सीसी और इण्डियन लोगों को मना लिया कि वे ब्रिटेन के स्थान पर अमेरिका की अमलदारी में आ जाएँ और इस प्रकार उस ओर से निश्चिन्तता हो गई। तब वह मिसिसिपी और वाबश नदियों पर ब्रिटिश दुर्गों को जीतने के लिए चल दिया। इस प्रदेश पर इंगलैंड का अधिकार समाप्त हो गया और क्लार्क सितारे और धारियों वाले अमेरिकी झण्डे को लेकर महाद्वीप के बीच मध्य तक बढ़ गया।

उधर दक्षिण में क्रान्ति के अन्तिम पग के लिए रंगमंच तैयार हो रहा था। यह देखते हुए कि कैरोलाइना और जार्जिया में राजभक्त लोग काफी हैं, ब्रिटेन ने जनरल क्लिन्टन और जनरल कार्नवालिस के अधीन एक सेना भेजी जो इन राज्यों को अमेरिकी पक्ष से विमुख करे। अमेरिका में ब्रिटेन के पक्षपाती कोई २००० व्यक्ति यूनियन जैक के नीचे जमा हो गये और ब्रिटिश सेनाओं ने सवाना और चार्लेस्टन के बड़े बन्दरगाहों पर कब्जा कर लिया।

देश के अन्दर बढ़ते हुए पहले तो ब्रिटिश सेनाओं को उत्तर की अपेक्षा कुछ अधिक सफलताएँ मिलीं। केमडेन के स्थान पर अमेरिका के जनरल गेट्स पर उन्होंने भारी विजय पाई। यही गेट्स साराटोगा की लड़ाई में नाम पा चुका था। गेट्स की शूरवीरता उस समय बिल्कुल संदिग्ध हो गयी जबकि वह केमडेन की समर भूमि से १८० मील दूर पाया गया। वह तब भी अकेला ही पराजय के बाद घोड़े पर भागता हुआ जा रहा था।

अन्त में फ्रान्सिस मैरियन 'स्वैम्प फाक्स' सदृश योग्य नेताओं के अधीन गोरिला या छापामार युद्ध पद्धति अपनाई गई तो ब्रिटिश शक्ति का अमेरिका में ह्रास होने लगा और किंग्स माउंटेन पर हठीले और अदम्य सीमावर्ती लोगों के एक दल ने कार्नवालिस के सिपाहियों को भगा दिया। इसके कुछ ही समय बाद वाशिङ्गटन ने अपने एक योग्यतम कमान्डर नैथनीयल ग्रीन को कैरोलाइना भेजा जिसने ब्रिटिश सेना को और अधिक आघात पहुँचाया। १७८१ में ब्रिटिश सेनाओं को विवश होकर उत्तर की ओर भागना पड़ा।

क्रान्ति की अन्तिम लड़ाई वर्जिनिया में यार्क टाउन के स्थान पर हुई, उसी जेम्स टाउन से कुछ ही मील दूर समुद्र-तट के पास जहाँ कि अमेरिका में अंग्रेजों ने अपनी पहली बस्ती बसायी थी। वहां से कार्नवालिस और बैनीडिक्ट अपने ७ हजार सिपाहियों के साथ पीछे हट गए और फिर न्यूयार्क से समुद्र के रास्ते सहायता की प्रतीक्षा करने लगे।

फ्रान्स और अमेरिका की सेनाओं ने पूर्ण सहयोग के साथ कार्नवालिस पर अन्तिम प्रहार करने के लिए शीघ्र ही कार्यवाही की। पहले तो लफायते साढ़े तीन हज़ार अमेरिकी सिपाहियों के साथ वर्जिनिया में था। वाशिङ्गटन तथा अमेरिकाके उद्देश्य के प्रति निष्ठा के लिए अमेरिकी लोगों में सदा उसका मान रहेगा। दूसरे वाशिंगटन स्वयं पाँच हज़ार फ्रान्सीसी और दो हज़ार अमेरिकी सिपाही लेकर चार सौ मील का लम्बा सफर करता हुआ लफायते से आ मिला। और तीसरे एडमिरल दि ग्रासे के नेतृत्व में फ्रान्स का एक शक्तिशाली समुद्री बेड़ा यार्क टाउन आ पहुँचा। रास्ते में इसने ब्रिटिश नौ सेना के उन दस्तों को रोक कर छिन्न-भिन्न कर दिया था जो कार्नवालिस के लिए सैनिक सहायता ला रहे थे।

उधर वाशिंगटन और लफायते ने प्राय-द्वीप की ओर जा कर ब्रिटिश सेना के भागने का एकमात्र मार्ग बन्द कर दिया, दूसरी ओर दि ग्रासे ने समुद्र के रास्ते बन्द कर दिये और घेरा डालने में सहायता देने के लिए तीन हज़ार सिपाही भी उतार दिये। जब चारों ओर से ब्रिटिश सेना कई गुना अधिक सेना से घिर गयी और निकलने की कोई आशा न रही तो कार्नवालिस ने कई बार बड़ी वीरता से आक्रमण किये, परन्तु सभी निष्फल हुए और अन्त में १९ अक्टूबर १७८१ को उसने आत्मसमर्पण कर दिया।

ब्रिटिश प्रधान मंत्री लार्ड नार्थ ने जब यार्क टाउन का समाचार सुना तो एक दम बोल उठा, "हे ईश्वर ! सब कुछ समाप्त हो गया"। यह भारी आघात था। ब्रिटेन के लोग युद्ध से उकता कर अब शान्ति की इच्छा प्रकट करने लगे। राजा जार्ज के सिवा सभी की यही इच्छा थी कि युद्ध समाप्त हो—केवल

राज। को अपने "अमेरिकन खेत" छिन जाने का खेद हो रहा था। इंगलैंड में नया मन्त्रिमण्डल बना और पेरिस में बैन्जमिन फ्रैंकलिन को यह सूचना दी गयी कि ब्रिटेन बातचीत शुरू करने के लिए तैयार है।

अन्त में शान्ति-समझौते में परस्पर-विरोधी हितों के कारण जो बाधाएँ पड़ रही थीं उनको हटाने के लिए फ्रैंकलिन, जॉन एडम्स और जान जे को भरसक अपनी राजनैतिक सूजबूझ से काम लेना पड़ा। फ्रान्स और अमेरिका की सन्धि के अनुसार कोई भी देश दूसरे की अनुमति के बिना इंगलैंड से सन्धि न कर सकता था। फिर भी इंगलैंड और अमेरिका शान्ति के लिए अमेरिका की ही शर्तों पर सन्धि करने पर तत्पर थे और दूसरी ओर फ्रान्स और उसका साथी स्पेन इंगलैंड से समुद्र में लड़ते रहे और उन्होंने जिब्राल्टर पर अधिकार करने का असफल प्रयास किया।

१७८२ में यह स्पष्ट हो गया कि फ्रान्स की सरकार को इतनी चिन्ता अमेरिका के हित की न थी जितनी कि अपने और स्पेन के हित की थी। फ्रान्स के मन्त्री वर्जेने ने यह सुझाव रखा था कि अमेरिका के नये गणराज्य की सीमाएँ फिर से एपेलचिन पर्वत माला तक रखी जायँ और क्लार्क द्वारा विजित पश्चिमी प्रदेश पर विदेशीय, विशेषकर, स्पेन का नियन्त्रण रहे।

राजनीति में भी विचित्र गठजोड़ होते हैं। न तो इंगलैंड और न ही अमेरिका यह चाहता था कि अमेरिका में फिर से कोई नया फ्रान्सीसी स्पेनिश साम्राज्य स्थापित हो। इस अस्थिर वातावरण में अंग्रेज़ और अमेरिकी नीतिज्ञों में गुप्त रूप से बातचीत हुई जिसमें यह निर्णय हुआ कि नये गणराज्य की सीमाएँ अतलान्तकमहासागर के तट से लेकर मिसिसिपी नदी तक और ग्रेट लेक्स से लेकर फ्लोरिडा तक होग

वर्जेने ने जब इस बात-चीत के बारे में सुना तो क्रोध से भड़क उठा, परन्तु बैन्जमिन फ्रैंकलिन की पटुता और अंग्रेज़ों की अन्य समुद्री लड़ाइयों में विजय की खबरों से वह आखिर मान ही गया। पेरिस-सन्धि पर ३ सितम्बर १७८३ को हस्ताक्षर हुए और इससे युद्ध समाप्त हो गया।

अमेरिका के लिए तो यह सन्धि बड़ी अच्छी रही। इंगलैंड और फ्रान्स के हितों के बीच फँसकर अमेरिका ने एक दूसरे के विरुद्ध लड़ाना शुरू किया और इस प्रकार उसे वह सब प्राप्त हो गया जिसकी उसे इच्छा थी। मुँह-माँगे प्रदेशों के साथ-साथ उसे मिसिसिपी नदी में जहाज चलाने और कैनेडा के तट पर मछलियाँ पकड़ने की अनुमति भी मिल गयी।

इसके बदले में अमेरिकी काँग्रेस ने ब्रिटेन की एक बड़ी चिन्ता दूर करना स्वीकार कर लिया और यह चिन्ता थी अमेरिका के उन सहस्रों राजभक्तों की जिन्होंने लड़ाई में ब्रिटेन का साथ दिया था। अमेरिका में इन लोगों को बड़ी कठिनाइयाँ उठानी पड़ी थीं। उनके खेत छिन गये, और उन्हें घरबार, और धन-दौलत से हाथ धोना पड़ा। ब्रिटिश सरकार यह चाहती थी कि उनके अधिकार और उनकी सम्पत्ति उन्हें जहाँ तक हो सके, पूर्णतया लौटा दी जाय काँग्रेस ने विभिन्न राज्यों को ऐसा करने की सिफारिश करने की बात भी स्वीकार कर ली, पर इसका उन लोगों को कम ही लाभ पहुंचा जो अपना घर-बार या धन-दौलत गँवा चुके थे।

वस्तुतः 'संयुक्त राज्य' की यह विजय भी असंयुक्त ही रह गयी युद्ध के अन्त में उन्होंने एक समझौते के अनुसार अपने को थोड़ा-बहुत संयुक्त कर लिया था। यह समझौता 'परिसंघ की धाराओं' (आर्टिकल्स आफ कॉन्फेड्रे-शन) के नाम से प्रसिद्ध है, परन्तु अभी वे राज्य स्वशासित विभाग थे और अपने-अपने हित की ही सोचते थे। उनकी प्रतिनिधि काँग्रेस दिवालिया थी और कई वर्ष तक उसकी यही स्थिति रही। सेना को वेतन नहीं मिले। सैनिक असन्तुष्ट थे और यदि उनका वीर नेता जनरल वाशिंगटन उन्हें स्पष्ट शब्दों में यह न कहता कि वे सैन्य-विघटन कर चुप-चाप अपने-अपने घरों को चले जायँ तो सम्भव था कि सैनिक विद्रोह कर लेते।

विजय और स्वाधीनता तो आई परन्तु उनके साथ ही देश में अव्यवस्था भी हो गई। अमेरिकी लोगों को इस दशा को सुधारने तथा संगठित होकर संयुक्त उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अग्रसर होने का काम अभी बाकी था।

अध्याय ४

गणराज्य की स्थापना

अमेरिका में क्रान्ति के लगभग दो सौ वर्ष उपरान्त आज यह प्रश्न पूछना तर्कसंगत ही दीखता है कि उस समय के प्रत्येक देशभक्त अमेरिकी नागरिकों ने ऐसी सशक्त केन्द्रीय सरकार की स्थापना के लिये क्यों नहीं ज़ोर दिया, जो देश में शान्ति बनाये रखती, सुदृढ़ मुद्रा का चलन कराती और व्यापार तथा उद्योग की उन्नति में सहायक होती ? इसका उत्तर इस तथ्य से मिल जाता है कि उस समय विभिन्न राज्य अपने को पृथक् देश समझते थे; उस समय वे एक दूसरे से मिलने के सम्बन्ध में इतने ही शंकाशील थे जितने कि आज पश्चिमी यूरोप के देश अपना कोई संघ बनाने के सम्बन्ध में हैं।

इंगलैंड के साथ युद्ध शुरू हो जाने पर अमेरिका के उपनिवेशों ने शत्रु के विरुद्ध एक मोर्चा बनाने का प्रबन्ध कर लिया था। उनकी प्रतिनिधि महाद्वीप काँग्रेस ने धन की माँग की, जो उसे मिल भी गया और जिससे उसने संघर्ष जारी रखा। इसके साथ ही काँग्रेस ने विदेशों से समझौते भी किये। पर देश में कोई भी लिखित नियम का संविधान न था जिसके अनुसार कांग्रेस को सभी लोगों पर शासन करने का अधिकार होता।

परिसंघीय-धाराओं (आर्टिकलस् आफ कान्फेड्रेशन) द्वारा यह त्रुटि दूर करने की चेष्टा की गई, और केन्द्रीय सरकार बनाने के लिए कुछ विशेप लक्ष्यों और उद्देश्यों की घोषणा की गई। इस सम्बन्ध में एक सुझाव पहले १७७७ में रखा गया था, परन्तु कांग्रेस मार्च १७८१ तक उस पर अनुमति न दे सकी। इसमें विलम्ब का एक बड़ा कारण मेरीलैण्ड उपनिवेश भी बन गया। तब कुछ राज्य पश्चिमी प्रदेशों पर अपनी खोज के आधार पर अथवा कुछ पुराने आज्ञा-पत्रों का सहारा लेकर दावा जमा रहे थे, पर कई उपनिवेशों के

पास ऐसा कोई आधार न था। उस समय मेरीलैण्ड ने बड़ी दूरदर्शिता से काम लेते हुए परिसंघ की इन धाराओं पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया और यह शर्त रखी कि पहले अलेघनी और मिसिसिपी के बीच की सारी भूमि संयुक्त-राज्य की अमलदारी में दे दी जायें, तब वे इसपर हस्ताक्षर करेगा। इसका मतलब यह हुआ कि इस नये प्रदेश को सारे देश की राष्ट्रीय सरकार के शासन में रखने के लिए कहा गया, केवल कुछ राज्य-सरकारों का इसपर अधिकार न हुआ। इससे एक लाभ यह हुआ कि आबाद होने वालों को भूमि बेचकर काँग्रेस धन भी इकट्ठा कर सकती थी जिसकी इस समय उसे अत्यन्त आवश्यकता थी। इस शर्त पर ज़ोर देकर मेरीलैण्ड ने एक बड़े नाजुक वक्त में राष्ट्रीय सत्ता को दृढ़ बनाने के लिए बड़ा महत्वपूर्ण काम किया।

परिसंघ की यह धाराएँ स्वयं बड़ी शिथिल और भद्दी थीं। क्षेत्रफल और जनसंख्या का कोई विचार बिना प्रत्येक राज्य को कांग्रेस में एक वोट था और कानून बनाने के लिए तेरह में से ९ राज्यों की स्वीकृति ज़रूरी थी। इनमें संशोधन करने के लिए तेरह के तेरह राज्यों का समर्थन आवश्यक था।

कांग्रेस युद्ध या शान्ति कर सकती थी, उसे उधार लेने, राजदूत भेजने या दूसरे देशों के साथ राजनैतिक सम्बन्ध स्थापित करने का अधिकार दिया गया, तथा वह विदेशी और इण्डियन लोगों से सम्बन्ध रखने वाले मामलों से निपट सकती थी। इन कार्यों की सम्भावनाएँ बहुत अधिक थीं, जिनका सभी लोगों पर प्रभाव पड़ता था। परन्तु सारे देश के लिए कोई कार्य वाहक विभाग न था जो कांग्रेस-द्वारा स्वीकृत कानूनों को लागू करवा सका।

जब व्यक्तिगत अमेरिकी के जीवन के नागरिकों के व्यक्तिगत नियंत्रण की बात आई तो कांग्रेस के रास्ते में राज्यों ने बाधाएँ खड़ी कीं। काँग्रेस लोगों को कर देने के लिए मजबूर न कर सकती थी और यदि वे टैक्स न दें तो उन पर अदालतों में मुकद्दमा न चलाया जा सकता था। कांग्रेस की कितनी ही अधिक आवश्यकता क्यों न आ पड़े वह किसी भी व्यक्ति को सेना में भर्ती न कर सकती थी। इन धाराओं के अनुसार राज्यों को स्वाधीन व स्वायत

शासित खण्डों के रूप में स्वीकार किया गया था और उनकी अपनी प्रतिनिधि-सभाएँ ही यह निर्णय करती थीं कि राष्ट्रीय हित में वे क्या योग दें।

जो लोग किसी प्रकार की राष्ट्रीय सत्ता चाहते थे उनके लिए दशा दिन-प्रति-दिन असह्य होती गई। कांग्रेस राज्यों को इससे रोक न सकती थी कि वे व्यर्थ की अधिक काग़ज़ी मुद्रा जारी न करें और आपस की उग्र व्यापारिक प्रतिद्वन्दता के कारण एक दूसरे के माल पर कर न लगायें। इन परिस्थितियों में सम्पन्न वर्ग को ही सब से अधिक हानि पहुँची। सरकारी हुण्डियों का मूल्य प्रति डालर दस सैण्ट कम हो गया, माल तैयार करने वाले बेकार हो गये, क्योंकि दूसरे देशों की प्रतिद्वन्दता से उनको बचाने के लिए कोई तट-कर लगाने की व्यवस्था नहीं थी; सीमा प्रान्त के खेतिहर जायदाद बनाने में असमर्थ थे क्योंकि वहाँ सेना इतनी सशक्त न थी जो इंडियन लोगों से बचा सकती।

इस संकटकाल में भी एक ठोस कार्य किया गया। जब पश्चिमी प्रदेश राष्ट्रीय अमलदारी में आ गये तब कांग्रेस ने ओहियो नदी और ग्रेटलेक्स के बीच के इलाके को उत्तर पश्चिमी प्रदेश के रूप में संगठित किया और उसकी व्यवस्था के लिए एक गवर्नर और तीन जजों की नियुक्ति की। इस प्रदेश के निवासियों को राजनीतिक और धार्मिक स्वतन्त्रता दी गई तथा निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की गयी। इसके साथ ही दासता का वहाँ पूर्ण निषेध कर दिया गया। यह भी प्रबन्ध हुआ कि जब इसकी जनसंख्या बढ़ जाये तब इसके अन्य राज्य बनाये जायँ जो संघ के अन्य राज्यों के समान हों। इस प्रकार भावी विस्तार का ढंग दिखा दिया गया और इससे यह भी प्रकट हो गया कि सरकार ने देश के सभी भागों में बसने वाले नागरिकों को अमेरिकी लोगों की हैसियत में पूर्ण अधिकार देने का निश्चय कर लिया है।

उधर मैसाचूसेट्स में एक विस्फोटक घटना घटी और इसने सारे देश के शासन को सुव्यवस्थित करने की माँग को बढ़ावा दिया। क्रान्ति के समय के एक कप्तान डेनियल शेज़ के नेतृत्व में ऋण में फँसे हुए लोगों के एक जनसमूह

ने राज्य की वित्तीय-नीति का विरोध किया और स्प्रिङ्गफील्ड में संयुक्त-राज्य शस्त्रागार पर आक्रमण कर दिया। 'शेज़ का विद्रोह' राज्य के सैन्यदल ने तो अच्छी तरह दबा दिया, परन्तु विद्रोह की गड़बड़ और मार-धाड़ से सारा देश चौंक उठा।

× × ×

प्रभावशाली लोग, जिनमें जार्ज वाशिङ्गटन सरीखे व्यक्ति भी थे, कुछ समय से अशक्त केन्द्रीय सरकार के खतरों से देश को सचेत करते आ रहे थे। राज्यों के गवर्नरों के नाम एक चिट्ठी में वाशिङ्गटन ने लिखा "कहीं न कहीं ऐसी सर्वोपरि शक्ति होनी चाहिए जो परिसंङ्घीय गणराज्यों के बड़े-बड़े मामलों को नियन्त्रित कर सके; ऐसी व्यवस्था के बिना यह परिसंघ अधिक देर तक टिक सकेगा"। उनकी भविष्यवाणी सत्य हुई और कांग्रेस ने स्वयं बड़े खेद से यह स्वीकार किया कि वह राष्ट्र के मामलों से निपटने में असमर्थ है। इसके अधिवेशनों में उपस्थिति इतनी घट गयी कि कोरम भी पूरा न होता जिससे कोई कार्यवाही हो सके। उस समय संयुक्त राज्य सरकार का वस्तुतः कोई अस्तित्व ही नहीं था।

पोटोमैक नदी में व्यापार पर अधिकार के विषय में मेरीलैण्ड और वर्जिनिया में झगड़ा हो गया और अन्तर्राज्यीय सहयोग के सम्बन्ध में विचार-विनिमय का अवसर मिल गया, जिसके लिए सशक्त केन्द्रीय सरकार के पक्षपाती माँग भी करते आ रहे थे। दोनों राज्यों के कमिश्नरों को अनौपचारिक वार्ता के लिए मौन्ट वर्नान में वाशिङ्गटन के घर बुलाया गया, यह जगह पोटोमैक नदी पर स्थित थी। बातचीत में शीघ्र ही प्रकट हो गया कि इसमें अन्य राज्यों के हित भी आ जाते हैं, और अन्त में यह निर्णय हुआ कि आगामी वर्ष सभी राज्यों को अपने प्रतिनिधि भेजने के लिए कहा जाय और उनकी बैठक अन्नापोलिस में हो जिसमें संयुक्त व्यापारिक समस्याओं पर विचार किया जाये। परिसंङ्घीय धाराओं की सबसे बड़ी त्रुटि यह थी कि उनमें अन्तर्राज्यीय वणिज के नियन्त्रण की कोई व्यवस्था नहीं थी।

१७८६ में अन्नापोलिस में जो बैठक हुई उसमें आने का निमन्त्रण केवल पाँच राज्यों ने स्वीकार किया, परन्तु प्रतिनिधियों ने अपनी संख्या की कमी को अपनी योग्यता और अपने दृढ़ निश्चय से पूरा कर लिया। इनमें मुख्य न्यूयार्क का अलेग्ज़ेन्डर हैमिल्टन था। उसका जन्म वेस्ट इन्डीज़ में हुआ था और उसने सारे क्रान्तिकाल में वाशिङ्गटन के साथ-साथ बड़ी योग्यता से सेवाएँ की थी। वह वाशिङ्गटन का गहरा दोस्त भी था। हैमिल्टन को शक्तिशाली केन्द्रीय सरकार में दृढ़ विश्वास था, जब उसने देखा कि उसके साथ बातचीत करने वाले वणिज के अतिरिक्त परिसंघीय धाराओं को बदलने पर भी विचार करने के लिए तैयार हैं तो उसने १७८७ में फिलेडैलफिया में एक और सभा बुलाने का सुझाव रखा, जिसमें सारी-शासन-व्यवस्था पर विचार हो कांग्रेस ने हैमिल्टन का सुझाव स्वीकार कर लिया और तेरह राज्यों को निमन्त्रण भेज दिये गये।

इस बार राज्यों की ओर से बड़ा उत्साह दिखाया गया। रोहड टापू को छोड़ बाकी सबने अपने प्रतिनिधि भेजे। सभा में योग्य और मुख्यतः अनुदार विचारों के प्रतिनिधि आये थे। उनमें व्यवसायी, व्यापारी और खेतिहर भी थे। इनमें क्रान्ति के प्रेरक नहीं आये थे, वे सभी प्रकार की केन्द्रीय सत्ता के सम्बन्ध में शङ्काशील थे। मैसाचूसेट्स से जॉन हेन कॉक और सैम्युल ऐडम्स को नहीं चुना गया और यद्यपि वर्जिनिया का पैट्रिक हैनरी निर्वाचित हो गया परन्तु उसने यह कहते हुए कि "दाल में कुछ काला है" सहयोग देने से इन्कार कर दिया।

यह सभा उसी कमरे में हुई जहाँ ११ वर्ष पहले स्वतन्त्रता के घोषणा-पत्र को स्वीकृत किया गया था। इस संविधान सभा ने जार्ज वाशिङ्गटन को अपना सभापति चुना और बैन्जमिन फ्रैंकलिन, अलेग्ज़ैण्डर हैमिल्टन, जेम्स मैडिसन, जॉन डिन्सन और गूवेन्यूर मारिस सरीखे प्रमुख व्यक्तियों के विचार सुने। आरम्भ से ही अधिकांश प्रतिनिधियों की यह धारणा स्पष्ट हो गयी कि वे जर्जर हो रही परिसंघीय धाराओं में संशोधन करने नहीं आये हैं, बल्कि

उनको पूर्णतया रद्द कर उसके स्थान पर नयी शासन व्यवस्था का निर्माण करना चाहते हैं। जिन्होंने आपत्ति उठायी या अत्यन्त सावधानी बर्तने की माँग की, उनको लक्ष्य करके वाशिङ्गटन ने घोषणा की "बहुत सम्भव है जो भी योजना हम प्रस्तुत करें वही अस्वीकृत कर दी जाय। संभवतः एक और भयानक संघर्ष करना होगा। यदि लोगों को सन्तुष्ट करने के लिए हम वही कुछ प्रस्तुत करें जिन्हें हम पसन्द नहीं करते तो फिर हम अपने कार्य को किस प्रकार युक्तिसंगत सिद्ध कर सकेंगे ? आइए हम एक ऐसी प्रामाणिक व्यवस्था की स्थापना करें जिसमें बुद्धिमान और सत्यनिष्ठ लोग सुधार कर सकें; बाकी सब ईश्वर के हाथ में है"। वाशिङ्गटन के भाषण से प्रेरित होकर प्रतिनिधियों ने एक दृढ़ संघ के लिए अपनी योजनाएँ प्रस्तुत कीं।

दो मुख्य योजनाएँ सुझायी गयीं एक बड़े-बड़े राज्यों की ओर से वर्जिनिया ने रखी और दूसरी छोटे-छोटे राज्यों की ओर से न्यूजर्सी ने। वर्जिनिया ने वास्तविक रूप में राष्ट्रीय प्रशासन का सुझाव रखा, जिसमें तीन विभाग हों—शासन, विधान और न्याय। विधान सभा के दो सदन हों, एक सेनेट या उच्च सदन जिसमें प्रत्येक राज्य के प्रतिनिधि हों और जिनकी संख्या राज्य विशेष के क्षेत्रफल और उसकी सम्पन्नता के आधार पर हो। निचली सभा या प्रतिनिधियों के सदन के सदस्यों का प्रत्येक राज्य के लोग निर्वाचन करें।

वर्जिनिया योजना की एक बड़ी विशेषता यह थी कि इसके द्वारा राज्य-विधान सभाओं पर कुठाराघात होता था। अब राज्य केवल अपने हित की ही बात न कर सकते थे और जिस कानून को वे न चाहते हों उसमें बाधाएँ न डाल सकते थे। इस योजना के फलस्वरूप किसी भी राज्य में लोगों के प्रतिनिधि संयुक्त राज्य कांग्रेस में लिये जाने थे और कांग्रेस का ही उन पर शासन होना था। उदाहरणतः यदि कनेक्टिकट तट-कर लगाने का विरोध करे परन्तु कांग्रेस में बहुमत कर लगाने के पक्ष में हो, तो कनेक्टिकट को अन्य राज्यों की इच्छा-पालन करते हुए कानून को मानना पड़ेगा।

न्यूजर्सी योजना बड़ी सावधानी से काम लेने पर ज़ोर देती थी। लोगों को

ही प्रतिनिधि चुनने का अधिकार देने से, जैसा कि वर्जिनिया-योजना में कहा गया था, छोटे राज्यों को भय हुआ कि वे समाप्त हो जायेंगे। संघीय सरकार प्रत्येक समस्या पर अपनी मनमानी चलायेगी, बड़े राज्य अपने बहुमत के बल-बूते पर कानून बनाकर छोटे राज्य के हित की उपेक्षा करेंगे। इस लिए न्यूजर्सी योजना में कहा गया कि कांग्रेस का एक ही सदन हो जिससे प्रत्येक राज्य के प्रतिनिधियों की संख्या बराबर हो जैसा कि परिसंघीय धाराओं में भी कहा गया था, परन्तु इस योजना में यह व्यवस्था की गयी थी कि काँग्रेस को प्रचुर मात्रा में अधिकार दिये जायँ जिससे वह कर लगाने तथा व्यापार-नियन्त्रण के द्वारा राज्यों पर प्रभाव डाल सके। न्यूजर्सी योजना में राज्यों को सर्वोपरि अधिकार प्राप्त थे और राज्यों अथवा यूँ कहना चाहिए कि उनमें रहने वाले व्यक्तियों को देश की सरकार की नीतियों का संचालन करने का अधिकार दिया गया था।

वर्जिनिया और न्यूजर्सी योजनाएँ एक दूसरे से बिल्कुल मेल न खाती थीं, परन्तु फिलेडैल्फिया में एकत्रित हुए प्रतिनिधियों ने कई सप्ताह के वाद-विवाद के उपरान्त बहुत-से राजीनामे करके एक समझौता कर ही लिया। वह इस प्रकार कि काँग्रेस के दो सदन हों जैसा कि वर्जिनिया-योजना में कहा गया था, परन्तु उच्च सदन से प्रत्येक राज्य से दो-दो सदस्य लिये जायँ, जिनका निर्वाचन राज्य-विधान सभाएँ करें। प्रतिनिधि सभा में प्रत्येक राज्य की सदस्यता राज्य-विशेष की जन-संख्या के आधार पर हो और वर्जिनिया-योजना के अनुसार उनका निर्वाचन लोग स्वयं करें।

प्रतिनिधियों के सम्मुख तब यह एक बड़ी भारी समस्या थी और यह आसानी से हल न हो सकी। उदाहरणतः दक्षिण के राज्य यह मांग कर रहे थे कि यद्यपि उनमें गुलामों की बड़ी संख्या को मताधिकार न था, परन्तु उनको जनसंख्या का एक भाग माना जाए जिससे उन राज्यों से अधिक प्रतिनिधि लिये जायँ। अन्त में यह निर्णय हुआ कि ६० प्रतिशत गुलामों को स्वतन्त्र नागरिकों में सम्मिलित समझा जाए।

बड़े स्पष्ट शब्दों में संविधान ने उच्च अधिकार राज्यों से छीन कर सर्व सामान्य लोगों को दे दिया जिनके कुल प्रयोजन तो राष्ट्रीय सरकार द्वारा पूरे होंगे और दूसरे राज्य-सरकारों द्वारा। देश भर में संघीय कानून सर्वोपरि घोषित कर दिया गया और "प्रत्येक राज्य में जजों को उसी कानून का अनुसरण करना होगा; राज्य के विधान या किसी राज्य के कानून की कोई बात संघीय कानून के विरुद्ध होगी तो वह मान्य न होगी"। तब से राज्यों को सन्धि या समझौते करने, युद्ध करने, मुद्रा जारी करने या परस्पर एक-दूसरे के माल पर कर लगाने का निषेध कर दिया गया। इस सत्ता-विन्यास के बदले में संविधान द्वारा यह घोषणा कर दी गयी कि "संयुक्त राज्य, संघ के प्रत्येक राज्य के लिए गणराज्य-शासन की व्यवस्था करेगा और उन्हें प्रत्येक आक्रमण से बचायेगा।"

यह नहीं समझना चाहिए कि इस परिवर्तन से राज्य राष्ट्रीय सरकार के दास ही बन कर रह गये। पहले तो उनके प्रतिनिधि काँग्रेस में थे और वे कोई कानून बनवाने या किसी विधेयक का विरोध कराने में अपना प्रभाव डाल सकते थे। और दूसरे, अपनी सीमाओं में बहुत-सी ऐसी बातों पर राज्य-सरकारों का ही शासन था, जिनका सम्बन्ध सार्वजनिक क्षेत्र मे होता है, और जो उनके जीवन से निकटतम सम्बन्ध रखती हैं। इस प्रकार राज्य-सभाएँ लोगों के जीवन और उनकी सम्पत्ति की बराबर रक्षा करती रहीं, राज्य के व्यापार और बैंकों को चलातीं और उनका नियन्त्रण करतीं, विवाह और तलाक के कानूनों का पालन करातीं, स्कूल, सड़कें और मार्ग बनाने का काम कराती और स्थानीय स्तर पर सैकड़ों दूसरे मामलों से निपटातीं।

संघीय संविधान के अनुसार राष्ट्र की सरकार के तीन विभाग किये गये—विधान, शासन और न्याय। इनमें से प्रत्येक दूसरे पर कुछ नियन्त्रण और प्रतिबन्ध रखता, जिससे कोई एक विभाग अधिक शक्तिशाली या स्वच्छन्द न बन जाय। लोक-तन्त्रीय अधिकारों की सुरक्षा के लिए विचारपूर्वक सुनिर्धारित व्यवस्था "नियंत्रण और संतुलन" कहलाती थी।

काँग्रेस को व्यवस्था पद सभा के नाते विभिन्न क्षेत्रों में कानून बनाने का अधिकार दिया गया था जिनका सम्बन्ध राष्ट्र-कल्याण और विदेशी मामलों से था। इसके कुछ मुख्य कार्य ये-थे—कर लगाना, रुपया उधार लेना, अन्तर्राज्यीय व अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एक ही मुद्रा के चलन की व्यवस्था करना, सेना रखना, संयुक्त राज्य के प्रदेशों पर शासन करना और संघ में नये सदस्य-राज्यों को शामिल करना। बहुधा "संयुक्त राज्य के कल्याण के लिए काँग्रेस धन की व्यवस्था कर सकती थी तथा ऐसे कानून भी बना सकती, जो उसे मिले हुए विशेष अधिकारों को लागू करने के लिए आवश्यक और उचित हों"। धन संग्रह करने के लिए कानून बनाने का सुझाव रखने का अधिकार प्रतिनिधि सभा को दिया गया जिसमे सरकारी व्यय पर नियन्त्रण रखने का काम निचली सभा में ही रहे।

राज्यों के लिए जिस प्रकार कुछ अधिकार निषिद्ध थे उसी तरह काँग्रेस को भी कई मामलों में अधिकार प्राप्त न थे जिससे व्यक्तिगत स्वतन्त्रताओं का संरक्षण हो सके। विद्रोह या आक्रमण के कारण जन-सुरक्षा जब तक इसके लिए विशेष मांग न करे, काँग्रेस हेबियस कार्पस की सुविधा को हटा न सकती थी, जिसके अनुसार संदिग्ध अपराधी को कैद रखने के लिए पुलिस को अदालत से अनुमति लेनी पड़ती है। न मुकदमे चलाये बिना दण्ड ही दिया जा सकता है और न उन अपराधों पर सज़ा दी जा सकती है जो कानून की ओर से निषिद्ध करने से पहले किये गये थे। व्यापार और आमदनी के विचार से काँग्रेस एक राज्य के बन्दरगाहों को दूसरों से अधिक महत्व न दे सकती थी और न ही उसे मान-प्रतिष्ठा के लिए उपाधियाँ देने का अधिकार ही प्राप्त था।

काँग्रेस के सदस्यों के वेतन संघीय सरकार की ओर से दिये जाने का भी निर्णय हो गया और इस प्रकार केन्द्रीय सरकार की सत्ता और भी दृढ़ हो गयी। सेनेट के सदस्यों का चुनाव छः वर्षों के लिए हो और प्रतिनिधि सभा का दो वर्षो के लिए। यह व्यवस्था भी पारित हुई कि सेनेट में एक-तिहाई सदस्य हर नौ वर्षों के बाद फिर से चुने जायँ और इस प्रकार इसकी सदस्यता में कुछ स्थिरता बनी रहे।

काँग्रेस जो विधान स्वीकृत करे उसको केन्द्रीय सरकार के शासन विभाग की ओर से लागू करवाने की व्यवस्था की गई। वह विभाग काँग्रेस द्वारा स्वीकृत कर वसूल करने, सेनाओं का प्रबन्ध करने, काँग्रेस द्वारा अधिकृत मुद्रा और बैंकों का नियन्त्रण करने का जिम्मेदार बना। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि काँग्रेस द्वारा पास किये कानूनों को लागू कराने का काम इस पर रहा। इस विभाग का अध्यक्ष संयुक्त राज्य का प्रेसिडेण्ट हुआ और उसका यह उत्तरदायित्व हो गया कि वह "विधान का पूरा-पूरा पालन" करवाये। उसको पद पर चार वर्ष रहने का अधिकार मिला। उसके साथ एक वाइस-प्रेसिडेण्ट रखा गया जो कि सेनेट का सभापतित्व करे और कुछ अन्य ऐसे अधिकारी भी रखने की व्यवस्था काँग्रेस करे। प्रेसिडेण्ट के मन्त्रिमण्डल में में विदेश मन्त्री, वित्त मन्त्री, गृह, युद्ध और अन्य विभागों के प्रमुख अधिकारी लिये जाने की व्यवस्था हुई। ये सभी प्रमुख अमलदार—प्रेसिडेण्ट की सहायता करते और उससे आज्ञाएँ लें, ऐसा कानूना पारित हुआ।

फिर भी प्रेसिडेण्ट को काँग्रेस के हाथों खिलौना माल नहीं बनाया गया यह भी व्यवस्था की गयी कि हरएक विधेयक स्वीकृति और हस्ताक्षरों के लिए प्रेसिडेन्ट के पास जाय तभी वह विधान का रूप ले सकता है और यदि वह उसे न चाहे तो अपना विशेषाधिकार प्रयोग करके उसे अस्वीकार कर पुर्नविचार के लिए काँग्रेस को लौटा सकता है। यदि काँग्रेस फिर उस बिल को दो-तिहाई बहुमत से स्वीकार कर देती है तो यह प्रेसिडेण्ट के हस्ताक्षर बिना भी कानून बन जाता है। प्रतिनिषेध का यह शक्तिशाली अधिकार नियन्त्रण तथा सन्तुलन का ही भाग था जिस के द्वारा हकूमत के तीनों विभागों में अधिकार समान रूप में बाँटे गये।

प्रेसिडेण्ट ही सेना और समुद्री बेड़े का सेनापति होता है, वह विदेशों से सन्धि कर सकता है, परन्तु शर्त यह थी कि सेनेट में दो-तिहाई बहुमत से स्वीकृति मिल जाय। इसी प्रकार सेनेट की अनुमति से वह राजदूतों सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों और अन्य संघीय अधिकारियों की नियुक्ति कर

सकता है। यदि आवश्यकता हो तो वह काँग्रेस का विशेष अधिवेशन भी बुला सकता है और उससे यह आशा भी की जाती है कि वह अपने वार्षिक संघीय सन्देश भाषण में काँग्रेस के सामने कार्य-पद्धति के विभिन्न सुझाव रखे। दूसरी ओर यहाँ भी नियन्त्रण सन्तुलन की व्यवस्था है। काँग्रेस घूस, भ्रष्टाचार, विद्रोह या "किसी बड़े अपराध या दुर्व्यवहार के अपराध में" प्रेसिडेण्ट को पदच्युत भी कर सकती है।

संविधान बनाने वाले खूब जानते थे कि वे प्रेसिडेण्ट के कर्तव्यों का निश्चय करके सरकार के मुख्याधिकारी के रूप में केवल वैधानिक प्रतीक ही नहीं बना रहे हैं। प्रेसिडेण्ट का काम यह भी है कि वह लोगों के प्रतिनिधि के रूप में सामने आए और अपने नेतृत्व से लोगों को संगठित रखे।

प्रमुख अधिकारी के रूप में उसके चुनाव की एक विशेष व्यवस्था की गयी। सभी राज्य-विधान सभाएँ जिस किसी तरह भी चाहे, एक निर्वाचन मण्डल चुनें इसमें राज्य-विशेष के उतने ही सदस्य होने चाहिये जितने कि कांग्रेस काँग्रेस के दोनों सदनों में उस (राज्य के) प्रतिनिधि हों। फिर राज्यों का यह प्रतिनिधि-मण्डल प्रेसिडेण्ट का चुनाव करे। यदि कोई उम्मीदवार स्पष्ट रूप से बहुमत प्राप्त करले तो वह चुन लिया जाय। उसके बाद दूसरे दर्जे पर आने वाला वाइस-प्रेसिडेण्ट बनता है। जब किसी को बहुमत प्राप्त न हो या कोई झगड़ा खड़ा हो, तो प्रतिनिधि सभा प्रेसिडेण्ट का निर्वाचन करे जिसमें प्रत्येक राज्य को एक ही वोट प्राप्त होता है।

प्रेसिडेण्ट के चुनाव के लिए इस प्रकार के निर्वाचक-मण्डल की व्यवस्था करने में संविधान बनाने वालों का प्रयोजन यह था कि उसका चुनाव काँग्रेस या राज्य-विधान सभाएँ न करें जिससे वह उन पर निर्भर न हो जाय, बल्कि उसका चुनाव एक अन्य संस्था करे जिसमें विभिन्न राज्यों के सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्ति हों। पहले तो निर्वाचकों से यही आशा की गयी कि वे उम्मीदवार चुनने में स्वेच्छा से काम लें। परन्तु लगभग आरम्भ से ही उन्हें ऐसे राजनीतिज्ञों और विभिन्न दलों के नेताओं से आदेश मिलने लगे जो स्वयं पहले उम्मीदवारों के पक्ष में ही मत प्रकट करने लगे, जिनके नाम चूनाव से पहले ही नामज़द हो जाते। राजनीतिक दल उम्मीदवारों को चुनते,

प्रत्येक राज्य के लोग चुनाव में अपनी इच्छा प्रकट कर देते और उसके महीनों बाद निर्वाचक-मण्डल आम चुनाव के परिणाम की पुष्टि करता ।

सरकार का तीसरा विभाग न्याय या कानून है, इसमें सर्वोच्च-न्यायालय तथा उससे हीनतर अदालतें होती हैं जिनको कॉंग्रेस नियुक्त करती है । राष्ट्रीय या अन्तर्राज्यीय झमेलों को सर्वोच्च न्यायालय सुलझाता है और उसके निर्णय अन्तिम और अकाट्य होते हैं । यह पुनः नियंत्रण और सन्तुलन व्यवस्था की गयी है । सर्वोच्च न्यायालय के सदस्यों में एक मुख्य न्यायाधीश तथा आठ अन्य न्यायाधीश होते हैं । उनकी नियुक्ति प्रेसिडेण्ट सेनेट की अनुमति से करता है । उनको तथा छोटी अदालतों के न्यायधीशों को भी दोषी ठहराया जा सकता है ।

संयुक्त-राज्य संघ की अदालतें राज्यों की सीमाओं की अवहेलना करते हुए प्रत्येक नागरिक को यह स्मरण कराती हैं कि राष्ट्रीय शासन में उनके अधिकार तथा कर्तव्य क्या हैं । यदि कोई संघीय-विधान का विरोध करे तो उस पर संघ की अदालत में ही मुकदमा चलाया जाय और यदि अपराध सिद्ध हो जाय तो तो उसे संघीय कारागार में ही रखा जाता है । परन्तु दूसरी ओर यदि वह पुनर्वेक्षण का कोई कारण दिखा सके तो वह सर्वोच्च न्यायालय तक प्रत्येक अदालत में अपील कर सकता है । जैसा कि हुआ भी है, यदि किसी नागरिक पर संघीय विधान के अनुसार कोई अपराध लगाया गया हो, वह कानून की वैधानिकता पर आपत्ति उठा सकता है और अदालत में मुकदमा जीत जाय तो वह कानून जिसके अनुसार उस पर मुकदमा चला है अवैध घोषित कर दिया जाता है, और संविधान से निकाल दिया जाता है । इस से प्रत्यक्ष है कि हकूमत जिन लोगों की सेवा करती है उनके अधिकारों को कितनी महानता देती है; एक व्यक्ति कानून की विधि से संयुक्त राज्य काँग्रेस द्वारा पास किये और प्रेसिडेण्ट द्वारा स्वीकृत कानून को सर्वोच्च न्यायालय द्वारा रद्द करवा सकता है ।

संघीय-न्याय व्यवस्था को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय मामलों पर निर्णय देने का व्यापक अधिकार दिया गया । उसे संयुक्तराज्य द्वारा की गयी विदेशी सन्धियों पर निर्णय देने का अधिकार मिला तथा राजदूतों और मन्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाले प्रश्नों का भी है । वह दो या अधिक राज्यों के झगड़ों एक

राज्य और दूसरे राज्य के नागरिकों के बीच झमेलों पर भी फैसला देने वाली बनी। फिर भी कानूनी क्षेत्र का बहुत-सा काम राज्य तथा स्थानीय अदालतों पर रहा जिसमें देशभर के अधिकतर औसत नागरिकों के मुकदमों की सुनवाई जारी रही।

संविधान के अन्तिम भाग में यह व्यवस्था की गयी कि यदि बदलते हुए समय या हालात में कोई संशोधन आवश्यक हो तो वह भी किया जा सके। काँग्रेस के दोनों सदनों में दो-तिहाई बहुमत से संशोधन का सुझाव रखा जा सकता है या राज्य-विधान सभाओं के दो-तिहाई सदस्यों की प्रार्थना पर ऐसा सुझाव रखने के लिए गोष्ठी बुलाई जा सकती है। दोनों परिस्थितियों में राज्य-विधान-सभाओं के तीन-चौथाई बहुमत से संशोधन लागू हो कर संविधान का भाग बन सकता है। आने वाले समय ने सिद्ध कर दिया कि अधिक संशोधनों की आवश्यकता नहीं पड़ी, क्योंकि संविधान में बड़ी लचक थी और कांग्रेस तथा अदालतें इसकी व्यापक रूप में व्याख्या करती रहीं हैं।

सारी ग्रीष्म ऋतु में क्रियात्मक संविधान के निर्माण का काम जारी रहा जिससे "राष्ट्र के सिर पर छत्रछाया बन जाय"। अन्त में संयुक्त राज्य में शासन के लिए एक दृढ़ संतुलित दस्तावेज़ तैयार करने के उपरान्त १७ सितम्बर १७८७ को संविधान-गोष्ठी समाप्त हुई। जिस समय सदस्यों ने दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किये उस समय गोष्ठी भवन में वातावरण गम्भीर था। और ऐसे शंकाशील व्यक्ति भी उस समय कम न थे जिनके सन्मुख ये प्रश्न थे कि राज्यों से सार्वभौतिक सत्ता छीनकर ज़्यादती तो नहीं की गयी ? क्या अमेरिका के लोग उनके तैयार किये संविधान को स्वीकार कर लेंगे ? जब प्रतिनिधि एक दूसरे से विदा होने लगे तो अमेरिका के बड़े नीतिज्ञ वैज्ञानिक तथा दार्शनिक बैन्जमिन फ्रैंकलिन उस कुर्सी की पीठ पर बने हुए सूर्य के चित्र को एक टक देखता रहा, जिस पर जार्ज वाशिंगटन बैठा करता और कहा करता था "इस अधिवेशन में तथा संविधान के सम्बन्ध में अपनी आशाओं और शंकाओं के अनुक्रम में मैंने कितनी ही बार प्रधान के पीछे बन हुए सूर्य को देखा है, तब मैं यह न समझ सका था कि यह सूर्य उदय हो रहा है या अस्ताचल को जा रहा है; परन्तु अन्त में अब मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि यह सूर्योदय है, सूर्यास्त नहीं।"

× × ×

प्रतिनिधियों ने एक महान कार्य सम्पन्न कर लिया था। बड़े स्पष्ट तथा कम से कम शब्दों में उन्होंने एक लोकतन्त्रीय शासन के पथप्रदर्शक सिद्धान्तों

का संकलन किया । ये सिद्धान्त आज के सर्वथा भिन्न युग में भी उसी भाँति उपयुक्त है जैसे कि लेख-बद्ध होने के समय थे । यद्यपि इस संविधान के निर्माण में बहुत-से व्यक्तियों ने मदद दी जिससे यह स्थायी दस्तावेज़ तैयार हुआ, फिर भी वर्जिनिया के जेम्स मैडिसन को बहुधा "संविधान का पिता" कहा जाता है और उसे ही इसके निर्माण का सब से अधिक श्रेय दिया जाता है ।

× × ×

जब यह कार्य सम्पन्न हो गया तो संविधान के मसौदे को काँग्रेस के पास भेज दिया गया और काँग्रेस ने उसे स्वीकृति के लिए राज्यों को भेजा, जिसकी स्वीकृति प्रत्येक राज्य में की गई एक विशेष गोष्टी द्वारा होनी थी । संविधान को लागू करने के लिए राज्यों की ओर से इसका समर्थन प्राप्त करने के लिए एक बड़ा संघर्ष करना अभी बाकी था ।

अब संविधान को तलमलाये और मचले हुए राज्यों पर लागू करने का सख्त संघर्ष शुरू हो गया । प्रतिनिधियों ने बड़ी बुद्धिमानी से काम लेकर यह निर्णय किया था कि संविधान राज्यों की ओर से ही स्वीकृत हो, उनकी विधान-सभाओं की ओर से नहीं बल्कि उनकी गोष्ठी द्वारा क्योंकि विधान-सभाएँ तो कभी भी स्वीकृति न देतीं । परन्तु अब संविधान के पक्षपाती, जो संघवादी कहलाये, अपना प्रभाव डाल सकते थे । यही बात पैनसिलेवेनिया में हुई, संविधान के समर्थकों ने जल्दी ही एक गोष्ठी बुलाकर स्वीकृति का प्रस्ताव पास कर दिया और विरोधियों के संगठित होने से पहले ही स्वीकृति की घोषणा कर दी । इस चाल पर वहाँ दंगा और मारपीट भी हुई ।

मैसाचूसेट्स में संघ के विरोधियों की संख्या अधिक थी, परन्तु वहाँ भी चाल से काम लिया गया । मैसाचूसेट्स-गोष्ठी का प्रधान जॉन हेनॉक था । उसे यह वचन देकर फुसलाया गया कि उसे नये गणराज्य का वाइस-प्रेसिडेण्ट बनाया जायगा । थोड़े से बहुमत से मैसाचूसेट्स के लोगों ने इसकी स्वीकृति दे दी और कई संशोधन करने की शर्त भी लगाई ।

संविधान की स्वीकृति के लिए केवल चालें ही पर्याप्त नहीं थीं, इसके प्रतिपादकों ने यह समझ लिया था । भाषणों, विवादों और समाचार-पत्रों

में उन लोगों को जवाब देने पड़े जो स्वीकृति देने के विरुद्ध आवाज़ उठा रहे थे। संविधान के आलोचक कह रहे थे कि यह संविधान गरीबों के हित का बलिदान करके अमीरों का निष्ठुर शासन स्थापित करने का 'षड़यन्त्र' है। यह भी कहा गया कि संघीय सरकार बड़ी निर्दयता से सीधे-सादे लोगों पर कर लगायेगी, उनको कर्ज देने के लिए ठोस रक़म भरने को विवश करेगी और जिन युद्धों में वे लड़ना न भी चाहें, सरकार उनकी जबरन भर्ती करेगी। सबसे बुरी बात आलोचक यह कहते थे कि संविधान में कोई ऐसा अधिकार-धारा नहीं है जिसके द्वारा आधारभूत व्यक्तिगत स्वतन्त्रताओं जैसे भाषण उपासना और अखबारों की स्वतन्त्रताओं की व्यवस्था हो।

निबन्धों के एक बड़े महत्वपूर्ण क्रम में जिसका नाम "फेड्रलिस्ट पेपरस्" था, अलेग्ज़ैण्डर हैमिल्टन, जेम्स मेडिसन और जॉन जे ने विस्तारपूर्वक यह बताया कि संविधान से क्या लाभ हैं। इन निबन्धों का बढ़ा प्रचलन भी हुआ। एक बड़ी सशक्त केन्द्रीय सरकार के खतरों को स्वतः मानते हुए भी इन लेखकों ने बताया कि परिसंघीय धाराओं से किस प्रकार राष्ट्र अस्तव्यस्तता की ओर जा रहा था और यह भी दर्शाया कि लोकतन्त्रीय शासन-व्यवस्था से क्या लाभ हो सकते हैं। यह दलील दी गयी कि नये शासन में क्रूरता की उतनी कोई सम्भावना नहीं है जितनी कि राज्यों के शासन में थी; राज्यों में तो शक्ति-शाली दल विधान सभाओं पर अधिकार पा लेते और अपनी मनमानी करते। इन लेखों के औचित्य में अमेरिका के लोगों पर बड़ा प्रभाव डाला और बहुत से शंकाशील लोग संघीय पक्ष में हो गये।

इसी बीच डेलवेयर, न्यूजर्सी और जार्जिया के राज्यों ने शीघ्र ही और एकमत से संविधान को स्वीकृत कर लिया और कुछ दूसरे राज्य १७८८ के आरम्भ में इसके पक्ष में होगये। जब जून में न्यू हैम्पशॉयर ने इसका समर्थन किया तो संविधान को ६ राज्यों की स्वीकृति मिल गयी। परन्तु वर्जिनिया और न्यूयार्क के दोनों बड़े राज्यों में इस प्रश्न पर सख्त विवाद हो रहा था और नई शासन-व्यवस्था के लिए उनकी ओर से समर्थन परमावश्यक था।

वर्जिनिया में पैट्रिक हैनरी ने संविधान के विरुद्ध संघविरोधी आन्दोलन चलाया। उसने यह घोषणा की, कि इसकी भूमिका दुखद है क्योंकि इसमें

लिखा है "हम, संयुक्त राज्य के लोग," और यह नहीं लिखा है "हम, राज्य"। हैनरी का विरोध करने के लिए जार्ज वाशिंगटन और जेम्स मैडिसन को अपना बड़ा प्रभाव काम में लाना पड़ा। अन्त में राज्य के पूर्व में समृद्ध खेतिहरों और पश्चिम में सीमावर्ती लोगों के सहयोग से थोड़ी-सी अधिकता के साथ स्वीकृति प्राप्त कर ली गयी। ये खेतिहर स्वभावतः सशक्त शासन और सुदृढ़ मुद्रा में विश्वास करते थे और सीमावर्ती वनों में बसने वाले इस कारण संघ के पक्ष में थे कि सीमा पर उनकी रक्षा का पक्का प्रबन्ध हो तथा राज्यों में व्यापार बढ़े।

न्यूयार्क में भी बड़ा संघर्ष हुआ और अन्त में अलेग्ज़ैण्डर हैमिल्टन के अनथक प्रयत्नों से संघवादी जीत गये। एसा भी समय आया जब न्यूयार्क शहर ने राज्य से सम्बन्ध-विच्छेद करने की धमकी दी और अपना ही संघ बनाना चाहा। पोकीपसी में जो अन्तिम मतगणना हुई, उसमें ३० वोट संविधान के पक्ष में आये और २७ उसके विरुद्ध और इस प्रकार संविधान स्वीकृत हुआ।

अब १३ में से ११ राज्यों ने संघीय संविधान स्वीकार कर लिया और सरकार का निर्वाचन हुआ तथा उसने शासन सम्हाल लिया। तब रोड-आईलैण्ड और उत्तरी कैरोलाइना के बाकी रहे दो राज्यों ने भी समझौता कर लिया। रोड-आईलैण्ड ने न तो फिलेडैल्फिया की संविधान सभा में भाग लिया था और न ही स्वीकृति के लिए कोई गोष्ठी ही बुलायी। परन्तु जब अन्य राज्यों ने उसके साथ एक विदेशी राज्य की भाँति व्यवहार करने, और उसके माल पर कर लगाने की धमकी दी तब उसने अपना हठ छोड़ा और इस प्रकार संघ सम्पूर्ण हुआ। ये तेरह प्रारम्भिक राज्य थे—कोनैक्टीकट, डेलवेयर, जार्जिया, मैरीलैण्ड, मैसाचूसेट्स, न्यूहैम्पशॉयर, न्यूजर्सी, न्यूयार्क, उत्तरी कैरोलाइना, पैनसिलेवेनिया, रोड-आईलैण्ड, दक्षिणी कैरोलाइना और वर्जिनिया।

कई राज्य संघ में अनिच्छापूर्वक सम्मिलित हुए थे, परन्तु अन्तिम रूप में संविधान की स्वीकृति पर देश भर में खुशी मनायी गयी। मैसाचूसेट्स से लेकर दक्षिणी कैरोलाइना तक सभी नगरों में दावतें, भाषण और परेडें हुई और सभी जगह अखबारों ने इस महान् घटना पर लेख लिखे। परिसंघीय

धाराओं की पुरानी काँग्रेस अभी तक चली आ रही थी, जो अब अन्तिम साँस ही ले रही थी। और उसने अन्तिम साँस लेकर शासन की बागडोर नयी शासन-व्यवस्था के हाथ सौंप दी।

संघवादी विचार वालों की पूर्ण विजय हुई। यह सत्य है कि हैमिल्टन और अन्य कुछ व्यक्ति अधिक शक्तिशाली शासन के पक्ष में थे, जिसमें प्रेसिडेण्ट और सेनेट के सदस्य जीवन भर के लिए चुने जाते और राज्यों से सभी अधिकार ले लिए जाते; परन्तु जिस प्रकार का संविधान अन्त में स्वीकार हुआ उस पर उन्हें सन्तोष था। इसके अतिरिक्त उन्हें अधिकार-धारा के प्रश्न पर झुकना पड़ा और उन्होंने वचन दिया कि संशोधन के रूप में वह संविधान के साथ जोड़ दिया जायेगा। इसका संविधान के मुख्य भाग से कोई सम्बन्ध न था इसलिए हैमिल्टन-दल के लोगों ने संघ विरोधियों की इस मांग पर कोई विशेष आपत्ति न उठायी।

शीघ्र ही राज्यों ने अपने निर्वाचक-मण्डल चुने और प्रेसिडेण्ट के लिए मतगणना हुई। परिणाम के सम्बन्ध में किसी को भी सन्देह न था—एक मत से देश के वीर, "राष्ट्रपिता" जार्ज-वाशिंगटन प्रेसिडेण्ट चुने गये, जिनमें जहाँ आत्मसम्मान का गुण प्रचुर था वहाँ नम्रता भी बहुत थी। वाशिंगटन ने इस पद के लिए इच्छा न की थी; शायद वे वर्जिनिया के खेतिहर के रूप में अपना बाकी जीवन बिताना अधिक पसन्द करते। वाइस-प्रेसिडेण्ट के पद के लिए मैसाचूसेट्स के जॉन ऐडम्स चुने गये; और पहले कुछ वर्षों के लिए न्यूयार्क शहर को राजधानी बनाया गया।

वेर्नन पर्वत पर अपने सुरम्य निवास को छोड़ कर जब वाशिंगटन उत्तर की ओर गये थे जिस शहर से भी वह गुजरे, उनका बड़ा स्वागत हुआ, जलूस निकाले गये, परेडें हुईं, उन पर फूल बरसाये गये, तोपों ने सलामी दी और जिन लोगों ने अभी कुछ वर्ष पहले उसके नेतृत्व में लड़ाइयाँ लड़ी थीं, उनकी ओर से प्रेम और आदर के इस प्रदर्शन पर जब वाशिंगटन ने धन्यवाद दिया तो उन सब की आँखों में खुशी के आँसू आ गये। न्यूयार्क पहुँचने पर वाशिंगटन का बड़ा शानदार स्वागत हुआ और ३० अप्रैल १७८९ को वालस्ट्रीट के फैड्रल हाल में उन्होंने संयुक्त राज्य के प्रथम प्रेसिडेण्ट का पद सम्हाला।

अध्याय ५

गणराज्य का विकास और प्रादेशिक विस्तार

जार्ज वाशिंगटन दो बार संयुक्त राज्य के प्रेसिडेण्ट बने और उनके शासन काल में, यह कहा जा सकता है कि अमेरिका के लोग उनकी नितान्त सराहना और क़द्र करते रहे। अमेरिका की राजनीतिक प्रणाली ही कुछ ऐसी है कि वहाँ कुछ ही प्रमुख वाइस-प्रेसिडेण्ट, जनता में अधिक लोकप्रिय रह सके हैं। अल्पसंख्या में कुछ लोग शासन-व्यवस्था की त्रुटियाँ निकालते ही रहते हैं और बहुधा एक चौथाई से लेकर आधे भाग तक प्रेसिडेण्ट का विरोध करते ही हैं चाहे वह बाकी लोगों में कितना भी लोकप्रिय क्यों न हो।

वाशिंगटन ने राजनीतिक दलबन्दी से दूर रहने के लिए भरसक यत्न किया, परन्तु उसकी कृतियों से प्रकट हो गया कि वह संघ का पक्षपाती है और इसी से उसका विरोध करने वाले उसे अत्याचारी और 'डिक्टेटर' (तानाशाह) कहने लगे। जिस संघ विरोधी दल ने संविधान का विरोध किया था, वह शीघ्र ही एक विरोधी पार्टी में परिणत हो गया और उसने अपना नाम रिपब्लिकन पार्टी रखा। यह पार्टी आज की रिपब्लिकन पार्टी की अग्रगामिनी नहीं थी; बल्कि आज इसके अनुयायी डैमोक्रेट्स हैं। आज की रिपब्लिकन पार्टी पहले के संघवाद की उपज है।

संघीय और रिपब्लिकन दलों में जिस राजनीतिक समस्या पर उलझन बनी वह संविधान की व्याख्या से सम्बन्ध रखती थी। संघ के पक्षपाती कहते थे कि संविधान की धाराएँ शिथिल रहनी चाहिएँ जिससे देश की सरकार को कानून बनाने और उन्हें लागू करने के अधिक से अधिक अधिकार प्राप्त रहें।

दूसरी ओर रिपब्लिकन यह विश्वास करते थे कि संविधान का दृढ़ता से पालन हो और केन्द्रीय सरकार को वही अधिकार प्राप्त हों जो संविधान द्वारा उसे दिये गये हैं ।

प्रेसिडेण्ट वाशिंगटन के प्रथम मन्त्रिमण्डल में चार विभाग थे । वाशिंगटन ने उसमें विरोधी दलों के दो प्रमुख नेता मन्त्रिमण्डल में लिये, वे थे अलैग्ज़ैन्डर हैमिल्टन जो संघ के पक्ष में थे, उन्हें वित्त-मंत्री का पद दिया गया । स्वतन्त्रता के घोषणापत्र के लेखक और संविधान-गोष्ठी के समय फ्रान्स में अमेरिका के राजदूत थामस जैफ़रसन को विदेश-मन्त्री नियुक्त किया गया । जैफ़रसन संघीय पद्धति के विरुद्ध था । वह धनाढ्य और सुसंस्कृत था, परन्तु अपने विचारों और व्यवहार में पूर्ण रूप से लोकतन्त्रीय पद्धति में विश्वास रखता था ।

ज्यों-ज्यों शासनकार्य होने लगा, प्रत्येक बात पर हैमिल्टन और जैफ़रसन ने एक दूसरे का विरोध किया । यद्यपि उनके विचारों में बहुत समानता थी परन्तु बहुत-से आधारभूत प्रश्नों पर उनका मतभेद रहता । हैमिल्टन चाहता था कि केन्द्र में एक दृढ़ शक्तिशाली शासन हो, जिसको शिष्टजनों का एक दल अमीरों के हित के लिए चलाये । उधर जैफ़रसन इस पक्ष में था कि केन्द्रीय सरकार को कम से कम अधिकार प्राप्त हों और जनसाधारण, जिन पर उसे विश्वास था स्थानीय और राज्य सरकारों द्वारा अपनी इच्छा प्रकट करे ।

नई हकूमत के सामने सब से बड़ी समस्याओं में एक यह भी थी कि किस प्रकार धन संग्रह किया जाय और साख बनाई जाय । पहली कांग्रेस ने विदेश से तथा अपने देश के लोगों से धन उधार लिया था जिससे क्रान्तिकाल की लड़ाइयों का खर्च चलता रहा । राज्य भी ऋणी थे ।

दो वर्ष के भीतर ही ३२ वर्षीय हैमिल्टन ने अपने कौशल-द्वारा घाटा पूरा कर दिया । जिन विधियों को उसने अपनाया संघवादियों ने तो उन्हें सराहा परन्तु रिपब्लिकन दल ने उनका विरोध किया । विदेशी ऋण चुका दिये गये । इस पर किसी को आपत्ति न हुई, परन्तु जब देश में अपनी हुण्डियां का मूल्य पूरा-पूरा चुकाया जाने लगा तो बड़ा शोर मच गया । आरम्भ में देशभक्त नागरिकों ने यह हुण्डियाँ खरीदी थीं । और वे समझते थे कि इनका कोई मूल्य

न मिलेगा। और थोड़े-से लोगों को जो कुछ मिला उसके बदले में उन्होंने सटोरियों को बेच दी थीं। इसके परिणाम स्वरूप जब सरकार ने अपनी हुण्डियाँ रखने वालों को उनके पूरे दाम चुकाये तो कई सटोरियों को पहले खरीदारों के खर्च पर लाभ हुआ और उनके पहले खरीददारों को हानि रही। इस पर हैमिल्टन ने घोषणा की थी कि मुझे राष्ट्रीय सरकार की साख बनाने की चिन्ता अधिक है, इसकी नहीं कि कुछ व्यक्तिगत लोगों को लाभ होता है या हानि। इस महान् कार्य का उद्देश्य पूरा हुआ; इसके उपरान्त सरकार की हुण्डियों का मान बढ़ गया और जनता से नये ऋण बड़ी सरलता से मिल गये।

हैमिल्टन ने राष्ट्रीय सरकार को अधिक सबल बनाने के लिए एक पग यह भी उठाया कि उसने कांग्रेस को इस बात के लिए राजी कर लिया कि वह राज्यों के ऋण चुका दे। कुछ राज्यों के ऋण अधिक थे; परन्तु हैमिल्टन ने "अपने ऊपर भार लेने" की नीति अपना कर राज्यों को कहा कि वे उऋण होने के लिए समान धन दे दें। वर्जिनिया के ऋण बहुत कम थे, उसने कर देकर मैसाचूसेट्स का बड़ा ऋण चुकाने में आपत्ति की। अन्त में हैमिल्टन ने बड़ी निपुणता से काम लेते हुए वर्जिनिया को यह वचन देकर राज़ी किया कि केन्द्रीय सरकार की राजधानी दक्षिण में पोटोमैक नदी के तट पर बनाई जायगी। राज्यों के ऋण अपने ऊपर लेकर राष्ट्रीय सरकार ने अमेरिका के सभी लोगों और निस्सन्देह सारे संसार को यह दिखा दिया कि वित्त-सम्बन्धी मामलों को निपटाने में राष्ट्रीय सरकार सर्वोपरि है।

संघीय सरकार के पास सत्ता केन्द्रीभूत करने के लिए हैमिल्टन की एक योजना संयुक्त राज्य के बैंक की स्थापना भी थी। ऐसा करके उसने देश भर के व्यापारियों का समर्थन प्राप्त कर लिया। इङ्गलैंड के बैंक की भाँति इसकी पूंजी में सरकार और लोगों दोनों का भाग था और दोनों इसके लाभ के हिस्सेदार थे। करों तथा भूमि के विक्रय से प्राप्त सारा धन बैंक में जाता और बैंक ने एक-सी कागज़ी मुद्रा जारी की जो राज्यों की मुद्राओं के स्थान पर चालू हो गई। संविधान में कहीं भी इस प्रकार के बैंक की व्यवस्था नहीं की गई थी। परन्तु संघवादियों ने यह दलील दी कि ये अधिकार "आ ही" जाते हैं। काँग्रेस कर लगा सकती है, रुपया उधार ले सकती है, ऋण चुका सकती

हैं—तो इसका देश भर के लिए कोई बैंक क्यों न हो जो कि सरकार की ओर से लेन-देन करे !

राष्ट्रीय कोप के लिए धन प्राप्त करने के लिए संघीय सरकार ने विदेशी आयात और ह्विस्की पर कर लगा दिये । ऐसा करने से पर्याप्त धन इकट्ठा हुआ; परन्तु इससे झगड़ा भी पैदा हुआ । पश्चिमी पैनसिल्वेनिया के कृषक ह्विस्की तैयार करते थे, उन्होंने ह्विस्की-कर का विरोध कर संघीय सरकार के विरुद्ध विद्रोह कर दिया, दंगे किये; परन्तु संयुक्त राज्य के १५,००० सैनिकों के प्रदर्शनमात्र से ही यह विद्रोह दब गया ।

तट-कर लगाने पर प्रतिक्रिया मिश्रित थी । जहाँ तक उत्तरीय राज्यों में रहने वालों का सम्बन्ध था, यूरोप से आने वाले जूतों, कपड़ों और मशीनों पर कर लगना ठीक ही था, क्योंकि तब अर्थात् १७९० के उपरान्त उत्तर के लोग अपने उद्योग शुरू कर रहे थे और वे विदेशी प्रतिद्वन्दिता से सुरक्षा चाहते थे । परन्तु दक्षिण के राज्यों में अधिक लोग मुख्यतः खेतिहर थे, वे कपास अन्य कच्चा माल दूसरे देशों को भेजते थे और उनके बदले में तैयार चीज़ें लेते थे, जिन्हें वे उचित दामों पर खरीदते । इन तैयार हुई चीजों पर भारी कर लगने से दक्षिणी खेतिहरों ने यह समझा कि उनके विदेशी व्यापार से प्राप्त होने वाले लाभ पर कुठाराघात हो रहा है । तट-कर के इस प्रश्न पर देश के विभिन्न भागों में पहली बार वैमनस्य पैदा हुआ और ७० वर्ष बाद देश में जो गृहयुद्ध हुआ उसका एक मुख्य कारण ये तट-कर भी थे ।

× × ×

संघीय और रिपब्लिकन दलों में देश के आन्तरिक प्रश्नों पर मतभेद था हो, उनमें उतना ही तीव्र मतभेद देश की विदेशी नीति में भी हुआ । जिस वर्ष वाशिंगटन प्रसिडेण्ट बना उसी वर्ष यूरोप पर एक तूफान सा छा गया और ऐसा प्रतीत होता था कि संयुक्त राज्य भी अनिवार्य रूप से उसमें उलझ जायगा और अपने शैशव में ही समाप्त हो जायगा ।

यह तूफान फ्रान्स की क्रान्ति का था जिसमें बूरबां वंश का राज्य समाप्त हो गया और लूई षोड़श और रिन्तनितकी बहुत-से और लोगों के साथ

फाँसी दी गई। ज्यों ही रक्तपात और मारधाड़ बढ़ने लगी यूरोप के अन्य शासक अपने सिर बचाने की चिन्ता में बीच बचाव करने लगे। शीघ्र ही यूरोप में युद्ध शुरु हो गया और फ्रान्स अपने पुराने शत्रु इंगलैंड के साथ युद्ध में उलझ गया।

फ्रान्स और अमेरिका अब भी साथी थे और फ्रान्स को नये राष्ट्र से उतनी ही सहायता की आशा थी जितनी उसने अमेरिका को उसके स्वातन्त्र्य-संग्राम में दी थी। बहुत से अमेरिकी लोगों ने, जिनमें अधिकतर रिपब्लिकन विचारों के थे, क्रान्तिकारियों के प्रति सहानुभूति दिखाई और ब्रिटेन के विरुद्ध लड़ाई करने के लिए ज़ोर डाला।

अनुदार संघीय विचारों के लोग इस पक्ष में न थे। उन्हें फ्रान्स की स्थिति पर उतना ही दुःख हुआ जितना यूरोप के रूढ़िवादियों को हुआ था। यूरोप के युद्ध में उलझना और कैनेडा तथा पश्चिम से आक्रमण का खतरा मोल लेना अति भयास्पद था। अतः १७९३ में वाशिंगटन ने इस आधार पर तटस्थ रहने की घोषणा की कि फ्रान्स के साथ सन्धि उसकी पहली सरकार के साथ हुई थी, क्रान्तिकारियों के साथ नहीं।

इन्हीं दिनों फ्रान्स ने 'सिटिज़न' एडमंड जेने को संयुक्तराज्य भेजा ताकि वह अमेरिका को युद्ध में सम्मिलित कराने का प्रबन्ध करे। उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि संयुक्त राज्य के बन्दरगाह ब्रिटिश वाणिज्य को आघात पहुँचाने के लिए बर्ते जायें और स्पेन के अधिकृत प्रदेशों पर आक्रमण करने के लिए सेना भेजी जाय क्योंकि इन दिनों स्पेन ब्रिटेन का पक्ष ले रहा था। कुशलता और कूटनीति से शायद जेने समर्थन प्राप्त कर लेता, परन्तु वह अपनी माँगों में बड़ा हठीला था और खुले तौर पर अमेरिका के उन लोगों से मिलता जो फ्रान्स के प्रति सहानुभूति रखते, और इस प्रकार तटस्थता की घोषणा का विरोध कराने का यत्न करता। अमेरिका में जनमत उसके विरुद्ध हो गया और अन्त में उसे पदच्युत कर दिया गया।

इधर यदि फ्रान्स के साथ सम्बन्ध अच्छे नहीं थे तो उधर ब्रिटेन के साथ भी सम्बन्ध ऐसे ही थे। उत्तर-पश्चिम प्रदेश के ऊपरी भाग में अब भी ब्रिटेन का कुछ किलों पर अधिकार था। क्रान्ति के उपरान्त ब्रिटेन ने यह

कह कर उनको लौटाने से इन्कार कर दिया था कि जब तक अमेरिकी सौदागार ब्रिटेन के नागरिकों से लिए हुए ऋण नहीं चुका देते तब तक वह इन दुर्गों पर अधिकार रखेगा। इन मोर्चों से इङ्गलैण्ड ने अमेरिका के विरुद्ध इडिण्यन विद्रोह भड़काया। उसे आशा थी कि पश्चिम में जो प्रदेश उसने खोये हैं, उनमें से कुछ शायद मिल जाएँ। दूसरी ओर ब्रिटेन की नौसेना के जहाज़ों ने समुद्र में अमेरिका के जहाज़ों को पकड़ना शुरू किया उन पर 'प्रभाव डालना' या जहाज़रानों को इस दोष में पकड़ना शुरू कर दिया था कि वे ब्रिटिश जहाजों से भागे हुए हैं। उनमें से निस्सन्देह बहुत भाग कर आये थे, परन्तु बहुत से अमेरिका के ही लोग थे।

जब वाशिंगटन दूसरी बार प्रेसिडेण्ट बना तो उसने यूरोप के प्रति तटस्थता की नीति पर पुनः ज़ोर दिया और जॉन जे को १७९४ में लन्दन भेजा कि वह ब्रिटेन और अमेरिका के बीच झगड़ों को सुलझाने की बात-चीत करे। ब्रिटेन ने पश्चिमी क़िले खाली कर देने के लिए मान लिया; परन्तु इससे पहले जैसी कई ऐसी सुविधाएँ मनवा लीं जिनका सम्बन्ध वाणिज्य तथा जहाजों के आने-जाने से था। इन सुविधाओं से अमेरिका की बड़ी हीनता होती थी। इस पर अमेरिका के बहुत-से लोग क्रोधित हुए। प्रेसिडेण्ट स्पेन के साथ भी एक समझौता करने में सफल हुआ, जिसके अनुसार अमेरिका की सीमा निश्चित हो गयी और संयुक्त राज्य को मिसिसिपी नदी द्वारा व्यापार करने और न्यू ऑरलियन्स के बन्दरगाह में जहाज़ों के ठहरने की अनुमति मिल गयी।

इस प्रकार जब १७९६ में वाशिंगटन अपना पद छोड़ कर अपने जीवन के बाक़ी तीन वर्ष बिताने के लिए माउन्ट वेर्नन पर जाने लगे तो उन्होंने संविधान के अनुसार शासन को बड़ी सफलता से स्थापित कर दिया था और उन्होंने देश को युद्ध से बचाये भी रखा। विदा के समय अपने भाषण में वाशिंगटन ने अपने देश के लोगों को खबरदार किया कि वह मिल जुल कर काम करें और "विदेश में संसार के किसी भी भाग के साथ, स्थायी सम्बन्ध" न रखें।

प्रेसिडेण्ट के पद पर वाशिंगटन के बाद उग्र संघीय विचारों का पक्षपाती जॉन ऐडम्स आया उस समय की विचित्र चुनाव-विधि के अनुसार

विरोधी दल का थामस जैफ़रसन दूसरे नम्बर पर सब से अधिक वोट पाने पर वाइस प्रेसिडेण्ट बना।

जब अमेरिका ने ब्रिटेन के साथ समझौता कर लिया तो फ्रान्स उस पर बहुत बिगड़ा। प्रेसिडेण्ट ऐडम्स ने मतभेद दूर करने के लिए दूत पेरिस भेजे तो फ्रान्स के मुख्तारों ने जिन्हें 'एक्स-वाई-ज़ैड' कहा जाता था, दूतों से बातचीत करने से पहले अपने लिए उधार और उपहार माँगने शुरू कर दिये। इस पर अमेरिका उत्तेजित हो गया। समुद्री जहाजों में अनौपचारिक रूप से लड़ाई छिड़ गई और प्रेसिडेण्ट ऐडम्स ने बड़े धैर्य से काम लेते हुए लड़ाई को टाला।

जब युद्ध का भय बना हुआ था तो संघीय सरकार ने विरोधियों को दबाने के उद्देश्य से दो कानून बनाये जिससे वह देश के अन्दर सुरक्षा-व्यवस्था को सुदृढ़ बनाया जा सके, और यही दोनों कानून संघीय दल के विनाश का साधन सिद्ध हुए। इनमें पहला एलियन ऐक्ट था जिसके द्वारा प्रधान को यह अधिकार दिया गया था कि जिस किसी विदेशी का आचरण 'संयुक्त राज्य की शान्ति व सुरक्षा के लिये भयास्पद समझे" उसे देश से बाहर निकाल दे। दूसरा राज्यद्रोह कानून था जिसके द्वारा, संयुक्त राज्य के विरुद्ध "झूठे, अपमानजनक तथा निन्दा-जनक" लेख लिखने पर कठोर दण्ड दिये जा सकते थे। विदेशी कानून (एलियन ऐक्ट) लागू न किया गया, परन्तु रिपब्लिकन समाचार पत्रों के कई सम्पादक जो सरकार की कटु आलोचना किया करते थे, राज्यद्रोह कानून के आधीन पकड़ लिए गये और उन्हें जुर्माने और कैद के दण्ड दिये गये।

इस पर रिपब्लिकन दल के लोग बिगड़ गये और उन्होंने विदेशी तथा राज्यद्रोह कानूनों पर आक्षेप किये कि इनके परिणाम स्वरूप संविधान के उस प्रथम संशोधन का विरोध हुआ जिसमें भाषण और अखबारों के स्वातन्त्र्य की व्यवस्था की गयी थी। कैन्टुकी और वर्जिनिया की राज्य सभाओं ने क्रमश: जैफ़रसन और मैडिसन द्वारा प्रेरित किये जाने पर प्रस्ताव स्वीकृत किये जिनमें कहा गया था कि कानूनों को रद्द कर दिया जाय। कैन्टुकी राज्य ने राज्यों का यह अधिकार जताया कि वे कांग्रेस द्वारा मन्जूर किये गये किसी

भी "अवैध" कानून को रद्द कर सकते हैं और इस प्रकार केन्द्रीय सरकार की सत्ता पर कुठाराघात करने की चेष्टा की। १८०० में जो चुनाव हुए उनसे यह स्पष्ट हो गया कि लोग संघीय सरकार के "सबल" शासन से चौक गये थे। तब थोड़े से बहुमत से थामस जैफरसन प्रेसिडेण्ट चुना गया।

नयी सरकार ने शासन की बागडोर एक नये स्थान पर सम्हाली, छोटे दलदल वाले गांव वाशिंगटन को राजधानी चुन कर दक्षिण के ऊपरी भाग में राजधानी बनाने का वचन पूरा कर दिया गया। न्यू इंगलैण्ड के वैभवशाली प्रतिनिधियों को फिलेडैल्फिया जैसे बड़े नगर के स्थान पर इस नये और अव्यवस्थित ग्राम का चुनाव बड़ा अप्रिय लगा, परन्तु सरलता और अनौपचारिकता के प्रेमी थामस जैफ़रसन के विचार में यह एक आदर्श स्थान था जहां से वह अपनी नीतियों को कार्यान्वित कर सकता।

वस्तुतः जैफरसन ने प्रेसिडेण्ट के पद से जो कार्य किए उनसे सभी और वह स्वयं भी चकित हो गया। शासन व्यवस्था का खर्च घटाकर, ह्विस्की-कर हटा कर और राजद्रोह कानून के अधीन पकड़े हुए लोगों को मुक्त कर उसने आशातीत कुछ न किया था, बारबरी समुद्री डाकुओं को दण्ड देने के लिए उसने जो जल-सेना का बेड़ा भेजा उसमें कोई आश्चर्य की बात न थी। यह समुद्री डाकू रूमसागर में अमेरिका और यूरोप के व्यापारी जहाजों को लूटा करते थे, परन्तु आश्चर्य की सबसे बड़ी बात यह थी कि जैफ़रसन जो संविधान का कठोर पालन करने के पक्ष में था, उसका ऐसा अर्थ निकालने लगा जो संघीय विचारों वाले भी न निकाल सके होंगे। प्रेसिडेण्ट के स्वभाव में इस आकस्मिक परिवर्तन पर लोगों को पहले तो अचम्भा हुआ, फिर कुछ सराहना के भाव, क्योंकि बाद में यह सिद्ध हो गया कि उसने जो कुछ भी किया, सद्भावना से किया था। परिस्थितियों ने उसे संघीय कार्यक्रम के साथ किसी हद तक समझौता करने पर विवश कर दिया था।

जैफ़रसन का सब से बड़ा काय जिसमें उसने न केवल संविधान-द्वारा प्राप्त अधिकारों से ही बढ़ कर काम किया, बल्कि कांग्रेस की स्वीकृति भी

न ली, लुइसियाना प्रदेश का मोल लेना था । यह बड़ा प्रदेश जो मिसिसिपी नदी के पश्चिम से लेकर रॉकी पर्वत शृङ्खला तक फैला हुआ है, फ्राँस ने १७६३ में स्पेन को दिया था, परन्तु १८०० में फ्रान्स के नेपोलियन बोनापार्ट ने स्पेन के राजा को यह प्रदेश-लौटा देने के लिए विवश कर दिया । यूरोप में विजयी होकर नेपोलियन नये संसार में अपने साम्राज्य के स्वप्न देख रहा था । जब लुइसियाना पर फिर से फ्राँस का अधिकार हो गया तो उसने अमेरिका को मिसिसिपी नदी और न्यू ओर्लियन्स के बन्दरगाह को व्यापार के लिए बर्तने से रोक दिया जो ओहायो घाटी में नये उपनिवेशों के विकास और उनके वाणिज्य के लिए अत्यन्त आवश्यक थे । इसके अतिरिक्त स्पेन के निर्बल देश के स्थान पर एक महान् बलशाली युद्ध-तत्पर देश का अब अमेरिका की सारी सीमा पर खतरा बन गया । फ्राँस ने एक प्रकार से संयुक्त राज्य को अपने घेरे में ले लिया ।

जैफ़रसन ने अब दृढ़तापूर्वक काम करके कम से कम मिसिसिपी में व्यापार करने का अधिकार फिर से प्राप्त करने की ठान ली, और यदि ऐसा न हो तो उसने फ्रान्स के विरुद्ध लड़ाई में ब्रिटेन का साथ देकर इसके लिए यत्न करने का निश्चय कर लिया ।

संयुक्त राज्य का सौभाग्य समझिए कि १८०२ में वेस्टइण्डीज़ पर अधिकार जमाने के अपने प्रयत्नों में नेपोलियन को भारी नुकसान उठाना पड़ा और अमेरिका में अपना साम्राज्य बनाने की योजनाएँ उसने एक दम छोड़ दीं । जब जैफ़रसन का दूत पेरिस पहुँचा और उसने न्यू ओर्लियन्स तथा पश्चिमी फ्लोरिडा के बदले बीस लाख डालर देने चाहे तो फ्राँसीसियों ने बड़ी नम्रता से पूछा कि लुइसियाना के सारे प्रदेश के बदले में क्या देगा ? कुछ सौदाबाज़ी के बाद डेढ़ करोड़ डालर पर बात पक्की हुई ।

इस प्रकार इतनी कीमत पर जैफरसन ने संयुक्तराज्य को दुगना बढ़ा लिया । नये प्रदेश से बाद में मिनेसोटा, मिसूरी, आइओका, कैन्सास, मोन्टना,

डकोटास और स्वयं लुइसियाना जैसे उपजाऊ और समृद्ध राज्य बने। मिसिसिपी स्रोत से लेकर मुहाने तक अमेरिका के आधिपत्य में आगया और पश्चिमी सीमा पर विदेशी आक्रमण का भय जाता रहा।

इस अवसर से शीघ्र ही लाभ उठाते हुए जैफ़रसन ने अपने प्राइवेट सेक्रेटरी मेरीवेत्थर लूई और जार्ज रोजर क्लार्क के भाई विलियम क्लार्क के नेतृत्व में खोज करने के लिए दल भेज दिया, जिससे वे नये-नये प्रदेशों को ढूढ़ें और प्रशान्तमहासागर तक बढ़ जायें। वीर सैनिकों का एक दल भी उनके साथ था। वह बढ़ता हुआ उत्तर के वन्यप्रदेश को पार करके ऑरेगान पहुँच गया। और १८०५ में इस प्रदेश पर संयुक्त राज्य का अधिकार स्थापित हो गया पूर्वी संयुक्त राज्य से पश्चिमी तट तक स्थल के मार्ग से यह पहली यात्रा थी, इससे उपरान्त तो फिर ऐसी कई यात्राएँ हुईं।

लुइसियाना प्रदेश को मोल लेकर और दूर-पश्चिम के प्रदेशों में दल भेजकर, जैफ़रसन ने जिस साहसपूर्ण कौशल का परिचय दिया उसकी लोगों में सराहना हुई। परन्तु "संविधान को इस सीमा तक खींचने से, जिससे वह खंडित होने लगा था" उसे स्वयं खेद हुआ। संविधान में यह कहीं भी नहीं लिखा था कि प्रदेश मोल लिए जा सकते हैं; हाँ, प्रेसिडेंट को सेनेट की अनुमति से संधि करने का अधिकार प्राप्त था, इसकी व्यापक व्याख्या के आधार पर ही लुइसियाना प्रदेश मोल लेने की व्यवस्था हुई।

जब जैफरसन दूसरी बार प्रेसिडेंट बना तो एक और बड़े संकट के कारण इसी प्रकार संघीय अधिकारों का बड़ा शिथिल और उदार प्रयोग हुआ। फ्राँस और ब्रिटेन में युद्ध बढ़ गया; दोनों एक दूसरे की समुद्र के रास्ते नाकाबन्दी करने लगे और प्रत्येक ने तटस्थ देशों को चेतावनी दी कि वे अपने जहाज़ उसके शत्रु के तट पर न भेजें। इन नाकाबन्दियों से अमेरिका को बहुत हानि हुई क्योंकि उसका यूरोप के साथ व्यापार बहुत बढ़ चुका था और अमेरिका की आर्थिक समृद्धि के लिए यह व्यापार परमावश्यक हो गया था। अमेरिका के जहाज़ सैंकड़ों की संख्या में खाद्य-पदार्थ और कच्चा माल लेकर गये, परन्तु युद्ध-निरत एक या दूसरे पक्ष ने उनको पकड़ लिया। ब्रिटेन को उन दिनों

जनशक्ति की बड़ी आवश्यकता थी और वह अमेरिकी जहाजों के जहाज-रानों से बेगार लेता।

जैफ़रसन ने कांग्रेस को मना लिया कि युद्ध से बचने के लिए विदेशी व्यापार बिल्कुल बन्द कर दिया जाय और अमेरिका के जहाजों को अपने बन्दरगाहों में ही रहने की आज्ञा दी जाय। इस सख्त कार्यवाही के लिए १८०७ में एम्बार्गो एक्ट पास हुआ, परन्तु संविधान में इस प्रकार का कानून पास करके व्यापार को बिल्कुल बन्द कर देने की कोई व्यवस्था न थी। उसमें तो यह कहा गया था कि कांग्रेस वाणिज्य का 'नियंत्रण' कर सकती है; यह बात विवादास्पद है कि इसके द्वारा व्यापार पूर्ण बन्द किया जा सकता है।

एम्बार्गो एक्ट पर कोई भी खुश न था; इससे व्यापारियों और खेतिहरों दोनों को हानि हो रही थी। दो वर्ष के उपरान्त इस कानून को हटा कर इसके स्थान पर एक अन्य कानून बनाया गया। इसमें कुछ चाल अभीष्ट थी। यदि ब्रिटेन और फ्रान्स अमेरिकी समुद्रयान-अधिकारों का मान करे तो इस कानून के अनुसार अमेरिका उस देश से व्यापार पुनः शुरूकर देगा और दूसरे का बराबर बहिष्कार करता रहेगा। फ्रान्स ने झट इसे स्वीकार कर लिया और अमेरिका के साथ उसका व्यापार फिर से शुरू हो गया।

१८०६ में जैफ़रसन ने पद छोड़ा और मैडिसन संयुक्त राज्य का प्रेसिडेण्ट बना। पहले तीन मन्त्रिमंडल अपने महान्‌तम यत्नों के कारण किसी बड़े युद्ध से बचते ही रहे, परन्तु मैडिसन इस परम्परा को आगे न बढ़ा सका।

× × ×

इंगलैंड ने अमेरिका को उत्तेजित करने के लिए कई बातें कीं, इसके साथ ही अमेरिका में भी कुछ लोग थे जो अपने कई निजी कारणों से अंग्रेजों के साथ युद्ध छेड़ना चाहते थे। पश्चिम के शक्तिशाली व संवर्धनशील प्रदेश ब्रिटेन के रहे-सहे प्रभाव को भी इस देश से समाप्त करना चाहते थे और कैनेडा की ओर बढ़ कर उसे अपने देश में मिलाना चाहते थे। दक्षिण राज्य स्पेनाधिकृत फ़्लोरिडा पर नजरें लगाये बैठे थे। युद्ध की इच्छा रखने वाले यह लोग 'वार हॉकस्' कहलाये और उनके नेता थे कैन्टुकी का हैनरी क्ले और दक्षिणी

केरोलाइना का जॉन सी० कलहौन। वे, और काँग्रेस में उनके अनुयायी, १८१२ में युद्ध की घोषणा करवाने में सफल हो ही गये।

१८१२ का युद्ध खासकर अनावश्यक था, इसका समर्थन भी न हुआ और यह निर्णायक भी सिद्ध न हो सका। न्यू-इंगलैण्ड इसके सख्त विरुद्ध था क्योंकि देश में रिपब्लिकन दल का शासन था। न्यू-इंगलैंड के फैड्रलिस्टों की कृतियों से देश स्तब्ध रह गया। सुदृढ़ और सशक्त संयुक्त राज्य बनाने के अपने वचनों के विरुद्ध आचरण करते हुए न्यू-इंगलैंड के फैड्रलिस्टों ने संघ से सम्बन्ध तोड़ लेने की धमकी दे दी और सम्भवत: वे ऐसा कर भी डालते यदि युद्ध आशा से पहले समाप्त न हो जाता।

यह युद्ध दूर-दूर तक हुआ। न्यून शस्त्रास्त्र तथा कम सामग्री लेकर अमेरिका की सेनाएँ उत्तर में कैनेडा की झील एरी तक बढ़ीं परन्तु उनको मारकर पीछे हटा दिया गया। झील एरी और झील शेम्पलेन पर जहाज़ों की लड़ाइयों में जो विजय हुई उसी ने अमेरिका पर किये गये भयानक प्रत्याक्रमण को रोका। दूर दक्षिण में ब्रिटेन ने १८१४ में वाशिंगटन के समीप एक सेना उतार कर राजधानी में नियुक्त मिलीशिया के डरे हुए सिपाहियों से नगर ले लिया और कैनेडा में अमेरिका की ओर किये गये नुकसान का बदला चुकाने के लिए ह्वाइट हाउस, काँग्रेस भवन (कैपिटोल) और अन्य सरकारी भवनों को जला डाला। पास ही बाल्टिकमोर पर मुड़ने पर ब्रिटेन की सेनाओं को एक बड़ी अमेरिकी सेना से रोक दिया। शहर की रक्षा मैकहैनरी के किले से हो रही थी और उसपर गोलाबारी सफल न रही। इसी घटना ने फ्रान्सिस स्कॉट को अमेरिका का राष्ट्रीय गीत "स्टार स्पैंगल्ड बैनर (ताराजड़ित ध्वज)" लिखने की प्रेरणा दी थी।

इस युद्ध में अमेरिका की सबसे बड़ी विजय उस समय हुई जब शान्ति-सन्धि पर घेन्ट में कमीश्नरों के हस्ताक्षर हो चुके थे। परन्तु यह खबर अभी अतलान्तकमहासागर पार नहीं कर चुकी थी कि यूरोप में नेपोलियन पूर्ण रूप से पराजित हो गया और ब्रिटिश सरकार ने न्यू-ओर्लियन्स पर अधिकार करने के लिए अनुभवी सैनिकों की फ़ौज भेज दी। टेनेसी के एन्ड्रयू जेकसन के नेतृत्व में

वीर सीमावर्ती लोगों की एक सेना ने मिसिसिपी की घाटी में उसका मुकाबला किया। जेकसन के प्रखर निशानाबाज़ सिपाहियों ने खाइयाँ खोद कर भली भाँति मोर्चे लगा लिए थे और उन्होंने आक्रमणकारियों को करारी हार दी। ब्रिटिश सेना ने बार-बार बड़ी बहादुरी से आक्रमण किये, परन्तु वे सब व्यर्थ गये जेकसन को इस सफल नेतृत्व के कारण देश की ओर से प्रसंशा में 'ओल्ड हिकोरी' कहा जाने लगा।

घेन्ट की सन्धि के परिणाम स्वरूप युद्ध तो समाप्त हो गया, परन्तु नाविकों की बेगार के सम्बन्ध में कुछ भी न कहा गया—यह समस्या लड़ाई का एक मुख्य कारण थी। लेकिन यूरोप में फिर से शान्ति हो जाने पर जोर ज़बर्दस्ती बन्द हो गई और अमेरिका के व्यापारी जहाज़ बड़ी संख्या में सारे संसार में सुगमता से जाने-आने लगे।

१८१२ की लड़ाई के अन्त में अमेरिका में इतना पक्का संगठन था जितना न तो पहले कभी हुआ होगा और न बाद में आधुनिक काल से पहले हुआ है। इतिहास-चक्र ने रिपब्लिक विचार वालों को भी शासन की वही कठोर गतिविधि अपनाने पर विवश कर दिया जो फैड्रलिस्ट प्रयोग में लाते आये थे। फ्रान्स और इंगलैंड के साथ झगड़ों, लुइसियाना की ख़रीद, और स्वयं युद्ध ने राष्ट्रीय सरकार के कठोर प्रशासन की आवश्यकता पैदा कर दी थी। नेशनल बैंक जो कुछ वर्ष पहले बन्द कर दिया गया था फिर से चालू कर दिया गया।

सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्ययाधीश जॉन मार्शल ने जो निर्णय किये उनसे केन्द्रीय सत्ता को और अधिक बल मिला। राजनैतिक विचारों से मार्शल, संघवादी (फैड्रलिस्ट) था और उसे जान ऐडम्स ने नियुक्त किया था। चौंतीस वर्ष संवैधानिक सत्ता के विरुद्ध एक के बाद दूसरी आपत्ति उठायी गयी, पर उसने सबको निराधार ठहरा दिया। क्या सर्वोच्च न्यायालय को अधिकार है कि वह कॉंग्रेस द्वारा पास किये गये अवैध कानूनों को रद्द कर दे ? मारबरी और मेडिसम के प्रसिद्ध अभियोग में मार्शल ने निर्णय दिया "हां सर्वोच्च न्यायालय को यह अधिकार प्राप्त है।" क्या सुप्रीम कोर्ट राज्यों के उन कानूनों को रद्द कर सकती है जो संघ-संविधान के विरुद्ध जाते हों। कोहन्स बजाय वर्जिनिया

के मुकद्दमे में इसका उत्तर "हां" में मिल गया। सर्वोच्च न्यायालय को जो महानता और सत्ता आज प्राप्त है उसका श्रेय ,जॉन मार्शल को दिया जाता है।

यातायात के साधनों में जो क्रान्ति हुई उसने भी देश को संगठित होने में सहायता मिली। इस शताब्दी के आरम्भ में ही भाप से चलने-वाले जहाज़ के आबिष्कार से अमेरिका नदियों—विशेषकर मिसिसिपी और उसकी सहायक नदियों में व्यापार बहुत वेग से बढ़ा। रेल का विकास १८३० के उपरान्त हुआ और इससे भी अन्तर्राज्यीय और विभिन्न भागों में व्यापार की वृद्धि हुई। यातायात में इन सुधारों के कारण नये-नये शहर बस गये, नये-नये उद्योग शुरू हुए और यूरोप से आकर अमेरिका में बसने वालों की सख्या बहुत बढ़ी।

× × ×

अमेरिका में १८१६ से १८२४ तक का समय "सद्भावना का काल" कहा जाता है इस समय में आर्थिक उन्नति की गति तेज़ रही, संघीय दल (फैड्रलिस्ट पार्टी)समाप्त हो गयी और गणतन्त्र दल(रिपब्लिकन पार्टी) विरोधी दलों में अभी बँट न पाई थी। इन वर्षों में प्रेसिडेन्ट जेम्स मानरो के शासन में विदेश से सम्बन्ध रखने वाले मामलों में बड़ी दृढता की नीति अपनायी गयी।

नए संसार में फ्राँस का साम्राज्य लड़खड़ा रहा था। नेपोलियन के साथ युद्ध में शिथिल व निर्बल हो चुका था और उसमें इतनी भी शक्ति न रह गई थी कि वह मैक्सिको से लेकर अमरिका के दूर दक्षिणी सिरे तक फैले हुये अपने उपनिवेशों में बढ़ते हुए स्वतन्त्रता आँदोलन को दबा सके। फ्लोरिडा में भी गड़बड़ थी, वहाँ से इण्डियन लोग संयुक्तराज्य के नागरिकों पर नित्यप्रति लूटमार के लिए धावे बोला करते।

इन उच्छृंखल इण्डियनों को काबू में रखने के लिए प्रेसिडेण्ट मानरो ने तन्ड्रयू जेक्शन को फ्लोरिडा की सीमा पर भेजा और उसे यह अनुमति भी दे दी कि जरूरत पड़े तो वह इण्डियन लोगों का पीछा करते हुए सीमा पार भी सेना भेज दे। जैकसन १८१८ में फ्लोरिडा के भीतर दूर तक चला गया

श्रौर बड़ी सुगमता से उसने इस प्रदेश को जीत लिया। केन्द्रीय सरकार ने उसके इस उग्र कार्य का समर्थन किया और स्पेन ने ५० लाख डालर लेकर यह प्रदेश संयुक्तराज्य अमेरिका को नम्रतापूर्वक सौंप दिया।

संयुक्त राज्य में आत्मविकास का जो भाव बढ़ा, उससे अमेरिका के प्रति अन्य राष्ट्र शीघ्र ही सचेत हो गए। फ्रांस, आस्ट्रिया, रूस और प्रशिया ने एक 'पुनीत गँठजोड़' किया। इसका उद्देश्य यह था कि जो शासक नैपोलियन के साथ युद्ध में अपने प्रदेश हार चुके थे वे उन्हें फिर से दिलवा दिए जायें। जब स्पेन ने अमेरिका में अपने उपनिवेश चले जाने की दर्द भरी कहानी सुनाई तो वे उन्हें स्पेन को वापस दिलाने में सहायता देने को तैयार हो गये और यह आशा की कि अपने लिए भी कुछ टुकड़े प्राप्त कर ले। फ्राँस ने मैक्सिको पर आशा लगाई थी और रूस ने एलास्का को तो पहिले ही ले लिया था अब वह प्रशान्तमहासागर के तट के साथ साथ दक्षिण की ओर बढ़कर कैलिफोर्निया को हस्तगत करना चाहता था।

इन सब योजनाओं पर संयुक्त राज्य के लोग चौंक उठे। एक बार फिर ऐसा प्रतीत होने लगा कि यूरोप के बड़े २ देश उनको विभिन्न दिशाओं से घेर लेंगे। फिर से झगड़े होंगे और सम्भव है कि संयुक्तराज्य के पास ही भयानक युद्ध छिड़ जाए।

इंगलैण्ड ने भी इस 'पुनीत गँठजोड़' का विरोध किया। उसका लेटिन और दक्षिणी अमेरिका के देशों के साथ व्यापार खूब बढ़ा हुआ था और वह नहीं चाहता था कि इनमें से कुछ देश फिर से फ्राँस या स्पेन के अधिपत्य में आ जायें। अतः ब्रिटेन के मन्त्री कैनिंग ने यह सुझाव रखा कि अमेरिका और ब्रिटेन मिल कर यूरोप के देशों को बता दे कि वे पश्चिमी गोलार्द्ध पर अपने हाथ न बढ़ाए और यह भी वचन देने को कहा कि ब्रिटेन तथा अमेरिका उत्तरी या दक्षिणी अमेरिका में और नए प्रदेश अपने अधिकार में नहीं लायेंगे।

यह सुझाव आकर्षक था, एक पुराना शत्रु मित्र बन गया और ब्रिटेन के शक्तिशाली समुद्री बेड़े के कारण इस घोषणा का महत्व और भी बढ़ गया। परन्तु अमेरिका के कुछ लोगों—विशेषकर विदेश मन्त्री जान क्यून्सी एडेम्स

का विचार था कि ऐसा करने में इंग्लैंड की नियत वास्तव में अन्य देशों के साथ ही साथ संयुक्त-राज्य को भी लेटिन और दक्षिणी अमेरिका के देशों से दूर ही रखने की थी और वे समझते थे कि हो सकता है यह सदा के लिए अमेरिका के हित की बात न हो। प्रकट में "ब्रिटेन के जंगी जहाज़ में एक छोटी नौका" के समान अमेरिका की इस हैसियत पर एडेम्स ने रोष प्रकट किया।

अन्त में एडम्स का परामर्श मानते हुए प्रेसिडेन्ट मानरो ने १८२३ में काँग्रेस के सन्मुख अपना प्रसिद्ध सिद्धान्त रखा जो मनरो-सिद्धान्त के नाम से विख्यात हुआ। इसके द्वारा बड़े साफ़-साफ़ और जोरदार शब्दों में यूरोप के देशों को चेतावनी दे दी गई कि वे पश्चिमी गोलार्द्ध में अपने उपनिवेश बनाने के और कोई यत्न न करें तथा किसी भाँति भी वहाँ के स्वाधीन देशों के मामलों में दखल न दें। इसमें यह भी कहा गया था कि अपनी ओर से अमेरिका यूरोप के मामलों में न पड़ने की अपनी नीति पर दृढ़ रहेगा।

आगे एक शताब्दी तक मानरो-सिद्धान्त ने अमेरिका की विदेश-नीति के आधार का काम किया। संयुक्त-राज्य पश्चिमी गोलार्द्ध का नेता और लेटिन तथा दक्षिणी अमेरिका के देशों का रक्षक बन गया। आने वाले समय में जिन देशों ने सारे अमेरिका में कहीं भी दखल देने की कोशिश की तो उनको संयुक्त-राज्य ने चेतावनी दे दी, जो बड़ी सफल रही; परन्तु चाचा सैम (संयुक्त राज्य) स्वयं अपने पड़ोसी देशों के मामलों में हाथ डालता रहा जिससे उस पर साम्राज्यी तथा शोषक होने के दोष लगाये गये।

प्रारम्भ में मनरो-सिद्धान्त का उद्देश्य आत्मरक्षा के विचार से अमेरिका को यूरोप से पृथक् रखना था ताकि अतलान्तकमहासागर के दूसरी ओर से कोई दखल न दिया जाय ; परन्तु तब से इस सिद्धान्त का उद्देश्य और उसकी व्याख्या में बहुत परिवर्तन हो चुका है। इसका मौलिक अभिप्राय अब रहा नहीं क्योंकि इस समय संयुवतराज्य, अमेरिका के लेटिन गणराज्यों का संरक्षक और रखवाला नहीं रहा, बल्कि पान-अमेरिकी व्यवस्था में आपसी सहायता और संयुक्त रक्षा के प्रबन्ध में एक सदस्य के रूप में काम कर रहा है। इसके

अतिरिक्त दो विश्व-व्यापी युद्धों में अमेरिका की सेनाएं यूरोप की धरती पर जाकर लड़ी हैं और आज संसार भर के विक्षुब्ध स्थानों में अमेरिका की सेनाएँ बिठा दी गयी हैं। परन्तु एक अन्य तथा विशद् विचार से इस सिद्धान्त के नियम आज भी वही हैं। क्योंकि अमेरिका के लोगों को पहले की अपेक्षा आज अधिक विश्वास है कि उन सुरक्षा आक्रमण का प्रतिकार करने पर नर्भ र करती है चाहे यह आक्रमण संसार के किसी भी भाग में क्यों न हो।

× × ×

प्रेसिडेन्ट मनरो के पद से हटते ही 'सद्भावना का युग' भी समाप्त हो गया। राष्ट्रीय एकता के तल के नीचे विभिन्न स्वार्थों तथा हितों की जो आग बीचोबीच सुलग रही थी वह १८२४ के चुनाव में भड़क उठी। रिपब्लिकन पार्टी ने ४ उमेदवार खड़े किये; मैसाचूसेट्स के जान क्यून्सी ऐडम्स, जार्जिया के विलियम एच० क्राफ़ोर्ड टेनेसी के ऐन्ड्रयू जेकसन और कैन्टुकी के हैनरी क्ले।

किसी को भी अधिकांश या आधे से ज्यादा मत न मिले; वैसे इनमें सब से अधिक मत जैकसन के पक्ष में आये थे। परन्तु जब चुनाव का प्रश्न प्रतिनिधि सभा में गया तब क्ले ने ऐडम्स के पक्ष में अपना बल डालकर ऐडम्स को विजयी करा दिया और यह न्यू-इंगलैण्डवासी उसी पद पर आरूढ़ हुआ जहाँ पहले उसका पिता रह चुका था। यद्यपि क्ले पश्चिमी प्रदेशों का रहने वाला था, परन्तु उसे जैकसन से बड़ी घृणा थी, "सेना-नायक" कह कर उस पर वह नाक-भौं चढ़ाया करता। दूसरी ओर वह ऐडम्स के अनुदार नीति को बहुत पसन्द करता था जो उसने तट-कर बढ़ाने, नैशनल बैंक की स्थापना तथा केन्द्रीय सरकार को शक्तिशाली बनाने में प्रदर्शित की।

दक्षिण और पश्चिम में 'ओल्ड हिकारी' के अनुयायी अपने नेता की हार पर क्रोध से भड़क उठे और ऐडम्स-क्ले दल ने चार वर्ष निराशा में ही बिता दिये और वे कुछ भी ठोस न कर सके। १८१८ के चुनाव में जैकसन की नयी डेमोक्रेटिक पार्टी की भारी जीत हुई किसी को पता न था कि जैकसन की नीति क्या होगी, लेकिन वह सरल लोगों का प्रतीक बन चुका था—वह उनके लिए मूर्तिमान लोकतन्त्र था।

जैकसन ने अपनी यह ख्याति बनाये रखी और उसके लिए उसने बड़े ज़ोरदार प्रयत्न भी किये। जिसे भी वह अधिकांश लोगों की इच्छा समझता बड़े वेग से वह काम कर डालता और इसी कारण उसके विरोधियों ने उसे 'राजा एन्ड्रयू प्रथम' का नाम दिया। देश में कोई एक राजनीतिक दल या पक्ष सदा उसके साथ न रहा; वैसे श्रमिक, छोटे व्यापारी और छोटे-छोटे किसान उस का समर्थन करते रहे। उसमें पश्चिमी लोगों की देश-भक्ति के उत्कट भाव, और पूर्व के बैंक वालों के हितों के प्रति अविश्वास स्पष्ट था।

दक्षिणी राज्यों के अधिकारों की मांग करने वाले यह समझते थे कि 'ओल्ड हिकारी' उनके साथ सहानुभूति रखता है परन्तु उन्हें ही सबसे पहले उसके कोप का भाजन बनना पड़ा। तट-करों के प्रश्न पर दक्षिण में बड़ी बेचैनी थी। १८३० में जान सी० कटहौन ने अपने राज्य–दक्षिणी कैरौलाइना में १८२८ के तट-कर कानून को रद्द करने की चेष्टा की। जैफ़रसन के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में दिये गये एक भोज के अवसर पर इस कानून को रद्द करने और राज्यों के अधिकारियों के बारे में चर्चा खूब खुल कर हुई। उसी समय कहीं प्रेसिडेन्ट जैकसन एकदम उठ खड़ा हुआ और कल्हौन की ओर मुंह करके यह कामना प्रकट की "हमारा अपने फैड्रल यूनियन की रक्षा करनी ही होगी।" इसके उपरान्त जब दक्षिणी कैरोलाइना ने इस कानून का विरोध करने और संघ से पृथक हो जाने की योजनाएं बनायीं तो जैकसन ने ४०,००० अमेरिकी सिपाही वहां भेजने की धमकी देकर अपने वचन को पूरा किया। समय रहते दक्षिणी कैरोलाइना ने सिर झुका लिया और उसके मानभंग की क्षतिपूर्ति के किए तट-कर में कुछ कमी कर दी गई।

जैकसन के संघ के प्रति दृढ निश्चय पर यदि उत्तर और पूर्व के लोग प्रसन्न थे, परन्तु नेशनल बैंक के प्रति उसके व्यवहार पर वे खुश न हुए। इस बैंक का प्रबन्ध सरकार और धनाढ्य व्यापारी दोनों चला रहे थे। ये व्यापारी ऋणों और अनुग्रहों से कांग्रेस के सदस्यों पर प्रभाव डाल लिया करते थे जैकसन विशेष अधिकार या सुविधा देने के विरुद्ध था इसने बैंक बन्द कर देनें की ठान ली। वह कहा करता था कि इस बैंक पर राजनीति का ज़ोर है। उसने

सरकार का धन सारा निकलवा लेने की आज्ञा दे दी। यद्यपि इस पर आपत्ति उठायी गई कि संविधान का विरोध हो रहा है—और मुख्य न्यायाधीश मार्शल ने एक निर्णय में बैंक को संवैधानिक करार दिया था—परन्तु प्रेसिडेन्ट अपनी बात पर अड़ा रहा और उसने बैंक बन्द कर दिया। राष्ट्रीय वित्त का भार राज्यों के बैंकों ने अपने ऊपर ले लिया।

इन्हीं दिनों देश भर में सरकारी भूमियों और नए उद्योग में व्यापार का जोर हुआ और इसमें बढ़ावा देने के लिए राज्यों के बैंकों ने अत्याधिक मात्रा में कागज़ी मुद्रा का प्रचलन किया। जब मुद्रास्फीति बढ़ी तो जैकसन ने यह आज्ञा दी कि अब से संयुक्त राज्य कोष में भुगतान सोने या चांदी में किया जाया करे।

जैकसन ने "सभी कुछ स्वयं ही" करने का यत्न किया। सरकार के सारे व्यापार उसी में केन्द्रित थे। जब वह शासन की बागडोर अपने उत्तराधिकारी न्यूयार्क के मार्टिन वान बूरेन को सौंप कर चला गया तो देश की सारी आर्थिक व्यवस्था लड़खड़ा गई। यह स्थिति बाद में '१८३७ के संकट' के नाम से प्रसिद्ध हुई। कागज़ी मुद्रा की अपेक्षा सोना और चाँदी बहुत कम थे और भूमि में पूँजी लगाने का काम लगभग बन्द ही हो गया। बैंक टूट गये, हजारों लोग बेकार हो गए और इस अस्तव्यस्ता के लिए वान बूरेन को दोषी ठहराया गया। १८४० के चुनाव में डेमोक्रेट हार गए और जैकसन तथा वान बूरेन के विरोधियों ने आपस में मिल कर संयुक्तदल बनाया और उन्हीं की विजय हुई। इस दल के लोग ह्विग कहलाये। उनका उम्मीदवार विलियम हैनरी हैरिसन प्रेसिडेन्ट बना। पश्चिम में इण्डियनों के विरुद्ध युद्ध में उसने बड़ी ख्याति पायी थी।

× × ×

मनरो, एडेम्स और जैकसन के शासन काल में पश्चिमी प्रदेश में बस्तियाँ बसाने का काम बड़े वेग से होता रहा। उत्तर-पश्चिमी और लुइसियाना के प्रदेशों में एक के बाद दूसरा राज्य बनाया जा रहा था और उन्हें संघ में

सम्मिलित किया गया। पहले के कुछ पूर्वी भाग इस नयी दशा पर प्रसन्न न थे, उन्हें डर था कि कांग्रेस में इनका जोर कम हो जायगा और वे अन्त में एक महान् गणराज्य के बाहरी भाग बन कर रह जायँगे जिनके हित भी अन्य राज्यों से भिन्न होंगे। और उनकी यह आशंका अकारण न थी, १८२० तक सेनेट के ४८ सदस्यों में १६ उन राज्यों में से थे जो अलेघनी पर्वत से पश्चिम में हैं। १८०३ में ओहियो की जनसंख्या ५०,००० थी, वह १८२० में बढ़कर ६००,००० हो गयी थी। इण्डियाना में १४७,००० लोग रह रहे थे।

पश्चिमी प्रदेशों के विकास से यद्यपि राष्ट्र को लाभ पहुँचा, परन्तु इसने एक ऐसे प्रश्न की ओर सब का ध्यान आकर्षित किया जिस पर अमेरिका का प्रत्येक समझदार व्यक्ति चिन्तित हो रहा था और वह प्रश्न था दासप्रथा। क्या इस लोकतन्त्र विरोधी परिपाटी का नये राज्यों और प्रदेशों में भी प्रचलन होगा? मिसूरी, अरकनसास और दक्षिण-पश्चिम में जाकर बसने वाले दक्षिणी प्रदेशों के लोगों नीग्रो जाति के व्यक्तियों को अपने साथ ले जाकर दासतामय राज्य स्थापित करना अपना अधिकार समझते थे। संविधान में उन्हें ऐसा करने से रोकने की कोई व्यवस्था न थी। वास्तव में इसी आधार पर कांग्रेस ने पहले ही केन्टुकी, टेनेसी, मिसिसिपी और लुइसियाना को संघ में शामिल किया था।

परन्तु उत्तर में गुलामी के विरुद्ध विचार ज़ोर पकड़ रहे थे। इसके लिए न केवल नैतिक आधार ही थे बल्कि राजनीतिक और वर्गीय कारण भी थे। यदि दासप्रथा वाले राज्यों की संख्या दूसरों से बढ़ जाती तो दक्षिणी राज्यों के हित मान्य होते और इस प्रकार तट-कर घटाये जाते, कृषकों का हित होता और उत्तर के व्यापारी राज्यों को हानि पहुंचती।

पहली बार यह संकट मनरो के सद्भावना युग में ही बना था. और यद्यपि इसका सन्तोषजनक निर्णय हो गया, परन्तु इनसे दोनों भाग चौंक-से गये। १८१९ में जब ११ स्वाधीन राज्य थे और ११ दासप्रथा वाले, तो मिसूरी ने दासप्रथा को अपनाते हुए संघ में शामिल होने का प्रस्ताव रखा। उत्तर के राज्यों ने इस आधार पर आपत्ति की कि उसमें राज्यों का सन्तुलन

बिगड़ जायेगा और मिसिसिपी के पश्चिम में दासता को फैलने के लिए एक उदाहरण मिल जायगा। दक्षिण संविधान पर अड़ा था और उनका तर्क यह था कि कांग्रेस को केवल यह अधिकार है कि वह संघ में नये राज्यों को सदस्य बनाये न कि प्रवेश की शर्तें लगाये। दक्षिण की धारणा थी कि इस प्रथा के सम्बन्ध में निर्णय करना राज्यों के लोगों का अपना काम है।

इस समस्या का हल 'महान् सन्धिकर्ता' हैनरी क्ले ने १८२० में ढूंढ़ ही लिया और इसका भविष्य में बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा उस समय मेन, मैसाचूसेट्स का ही एक भाग था और उसे पृथक् करके संघ में एक पृथक् राज्य की हैसियत में शामिल किया गया। मिसूरी दासप्रथा के साथ आ मिला और इस भाँति फिर सन्तुलन बना रहा। इसी के साथ ही ३६° ३०' समानान्तर पर एक रेखा खींच दी गयी जो मिसूरी की दक्षिणी सीमा से होकर लुइसियाना तक जाती थी और इस रेखा के उत्तर के बड़े प्रदेश में दासता का निषेध कर दिया गया। इस समझौते पर दोनों पक्ष सन्तुष्ट हो गये।

जैकसन के समय में फिर इसी तरह आज़ाद और दास राज्यों का सन्तुलन बनाना पड़ा। १८३६ में अर्कनसास दासता के पक्ष में था और मिशीगन आज़ाद, और दोनों एक साथ संघ में आ मिले। इसी भाँति १८४५-४६ में फ्लोरिडा और आइओवा के आने से भी सन्तुलन बना रहा।

परन्तु दासता की समस्या जो कि गणराज्य स्थापना के उपरान्त पहले कुछ वर्षों में दबी रही, अब बढ़कर एक भारी संकट का रूप धारण करने लगी। पश्चिम की ओर एक-एक व्यक्ति के अग्रगामी होने पर यह अधिक उग्र रूप धारण करती गयी। उत्तर के गाँवों में दक्षिण के प्रांगणों में लोग इकट्ठे हो कर इसी समस्या पर विवाद करते, पादरी मंच से ज़ोरदार भाषण करते और दीवाने विभिन्न पक्षों को आपसी घृणा को भड़काते। १८४० के उपरान्त दासता की समस्या सभी राजनीतिक और आर्थिक प्रश्नों से अधिक महत्वपूर्ण हो गयी। परन्तु भीषण गृह-युद्ध से पहले, जिसने अन्त में दासता की समस्या का समाधान कर ही दिया, अमेरिका के लोगों का प्रादेशिक विस्तार पूर्ण रूप से हो चुका और प्रशान्तमहासागर के तट तक पहुँच गये थे।

अध्याय ६

विभाजित देश

"अलामो को स्मरण करो !" "चौवन-चालीस या लड़ाई !" अमेरिका के बहुत-से लोग सौ वर्ष से अधिक पुराने इन जंगी नारों से आज भी सुपरिचित हैं। पहले का सम्बन्ध १८३६ में सैम अन्तोनियो के स्थान पर मैक्सिको की सेना द्वारा टैक्सास लोगों के वध से है और दूसरे का आॅरेगान की उत्तरी सीम के बारे में झगड़े से है। १८४० में सँयुक्त राज्य और ब्रिटेन के बीच इस झगड़े ने उग्र रूप धारण किया।

तब अमेरिका के दक्षिण-पश्चिमी प्रदेश में टैक्सास और प्रशान्तमहासागर के तटवर्ती उत्तर-पश्चिमी भाग में आॅरेगान में पश्चिम की ओर विस्तार शुरु हो गया था। यह घटना लगभग उसी समय की है जब १८४० के चुनाव में ह्विग दल ने डेमोक्रेट दल को हराकर शासन पर अधिकार किया था। स्पेन से स्वतन्त्रा प्राप्त कर लेने के उपरान्त टैक्सास मैक्सिको का ही एक प्रान्त बन गया था और उधर आॅरेगान पर आरम्भिक खोज तथा उपनिवेशन बनाने के आधार पर संयुक्त राज्य और ब्रिटेन दोनों अपना-अपना अधिकार जता रहे थे। इन दोनों स्थानों पर अमेरिका का अधिकार स्थापित न कर सकना ह्विग पार्टी को महँगा पड़ा और १८४४ के चुनावों में यह दल हार गया।

१८२० के उपरान्त टैक्सास की अधिकांश जनसंख्या अमेरिकी लोगों की ही थी, मैक्सिको की सरकार ने उन्हें वहाँ जाकर बस जाने की प्रेरणा दी थी। परन्तु जब मैक्सिको ने देखा कि यह प्रान्त उनके हाथ से जाता प्रतीत होता है तो उसने एकदम अपनी नीति बदल दी। लोगों का बाहर से आना बन्द हो गया और टैकसास के लोगों पर कठोर शासन शुरू हो गया जिसका परिणाम यह हुआ कि टैकसास ने स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी और युद्ध छिड़ गगा।

इस छोटे से संघर्ष में मैक्सिको का प्रेसिडेण्ट सान्ता अन्ना स्वयं एक सेना लेकर 'विद्रोहियों' को दबाने के लिए गया और साँ अन्तोनियो में मिशन की इमारत 'अलामो' की रक्षा करती हुई वीर सैनिकों की एक छोटी सी टुकड़ी को को पूर्णतया नष्ट कर दिया। इसका बदला चुकाने में देर न लगी। टैक्सास के लोगों की सेना ने १८१२ के युद्ध के एक अनुभवी जनरल सेम हौस्टन के नेतृत्व में साँ जसिन्टों में मैक्सिको की सेना को कुचल दिया, सान्ता अन्ना को पकड़ लिया और इस भांति यह युद्ध समाप्त हुआ। टैक्सास एक स्वतंत्र गणराज्य बन गया और हौस्टन इसका पहला प्रेसिडेण्ट बना।

टैक्सास के लोगों को अपने स्वतन्त्रता-संग्राम में विजय पर गर्व तो हुआ परन्तु उन्होने संयुक्तराज्य के साथ बड़ा गहरा सम्बन्ध अनुभव किया और संघ में शामिल होने का निर्णय कर लिया। परन्तु उत्तर ने उसके प्रवेश का विरोध किया, क्योंकि वहाँ पर दास-प्रथा प्रचलित थी। दूसरे मैक्सिकों ने यह भी घोषणा कर दी थी कि टैक्सास को साथ मिलाने से युद्ध छिड़ जायेगा। इस स्थिति में १८४४ के चुनावों में ह्विग और डेमोक्रेट दलों का मुकाबला हुआ।

डेमोक्रेट दल ने टेनेसी के जेम्स के० पोक को अपना नेता चुना और टैक्सास तथा ऑरेगान के संघ में मिलाने का दृढ़ संकल्प प्रकट किया। यह बात उत्तर और दक्षिण दोनों को स्वीकार थी क्योंकि ऑरेगान में उत्तर के लोगों की अधिकता होने के कारण वहां पर दास हीन व्यवस्था निश्चित थी और इस प्रकार टैक्सास के आ जाने पर भी सन्तुलन बना रहा। ह्विग पार्टी उम्मीदवार 'सन्धि-प्रिय' हैनरी के इन प्रदेशों को संघ के मिलाने से झिझका और लोगों ने पोक को चुन लिया।

पोक के पद सम्भालने से पहले ही टैक्सास संघ में सम्मिलित कर लिया गया था। इसके उपरान्त नये प्रेसिडेण्ट ने ब्रिटेन के साथ ऑरेगान की समस्या का भी निपटारा कर दिया। संयुक्त राज्य ने प्रशान्तमहासागर के तटवर्ती उत्तर पश्चिमी प्रदेश में ब्रिटिश कैनेडा से होते हुए ५४° ४०' तक के उस प्रदेश पर अपना अधिकार जताया, जो रूस-अधिकृत एलास्का तक फैला था। इंगलैंड ने इसको असंगत व अयुक्त बताया और उसे स्वीकार करने से इन्कार

कर दिया। 'चौवन-चालीस या लड़ाई' करने के अपने वचन की ढींग की उपेक्षा करते हुए पोक ने बीच के ४६° अक्षाँश पर ही समझौता कर लिया।

इसके थोड़े समय उपरान्त ही टैक्सास के दक्षिणी-सीमा-सम्बन्धी झगड़े पर मैक्सिको से लड़ाई छिड़ गई। इसकी बहुत पहिले से उसकी भावना चली आ रही थी। प्राय: यह युक्ति दी जाती है कि सँयुक्त राज्य अपने कमजोर पड़ोसी को हरा कर अधिक प्रदेश प्राप्त करना चाहता था; इसीलिए उसने युद्ध के लिए मैक्सिको को उत्तेजित किया था। दूसरी ओर मैक्सिको ने झगड़ा मिटाने से इन्कार कर दिया था और रियो ग्रेण्ड नदी के पार प्रथम आक्रमण भी उसी ने किया। अन्ततः अमेरिका की सेनायें शीघ्र ही ज़कारी टॉयलर और विन्फील्ड स्काट के नेतृत्व में मैक्सिको के अन्दर दूर तक घुस गयीं और अमेरिकी जल सेना ने प्रशान्तमहासागर के तट पर अपने लोगों को सहायता पहुँचायी और शत्रु से कैलिफोर्निया हस्तगत कर लिया।

१८४८ तक मैक्सिको नगर पर भी अधिकार हो गया था और प्रत्येक स्थान पर संयुक्त राज्य की विजय हुई। मैक्सिको को विवश होकर दक्षिण-पश्चिम का एक बहुत बड़ा प्रदेश छोड़ना पड़ा जिस में कैलिफोर्निया, न्यू मैक्सिको और आरिज़ोना भी थे। इसके बदले में संयुक्त राज्य ने डेढ़ करोड़ डालर देना स्वीकार कर लिया। अमेरिका के बहुत से लोग यह समझते थे कि इस समझौते की शर्तें बड़ी उदार हैं और सारे मैक्सिको पर अधिकार करके उसे संघ में मिला लेना चाहिए था।

फिर भी जो प्रदेश शामिल किए गए जिनसे संयुक्त राज्य ने अपना वर्तमान आकार प्राप्त कर लिया था। अब यह देश अटलांटिकमहासागर से प्रशान्तमहासागर के तट तक फैल गया, केवल बीच में मरुस्थल, चटियल मैदान और वन्य प्रदेश पूर्व को पश्चिम से पृथक् करते थे।

× × ×

१८४६ में कैलिफोर्निया में सोने की खान का पता चला एकदम शोर मच गया उठा 'सोना सोना और महाद्वीप की दूसरी ओर जाने के लिए एक भीड़ उमड़

पड़ी। इस समाचार के प्रकाशित होते ही कि कैलिफोर्निया की घाटियों और नदी-तलों में सोना है, हज़ारों की संख्या में लोग नए प्रदेश की ओर जाने लगे। पूर्व से पुराने बसे हुए शान्त शहर बॉस्टन और कोलाहलपूर्ण न्यूयार्क से खेतों और गाँवों से यह लोग इण्डियनों, प्यास, गर्मी और सर्दी सब का मुकाबला करते हुए अपनी ढकी हुई गाड़ियों में बैठ नए प्रदेश की ओर अपने भाग्य बनाने जाने लगे।

जब तक सोने की खोज में लोग यहां न आए थे तब तक कैलिफोर्निया एक शांत प्रदेश था जिसमें कहीं २ थोड़ी बस्ती थी, स्पेन वालों की कुछ पशुशालाएं थीं और तट पर कहीं २ अमेरिकी बिखरे हुए थे। १८४९ में इसकी जनसंख्या ६,००० से बढ़ कर ८५,००० तक पहुंच गई और इसके नागरिक जिनमें अधिकतर उत्तर के लोग थे, यह माँग करने लगे कि इस संघ में आज़ाद राज्य के रूप में मिला लिया जाए।

देश के लिए अच्छा ही हुआ कि लोगों ने स्वयं माँग कर दी कि क्योंकि काँग्रेस में एक यह वितड़ावाद खड़ा हो रहा था कि मैक्सिको से प्राप्त हुए नए प्रदेशों को किस भाँति प्रविष्ट संघ में किया जाए। अपनी-अपनी उत्तेजना में आकर उत्तर और दक्षिण दोनों ने विभाजक रेखा का यह सिद्धांत छोड़ दिया था जिसकी व्यवस्था मिसूरी सन्धि में की गई थी, उत्तर की माँग थी कि सारा पश्चिमी प्रदेश दास शून्य होना चाहिए जैसा की दक्षिण की मांग यह थी कि सारे पश्चिमी प्रदेश में दास प्रथा होनी चाहिए। दोनों परस्पर विरोधी पक्षों के बीच उदार विचारों के व्यक्ति भी थे जिनका सुझाव यह था कि इन प्रदेशों के लोग स्वयं इस बात का निर्णय करें कि वे दासता के पक्ष में हैं, या उसके विरुद्ध।

इस बार फिर महान् समझौतावादी हेनरी क्ले ने समस्या को हल किया। क्ले ने यह सुझाव रखा कि कैलिफोर्निया स्वतन्त्र राज्य के रूप में सम्मिलित किया जाए और मैक्सिको से प्राप्त हुए प्रदेशों को दो भागों में उटाह और न्यू-मैक्सिको में बाँटा जाए। और वे दोनों अपने जनमत के आधार पर

स्वतन्त्रता से अपने सम्बन्ध में निर्णय कर लें कि दासता के प्रति वहाँ क्या गति-विधि अपनायी जायगी। क्ले ने अपने सुझाव में दक्षिण को संतुष्ठ करने के लिए भगोड़े दासों-सम्बन्धी एक सख्त कानून पास करने के लिए भी कहा जिस में यह व्यवस्था हो कि यदि कोई दास भाग कर उत्तर में चला जाय तो उसको झट ढूंढ कर उसके स्वामी को लौटा दिया जाय।

१८५० के इस समझौते पर बड़ा उग्र विवाद हुआ, दक्षिण की ओर से वृद्ध कल्हौन ने इसका विरोध किया क्योंकि इसके द्वारा नये प्रदेशों में निश्चित रूप से दास-प्रथा के चलन की व्यवस्था नहीं थी। कल्हौन का कहना था कि दास निजी सम्पत्ति का रूप है इसलिए उन पर राजयीय तथा स्थानीय कानून ही लागू होने चाहिए, न कि राष्ट्रीय कानून। इसलिए कांग्रेस को कोई अधि-कार नहीं है कि वह उन प्रदेशों में दास ले जाने का निषेध करे।

उत्तर के लोगों को भी इस समझौते पर चिन्ता हुई और उन्होंने विशेषकर भगोड़े-दास-कानून पर आपत्ति उठाई। परन्तु उनके एक महान् वक्ता मैसा-चुसेट्स के डेनियल वैबस्टर ने क्ले का समर्थन करते हुए एक समुचित युक्ति दी कि चाहे कितना भी त्याग करना पड़े, हर कीमत पर संघ को बचाया जाय। और अब सारे देश को आशा हो गयी कि दासता का प्रश्न सदैव के लिए हल हो गया।

× × ×

हर स्थान पर समृद्धि का समय था। रेलों का जाल बिछाया जा रहा था, उत्तर-पूर्व में उद्योग ज़ोरों पर थे, मध्यपश्चिम से अन्न धड़ाधड़ आ रहा था और कैलिफ़ोर्निया में सोने की धूम मची थी। दक्षिण कपास की उपज से मालामाल हो रहा था।

१८५० में दक्षिण की ९० लाख की जनसंख्या का एक तृतीय भाग, अर्थात् ३० लाख से कुछ अधिक, दास था। श्वेत जाति के थोड़े-से लोग ही दासों को रखे हुये थे, और नीग्रो अधिकतर कुछ एक हज़ार धनाढ्य तथा अमीर कुलों के खेतों में काम करते थे। १८०८ के उपरान्त दासों का आयात संविधान

द्वारा रोक दिया गया, परन्तु उस समय निरन्तर तथा पर्याप्त मात्रा में दास प्राप्त होते रहने की सुदृढ़ व्यवस्था हो गयी थी।

दासों के लिए परिस्थितियाँ भिन्न-भिन्न थीं, अधिकतर उनसे सख़्ती से व्यवहार होता, परन्तु निर्दयता से नहीं। अच्छे-अच्छे स्थानों तथा खेतों में उन्हें शिक्षा और धार्मिक दीक्षा भी दी जाती और उन्हें उस समय तक स्वेच्छा से इधर-उधर जाने-आने की सुविधा थी जब तक वे अपने काम को करते रहें। कुछ गुलामों को सेवाओं के बदले में थोड़ा धन भी मिलता और उन्हें कुछ वर्षों के उपरान्त अपना मूल्य चुका कर मुक्त होने की अनुमति भी दे दी जाती थी।

कई बार दासों से बहुत ज़्यादा काम लिया जाता। उन्हें पीटा जाता, उनसे बुरा व्यवहार होता और उनके कुटुम्ब के सदस्यों को नीलाम करके भिन्न-भिन्न स्थानों में भेज दिया जाता। इस दुर्दशा से बचने के लिए इनमें से बहुत अवसर पाकर भाग भी जाते जिससे वे उत्तर या केनेडा में स्वतन्त्रता-पूर्वक रह सकें। कई बार संवेदनाशील उत्तरीय लोग उनकी सहायता भी करते और भागे हुए दासों को कानून के अनुसार लौटा देने से इन्कार कर देते थे।

उत्तर में जो थोड़ी-बहुत दासता थी, वह क्रान्ति के बाद समाप्त कर दी गयी। अत्याचारों और यातनाओं की बातें सुनकर तथा भाग कर आये हुए दासों से स्वयं मिलकर उत्तर के लोगों को दासता की नैतिक धारणाओं पर बड़ा मानसिक कष्ट होने लगा। इस प्रथा को तत्काल बन्द करा देने के लिए एक छोटे से दल ने आन्दोलन भी किया। और १८५२ में हैरीट लीचर स्टो ने खेतों के जीवन पर एक उपन्यास लिखा। 'अंकल टामस कैबिन' नाम का यह उपन्यास उत्तर में धड़ाधड़ बिका और बाहर भी इसने जनमत को उत्तेजित किया।

परन्तु 'अंकल टामस कैबिन' का अन्य बातों से उत्तर के लोगों को किसी ने यदि अधिक उत्तेजित किया तो वह था १८५४ में कैन्सस-नेब्रस्का कानून का पास किया जाना। एक डैमोक्रेट सदस्य इलिनॉय के सेनेटर स्टीफन डगलस ने यह कानून पास करवा कर मिसूरी समझौते को रद्द करवा दिया। इसके

अनुसार लुइसियाना के साथ खरीदे हुए प्रदेश के उत्तरी भाग में जहाँ पहले दास-प्रथा निषिद्ध थी, अब लगभग पाँच लाख वर्ग मील के क्षेत्रफल में इसका प्रचलन हो सकता था। इस प्रथा को बढ़ाने के लिए दक्षिण को एक बार फिर अवसर मिल गया।

यह बात कुछ रहस्य में ही है कि डगलस ने ऐसा क्यों किया। हो सकता है कि उसने प्रेसिडेण्ट-पद पाने की आशा लगाई हो और इसमें वह दक्षिण का समर्थन प्राप्त करना चाहता हो। उत्तर-पश्चिम में उसकी भूमि थी और हो सकता है उसे प्रादेशिक हैसियत देकर वहाँ विकास कराना चाहता हो। उसकी पत्नी दक्षिण की थी और यह भी सम्भव है कि उसने ऐसा करने के लिए डगलस को प्रेरित किया हो।

कुछ भी कारण हो, यह प्रदेश कैन्सास और नेब्रस्का में बाँट दिया गया और बस्तियां बननी शुरू हो गईं। लगभग उसी समय उत्तर और दक्षिण दोनों कैन्सास के लिए स्पर्धा करने लगे और जब दोनों ओर से मदोन्मत्तों और अतिवादियों ने दूसरे पक्ष के लोगों पर अपनी इच्छा लादने की कोशिश की तो गृह-युद्ध शुरू हो गया। 'लोक-प्रिय-सत्ता' की पुकार चाहे कितनी भी लुभावनी क्यों न थी, परन्तु वह कैन्सास में सफल न हो सकी और इसका परिणाम वहां रक्तपात के अतिरिक्त कुछ न निकल सका।

इसके तीन वर्ष उपरान्त ड्रैड़ स्कॉट के मुकदमे में सर्वोच्चन्यायालय ने जो निर्णय दिया उससे दासता के पक्ष में एक बड़ी विजय हुई। स्कॉट एक दास था और उसने अपनी आज़ादी के लिए दावा कर दिया। क्योंकि उसका स्वामी उसे एक बार ऐसे स्थान पर ले गया था जहां दास-प्रथा नहीं थी। मुख्य न्यायाधीश टेनी ने स्कॉट के विरुद्ध निर्णय दिया और कहा कि अमेरिका में कहीं भी स्वतन्त्र प्रदेश नहीं है। संवैधानिक कानून के अनुसार दास सम्पत्ति का ही एक भाग थे और कांग्रेस को कोई अधिकार न था कि वह उन्हें प्रदेशों से पृथक् कर सके। इसके बाद प्रत्येक नये राज्य में दास प्रथा प्रचलित हो सकती थी।

× × ×

इस बीच उत्तर में एक नया राजनीतिक दल बन रहा था। इसके सदस्य अपने को रिपब्लिकन कहते और उनकी स्पष्ट माँग थी कि नये प्रदेशों में गुलामी की प्रथा बन्द कर दी जाय। आज तक चले आ रहे इस दल का पहले नेताओं में एक था अब्राहम लिन्कन। वह इलिनॉय में स्प्रिंगफील्ड नामक स्थान का एक वकील और राजनीतिक नेता था।

आम तौर पर 'आनेस्ट एबं' लिन्कन कहे जाने वाले इस व्यक्ति का जन्म १८०९ में कैन्टुकी में सीमावर्ती स्थान पर लकड़ी की एक कुटिया में हुआ, बाद में संयुक्त-राज्य के अत्यन्त संकटकाल में वह प्रेसिडेण्ट बन गया। शायद इतना बड़ा संकट, क्रान्ति के बाद देश में पहले कभी उपस्थित न हुआ था। लिन्कन देखने में लम्बा, गँवार-सा था; "वह जनसाधारण का मनुष्य" था। उसने स्वयं अपने यत्नों से शिक्षा पाई और उसकी आकांक्षाएं महान् थीं। वह अपने यौवन में इलिनॉय चला आया और मध्यम कोटि का सफल देहाती वकील बन गया। एक बार वह काँग्रेस का सदस्य भी चुन लिया गया। यद्यपि लिन्कन अपने राज्य में बड़ा लोकप्रिय हो चुका था, परन्तु देश में उस समय तक उसकी ख्याति न हो सकी थी। जब तक उसने दासता के प्रश्न पर १८५८ में 'लघुदैत्य' स्टीफन ए डगलस से अपने विवाद शुरू नहीं किये। ये दोनों इलिनॉय से सेनेट के लिये उम्मीदवार थे; लिन्कन रिपब्लिकन पार्टी के टिकट पर, और डगलस ए डैमोक्रेटिक पार्टी की ओर से।

ड्रेड स्कॉट के फैसले के सम्बन्ध में लिन्कन ने दासता के पक्षपाती डगलस से विवाद में पूछा—"क्या एक क्षेत्र के लोग कानून के अनुसार दासता का उस समय निषेध कर सकते हैं जब वह क्षेत्र या एक राज्य बन जाय? डगलस ने उत्तर दिया "हां,—यद्यपि दासता कानून के अनुसार है परन्तु फिर भी सरकार उन लोगों को दासप्रथा के लिये विवश नहीं कर सकती जो की इसके विरुद्ध हों।" डगलस ने दक्षिण में बड़े यत्न से जो समर्थन प्राप्त किया था वह उसके इस उत्तर पर जाता रहा क्योंकि यदि दासता कानून के अनुसार थी तो प्रदेशों में रहने-वाले दासपतियों को अपनी सम्पत्ति की रक्षा का अधिकार प्राप्त

था चाहे इसके लिये शक्ति का प्रयोग क्यों न करना पड़े। दक्षिण को यह पसन्द न था।

थोड़े से वोटों की अधिकता से डगलस सेनेट के चुनाव में लिन्कन से जीत गया; परन्तु उनमें एक बड़ी टक्कर अभी होने वाली थी। लिन्कन ने भविष्य-वाणी की थी "मुझे विश्वास है कि ऐसा राष्ट्र अधिक समय तक नहीं टिक सकता जिसमें आधे दास हों और आधे आज़ाद······या तो यह पूर्णतया एक प्रकार की हो जाएगा या दूसरी प्रकार का।" उत्तर में लिन्कन के इस कथन पर उसका मान और समर्थन उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा था।

दास-प्रथा को हटाने के एक मदोन्मत्त पक्षपाती जॉन ब्राउन ने १६ साथियों समेत १८५६ में वर्जिनिया के हार्परस फैरी नामक स्थान में सरकारी शस्त्रा-गार पर आक्रमण किया। इस पर सारा देश स्तब्ध रह गया। उसने वहां से युद्ध का सामान लेकर दक्षिण में दासों का एक विद्रोह कराने की योजना बनाई।। राबर्ट इ. ली की कमान में संयुक्त-राज्य की सेना ने ब्राउन को पकड़ लिया, उस पर मुकदमा चला और उसे फाँसी की सज़ा दे दी गई। उत्तर और दक्षिण दोनों में छोटे-बड़े सभी ने ब्राउन के इस उतावलेपन की निन्दा की, परन्तु न्यू-इंगलैंड में दासता-विरोधी कुछ मनस्वियों ने ब्राउन की सराहना की और उसे शहीद बताया। उन लोगों में एक कवि और दार्शनिक रेल्फ़ वाल्डो एमर्सन भी था। इन लोगों ने ब्राउन की तुलना ईसा से की। इसपर दक्षिण क्रोध से भड़क उठा; उसे तो दासों के विद्रोह का सदा भय बना रहता था।

ज्यों ही १८६० के चुनावों के लिए यत्न शुरू हुए लोगों में भावनाएँ भड़क उठीं। डेमोक्रेटिक प्रेसिडेण्ट बुशानन एक साधारण कोटि का शासक सिद्ध हुआ और दासता के प्रश्न पर उस समय बने हुए संकट से वह निपट न सकता था। इसलिए उसका नाम ही सुझाव में न रखा गया। दक्षिण के ठीक मध्य में दक्षिणी कैरोलाइना के चार्लस्टन नामक स्थान पर अपनी गोष्ठी बुलाकर उन्होंने स्टीफ़न ए डगलस का नाम प्रस्तावित कर संयुक्त दल बनाये रखने का प्रयत्न किया। परन्तु डगलस दक्षिण की ये मांगें स्वीकार न करता था कि नये प्रदेशों में दासता की प्रथा का चलन तथा संरक्षण किया जाना चाहिए और

दल के उत्तरी तथा दक्षिणी विभाग बँट गये। दक्षिण के डेमोक्रेटों ने कैन्टुकी के जॉन सी. ब्रेकिनरिज को अपना उम्मीदवार चुना तथा बाद में उत्तर में एक गोष्ठी के उपरान्त डगलस का नाम प्रस्तावित हुआ।

रिपब्लिकन पार्टी की बैठक शिकागो में हुई। आशा थी कि वहां न्यूयार्क के सेनेटर विलियम एच० सेवार्ड को चुना जाएगा, परन्तु लिन्कन के पक्ष में भावना शीघ्र ही सबल होती गई और तीसरी मतगणना पर उसे रिपब्लिक पार्टी की ओर से प्रेसिडेण्ट पद के लिए उम्मीदवार चुन लिया गया। इस दल की ओर से यह माँग की गई कि दासता का विस्तार रोक दिया जाय और कैन्सास को दासरहित राज्य की हैमियत से संघ में ले लिया जाय। दक्षिण का रोष इससे और भी बड़ा जबकि उद्योग की सुरक्षा के लिए तट-कर बढ़ाने का मांग की गई तथा केन्द्रीय सरकार को अधिक सशक्त बनाने के लिये 'आन्तरिक सुधार' अर्थात् शासन-व्यवस्था सम्बन्धी कार्यक्रम रखा गया।

वैधानिक संयुक्त दल (कान्स्टीच्यूशनल यूनियनिस्ट) नाम की चौथी पार्टी भी चुनाव में आई और उसकी ओर से उम्मीदवार टेनेसी का जॉन बैल्ल था। सीमावर्ती राज्यों से वोट पाने की आशा से उसने दासता का प्रश्न ही नहीं छेड़ा और केवल संविधान के पालन पर ज़ोर दिया।

जब नवम्बर १८६० को चुनाव हुआ तो रिपब्लिकन जीत गये। कुल वोटों में से ४० प्रतिशत लिन्कन को मिले। दक्षिण या सीमावर्ती किसी भी राज्य ने उसके पक्ष में वोट न दिये। फिर भी चारों में से सबसे अधिक मत उसी को मिले और निर्वाचन-मण्डल ने भी उसी को चुना। डगलस दूसरे नम्बर पर आया और उसका भी उत्तर में समर्थन हुआ था। केवल सीमावर्ती तथा दक्षिण के राज्यों ने ब्रेकिनरिज और बैल्ल का समर्थन हुआ था।

लिन्कन की विजय का समाचार सुनते ही दक्षिण में झट बदले की भावना प्रतिक्रिया शुरु-हो गई। दिसम्बर में दक्षिणी कैरोलाइना, संघ से पृथक् हो गया दूर दक्षिण के कई और राज्यों ने भी ऐसा ही किया। १८६१ में अलबामा में मान्टगुमरी के स्थान पर अधिवेशन कर इन राज्यों ने अमेरिका के राज्यों का

परिसंघ बनाया और जैफ़रसन डेविस को अपना प्रेसिडेण्ट चुना। डेविस बैस्ट प्वाइंटर का रहने वाला था और उस ने मैक्सिको के युद्ध में ख्याति पाई थी। इस के अतिरिक्त वह संयुक्तराज्य की सेनेट का सदस्य और युद्ध-मन्त्री भी रह चुका था।

संघ को टूटते देखकर कांग्रेस ने दक्षिण को फिर से मिलाने के लिये सन्धि के कई तरीके प्रयोग में लाये या फिर बाकी रहे दक्षिणी राज्यों को अपने अधिकार में रखने की चेष्टा की, परन्तु उसके सब प्रयत्न व्यर्थ हुए। दक्षिण का मत था कि लिन्कन तथा रिपब्लिकन दल को खत्म कर देंगे। जब तक दास प्रथा का विस्तार नहीं होता, उत्तर के बढ़ते हुए राज्य देश पर अपना ही अधिकार कर लेंगे और राजनीतिक तथा आर्थिक रूप से दक्षिण पर छा जायँगे। इस प्रकार की केन्द्रीय सत्ता ऐसे लोगों पर ठाँसना जिनमें अधिकाँश उसके विरोधी हों तथा जो परम्परा से राज्यों के शासन-सम्बन्धी अधिकारों में विश्वास करते आये हों, कुछ ऐसी बात थी जिसे वे सहन न कर सकते थे। दक्षिण के लोगों ने अनुभव किया कि दोनों प्रदेशों के हितों का अब मेल नहीं हो सकता एक औद्योगिक दूसरा कृषिप्रधान।

मार्च १८६१ में लिन्कन ने प्रेसिडेण्ट के पद से अपने प्रथम भाषण में दक्षिण के प्रति बड़ा नम्र और विनीत व्यवहार करने के विचार प्रकट किये। उसने कहा कि मैं दासता के केवल विस्तार का विरोधी हूँ और जहाँ पहले ही दास-प्रथा है वहाँ इसके विरुद्ध नहीं हूँ। दक्षिण के लोगों को राष्ट्र के संयुक्त देन का स्मरण कराते हुए, उसने घोषणा की थी कि आध्यात्मिक, भौतिक तथा राजनीतिक तौर पर असम्भव है कि दोनों विभाग भिन्न-भिन्न मार्ग अपनायें। उसने वचन दिया कि वह किसी को दबाने के लिये उस समय तक शक्ति का प्रयोग न करेगा जब तक कोई संयुक्त-राज्य की सरकार के विरुद्ध शक्ति का प्रयोग न करे।

चार्लस्टन के बन्दरगाह पर एक महीने के बाद ही दक्षिण की ओर से इसका जवाब मिल गया। वहाँ पर एक छोटे टापू में फ़ोर्ट सुमेटर पर संयुक्त-राज्य ने थोड़ी सेना रखी थी। वहां पर खाद्य सामग्री कम हो रही थी और

लिन्कन के सामने दो ही रास्ते रह गये; या तो वह समुद्र के रास्ते और सामग्री भेजे या फिर इस चौकी को परिसंघीय सरकार के आगे आत्म-समर्पण करने दे। उसने सामग्री भेजने का निर्णय किया और साथ ही यह भी स्पष्ट कर दिया कि इसमें युद्ध-सामग्री नहीं है ; परन्तु इसको शत्रुतापूर्ण कार्य समझा गया और परिसंघ की तोपों ने १२ अप्रैल १८६१ को फ़ौर्ट पर गोलाबारी शुरू कर दी। दो दिन के पश्चात् कीले की सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया और वहाँ से सितारों और धारियों वाला संयुक्तराज्य का ध्वज उतार कर परिसंघीय झंडा गाड़ दिया गया। इस पर गृह-युद्ध छिड़ गया।

जब फोर्ट सुमटेर का समाचार फैला तो दक्षिण में खुशी मनाई गई और उत्तर क्रोध से भर गया। प्रेसिडेण्ट लिन्कन ने ७५,००० स्वयं सेवकों के लिये माँग की जो फैड्रल सरकार की सत्ता सारे देश में फिरसे स्थापित करा सकें। वर्जिनिया, उत्तरी केरोलाइना, अर्कनसास और टेनेसी—ये चार राज्य भी पृथक् हो गये। सीमावर्ती राज्यों की सहानुभूति भो अलग अलग थी, परन्तु कैन्टुकी, मिसूरी और मेरीलैण्ड को संघ ने बलपूर्वक अपने अधिकार में रखा। वर्जिनिया का एक भाग संघ के साथ रहा और उसे पश्चिमी वर्जिनिया का नाम देकर एक पृथक् राज्य के रूप में मिला लिया गया।

जनसंख्या और औद्योगिक शक्ति के आधार पर दक्षिण से उत्तर अधिक बलवान् था। संघ में अब भी २३ राज्य थे जिनमें रहने वाले लोगों की संख्या २ करोड़ के लगभग थी और दूसरी और पृथक् हो गये ११ राज्यों में कोई १ करोड़ लोग बसते थे जिनमें भी ३५ लाख के लगभग दास थे। इस प्रकार श्वेत जाति के लोगों की संख्या में दक्षिण के एक व्यक्ति के मुकाबले में उत्तर में तीन थे इसके अतिरिक्त उत्तरी यूरोप से लोग अमेरिका के उत्तरी भागों में में निरन्तर आ रहे थे।

मध्य पश्चिम के दृढ़ संघीय और शक्तिशाली प्रदेश समेत उत्तर में उद्योग पर्याप्त होने के कारण युद्ध सामग्री का प्रचुर उत्पादन हो सकता था। दक्षिण में इस प्रकार के कारखाने नहीं थे, वहां पर उन्हें नये सिरे से स्थापित करना था और जंगी सामान किसी भाँति यूरोप से लाना पड़ रहा था।

कई बातें दक्षिण के पक्ष में भी जाती थीं। प्रथम वह आत्म रक्षा कर रहा था; दक्षिण के लोगों को अपने घरों और अपने जीवन बचाने के लिए लड़ना था, इस कारण वे थोड़ी सामग्री प्राप्त होने पर भी जब लड़ सकते थे। ये लोग शिकार और इसी प्रकार की अन्य बाहर खुले में खेली जाने-वाली क्रीड़ाओं के अभ्यस्त थे। उत्तर के दुकानदारों और कारखानों के मजदूरों की अपेक्षा वे अच्छे सैनिक बन सकते थे। इसके साथ ही साथ दक्षिण से बहुत-से लोगों ने व्यापार के स्थान पर सैनिक जीवन को ही अपनाया था। वैस्ट प्वायन्ट की सैनिक शिक्षण संस्था में श्रेष्ट वर्ग दक्षिण से आता था। उनमें राबर्ट इ. ली और टी. जे. 'स्टोनवाल' सरीखे सैन्य अधिकारी भी थे जिनकी टक्कर का उत्तर में शायद ही कोई सैनिक नेता था। और अंत में यद्यपि दक्षिण के लोग संख्या में कम थे परन्तु उनमें दास भी थे, जो युद्ध में श्वेत जाति के सैनिकों का हाथ बटाते और उन्हें युद्ध के लिए अन्य कामों से निवृत कर सकते थे।

गृह-युद्ध के प्रथम आधे भाग की लड़ाइयाँ मुख्यत: दो समर-भूमियों में ही रहीं —पूर्व में वर्जिनिया और पश्चिम में मिसिसिपी नदी के साथ-साथ। जब वर्जिनिया ने संघ से सम्बन्ध-विन्छेद किया तब रिशमाँड को परिसंघ की स्थायी राजधानी बनाया गया। यह नगर वाशिंगटन से केवल एक सौ मील दक्षिण में स्थित है। बड़े विश्वास से 'रिशमाँड चलो' की पुकार करते हुए उत्तर ने ३०,००० सिपाहियों की सेना वर्जिनिया भेजी, जहाँ लगभग इतनी ही संख्या में 'विद्रोही' मुकाबले के लिए तैयार थे। २१ जुलाई १८६१ को बुलरन के स्थान पर पहली बड़ी लड़ाई हुई।

आरम्भ में दक्षिण की सेना जब आगे बढ़ी तो संघवादियों ने इसे कोई सैनिक कार्यवाही नहीं, बल्कि एक मामूली बात समझा। संघीय सैनिकों के साथ कांग्रेस के सदस्य अपनी पत्नियों सहित खाने का सामान लेकर वहां गये थे, मानों वे सैर करने के लिए गये हों। पहली ही लड़ाई में जिसमें दोनों दलों का पहले तो कुछ उतार-चढ़ाव हुआ और फिर उत्तर की सेना पराजित हुई, तमाशा देखने और सैर करने के उद्देश्य से आये हुए बहुत से उत्तरी

लोगों में घबराहट और भगदड़ पड़ गई। आगे-आगे काँग्रेस सदस्य और पीछे बाकी बचे हुए सिपाही जब वाशिंगटन लौटे तो वे पूर्ण रुप से हतोत्साह हो चुके थे।

दृढ़ संकल्प करके उत्तर ने और अधिक सिपाहियों को इकट्ठा किया और रिशमांड की ओर बढ़ने का एक और प्रयत्न का नेतृत्व करने के लिए वैस्ट प्वायन्ट के जार्ज बी. मैक्कलेलन को नियुक्त किया; उसमें योग्यता के अच्छे लक्षण दीखते थे। उसे पोटोमेक नदी की ओर बढ़ने के लिए कहा गया। 'छोटा मैक' कुशल चालाक था और उसके सिपाही उस पर असीम श्रद्धा रखते थे, परन्तु वह आवश्यकता से अधिक सावधान रहता। जहाज़ों द्वारा समुद्र के रास्ते उसने एक लाख सिपाही रिशमान्ड के दक्षिण-पूर्व में उतारे, वह बढ़ता-बढ़ता १८६२ की बसंत ऋतु में परिसंघ की राजधानी तक पहुँच गया। ली तथा जैक्सन ने उससे कोई आधी सेना के साथ मैक्कलेलन का मुकाबला किया परन्तु ठीक उसी समय जब उसकी जीत होने ही वाली थी, उसने हिम्मत छोड़ दी और ऐसा भागा कि उसने वाशिंगटन पहुँच कर ही दम लिया और बोला कि उसके मुकाबले में सेना अधिक थी।

ह्वाइट हाउस में प्रेसिडेण्ट लिन्कन अपने बड़े सेनानायक से उद्विग्न था। मैक्कलेलन भी उद्दण्ड था और उसने प्रेसिडेण्ट के साथ निन्दनीय व्यवहार किया। इसके अतिरिक्त वह पक्का डेमोक्रेट था और सन्देह था कि वह दक्षिण की तुष्टि चाहता है। जब भी उससे अच्छा जनरल मिल सकता लिन्कन उसे बदलने के लिए तैयार था।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति ने भी लिन्कन को परेशान किया। ब्रिटेन की सरकार और वहाँ के उच्च वर्गों की सहानुभूति दक्षिण से थी क्योंकि उनके साथ ब्रिटेन के घनिष्ट व्यापारी तथा सांस्कृतिक सम्बन्ध थे। संघ की ओर से दक्षिण के बन्दरगाहों की जो सफल नाकाबन्दी की गई उससे इंगलैण्ड जाने वाली कपास रुक गई और इस कारण ब्रिटेन की संयुक्त राज्य से अनबन हो गई। जब संघ की ओर से ब्रिटेन का एक जहाज़ रोक कर उसमें दक्षिण के दो राजनीतिक दूतों को पकड़कर बॉस्टन में कैद कर लिया गया तो एक

संकट उपस्थित हो गया। बड़े समुद्रों में अपने अधिकारों का इस प्रकार उल्लंघन होते देख ब्रिटेन ने रोष प्रकट करते हुए युद्ध की धमकी दी। यदि विदेश का कोई शक्तिशाली देश शत्रु की सहायता पर आ जाता तो संघ का विनाश निश्चित था लिन्कन ने दूतों को मुक्त करने का आदेश दिया तथा उसने ब्रिटेन से क्षमा माँग ली। सम्भवतः इससे भी ब्रिटेन को सन्तोष न होता यदि इंगलैंड के श्रमिक वर्ग दासता के विरुद्ध उत्तर के संघर्ष के प्रति सहानुभूति की घोषणा न करते।

समुद्र पर उत्तर का ज़ोर बराबर बना रहा। यद्यपि दक्षिण ने संसार का पहला लोहावृत जहाज़ मैरी मैक बनाकर थोड़े समय के लिये उत्तर की जल सेना की श्रेष्टता को ललकारा था, परन्तु शीघ्र ही उत्तर ने भी मानीटर जहाज में चारों ओर घूमने वाला तथा लोहावृत्त मचान बना कर उसकी समता कर ली और फिर न्यू ओर्लियन्स पर आक्रमण कर अधिकार कर लेने के लिये जल सेना का बेड़ा भेज दिया।

पश्चिम के युद्ध-क्षेत्र में जनरल एस. ग्रान्ट संघ की जंगी नौकाओं की सहायता से मिसिसिपी नदी द्वारा दूर दक्षिणी प्रदेश में बढ़ता जा रहा था। शिलोह की लड़ाई में उसको भारी नुकसान उठाना पड़ा, परन्तु वह आगे बढ़ता हुआ विक्सबर्ग पहुंच गया और उसने वहाँ पर घेरा डाल दिया। अब सारे मिसिसिपी नदी पर संयुक्त राज्य की सेनाओं का अधिकार था और ग्रान्ट जिसने मद्यपान के कारण अपना सैनिक जीवन लगभग बर्बाद ही कर लिया था, फिर राष्ट्रीय वीर के रूप में विख्यात हुआ।

पश्चिम में सफलताएं हुई उनके विपरीत पूर्व में संघीय सेनाएँ हार पर हार खा रही थीं। यह परिस्थिति लिन्कन के लिये दुष्कर होती जा रही थी; उसे एक बड़ी विजय की आवश्यकता थी ताकि वह एक ऐसी घोषणा कर सके जिससे संघ के उद्देश्य को बहुत बल मिलता।

अब उत्तर के उन लोगों की बात सुनने का समय आ गया था जो दास-प्रथा को पूर्णतया हटा देना चाहते थे और इस भाँति गृह-युद्ध को संघ की

रक्षा के लिये ही नहीं बल्कि, उसे दक्षिण के दासों को मुक्त कराने का साधन भी बनाया जा सकता था। पहले लिन्कन का उद्देश्य केवल यह था कि संघ को बचाया जाय। उसने घोषणा की थी "यदि में किसी दास को मुक्त किये बिना संघ को बचा सका तो ऐसा ही करूंगा; और यदि सभी दासों को स्वतन्त्र करके ही संघ को बचाना पड़ा तो वैसा ही करूँगा।" अब १८६२ में संघ का सब से बड़ा हित इसी में था कि सभी दासों को मुक्त कर दिया जाय; क्योंकि इससे उत्तर में एकता हो जायगी, उसे संसार की सहानुभति प्राप्त होगी और विदेश में साथी प्राप्त करने की दक्षिण की अन्तिम आशा भी समाप्त हो जायगी।

जब दक्षिण की सेनाएं विजय पर विजय प्राप्त करती जा रही थीं उस समय यह घोषणा करना कि दक्षिण के सभी दास स्वतन्त्र हैं व्यर्थ ही प्रतीत था। इसलिये लिन्कन ने उस समय तक प्रतीक्षा की जब तक की अन्टाटम की लड़ाई में दक्षिण के बड़े आक्रमण के डर को समाप्त नहीं कर दिया गया। फिर तो तक प्रेसिडेण्ट ने १ जनवरी १८६३ को मुक्ति घोषणा की कि संघ के विरुद्ध विद्रोह करने वाले राज्यों के सभी दास "आज से स्वतन्त्र हैं।"

वस्तुतः यह घोषणा भविष्य के लिये एक वचन से अधिक महत्व न रखती थी। क्योंकि दक्षिण को हराना अभी बाक़ी था। इसके अतिरिक्त यह घोषणा संविधान के विरुद्ध भी थी क्योंकि दासता को समाप्त करने के लिये संशोधन राज्यों को विजय प्राप्ति के उपरान्त स्वीकार करने थे। परन्तु इस घोषणा के शुभ उद्देश्य की अभिव्यक्ति से कि अमेरिका के ३५ लाख लोगों को जो दासता का जीवन व्यतीत कर रहे हैं, मुक्त किया जायगा, वही परि-णाम निकला जो लिन्कन चाहता था। संघ अब एक उच्च आदर्श की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील था।

पर शीघ्र ही यह जोश भी शिथिल पड़ गया क्योंकि मैक्कलेलन, अन्टीटम के उपरान्त विजय को जारी न रख सका। प्रेसिडेण्ट लिन्कन नें तंग आकर उसे हटाया और अधिक उग्र कमान्डर नियुक्त किये। उत्तर की सेना वर्जिनिया में फिर से बढ़ी; परन्तु फ्रेड्रिक्सवर्ग और चान्सलरसविले मैं वह मारी गयी।

जो कुछ सिपाही भागे-भागे आये, जनरल ली की सेना ने उनका पीछा किया और उन्होंने पेनसिलवेनिया में गेटस्बर्ग के स्थान पर मोर्चे बाँध लिये। उत्तर को अब अपना जीवन बचाने के लिए युद्ध करना पड़ा। शत्रु उसके प्रदेश में था और हो सकता था कि एक और पराजय से समाप्त हो जाये और दक्षिण स्वाधीन हो जाय।

गेटस्वर्ग में ली की ७५,००० सिपाहियों ने हाथ से बुने हुए भूरे रंग के कपड़े की वर्दियों में उत्तर के ९०,००० नीली वर्दियाँ पहने सिपाहियों का सामना किया। १८६३ के जुलाई मास की पहली और दूसरी को दक्षिण-वालों का लड़ाई में पलड़ा भारी रहा। ३ जुलाई को निर्णायक विजय प्राप्त करने की इच्छा से जनरल ली ने संघीय केन्द्र पर एकदम धावा बोलने का आदेश दे दिया। यह केन्द्र सिमिट्री रिज पर था और यहाँ पर उत्तर के सिपाही बड़ी दृढ़ता से खाइयों में मोर्चे लगाये बैठे थे।

सैनिक इतिहास के अतिप्रचण्ड आक्रमणों में एक उस समय हुआ जबकि जनरल जार्ज पिकट ने १५,००० प्यादे सिपाही लेकर बड़े नाटकीय ढंग से संघीय सेना की पंक्तियों पर धावा बोल दिया। दक्षिण के इन श्रेष्ठतम सैनिकों को यह आदेश था कि वे मारें या मरें। पहले तो वे बड़ी सुव्यबस्थित विधि से आगे बढ़े, फिर अन्धाधुन्ध टूट पड़े। दक्षिण के ये सिपाही पहाड़ी तक पहुंच गये जहां उत्तर का तोपखाना था और कुछ देर के लिए उन्होंने अपना झण्डा भी पहाड़ी की चोटी पर संयुक्त-राज्य के झण्डे के पास ही गाड़ दिया। जब लड़ाई पूरे ज़ोर से शुरू हुई तो नीले और भूरे रंग में दोनों पक्षों के सिपाही एक दूसरे पर टूट पड़े और संगीनों तथा बन्दूकों के कुन्दों से लड़ाई होने लगी। उत्तर को कुमक पर कुमक आती गयी। अन्त में दक्षिण की सेना हार गयी, उनका बड़ा नुकसान हुआ। वह धीरे-धीरे पहाड़ी से पीछे हट गयी। गेटस्बर्ग की लड़ाई समाप्त हो गयी और दक्षिण की ओर से युद्ध का सबसे बड़ा डर जो बन गया था वह जाता रहा।

उत्तर में ४ जुलाई को स्वतन्त्रता-दिवस बड़े जोश और हर्ष से मनाया गया गेटस्बर्ग के अतिरिक्त पश्चिम से भी विजय के समाचार आये थे। जनरल

ग्रान्ट ने विक्सवर्ग की रसद रोक कर उसे आत्मसमर्पण पर विवश कर दिया था। और मिसिसिपी नदी पर सभी जगह संयुक्तराज्य सरकार का अधिकार हो गया। नदी के पश्चिम की ओर के राज्य कट गये और अब ग्रान्ट पूर्व की लड़ाई में भाग लेने के लिए अपने बहुत से सिपाही भेज सकता था।

यद्यपि दो वर्ष और भी भीषण संघर्ष होता रहा परन्तु गेटसबर्ग ने गृह-युद्ध की दिशा बदल दी। १८६३ के शिशिर में इस रणभूमि में राष्ट्रीय कब्रिस्तान बनाया गया और इस अवसर पर प्रेसिडेण्ट लिन्कन ने स्वयं वहाँ आकर एक भाषण दिया जिसमें उन्होंने वहाँ पर मारे जाने वालों के बलिदान का बदला चुकाने की प्रतिज्ञा की। प्रेसिडेण्ट के इस अमर वक्तता के अन्तिम शब्द थे "—हम यहाँ प्रतिज्ञा करते हैं कि ये जाने व्यर्थ नहीं जायँगी—और यह राष्ट्र ईश्वर की छत्रछाया में नयी स्वाधीनता प्राप्त करेगा और लोगों का शासन, लोगों द्वारा और लोगों के लिए होगा—का सिद्धान्त संसार से कभी न मिटेगा।"

गृह-युद्ध का उत्तरार्ध उत्तर के उन दृढ़ तथा निश्चयपूर्ण प्रयत्नों की कहानी है जिनके द्वारा एक ऐसे शत्रु को निष्प्राण किया गया जिसने पराजय स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था। संघ की सैनिक योजना बड़ी सरल थी, पोटोमैक से सेना वर्जिनिया होती हुई रिशमान्ड की ओर बढ़ी तथा ग्रान्ट के सैनिक पश्चिम की ओर से दक्षिण की सेनाओं के पार्श्वों पर आक्रमण करें ये आक्रमण टेनेसी तथा जार्जिया में हों।

जनरल ग्रान्ट लिन्कन की इच्छा के अनुरूप सिद्ध हुआ, कुछ उग्र और लचीला। वह उत्तर की सैन्य-सामग्री तथा जनशक्ति की प्रवलता से उचित लाभ उठाना जानता था। पूर्वी टेनेसी पर अधिकार हो जाने और चट्टानूगा में उसकी एक बड़ी विजय के उपरान्त लिन्कन ने उसको उत्तर की सभी सेनाओं का प्रधान-नायक बना दिया और युर्दम्य ली का मुकाबला करने के लिए वर्जिनिया भेज दिया। विलियम टी० शेरमन जो इस सारे युद्ध में ग्रान्ट के साथ-साथ रहा टेनेसी में सेना लेकर जार्जिया में अटलांटा की ओर बढ़ा।

जनरल ग्रान्ट ने १८६४ में रिशमान्ड की ओर बढ़ जाने का यत्न किया;

परन्तु वह सफल न हो सका और उसे क्षति भी भारी उठानी पड़ी। ली ने बड़ी योग्यता और निपुणता से उसे रोका और स्पाटसिल्वेनिया के वन्य प्रदेश और कोल्डहार्बर में बड़ी हानि पहुँचाई। जब ग्रान्ट ने दक्षिण से होकर रिशमाँड पर घेरा डालना चाहा तो ली ने उसे पीटसबर्ग में रोके रखा। परन्तु उस समय ग्रान्ट यद्यपि जीत न सका वह हारा भी नहीं, और ली की सेनाएँ आक्रमणों के कारण घटती गईं, क्योंकि अब उन्हें नई कुमक नहीं पहुँच सकती थी।

इन्हीं दिनों प्रेसिडेण्ट के पद के लिए उत्तर में १८६४ के चुनाव हुए। रिपब्लिकन दल ने लिन्कन को अपना उम्मीदवार चुना और डेमोक्रेट दल ने जनरल जार्ज मैक्कलेलन को जो प्रेसिडेण्ट का पुराना विरोधी तथा सेना का भूतपूर्व कमाण्डर था। चुनाव में मुख्य प्रश्न युद्ध का था—कि युद्ध को चाहे कुछ भी हो, जारी रखा जाय जैसा कि लिन्कन चाहता था अथवा फिर बात-चीत करके सन्धि कर ली जाय जोकि डेमोक्रेट कहते थे। जब ग्रान्ट युद्ध में ली को हरा न सका तब लिन्कन को चुनाव के परिणाम की चिन्ता हुई, परन्तु वह बड़ी सरलता से पुनः प्रेसिडेण्ड चुन लिया गया।

अब इस महान् संघर्ष का अन्त होने को था। जनरल शेरमन जोकि कहा करता था कि "युद्ध नरक है"; अपनी बात सिद्ध करने के लिऐ आगे बढ़ने लगा। उसने जार्जिया को आग लगा दी। अटलांटा तब वह बढ़ गया जहाँ से उसने सवाना में से होते हुए तीन सौ मील की यात्रा शुरू की; उसका मार्ग में कोई विरोध न हुआ और जो कुछ सामने आया वह उसे आग लगाता और नष्ट करता हुआ आगे बढ़ता गया। वहाँ से वह कैरोलाइना होता हुआ उत्तर की ओर गया; उसकी विधियाँ क्रूर थी और वह वर्जिनिया में ग्रान्ट के साथ आ मिलने वाला ही था जब रिशमाँड का पतन हो गया। जनरल ली को विश्वास हो गया कि उसका प्रयास सफल होने की कोई आशा नहीं है और उसने ६ अप्रैल १८६५ को एपोमेटाक्स के स्थान पर उत्तरी वर्जिनिया की अपनी सेना की ओर से आत्मसमर्पण कर दिया और युद्ध बन्द हो गया।

चार वर्ष के इस भयंकर काण्ड में अमेरिका में युवक बहुत बड़ी संख्या में

मारे गये। सम्पत्ति की हानि भी बहुत बड़ी थी। देश के ३६०,००० व्यक्ति जान से हाथ धो बैठे (दूसरे महायुद्ध में लगभग इतने ही अमेरिकी सैनिक मारे गये हैं)। मनुष्यों के अतिरिक्त दक्षिण में तो मकानों, पशुधन और यातायात के साधनों का भी भारी नुकसान हुआ। दो अरब डालर के मूल्य के दास मुक्त कर दिये गये और उनके मालिकों को कुछ मुआवज़ा न दिया गया। परिसंघ ने जो मुद्रा चलाई थी और जो तमस्सुक जारी किये थे, वे सब बेकार हो गये।

अपने सन्मुख उपस्थित हुई समस्याओं को भली भाँति समझते हुए लिन्कन ने दूसरी बार प्रेसिडेण्ट बनने पर अपने प्रथम भाषण में घोषणा की "किसी के भी प्रति घृणा-द्वेष रखे बिना, और सब के प्रति उदार रह कर—आओ हम अपने सामने पड़े काम को पूर्ण करें; राष्ट्र के घावों पर पट्टी बांधे।" प्रेसिडेण्ट उस मार्ग पर चलने के लिए तैयार था जिससे अत्यन्त सरल तथा सुविधाजनक विधि से राष्ट्र का पुनर्निर्माण हो सके।

उत्तर में रिपब्लिकन पार्टी के बहुत-से सदस्य यह चाहते थे कि दक्षिण को विजित देश की भाँति दण्ड मिलना चाहिए और उनका मत था कि पहले संघ के सदस्य होने पर दक्षिण के राज्यों को जो सुविधाएँ व अधिकार प्राप्त थे, वह वे अब खो बैठे हैं। लिन्कन इससे सहमत न था। उसकी धारणा यह थी, जैसा उसने पहले भाषण में कहा था कि किसी भी राज्य के लिए संघ से विछिन्न होना असम्भव है। दक्षिणी राज्यों ने नहीं, बल्कि उनमें थोड़े से लोगों के कुछ दलों ने केन्द्रीय सरकार की सत्ता का विरोध किया है। राज्य सदा ही सभी जनता के हाथ में रहे हैं, वह पुनः संघ में सह-भागी के रूप में सहयोग करेंगे; संघ-व्यवस्था में लौट आने पर उनका स्वागत होगा।

इसी नीति के अनुसार प्रेसिडेण्ट लिन्कन ने युद्ध-काल में ही अपनी 'दस प्रतिशत योजना' रख दी थी। यदि किसी भी राज्य के दस प्रतिशत मतदाता संघ के प्रति निष्ठावान शासन की स्थापना के लिए तैयार हों तो उस राज्य को पुनः मिला लिया जाय और उसके सदस्य कांग्रेस में बैठ सकेंगे। इसलिए टेनेसी, अर्कन्सास और लुइसियाना जो संघीय सेनाओं के अधिकार में आ चुके थे,

युद्ध समाप्त होने से पहले ही संघ में फिर से सम्मिलित हो चुके थे। इसके अतिरिक्त अपनी ओर से सौहार्द्र दर्शाते हुए लिन्कन ने टेनेसी के एक भूतपूर्व गवर्नर तथा सेनेटर एन्ड्र्यू जॉनसन को वाइस-प्रेसिडेण्ट पद के लिए उम्मीदवार चुना था।

कांग्रेस में रिपब्लिकन दल दस प्रतिशत योजना के विरुद्ध था। वह समझता था कि दक्षिण के पुनः इस भांति आ मिलने पर उसके डेमोक्रेट प्रतिनिधि उत्तर के डेमोक्रेट प्रतिनिधियों से मिल जायेंगे और रिपब्लिकन दल के हाथ से सत्ता छिन जायगी। दक्षिण को अवश्य ही दबा कर रखना चाहिए और पुनर्निर्माण का संचालन कांग्रेस द्वारा होना चाहिए कि प्रेसिडेण्ट द्वारा। इसलिए काँग्रेस भूतपूर्व परिसंघ के सदस्य-राज्यों के साथ शत्रु-प्रदेश की भाँति व्यवहार करे, न कि प्रेसिडेन्ट की ओर से उनको क्षमा करके पूर्ण रूप से राज्यों की हैसियत दे दी जाय।

शासन व प्रतिनिधियों के बीच इस संघर्ष में लिन्कन अपनी इच्छा से काम ले सकता या नहीं, यह प्रश्न ही रहेगा, इसका कभी कोई उत्तर नहीं मिलेगा। हयुद्ध की समाप्ति के पाँच दिन उपरान्त जब लिन्कन अपनी पत्नी सहित वाशिंगटन के फोर्ड थियेटर में नाटक देख रहा था, जॉन विल्कन बूथ नाम के किसी उन्मत्त ने अभिनेता के पीछे खड़े होकर लिन्कन के सिर में गोली मार दी और "अत्याचार का सदा ऐसा (अन्त) होता है" चिल्लाता हुआ भाग गया। बाद में बूथ को एक खलिहान में घेर लिया गया और जब उसने आत्मसमर्पण करने से इन्कार कर दिया तो उसे गोली मार दी गई।

दूसरे दिन प्रातः घावों के कारण लिन्कन की मृत्यु हो गई और उत्तर शोक-मग्न हो गया—उसका विनीत और बुद्धिमान महान् नेता जाता रहा। इस पर दक्षिण के लोगों को भी खेद हुआ जब उन्होंने समझा कि उनकी इस भयंकर परिस्थिति में लिन्कन ने सहायतार्थ क्या कुछ किया होता।

अपने नये प्रेसिण्डेट एंड्र्यू जॉनसन के शासन में राष्ट्र अपने को बढ़ाने लगा। वह अब घायल और विदीर्ण था, परन्तु उसने आप को उस आदर्श सिद्धान्त के निमित्त लगा दिया था कि केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकारों के सर्वोपरि है।

———

दूसरा भाग

भूमिका

गृहयुद्ध के अन्त के साथ अमेरिका के इतिहास का प्रथमार्ध समाप्त हो जाता है। इस समय में राष्ट्र की नींव पड़ गई और लोकतन्त्रीय व्यक्तिवाद की साधारण विशेषताएँ भी निश्चित हो गईं। यद्यपि १९वीं शताब्दी के मध्य तक उत्तर में उद्योग काफ़ी बढ़ चुके थे, परन्तु फिर भी अमेरिका की व्यवस्था कृषि-प्रधान ही थी, और व्यापार स्थानीय स्तर पर था। इण्डियन लोगों तथा जंगली भैंसों द्वारा बसे हुए पश्चिमी प्रदेश अब भी अग्रगामियों को अपनी ओर आमन्त्रित कर रहे थे।

१८६५ के उपरान्त इतिहास बदला। देश में लोगों का आगमन बहुत बढ़ गया। बड़े-बड़े नगर बस गये। उद्योग का विकास तथा विस्तार हुआ; नये-नये आविष्कारों और बढ़ती हुई जनसंख्या ने इसको और भी प्रेरणा दी। उद्योग के लिए कोयला और लोहा निकाला जाने लगा, जिससे विद्युतशक्ति तैयार हो और कल-कारखाने बनाये जायँ। करोडों पीपों के हिसाब से तेल निकलने लगा, महाद्वीप में रेल मार्गों का जाल बिछ गया; दोनों तट रेलों-द्वारा मिल गये। प्रकाश-शक्ति और संचार के लिए बिजली तैयार की जाने लगी।

ज्यों-ज्यों अमेरिका के समृद्ध प्राकृतिक भण्डारों से काम लिया जाने लगा त्यों-त्यों चतुर शोषकों और व्यापारियों ने अतुल धन कमाया। पूंजीपतियों और श्रमिकों के बीच उग्र तथा संगठित संघर्ष हुआ। पूंजीपति यह अधिकार जताने लगे कि वे अपनी सम्पत्ति को जैसे चाहें प्रयोग में लाये और श्रमिक अधिक वेतन तथा सुविधाओं की माँग करने लगे। इस गतिविधि के साथ-साथ छोटे व्यापारी और उत्पादक भी थे जो मुक्त-व्यापार तथा उद्योग के स्वतन्त्र जगत् की प्रतियोगिता में भाग लेने लगे।

अमेरिका की सीमाएँ अतलान्तकमहासागर से प्रशान्तमहासागर तक फैल गईं, १९०० तक उसकी जनसंख्या ७ करोड़ ६० लाख अर्थात् १८६५ की जनसंख्या

से दुगनी हो गई। संयुक्तराज्य, महाद्वीप में समा न सका और कुछ काल के लिए उसे यह प्रलोभन हुआ कि वह भी अन्य बड़े-बड़े देशों के साथ साम्राज्य-वाद की होड़ में शामिल हो जाय और समुद्र-पार के कुछ प्रदेशों पर अधिकार कर ले।

गृहयुद्ध यद्यपि बड़ा भयंकर तथा निष्प्राण करने वाला था, परन्तु इससे अमेरिका का नाश नहीं हुआ। उलटा, उसने देश को अपनी एक नई शक्ति और महानता के प्रति सचेत कर दिया और उसे बड़े-बड़े तथा श्रेष्ठ कार्य करने की प्रेरणा दीं।

आधुनिक युग का प्रादुर्भाव हो गया था।

अध्याय ७

पुनर्निर्माण की ओर

अमेरिका के १८६५-७७ के कष्टमय समय में पुनर्निर्माण की जो 'खिचड़ी' पक रही थी उसमें दृष्टता भौतिकवाद तथा आदर्शवाद का विलक्षण सम्मिश्रण था।

युद्ध के अन्त में दक्षिण के एन्ड्रयू जॉनसन के अनपेक्षित प्रेसिडेण्ट बन जाने से विश्वास किया जा रहा था कि बड़े विस्फोटक परिणाम निकलेंगे। टेनेसी के इस व्यक्ति को जो संघ के प्रति निष्ठावान रहा, न तो उत्तर पसन्द करता था और न वह दक्षिण में ही लोकप्रिय था। उसने अपने ही प्रयत्नों से शिक्षा पाई थी; वह दक्षिण के 'श्वेत जाति के गरीब' वर्ग से सम्बन्ध रखता था। वह दयानतदार और सरल प्रकृति का मनुष्य था; उसमें वे गुण नहीं थे जिनसे वह सफल नेता बन सकता।

जॉनसन के शासनकाल में दो घटनाएँ ऐसी भी हुई जिनके कारण उसपर कोई आक्षेप नहीं हो सकता। पहली तो यह कि उसके विदेश-मंत्री सेवार्ड ने रूस के ज़ार को ७० लाख डालर से कुछ अधिक रकम देकर एलास्का का प्रदेश खरीद लिया; इस सौदे पर २०वीं शताब्दी के अमेरिका वासी उसके प्रति कृतज्ञ हो सकते हैं। दूसरी यह है कि सरकार ने मनरो सिद्धान्त का कठोर प्रति पालन करते हुए फ्रान्सीसियों को आदेश दिया कि वे मैक्सिको से जहाँ वे सम्राट मैक्सिमिल्यान के अधीन अपनी कठपुतली सरकार स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे थे हट जायँ।

परन्तु जब जॉनसन ने पुनर्निर्माण के लिए लिन्कन की योजना को पूरा करने की चेष्टा की तो कांग्रेस उसके विरुद्ध क्रोध से भड़क उठी। दक्षिणी राज्यों की नई सरकारों द्वारा वाशिंगटन भेजे गये कुछ प्रतिनिधियों को कांग्रेस में आने

नहीं दिया गया, क्योंकि वे परिसंघ में उच्च अधिकारी रह चुके थे और इसलिए 'देशद्रोही' थे। इसके साथ ही उन नयी सरकारों ने ऐसे कानून भी बनाये थे जिनके द्वारा नीग्रो लोगों की आज़ादी को सीमित कर दिया गया था और सेवा-प्रणाली की व्यवस्था कर दी थी, जिसके आधीन वे फिर दास सदृश ही बन गये थे। जॉनसन की इच्छा के विरुद्ध कांग्रेस ने पन्द्रह सदस्यों की एक समिति बनाई जो दक्षिण में इन परिस्थितियों का निरूपण करके 'उचित' विधि पर अपना निर्णय दे जिसके द्वारा पृथक्-पृथक् राज्यों से निपटा जाए।

दिसम्बर १८६५ तक संविधान का तेरहवाँ संशोधन स्वीकृत हो चुका था जिसके अनुसार सारे संयुक्तराज्य और उसके आधीन प्रदेशों में दास-प्रथा समाप्त हो गई थी। इसका समर्थन हो चुका था तथा अन्तिम स्वीकृति के समय दक्षिण के कई राज्यों की ओर से अनुमोदन प्राप्त हो चुका था। औपचारिक रूप से तो नीग्रो स्वतन्त्र थे, परन्तु उन्हें नागरिक तथा मत देने के अधिकार नहीं मिले थे।

यह अधिकार संविधान के चौदहवें तथा पन्द्रहवें संशोधन में लिख दिये गये। इनके द्वारा भूतपूर्व दासों को पूर्ण रूप से समान अधिकार प्राप्त हो गये; परन्तु इसके साथ ही उन बहुत-से परिसंघीय नेताओं से मतदान का अधिकार छीन लिया गया जो 'विद्रोह या बग़ावत' से सम्बन्ध रखते थे। जब चौदहवां संशोधन अनुमोदन के लिए दक्षिणी राज्यों को भेजा गया तो टेनेसी के अतिरिक्त बाकी सबने उसे अस्वीकृत कर दिया। इसे मनवाने के लिए १८६७ में काँग्रेस ने रिकन्स्ट्रक्शन एक्ट पास कर दिया। टेनेसी को छोड़ बाकी सभी दक्षिणी राज्यों को पाँच सैनिक विभागों में बांट दिया गया; प्रत्येक पर केन्द्रीय सरकार की ओर से एक मेजर-जनरल लगा दिया गया और शान्ति रखने के लिए पर्याप्त सेना भी रख दी गई। इन सभी-राज्यों में नीग्रो और श्वेत जाति के लोगों के सहयोग से नई सरकार बनाने के लिए कहा गया और यह भी कहा गया कि जब राज्य चौदहवें संशोधन की स्वीकृति दे दें तब उन्हें संघ में फिर से मिला लिया जाय।

इन परिस्थितियों में जो सरकारें बनीं वे बिल्कुल समयोचित न थीं। इनमें प्रायः पुराने खेतिहर और व्यवसायिक वर्ग सम्मिलित नहीं थे; राज्यों की विधान-सभाओं में नीग्रो भी थे जो पढ़-लिख न सकते थे; और जो कृषक वन्य प्रदेशों से आये थे वे भी उन्हीं की भाँति अनपढ़ थे। यद्यपि उन्होंने अपनी समस्याओं के समाधान के लिए भरसक प्रयत्न किया, परन्तु वे अकस्मात् सत्ता की इस प्राप्ति पर बहुधा सूझ-बूझ खो बैठते। उन्हे वित्तीय मामलों का ज्ञान था ही नहीं, अतः लोगों की सुविधाओं, वेतनों तथा अपने हर प्रकार के व्यक्तिगत सुखों के लिए सदस्यों ने भारी खर्च मंजूर किये।

सरकारी धन के इस भाँति व्यर्थ उपयोग के कारण देश भर के कूट-नीतिज्ञ तथा स्वार्थपरायण व्यक्तियों को अनपढ़ तथा अनाड़ी सदस्यों की 'सहायता' कर धन कमाने तथा अपने लाभ उठाने का स्वर्ण अवसर मिल गया उत्तर से आने वाले ऐसे लोग 'कार्पेट बैग्गर' कहलाये; क्योंकि यह कहा जाता है कि उन्होंने अपना सारा सामान दरी के बने सस्ते सन्दूकचों में डाला और वहाँ दौड़ आये। इसी प्रकार के उद्देश्य से दक्षिण के जो स्वार्थी ऐसा करने लगे, वे 'स्कालावेग' कहलाये।

दक्षिण में नीग्रो लोगों की स्वाधीनता के आन्दोलन से सम्बन्ध रखने वाले सभी लम्पट या स्वार्थी नहीं थे। स्कूलों के अध्यापकों ने मुक्त हुए दासों को शिक्षित करने के लिए अपनी सेवाएं भेंट कीं और उन्हें बताया कि अमेरिका के नागरिकों की हैसियत में उनके उत्तरदायित्व क्या हैं। इस उद्देश्य से कॉंग्रेस-द्वारा स्थापित (स्वतंत्र जनसंघ) 'फ्रीडमेनस् ब्योरो' ने नीग्रो लोगों के लिए मकान बनाने, उन्हें काम-काज दिलाने तथा स्वावलम्बी बनाने में बड़ा काम लिया।

१८०७ तक दक्षिण के सभी राज्य संघ में फिर से आ मिले ; परन्तु वहाँ पर अभी तक सेनाएं बैठी थी और तनाव बहुत था। तब तक दक्षिण ने नीग्रो जाति के राजनीतिक प्रभाव का प्रतिकार करने की एक विधि ढूंढ़ निकाली थी ; जिससे नीग्रो चुनाव में भाग न लेते। दक्षिण में एक आतंक-वादी संस्था बनी जिसे 'कू-क्लक्स-क्लान' कहा जाता। इसके द्वारा "श्वेतजाति की श्रेष्ठता" बनाये रखने के लिए इस भाँति यत्न होता कि भूतपूर्व दासों को

इतना पीटा या जिन्दा जलाया जाता कि वे सार्वजनिक मामलों में भाग लेने का साहस ही न कर पाते। ऐसा ही व्यवहार कार्पेटबैगर्स और स्कालवेगस् से होता जिन्होंने स्थिति को अधिक बिगाड़ दिया था। इसके उपरान्त उत्तर की कठोर नीतियों के विरुद्ध रोष प्रकट करने के लिए दक्षिण से कई पीढ़ियों तक डेमोक्रेटिक उम्मीदवारों का समर्थन होता रहा।

दूसरी ओर काँग्रेस में 'बुनियादी' रिपब्लिकन सदस्य दक्षिण में अपने कार्यक्रम के सम्बन्ध में प्रेसिडेण्ट जॉनसन के दख़ल देने पर इतने क्रुद्ध हुए कि उन्होंने उस पर दोषारोपण किया। इससे पहले या फिर इसके बाद किसी भी प्रेसिडेण्ट को यह कठिन परीक्षा नहीं देनी पड़ी कि भीषण 'अपराध और भ्रष्टाचार' के दोषों का उसे उत्तर देना पड़े। प्रेसिडेण्ट को भेद्य हैसियत में लाने के लिए काँग्रेस ने उससे यह अधिकार छीन लिया जिससे वह स्वेच्छा से मन्त्रियों को हटा सकता था; क्योंकि उन्हें ज्ञात था कि वह अपने विरोधी युद्धमन्त्री स्टेन्टन को हटाना चाहता है। पर फिर भी जॉनसन ने स्टेन्टन को पदच्युत कर दिया और उस पर सेनेट में मुकदमा चलाया इसमें मुख्य न्यायाधीश चेज़ था। जब प्रेसिडेण्ट के विरुद्ध दोषारोपण का प्रस्ताव पेश हुआ तो सेनेट में दो-तिहाई वोटों से एक कम प्राप्त हो सकने के कारण वह स्वीकृत होने से रह गया। और जिस व्यक्ति ने पुनर्निर्माण के मध्यम मार्ग को अपना कर 'तथा लिंकन के दर्शाए मार्ग पर चलने की चेष्टा की थी, उसे घृणित तथा निन्दित अवस्था में अपना शासन-काल समाप्त कर लेने दिया गया।

नीग्रो जाति को नागरिक अधिकार दिलाने की रिपब्लिकन नीति के दो मुख्य कारण थे। प्रथम यह कि बहुत-से सहृदय तथा सत्यनिष्ट लोग लोकतन्त्रीय आदर्शों में विश्वास रखते थे। उन्हें दास-प्रथा व जाति-विषमता के प्रति घृणा थी, और ये दोष एक ऐसे राष्ट्र में विद्यमान थे, जो प्रत्येक के लिए स्वाधीनता प्राप्ति के लिए यत्नशील था। इसलिए उन्होंने भूतपूर्व दासों को उनके नागिरक अधिकार देने की ठान ली थी, चाहे ऐसा करने में उन्हें थोड़े समय के लिए कष्ट तथा असुविधा ही क्यों न हो। दूसरा आधार राजनीतिक व आर्थिक था; नीग्रो जाति को मताधिकार देने से रिपब्लिकन पार्टी को

अधिक वोट मिलते और इस भाँति उत्तर और दक्षिण दोनों में डेमोक्रेटिक दल पर उनका दबदबा रहता। अब रिपब्लिकन पार्टी के समर्थक न केवल दासता-विरोधी और सुधारक ही थे, बल्कि इसमें उत्तर के औद्योगिक लोग भी थे। युद्ध में सफलता प्राप्त करने के लिए इस दल ने औद्योगिकों से गठजोड़ कर लिया था और वे नहीं चाहते थे कि कृषि प्रधान डेमोक्रेट्स शासन चलायें जो कि तट-कर घटाने की इच्छा रखते थे।

अगले सोलह वर्षों में शासन की बागडोर रिपब्लिकन पार्टी के हाथ रही। उत्तर का विख्यात् जनरल ग्रांट दो बार रिपब्लिकन पार्टी की ओर से प्रेसिडेन्ट बना और उसके उपरान्त रदरफोर्ड बी० हेज़ तथा जेम्स ए० गार्फ़ील्ड प्रेसिडेण्ट बने। जब गार्फील्ड मार डाला गया तो चैस्टर ए० आर्थर ने यह पद सम्भाला।

इस समय उद्योग का बड़ा विस्तार हो रहा था; विशेषकर तेल, इस्पात और रेलों का काम बहुत बढ़ा। व्यापार के लिए कार्पोरेशनों में भंयकर स्पर्धा चली थी; जो सफल हो जाती वह दूसरों को समाप्त कर बड़े-बड़े एकाधिकार वाले धन्धों में बदल जाती जो ट्रस्ट कहलाते थे। कार्पोरेशनें अपनी पूंजी लोगों को स्टाक या हिस्से बेच कर प्राप्त करतीं और इस प्रकार देश के लोगों को लाभ का नाम-मात्र का हिस्सा देतीं; परन्तु वास्तविक नियन्त्रण डायरेक्टरों के हाथ ही रहता। कुछ डायरेक्टर तो दयानतदारी से अपना काम करते और लोगों की भलाई का ख्याल रखते, परन्तु कुछ ऐसे भी थे जिनके जिए निजी स्वार्थ ही मुख्य थे।

शीघ्र ही स्पष्ट हो गया कि जनरल ग्रांट की योग्यता सैनिक कार्यों में ही थी। उसे व्यापार या राजनीति का कुछ पता न था और प्रेसिडेण्ट का हैसियत में उसकी स्थिति भ्रान्त तथा दयनीय थी। वह स्वयं दियानतदार था; परन्तु वह अनजाने में ऐसे स्वार्थी और भ्रष्ट कार्पेहवोगार्क तथा बेईमान पूंजीपतियों

के हाथ की कठपुतली बनकर रह गया, जो सरकार के बड़े-बड़े अधिकारियों और काँग्रेस के सदस्यों को रिश्वत देकर अनुचित लाभ उठाते थे।

पश्चिम की रेल-सम्बन्धी कम्पनियों ने विशेषकर खूब हाथ रंगा। काँग्रेस ने उनको सहायता दी और बहुत-सी भूमि भी दी एक बार तो रेल-मार्ग से लगी चार करोड़ सत्तर लाख एकड़ भूमि उन्हें दी गयी। परन्तु रेलवे वालों ने यह भूमि लोगों को बसने के लिए पट्टे पर दे दी या फिर बेच दी गयी। यहाँ पर नगर बसाये गये तथा मकान बना कर लोगों को देकर उनसे कीमते प्राप्त की गयी और ऐसा करके उन्होंने रेल-मार्ग द्वारा अधिक यात्री और माल एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाने के काम का खूब बढ़ावा दिया। इससे भी बढ़ कर जेम्स जे हिल और इ-एच-हैरिमन सरीखे रेल-उद्योग के अधिपतियों ने अपने ही खेत खानें तथा उद्योग इस ज़मीन पर शुरू किये और 'साम्राज्य निर्माता' बन गये। उनका प्रभाव और अधिकार पश्चिम राज्यों के गवर्नरों से भी कहीं अधिक था।

महाद्वीप के आर-पार जाने वाली पहली रेल १८६९ में बनायी गयी जब उटाह में ओगडेन के स्थान पर ओमाहा से पूर्व में सेक्रामैण्टों तक रेल-मार्ग बना कर सेंट्रल पैसेफ़िक रेल-रोड के साथ मिला दिया गया। इस से अब यात्री और माल न्यूयार्क से सैनफ्रान्सिसको तक ले जाया जा सकता था। महाद्वीप के आरपार इस रेल का बनना एक महान् सफलता थी, क्योंकि मरुस्थलों, तथा पहाड़ों पर पटड़ी बिछानी पड़ी और कहीं-कहीं इण्डियन-प्रदेशों में भी, जहाँ श्वेत लोगों का घोर विरोध होता, और जहाँ से सैकड़ों मील तक कोई नगर ही न था।

जितना बड़ा यह काम था उतनी ही बड़ी बदनामी का कारण भी बना। इसे बनानेवालों ने एक कम्पनी बना ली और उसका नाम क्रेडिट मोबिलियर रखा। उन्होंने स्वयं अपने लिए लाभ का बहुत बड़ा हिस्सा रख लिया और हिस्सेदारों को उनका उचित भाग नहीं दिया। काँग्रेस की ओर से छान-बीन के डर से उन्होंने प्रमुख काँग्रेस-सदस्यों की, जिनमें संयुक्तराज्य का वाइस-

प्रेसिडेण्ट शूचलेर कोलफेक्स भी था, कम्पनी के लाभ का एक भाग स्वीकार कर लेने पर राजी कर लिया था। जब इस घूसखोरी का समाचार फैला तो बहुत-से लोगों की राजनीतिक ख्याति मिट्टी में मिल गयी और दयानतदार लोग सरकार में भ्रष्टाचार को इतने प्रकट रूप में देखकर स्तब्ध रह गये।

गृहयुद्ध के बाद के समय में कुछ औद्योगिकों में योग्यता और क्रूरता भी थी, परन्तु वस्तुतः वे बददियानत नहीं थे। एँड्रयू कार्नेगी 'इस्पात का राजा' बन गया। स्कॉटलैण्ड में उत्पन्न हुए इस व्यक्ति ने सबसे पहले बड़े पैमाने पर इस्पात-उत्पादन का महत्व समझा था। बड़ी निपुणता से उसने पूंजी एकत्र की और पिट्सवर्ग में कारखाना लगा दिया। यह स्थान बड़ा सुविधा-जनक था क्योंकि यह कोयले के मैदानों के बीच स्थित था और लोहे तथा इस्पात की तैयारी के लिए कोयला अत्यन्त आवश्यक है। कच्चा लोहा लेक सुपीरियर के पश्चिमी छोर पर मेजाबी के प्रदेशों से कार्नेगी के अपने जहाजों के बेड़े में लाया जाता। इस्पात तैयार होकर ऐसी रेलगाड़ियों द्वारा उपयोग-कर्ताओं के पास भेजा जाता जो या तो थीं ही कार्नेगी की या फिर उसके प्रबन्ध में थीं। वहाँ से इस्पात इतनी अधिक मात्रा में भेजा जाने लगा कि प्रतिद्वन्दी हिम्मत हार गये क्योंकि कम दामों में उसका मुकाबला न कर सकते थे। १९०१ में संयुक्त-राज्य की इस्पात-कार्पोरेशन का एक मुख्य भाग बनाने के लिए कार्नेगी के उद्योग बेच दिये गये। इस नये उद्योग में एक अरब पचास करोड़ डालर के लगभग की पूंजी लगायी गयी। एक सौ वर्ष पहले समूचे राष्ट्र का भी इतना मूल्य न था।

एक और साहसी युवक क्लीवलैण्ड ओहियो के जॉन डी. राकफेल्लर ने तेल-उद्योग की सम्भावना से लाभ उठाया। १८५६ से पेनसिलवेनिया में तेल में निका-लने का काम शुरू कर हो गया था। अपने परिश्रम और योग्यता से राकफैल्लर प्रतिद्वन्दियों से बहुत आगे बढ़ गया और तब दूसरों की एक भारी आघात उसने इस प्रकार पहुँचाया कि वह रेलों के प्रबन्धकों के पास गया और उनसे मांग की कि उसकी स्टैण्डर्ड आयल कम्पनी से तेल ढोने का दूसरों की अपेक्षा कम

किराया लिया जाय; नहीं तो वह उनको काम न दिया करेगा। रेल अधिकारी मान गये और उसे रियायत देना या फिर कुछ दाम लौटा देना स्वीकार कर लिया। प्रतिद्वन्दियों का विरोध व्यर्थ हुआ। तेल के उस तैंतीस वर्षीय मुख्य व्यापारी ने यातायात की सुविधाओं को 'अपने वश में' करके अपना एकाधिकार स्थापित कर दिया और हताश प्रतिद्वन्दियों को विवश होकर अपना तेल भी उसी के पास बेचना पड़ा और इस प्रकार उसका 'तेल-साम्राज्य' अत्यन्त विस्तृत हुआ।

अन्य उद्योगों में दूसरे लोगों ने भी लगभग ऐसे ही उपाय ढंग अपनाये। प्रत्येक स्थान पर यही प्रवृत्ति थी कि धन्धे को बड़े से बड़ा बना दिया जाय। रेल में ठण्डे डब्बों के आविष्कार से माँस बन्द करके भेजने का जो उद्योग बढ़ा उसपर मुख्य अधिकार गस्टावस स्विफ्ट तथा पी. डी. आर्मर का था। इसी प्रकार तम्बाकू का ट्रस्ट था। चीनी, ह्विस्की, रबड़ और ताम्बे के उद्योगों के ट्रस्ट भी थे। न्यूयार्क में वालस्ट्रीट की एक फर्म जे. पी मॉरगन धन का लेनदेन करती। वही ऐसे काम धन्धों के लिए ऋण तथा पूंजी देती थी।

एक ओर व्यापारी धन कमा रहे थे तो दूसरी ओर आविकार कर्त्ता मण्डियों के लिए नयी-नयी चीजें बना रहे थे और प्राय: इस तरह खुद भी धन प्राप्त कर रहे थे। इसी शताब्दी के आरम्भ में भाप से चलनेवाले जहाज, इंजन, तार तथा कृषि में उपज बढ़ानेवाले रीपर का अविष्कार हो चुका था। १८७६ म स्कॉटलैण्ड से आकर अमेरिका में बसे हुए एक व्यक्ति एलक्जैण्डर ग्राह्म वेल ने टेलीफोन बना लिया और १८८२ में टामस ए० एडिसन ने बिजली का बल्ब बनाया और विद्युत-शक्ति पैदा करनेवाली मशीन भी बना ली। नगरों और घरों में प्रकाश करने तथा मशीनें चलाने के लिए बिजली से, तथा टेली-फोन द्वारा घरों के मिल जाने से बड़े-बड़े उद्योग स्थापित हो गये और इनसे राष्ट्र के जीवन-स्तर में बड़ी वृद्धि हुई।

अमेरिका में लोक-जीवन पर इस औद्योगिक क्रान्ति का बड़ा प्रभाव पड़ा। उद्योग-निरत व्यक्ति लोभी तो होते ही हैं, परन्तु वे दूरदर्शी और निष्णात् भी

थे और उन्होंने माल तैयार कर मण्डियाँ भर दीं। अब ग्रामीण कुटुम्ब अपने लिए कपड़े तथा अन्य सामान स्वयं नहीं तैयार करते थे जैसा कि आत्म-निर्माण के पहले समय में हुआ करता था, क्योंकि अब हर प्रकार की वस्तु रेल द्वारा एकाध दिन में प्रत्येक स्थान पर पहुँच सकती थीं। बड़े परिणाम में उत्पादन करने का युग शुरू हो गया था।

उद्योग में इस भाँति की वृद्धि होने पर और उसमें श्रमिकों की मांग को पूरा करने के लिए औद्योगिक श्रम-शक्ति को विकसित होते देखकर ऐसा प्रतीत होता था कि निरन्तर समृद्धि तथा उन्नति का समय आ गया है। परन्तु जैसा कि जैक्सन के समय में भी हुआ था देश में व्यापार के विस्तार की प्रतिस्पर्धा में मण्डियों में मांग से अधिक माल आ गया। रेल उद्योग में लगे हुए लोगों ने अमेरिकी तथा विदेशी पूंजपतियों से ऋण लेकर इस धन्धे को अपने ही एकाधिकार में रखने की चेष्टा की और अपनी विशद् योजनाओं के लिए उन्हें अधिक पूंजी की आवश्यकता थी। जब ऋणदाता सचेत हुए और उन्होंने अधिक ऋण देने से इनकार कर दिया तो देश का सारा आर्थिक ढांचा १८७३ की अस्तव्यस्तता में लुढ़क गया। पाँच वर्ष के लिए सभी जगह मन्दी आ गई, बेकारी बहुत बढ़ गई। १८८० के उपरान्त देश फिर सम्पन्न हुआ, परन्तु १८९० के बाद के कुछ वर्षों में पुनः महान् आर्थिक संकट उपस्थित हुआ।

× × × ×

१८७३ का आर्थिक संकट उसी समय शुरू हुआ जब प्रेसिडेण्ट ग्रांट ने दूसरी बार पद सम्भाला। वह पहले भ्रष्टाचार को रोकने में असमर्थ रहा था, इस कारण उसकी अपनी पार्टी के बहुत से सदस्य उससे पृथक् हो गये। उन्होंने उदार रिपब्लिकन नाम से नया दल बनाने की चेष्टा की। डेमोक्रेट दल के बहुत से अन्य लोगों के साथ उन्होंने न्यूयार्क के समाचार-पत्र 'ट्रिब्यून' के सम्पादक होरेस ग्रीले को प्रेसिडेण्ट के पद के लिए खड़ा किया। परन्तु सुधार के एक विवाद-मंच पर ग्रीले कोई प्रभावशाली उम्मीदवार सिद्ध न हुआ और ग्रांट बड़ी सरलता से पुनः निर्वाचित हो गया।

भ्रष्टाचार के कारण अपयश फैलाने तथा आर्थिक दृष्टि से संकट उपस्थित हो जाने के कारण १८७६ के चुनाव में रिपब्लिकन दल के हाथ से राज्यसत्ता लगभग जाने ही लगी थी। लोगों की ओर से यह दबाव था कि निष्ठावान तथा सत्यपरायण उम्मीदवार चुना जाए, अत: रिपब्लिकन दल ने आहियो के गवर्नर-जनरज रदरफोर्ड बी० हेज का नाम प्रस्तावित किया। डेमोक्रेट दल ने भी इसके मुकाबैले में उतने ही महान् व्यक्तित्व का उम्मीदवार चुना और वह था न्यूयार्क का गवर्नर सैम्युल टिल्डन। न्यूयार्क में मशीनों के धन्धे में सुधार करके टिल्डन ने बड़ी ख्याति पायी थी और उसने वचन दिया था कि यदि उसे चुना गया तो वह राष्ट्र भर में 'स्वच्छता' ला देगा।

इस चुनाव की सनसनीदार यह बात हुई कि टिल्डन को अपने प्रतिद्वन्दी से २०,००० वोट अधिक मिले इस पर बड़ी गड़बड़ हुई तथा अप्रत्याशित परिणाम निकाला। निर्वाचक-मण्ड्ल में भी अधिक वोट मिले। परन्तु तीन दक्षिणी राज्यों, दक्षिणी कैरोलाइना, फ़्लोरिडा तथा लुइसियाना ने दुहरे वोट दिये थे, इसमें 'कार्पेटबेग' सरकारों के झगड़े का हाथ था। इन तीनों राज्यों के वोट हेज़ को मिले और उद्घाटन से केवल एक दिन पूर्व चुनाव उसके पक्ष में घोषित किया गया। इससे पहले कुछ समय तो ऐसा प्रतीत होता था कि ग्रांट की पदावधि समाप्त होने के बाद शायद कोई प्रेसिडेण्ड ही न आयेगा।

अमेरिका के इतिहास में सबसे स्वच्छ तथा न्यायोचितशासन-प्रबन्धों में हेज़ के शासनकाल की गणना होती है। परन्तु उस समय उसकी अधिक सराहना न हो सकी जब उसने दक्षिण से अन्तिम फैड्रल (संघीय) सेनाएँ भी हटा लीं तब अपने दल से ही उसकी बिगड़ गई, क्योंकि पार्टी का विचार था कि ऐसा करने से और अधिक राज्य डेमोक्रेट दल के हाथ चले आयेंगे। इसके अतिरिक्त उसने केन्द्रीय सिविल सेवाओं में सुधार करने का काम शुरू किया, जिनमें दल के भ्रष्ट और घूंस लेने वाले लोग भरे थे और जिन्हें चुनावों में मत दिलवाने पर ही पद प्राप्त हुए थे। गृह-विभाग को जो इण्डियन मामलों से निपटता था, ऐसे कपटी मुनाफाखोरों का एक दल चला रहा था जो बड़ी निर्लज्जलता से बेचारे इण्डियन लोगों को धोखा देकर उनकी भूमियाँ तथा सुविधाएँ छीन

लेते। जब हेज़ ने पूर्ण रूप से इस विभाग की काया ही पलट दी तब उस पर दल के प्रति निष्टावान न होने का दोष लगाया गया और उसे दूसरी बार प्रेसिडेण्ट बनने का अवसर न दिया गया।

ऐसा होने पर भी जी० ओ० पी० (ग्रेंड आल्ड पार्टी) जैसा कि रिपब्लिकन दल को कहते थे की ओर से—सुधार करने का आन्दोलन बढ़ता ही गया था। १८८० के सम्मेलन में इस दल के दो विभाग हो गये; प्रथम "स्टालवार्टस्" जो स्वार्थपरायणता तथा राजनीतिक संरक्षण की प्रथाएँ फिर से लाना चाहते थे और दूसरे "हाफब्रीडस्" जो सिविल सर्विस में सुधार करने के पक्ष में थे। आगामी चुनाव में हाफब्रीडस् के उम्मीदवार जनरल जेम्स ए० गार्फ़ील्ड ने डेमोक्रेट सदस्य जनरल विन्फील्ड हेनॉक को हरा दिया।

पद सम्लालने के कुछ समय उपरान्त किसी निराश पदान्वेषी ने गार्फ़ील्ड को मार डाला और वाईस-प्रेसिडेण्ट चैस्टर ए० आर्थर प्रेसिडेण्ट बना। आर्थर पहले 'स्टालवार्टस्' था; उसने शासन प्रबन्ध को बहुत अच्छा बनाया और सिविल सर्विस में योग्यता के आधार पर नियुक्ति करने की परिपाटी चलाई। हेज की भाँति इसको भी अपनी ही पार्टी के नेताओं ने 'विश्वासघात' के लिए निन्दित किया और दूसरी बार प्रेसिडेण्ट पद के लिए उसका नाम प्रस्तावित न हुआ।

१८८४ में रिपब्लिकन दल का प्रतिनिधि जेम्स जी० ब्लेन चुना गया। वह बड़ा शक्तिशाली तथा शानदार व्यक्ति था और रिपब्लिकन दल का अत्यन्त लोकप्रिय नेता था; परन्तु ग्रान्ट के शासनकाल में कुछ मामलों में उसका भी अपयश हुआ था। इस कारण उसके दल को उसे टिकट देते समय पहले झिझक हुई थी। ब्लेन के मुकाबले में डेमोक्रेट दल ने न्यूयार्क के गवर्नर ग्रोवर क्लीवलैण्ड को खड़ा किया; सैम्युल टिल्डन की भांति वह भी सत्यनिष्ठ और निडर अधिकारी के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुका था।

पुनः रिपब्लिकन दल में सुधार के पक्षपाती वर्ग ने दल के प्रतिनिधि का विरोध किया और डेमोक्रेट दल से गंठजोड़ कर लिया। क्लीवलैण्ड का समर्थन करते हुए सुधारवादियों ने उसे इतने वोट दे दिये जिससे कि गृह-युद्ध के उपरान्त पहली बार डेमोक्रेट उम्मोदवार प्रेसिडेण्ट चुन लिया गया। उसकी यह

विजय बहुत थोड़े वोटों से हुई और इसका एक कारण यह भी था कि ब्लेन के पक्षपाती एक पादरी ने एक अशिष्ट बात कह दी थी उसने डैमोक्रेट दल के सम्बन्ध में कहा था कि यह "रम (शराब) रोमानेज़्म और रिबेलयिनों (विद्रोहियों)" का दल है। इस चापलूसी पर कैथोलिक वोटर बड़े क्रुद्ध हुए और जब ब्लेन ने इसका खण्डन न किया तो वे उसके विरुद्ध हो गये।

× × × ×

रिपब्लिकन शासनकाल में और आगामी कुछ वर्षों में भी "बड़े-बड़े काम धन्धे" बढ़ते ही गये, जिससे राष्ट्र में भौतिक समृद्धि तो आती गई परन्तु बहुत अधिक लाभ व्यापारियों या उद्योगपतियों को ही रहता। इससे सभी वर्गों तथा स्थानों के सयाने व्यापारियों को धनाढ्य बनने का अवसर मिलता; जिसका परिणाम यह होता कि देश कभी तो सम्पन्नता के शिखर पर पहुँच जाता तो कभी गहरी मन्दीं के गढ़े में गिर पड़ता। १८७० के उपरान्त तथा १८८० के बाद कुछ सालों में 'बड़े काम-धन्धों' में जो वृद्धि हुई उसे निसन्देह कोई भी रोक न सकता था संयुक्तराज्य सरकार रोकना तो क्या, स्वयं इसे बढ़ावा देती रही। परन्तु इसके कारण जो परिवर्तन हुए उनका लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ना ही था और इसी प्रभाव के अनुरूप ही लोगों की प्रतिक्रिया भी रही।

कुछ वर्षों से अमेरिका के श्रमिक अपनी सुरक्षा के लिए संस्थाएं तथा संघ बनाते आ रहे थे ताकि वे उद्योगपतियों से अच्छे वेतन तथा काम की अच्छी सुविधाएं प्राप्त कर सकें। प्रायः मज़दूरों को अपनी आमदनी के लिए बहुत देर तक कठोर परिश्रम करना पड़ता, उन्हें अत्यन्त भीड़ में कारखानों तथा खानों का काम करना पड़ता; जहाँ पर स्वच्छ हवा के आने-जाने का प्रबन्ध भी न होता। इस दशा में अच्छी कार्य-परिस्थितियों की मांग स्वाभाविक थी।

राष्ट्रीय महत्ता प्राप्त करने वाली पहली श्रमिक-संस्था 'नाइट्स आफ् लेबर' (श्रमशूर) थी। इसकी स्थापना १८६९ में हुई और इसमें प्रत्येक व्यापार के श्रमिक आ सकते थे। यह मुख्यतया 'औद्योगिक' ढंग की ही थी। इसकी मांग थी कि आठ घंटे से अधिक काम न लिया जाय, बच्चों से मज़दूरों का काम न लिया जाय और जनसाधारण के उपयोग में आने वाली बिजली तथा पानी

इत्यादि का प्रबन्ध सरकार के नियन्त्रण में हो। १८८० के उपरान्त इस संस्था की सदस्यता अधिकतम थी, यह बढ़कर ७००,००० श्रमिकों तक पहुंच गयी थी, परन्तु 'नाइट्स लेबर' की हड़तालें सफल न रही, उनकी माँगें बहुत से मजदूरों को भी बड़ी मालूम होती थीं और इसकी प्रबन्धक कमज़ोरियाँ भी अधिक थीं। इन कारणों से अन्त में यह मज़दूर-संस्था समाप्त ही हो गयी।

एक प्रवासी सिगार बनाने वाले सैम्युल गोम्पर्स को श्रमिकदल-संगठन में अधिक सफलता मिली। उस समय विभिन्न शिल्प यूनियनें एक संघ बना रही थीं; उनको संगठित करके गोम्पर्स ने मज़दूरों के लिए विचार प्रकट करने का एक मंच उपस्थित कर दिया, जिस के द्वारा आज भी मज़दूर अपनी इच्छाएँ प्रकट करते हैं—उस समय अमेरिकन फैड्रेशन आफ लेबर (श्रमिक संघ) स्थापित हुई। इसके उद्देश्य नाइटस् आफ लेबर के लक्ष्यों से अधिक क्रियात्मक तथा सुदृढ़ थे। इस संस्था को श्रमिक-संघों के सिद्धान्त में विश्वास था—इसकी ओर से उग्र सुझाव न आते। यह संस्था पूँजीवाद व्यवस्था के पक्ष में थी और केवल अच्छे वेतन, काम के समय तथा मालिकों से इकट्ठे मिलकर सौदाबाज़ी करने के पक्ष में थी।

अमेरिका में "बड़े-बड़े कामधन्धों" का विरोध करने का साहस करने वालों में न केवल श्रमिक ही थे, बल्कि पश्चिम के सीमावर्ती लोगों ने भी उन व्यापारिक कुरीतियों तथा बुराइयों का बड़ा विरोध किया जिनसे उन्हें हानि पहुँचाती थी।

१८६२ के होमस्टैड एक्ट द्वारा सरकार ने पश्चिम के प्रदेशों में बस्तियां बसाने के काम को बढ़ावा देने के लिए यह सुविधा कर दी थी कि जो भी अग्रणी वहां जा कर पाँच वर्ष तक निरन्तर कृषि करेगा, उसे १६० एकड़ भूमि पर बिना मूल्य स्थायी अधिकार प्राप्त हो जाएगा। यह बड़ी सुविधा थी। परन्तु उसी समय तक जब कि वहाँ रेल तथा ट्रस्ट नहीं आये। जब पश्चिम के किसानों तथा व्यापारियों ने अपना माल रेलों द्वारा बाहर भेजने की चेष्टा की तब उन्होंने उन बड़े-बड़े उत्पादकों के मुकाबले में अपने को नगण्य पाया जिन्होंने रेल-अधिकारियों को 'विवश' कर कम भाडे ठहरा लिये थे। पश्चिम

में जाकर बसने वालों की कठिनाइयाँ न केवल हिंसक इण्डियन ही पैदा कर रहे थे। बल्कि उनके अपने भाई भी जो उन्हीं के सदृश ऊँची टोपियाँ और लम्बे कोट पहन कर आये थे।

१८७० में ग्रेंज नाम की एक कृषक-संस्था का निर्माण हुआ और उसने भाड़े की दर में बहुत अधिक कभी कर देने के लिए रेलों का घोर विरोध किया और यह मांग की कि भाड़े में कटौती तथा उनकी दरों में भेदभाव करने की परिपाटी बंद हो। ग्रेंज के सदस्यों की संख्या २० लाख के लगभग हो गयी थी और उन्होंने राज्यों की विधान-सभाओं द्वारा इस भेदभाव के विरुद्ध कार्यवाही भी करवायी और कई कानून भी बनवाये। परन्तु वास्तव में इसका कोई लाभ न हुआ, क्योंकि वे स्थानीय स्तर पर ही अपनी सीमाओं के अन्दर व्यापार का नियन्त्रण कर सकते थे। अन्तर्राज्यीय वणिज-व्यापार पर नियन्त्रण का अधिकार केन्द्रीय सरकार को था और उसने १८८७ तक तो इस ओर कोई ध्यान न दिया। परन्तु १८८७ में ही केन्द्रीय सरकार ने अन्तर्राज्य व्यापार कानून (इन्टस्टेट कामर्स ऐक्ट) पास करके रेल-उद्योग की कुछ बुराइयों को दूर कर दिया।

पश्चिम में वैमनस्य का एक कारण मुद्रा-स्फीति की ससस्या भी थी। पूर्व में बैंकों का ज़ोर था और वह ठोस-मुद्रा के पक्ष में थे, जिसका आधार सोना हो, ताकि देश की साख अच्छी बनी रहे। पूर्व में बैंक अधिकारी चाहते थे कि गृहयुद्ध के समय में 'ग्रीनबैंक' मुद्रा (नोटस्) के अधिक चलन के कारण जो मुद्रा-बाहुल्य हो गया था उसे रोका जाय और उसको वापस लेकर नष्ट कर दिया जाय।

पश्चिम के लोग पूर्व वालों के ऋणी थे। मुद्रा-स्फीति के समय में उन्होंने अपने खेत तथा व्यापार शरू करने के लिए उधार लिया था। यदि वे स्फीत-मुद्रा में जो कि बहुत मिलती थी, अपने ऋण चुका सकते तो उनके लिए ऋण-मुक्त होना कोई बड़ी बात नहीं थी। परन्तु इस मुद्रा की क्रयशक्ति बहुत कम थी और यदि उन्हें अधिक मूल्यवान स्वर्णाधारित मुद्रा में ऋण चुकाने पड़े तो उनकी कठिनाई बहुत बढ़ जाती थी।

मुद्रा को 'सस्ता' रखने के लिए पश्चिम में एक सुझाव रखा। पहले समय में संयुक्तराज्य की मुद्रा का आधार सोना भी था और चाँदी भी। सोलह औंस चादी एक औंस सोने के बराबर समझी जाती थी। परन्तु दोनों बहुमूल्य धातुओं में कोई अनुपात बनाये रखना कठिन था क्योंकि उनके भाव बदलते रहते; इसलिए उनका आपस में बदलने रहना भी मुश्किल होता। जब भी किसी एक धातु का मूल्य बढ़ जाता, शीघ्र ही उसका चलन रुक जाता और वह व्यापारियों तथा सराफ़ों को ऊँचे दामों बेच दी जाती और उतना मूल्य सरकार न देती थी। १८७३ में ऐसा ही हुआ जबकि चाँदी इतनी दुर्लभ और व्यापार की दृष्टि से इतनी मूल्यवान हो गयी कि यह लुप्त ही हो गयी। सरकारी कोष की ओर से चांदी का सिका बनाना बन्द कर दिया गया और सोने का अधिक प्रयोग किया जाने लगा।

इसके शीघ्र ही बाद अकस्मात पश्चिम में चांदी की खानें पाई गयी और सोने के मुकाबले में चांदी का मूल्य बहुत ही घट गया। खानों के मालिकों ने अब यह कहना शुरू किया कि चाँदी की मुद्रा का फिर से पहला अनुपात शुरू किया जाए अर्थात् १६ और एक अनुपात । ऐसा करने से उन्हें आशा थी कि वे सस्ती चांदी को मँहगे सोने में बदल कर सम्पन्न हो सकेंगे। इस माँग में पश्चिम के किसान भी साथ थे; वे चाहते थे कि चाँदी का चलन हो और उसे सस्ती तथा स्फीत-मुद्रा का आधार बना दिया जाय और ऐसा करने से वे 'ठीक तौर से अपने ऋण चुका सकेंगे।

हेज़ के शासन-काल में काँग्रेस ने 'चाँदी के पक्षपातियों' की माँग स्वीकार कर ली और वर्ष में बीस से लेकर चालीस लाख डालर के मूल्य की चाँदी मोल लेने का निर्णय किया। फिर १८९० में 'शेरमन सिलवर परचेज़ एकट' द्वारा चाँदी का अधिक सिक्का बनाने की पश्चिम की मांग मान ली गई। परन्तु जैसा कि पहले ही कहा गया था, लोगों ने सोना दबा लिया और उसका चलन ही न रहा। तब कांग्रेस को सोने के पूर्ण लुप्त हो जाने को रोकने के लिए 'शरमन एकट' को मन्सूख करना पड़ा।

१८९० तक चाँदी का प्रश्न अमेरिका में लोगों के लिए सबसे बड़ी

समस्या बन गया, जिससे पूर्व और पश्चिम एक दूसरे से उसी भाँति विभिन्न पक्षों में बँट गये, जैसे तीस वर्ष पहले दासता के प्रश्न पर उत्तर तथा दक्षिण में विवाद शुरू हुआ था। प्रादेशिक संघर्ष बन जाने के साथ-साथ यह समस्या कृषिवाद तथा उद्योगवाद, ऋणी तथा ऋणदाता, 'छोटे आदमी' और बड़े-बड़े व्यापारियों के बीच लड़ने-मरने का झगड़ा बन गयी। चाँदी के इस प्रश्न द्वारा वास्तव में उन करोड़ों लोगों ने बड़े पैमाने पर उद्योग चलाने के विरुद्ध आवाज़ उठाई थी जो ठीक या गलत यह समझते थे कि इन उद्योगों से उन्हें बड़ी हानि पहुँची है।

× × ×

डेमोक्रेटिक दल ने संयुक्तराज्य पर १८८४-८८ और फिर १८९२-९६ में शासन किया। दोनों बार ग्रोवर क्लीवलैण्ट प्रेसिडेण्ट रहा। क्लीवलैण्ड ही अमेरिका में आज तक एकमात्र ऐसा प्रेज़िडेण्ट रहा है जिसे एक बार प्रेसिडेण्ट रहने के उपरान्त विरोधी दल ने हरा दिया, परन्तु चार साल के बाद फिर उसे चुन लिया गया।

क्लीवलैण्ड बड़ा योग्य तथा सुदृढ़ शासक था; वह जो ठीक व समुचित समझता कर लेता और उसका उद्देश्य तुष्टिकरण न होता। उसने यह ठीक समझा कि दक्षिण के दो योग्य व्यक्तियों को अपने मन्त्रिमण्डल में लिया जाय और कुछ दक्षिणी राज्यों से छीने हुए परिसंघीय युद्धकाल के झण्डे उनको लौटा दिये जायँ; इसपर रिपब्लिकन सदस्यों की ओर से बड़ा विरोध हुआ। उसने एक सुयोग्य रिपब्लिकन को सिविल सर्विस में उच्च-पद पर नियुक्त किया जिससे डेमोक्रेटस बिगड़े। उसने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि गृह-युद्ध के सैनिकों में से पेन्शनें उनको ही दी जायँ जो अधिकारी हों और इस प्रकार राजनीतिक दृष्टि से भूतपूर्व सैनिकों की शक्तिशाली संस्था को अपना विरोधी बना लिया। उसने अपने दल के कार्यक्रम के एक भाग का विरोध करते हुए आज्ञा दी की चाँदी का क्रय बन्द कर दिया जाय।

अपनी प्रथम पद-अवधि में क्लीवलैण्ड के सामने सबसे बड़ी समस्या यह थी कि एक दम देश में समृद्धि की लहर आ जाने से सरकारी खज़ाने में जो बहुत-सा फालतू धन बच रहा, उसका क्या किया जाय। इसको व्यय करने

का ढंग यह था कि देश के ऋण का एक भाग चुका दिया जाय; परन्तु इस समय जिस मुद्रा का चलन था उसका मुख्याधार सरकारी तमुस्सक थे; इसलिए ऋण चुकाने का अर्थ यह था कि मुद्रा का विस्तार बन्द हो, और जब उस समय ऐसा करना ठीक न था। एक दूसरा तरीका यह था कि इस धन को देश की आन्तरिक उन्नति पर खर्च किया जाय परन्तु क्लीवलैण्ड अनुदार डेमोक्रेट होने के कारण इस पक्ष में न था। उसने यही निर्णय किया कि इसके प्रयोग का सर्वोत्तम ढंग यह है कि उन तट-करों को ही घटाकर सरकार की आय में कमी की जाय, जिन्हें औद्योगिक चाहते थे।

अपनी ओर से बहुत प्रयत्न करने पर भी क्लीवलैण्ड तट-करों में कमी न करवा सका और इसी प्रश्न पर उसे १८८८ के चुनाव में प्रेसिडेण्ट के पद से हाथ धोना पड़ा। वह कहता था कि इन तट-करों के कारण देश में तैयार हुई चीजें लोगों को महँगी मिलती हैं; इसके उत्तर में रिपब्लिकन कहते कि इन तट-करों के कारण लोगों के वेतन अच्छे हैं और अच्छे-अच्छे पद प्राप्त हैं क्योंकि इन करों द्वारा विदेशी प्रतिस्पर्धा से अमेरिका के उद्योग सुरक्षित हैं और वे पूरा-पूरा माल तैयार कर रहे हैं। जनसाधारण ने १८८८ के चुनाव में क्लीवलैण्ड को ही वोट दिये, परन्तु निर्वाचक-मण्डल में सभी महत्वपूर्ण मत रिपब्लिकन उम्मीदवार बेन्जामिन हैरिसन को मिले। वह भूतपूर्व प्रेसिडेण्ट विलियम हैनरी हैरिसन का पोता था।

राज्यसत्ता पुनः हाथ में आने पर रिपब्लिकन-सरकार ने तटकर और भी बढ़ा दिये तथा जो अधिक आय हुई उसे युद्ध की पेन्शनें देने, माल के महकमे और शक्तिशाली जल-सेना बनाने पर खर्च किये। परन्तु जब सोने की ज़रा कमी आई तो शासन के इन कार्यों द्वारा भी व्यापार की फिर से एकदम वृद्धि और फिर अकस्मात् मन्दी रुक नहीं सकी। जिसका परिणाम यह हुआ कि बैंक टूट गये, कार्पोरेशनों की साख जाती रही, गिर्वियाँ बन्द हो गई और १८९२ में लोगों ने ग्रोवर क्लीवलैंड को चुनकर उसपर आशाएँ लगायीं।

इस चुनाव में एक महत्वपूर्ण बात यह हुई कि एक तीसरी पार्टी भी चुनाव में शामिल हुई और उसने दस लाख से ऊपर वोट प्राप्त करके

रिपब्लिकन तथा डेमोक्रेट दोनों दलों में त्रास पैदा कर दिया। इसमें असन्तुष्ट लोग पश्चिम के किसान तथा ऋणी लोग अधिक थे और इस दल का नाम पीपलस पार्टी या पापूलिस्ट पड़ा। इस पार्टी की ओर से आइओवा के जनरल जेम्स बी० वीवर को उम्मीदवार चुना गया। उसने जो कार्यक्रम पेश किया; उसमें कहा गया था कि चाँदी का उन्मुक्त प्रयोग हो, नेशनल बैंक में पूर्ण सुधार हो, और रेलों तथा बिजली, पानी इत्यादि अन्य कार्यों पर सरकार का आधिपत्य हो। इसके सदस्यों का कहना था कि कोई सी भी बड़ी पार्टी लोगों की वास्तविक इच्छाओं को पूर्ण नहीं करती।

प्रेसिडेण्ट क्लीवलैंड ने देश को उस स्तर पर लाने के लिए बड़ी दृढ़ता से साहसपूर्ण प्रयत्न किये जिसे वह १८९२-९६ में अच्छा समझता था। वह वालस्ट्रीट के बैंक-पतियों के प्रति विशेष मित्रता के भाव तो नहीं रखता था, फिर भी वह जे० पी० मार्गन व अन्य बैंक आधिष्ठाताओं के पास गया और उनसे कहा कि वे सरकारी तमस्सुकों के बदले में सरकार को कम दामों में सोना दें। उसके यह करने पर पापुलिस्ट भड़क उठे और बहुत-से डेमोक्रेट भी उसके विरुद्ध हो गये तथा क्लीवलैण्ड पर वालस्ट्रीट के हाथों खेलने और उसका दास होने के दोष लगाये गये।

तब तक देश के किसान और श्रमिक भी उत्तेजित हो चुके थे और उन्हें तो यही प्रतीत होता था कि सरकार के प्रत्येक कार्य का उद्देश्य ट्रस्टों और कार्पोरेशनों को सहायता तथा लाभ पहुँचा कर जनसाधारण की हानि करना है। संघीय अदालतों ने कुछ निर्णय भी ऐसे दिये जिनसे उनकी यह धारणा पुष्ट होती थी। उदाहरणतः यह निर्णय हुआ कि संविधान के चौदहवें संशोधन में कहा गया है "कोई भी राज्य कानून की विधि अपनाये बिना किसी व्यक्ति का जीवन, उसकी आज़ादी या उसकी सम्पत्ति नहीं छीनेगा।" कार्पोरेशनों को भी 'व्यक्ति' समझा गया और इस कारण संघीय सरकार के आदेश या उसकी स्वीकृति के बिना राज्य उनपर कोई नियन्त्रण न रख सकते थे। यह कहा गया कि इस प्रकार कार्पोरेशनों को असीम अधिकार मिल जाते हैं; क्योंकि संघीय सरकार ने कभी भी उनपर रोक लगाने का गम्भीरतापूर्वक

अपना विचार प्रकट किया था।

१८९६ के चुनाव में यह विवाद उग्र रूप धारण कर गया। यह स्पष्ट था कि क्लीवलैंड और मध्यवर्ती डेमोक्रेट देश को दिवालिया होने से बचा नहीं सकते थे। सेन्ट लुई में अधिवेशन कर रिपब्लिकन दल ने बड़ी व्यग्रता से अपने विरोधियों को आलोचना की और ओहियो के गवर्नर विलियम मैकिनले को प्रेसिडेण्ट पद के लिए अपना उम्मीदवार चुना तथा देश के सामने जो कार्य-क्रम रखा उसमें कहा गया कि सुदृढ़ मुद्रा की व्यवस्था की जायगी, जिसका आधार केवल स्वर्ण होगा; यह व्यवस्था कम से कम उतने समय के लिए होगी जब तक परिस्थिति सुधर नहीं जाती। उन्होंने यह दोषारोपण किया कि सस्ती चाँदी ने देश की मुद्रा को कलुषित कर दिया है देश में तथा देश के बाहर राष्ट्र की साख को हानि पहुँचाई है जिससे व्यापार का चलन असम्भव हो गया है। रिपब्लिकन दल ने घोषणा की कि यदि एक बार दशा सुधर गई तो देश समृद्धि की ओर अग्रसर होता जायगा।

डेमोक्रेट दल का सम्मेलन शिकागो में हुआ और उसमें बड़े ज़ोर-शोर से क्लीवलैंड-शासन की निन्दा की गई और विशेषकर स्वर्णाधारित मुद्रा को बनाये रखने के लिए किये गये प्रयत्नों का विरोध किया गया। एक योजन स्वीकार की गई जिसमें कहा गया था कि सोलह और एक के अनुपात से चाँदी के सिक्के निरन्तर बनते रहे और बहुत-से प्रतिनिधियों ने वालस्ट्रीट की कार्पोरेशनों और ट्रस्टों पर आक्षेप किये जिनके चक्कर में 'छोटे आदमी'—दुकानदार, किसान और कारखानों के मजदूर पिसे जा रहे थे। बड़े-बड़े उद्योग तथा अन्य धन्धों के विरुद्ध आन्दोलन में एक ३६ वर्षीय नेता विलियम जैनिंग्स ब्राइन भी था। वह नेब्रस्का से काँग्रेस का सदस्य चुना गया। वह यद्यपि युवक तथा अनुभवहीन था, परन्तु उसकी ये त्रुटियाँ उसकी वाग्पटुता के समक्ष कोई अर्थ न रखती थीं। बड़े उत्तेजना-पूर्ण भाषण में ब्राइन ने अपने रिपब्लिकन विरोधियों को चेतावनी दी—"आप श्रमिकों के माथे पर काँटों का ताज नहीं रख सकते—आपको सोने की वेदी पर मानवता का बलिदान नहीं करना चाहिए।"

इसके उपरान्त जो चुनाव में संघर्ष हुआ वह बड़ा उत्कट और अमेरिका के इतिहास में यह अद्वितीय था। पापुलिस्ट दल, डेमोक्रेट तथा 'ठोस दक्षिण' ने भी डेमक्रेटिक दल को वोट देने का वचन दिया। ब्राइन ने अपने भाषणों से देश में राजनीतिक हलचल पैदा कर दी; उसके भाषण वैसे ही धवल उज्जवल थे जैसे चाँदी जिसका वह पक्ष लिया करता था।

ब्राइन की मनोहारी वाग्पटुता को विफल बनाने के लिए रिपब्लिकन दल ने भरसक प्रयास किया; करोड़ों डालर खर्च कर डाले क्योंकि इस संघर्ष में पराजय उन्हें असह्य थी। रिपब्लिकन उम्मीदवार मैकिनले स्भाव का हँसमुख, योग्य तथा अनुभवी था, उसे व्यापारी वर्ग का सहयोग प्राप्त हुआ जिसने चुनाव से एक सप्ताह पूर्व १८,००० भाषणकर्ताओं को वेतन पर रखा जो देश के सन्मुख उपस्थित हुए ब्राइन-'त्रास' से राष्ट्र को सचेत कर सकें।

चुनाव के दिन एक करोड़ तीस लाख से अधिक लोगों ने वोट दिये। मतगणना पर मैकिनले जीत गया, कोई ७० लाख वोट उसके पक्ष में आये तथा ६० लाख उसके विरुद्ध। यह एक महान् संघर्ष था, जिसमें अन्तिम समय तक बड़ा सख्त मुकाबला हुआ।

चुनाव के परिणाम पर पूर्व ने सुख का साँस लिया और वहाँ के लोग दुकानों और कारखानों में काम करने के लिए चले गये। पश्चिम के लोगों ने अपने कन्धे झाड़े और फिर से हल सम्भाल लिये। परन्तु १८९६ के चुनाव चिरस्मरणीय रहे और उसमें विरोध करने की भावना इतनी उग्रता से व्यक्त हुई कि विजेता भी उसकी उपेक्षा न कर सके। ज्यों-ज्यों अमेरिका में लोकतन्त्रीय व्यवस्था विकसित होने लगी, त्यों-त्यों 'छोटे लोगों' की आवाज़ दबा देना तो दूर रहा, उनकी आवाज़ को उत्तरोत्तर अधिक मान्यता मिलने लगी।

अध्याय ८

अमेरिका विश्व-शक्ति के रूप में

१८९० के उपरान्त अमेरिका में नयी मशीनें जो 'अश्वहीन-गाड़ियाँ' कहलायी, चलनी शुरू हुई तो घोड़े भय से हिनहिनाते और लोग चकित खड़े देखते रहते। ये गाड़ियाँ धीरे-धीरे भद्दी चाल मे चलती और उन्हें धनाढ्यों का खिलौना सा ही समझा जाता, क्योंकि केवल वही इन्हें मोल लेने का सामर्थ्य रखते थे। किसी को भी कल्पना न थी कि आने वाले कुछ वर्षों में चिकनी, चमकीली और शीशे से ढकी हुई गाड़ियाँ लाखों की संख्या में प्रतिवर्ष तैयार हुआ करेंगी और प्रत्येक चार में से एक अमेरिकी के पास एक मोटरकार होगी और पक्की सड़कों का एक जाल सारे महाद्वीप में बिछ जायेगा शहर दूर-दूर तक फैल जायेंगे और दूरतम प्रदेश में एकाकी जीवन व्यतीत करने वाला किसान कुछ घन्टों में मोटर द्वारा शहर पहुँच जाया करेगा। इस भांति अमेरिका एक "चक्र-आधारित राष्ट्र" बन जायेगा, जिसके सभी लोग 'पहियों वाली गाड़ियों पर सवार रहेंगे।'

शताब्दी के अन्तिम भाग में और भी आश्चर्यजनक बातें हुई। उत्तरी कैरोलाइना में किटीहॉक स्थान पर राईट बन्धुओं ने भूमितल से ऊपर उड़कर मनुष्य का प्राचीनतम स्वप्न पूरा कर दिया। उन्होंने एक ऐसा यन्त्र बनाया जो बाद में हवाई जहाज के नाम से प्रसिद्ध हुआ। कुछ ही वर्षों में यूरोप के युद्ध में ये हवाई जहाज़ आपस में जूझ रहे थे और थोड़े ही समय उपरान्त यह हवाई जहाज़ सागरों को लांघते हुए संसार के सभी भागों तक यात्रियों को ले जाने लगे।

इटली के एक युवक गुग्लीलमो मार्कोनी ने यूरोप से अतलान्तक महासागर के पार बेतार के सन्देश भेजे और इस प्रकार रेडियो का निर्माण हुआ। थॉमस एडिसन ने फोटो उतारने की त्वरित विधि मालूम कर ली, जिससे राष्ट्र और

बाकी संसार को चलचित्र मिले । भारी बोझ उठाने की मशीन बनायी गयी, जिससे बड़े-बड़े शहरों में 'गगन चुम्बी अट्टालिकाएं' बनने लगी । इन तथा सैंकड़ों अन्य आविष्कारों द्वारा, जिनमें से बहुत-से अमेरिका में हुए और बहुत से अन्य देशों में, संयुक्तराज्य की १६०० के उपरान्त दशा ही बदल गयी और उसका रूप बना जो आज उसे प्राप्त है ।

× × × ×

संयुक्तराज्य अमेरिका का विश्व की एक महान् शक्ति के रूप में विकास जितना अनिवार्य था उतना ही आकस्मिक भी । अमेरिका के लोगों में बड़ी चंचल शक्ति है, यह शायद उन्हें उत्तरी अमेरिका के महाद्वीप में ऐसी सुव्यवस्था करने से मिली है जिसके कारण वहाँ एक महान् तथा उत्पादक राष्ट्र का प्रादुर्भाव हुआ । १८६० के उपरान्त पश्चिमी सीमा के बन्द हो जाने के पहले भी इस शक्ति ने अमेरिका के लोगों को अपने देश से बहुत दूर बड़े बड़े कार्य करने की प्रेरणा दी थी—उदाहरणतः उन्होंने १८५३ में जापान को विश्व के व्यापार के लिए खोल दिया और मनरो सिद्धान्त द्वारा पश्चिमी गोलार्द्ध में अपने पड़ोसी देशों की रक्षा की थी ।

गत शताब्दी के अन्तिम भाग में यूरोप क प्रमुख राष्ट्र विश्व में व्यापारिक मण्डियों की प्रतिस्पर्धा में पड़े थे और इस दौड़ में संयुक्तराज्य भी शामिल हो गया । परन्तु यूरोपीय देशों के प्रतिकूल अमेरिका को नये प्रदेश प्राप्त करके अपने उपनिवेश बनाने की चिन्ता न थी, उसे तो केवल एशिया और आस्ट्रेलिया की मण्डियों को जाने तथा वहाँ से लौटने के मार्ग में ऐसे स्थानों की आवश्यकता थी जहाँ पर उसके जहाज़ कोयला ले सकते । इसके साथ-साथ कैरिबियन सागर में विदेशों का ज़ोर होने पर संयुक्तराज्य को चिन्ता हो ही रही थी । वहाँ पर फ्रांस पनामा के स्थल-डमरू मध्य को काट कर अतलान्तकमहा सागर तथा प्रशान्तमहासागर को मिलाने के लिए नहर बनाने का यत्न कर रहा था ।

अमेरिका के लोगों को अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में अपने देश की महत्ता का आभास मिल ही रहा था और वे पूछते थे "क्या हम अपने गोलार्द्ध में तथा प्रशान्तमहासागर में यूरोप के बढ़ने पर स्वयं हाथ पर हाथ रख कर बैठेंगे ? क्या

सागरों पर उन युद्ध-परायण देशों का अधिकार हो जाने पर हम सुरक्षित रह सकेंगे, जो किसी समय भी हमारे शत्रु बन सकते हैं ?"

स्पेन का निर्बल व जर्जरित साम्राज्य इन प्रश्नों को बड़ा उग्र रूप देने में सहायक हुआ। वेस्ट इण्डीज़ के सब से बड़े तथा समृद्ध टापू क्यूबा पर तब स्पेन का अधिकार था। यह टापू फ्लोरिडा की छोर से ९५ मील दूर स्थित है। १८९५ में यहाँ कुछ ऐसी घटनाएं हुईं जिनके कारण अमेरिका में लोगों के सम्हलने से पहले ही संयुक्तराज्य एक विश्व-'साम्राज्य' में शीघ्र ही परिणत हो गया। क्यूबा पर स्पेन का शासन बड़ा कठोर था—इतना कठोर कि वहां के निवासी उसे सहन न कर सकते थे। उन्होंने हताश हो कर विद्रोह कर दिया। स्पेन ने २,००,००० सेना इस टापू में उतारी और दोनों ओर से भयंकर युद्ध हुआ। इस लड़ाई में बहुत से अमेरिकी खेतिहर भी फँस गये थे।

नैतिक तथा आर्थिक कारणों से प्रेरित होकर प्रेसिडेण्ट मैकिनले ने रक्त-पात बन्द कराने की चेष्टा की, परन्तु स्पेन ने बड़े रूखेपन से कहा कि वे अपना काम करें। अमेरिका में 'येलो प्रेस' ने इस पर क्रोधाग्नि को और भी बढ़ाया, इस नवीन ढंग की पत्रकारिता में सनसनी फैलाने-वाले समाचार बड़े बड़े शीर्षकों से दिये जाते हैं। जब इन समाचार-पत्रों ने यह घोषणा की कि हवाना के बन्दरगाह में संयुक्तराज्य का जंगी जहाज 'मेन' नष्ट कर दिया गया है और उस में अमेरिका के २६० सैनिक मारे गये हैं, तो देश ने उत्तेजित हो कर युद्ध की माँग की। 'मेन' को किस ने नष्ट किया या वह किस प्रकार ध्वंसित हुआ, या फिर यह अपने आकस्मिक विस्फोट से नष्ट हो गया, यह सब आज तक रहस्य ही रहा है।

अन्तिम समय पर स्पेन ने अमेरिका की यह माँग स्वीकार करके कि क्यूबा में लड़ाई बन्द कर दी जाय, युद्ध टालने की कोशिश की; पर 'मेन को स्मरण करो' की पुकार में यह बात न सुनी गई। अमेरिका के लोगों ने क्यूबा के लोगों को अत्याचारी शासकों से मुक्त कर उनको स्वाधीनता प्रदान करने के उद्देश्य से युद्ध शुरू कर दिया।

१८९८ में स्पेन और अमेरिका का युद्ध अत्यन्त वेग से बढ़ा और इसमें

एक ही पक्ष बलवान् था। पहली ही लड़ाई में अमेरिका का एक जंगी बेड़ा चीन में ब्रिटेन के बन्दरगाह हांगकांग से चलकर स्पेन-अधिकृत फिलिपिन टापुओं में पहुँचा और एडमिरल जार्ज डीवी के नेतृत्व में इसने स्पेन के जंगी बेड़े को पूर्णतया नष्ट कर दिया। इस काम में अमेरिका के एक भी सैनिक का नुकसान न हुआ। अमेरिका की तोपों के सामने फिलिपीन के लोग असहाय और असुरक्षित पड़े थे। उस समय शीघ्रता से आगे बढ़ने वाली सेना के अमेरिका से पहुँचने की प्रतीक्षा थी।

पश्चिमी गोलार्द्ध में अमेरिका की सेनाएँ क्यूबा में बढ़ीं और उन्होंने स्पेन को हार पर हार दी। साँजुआँ हिल पर न्यूयार्क के एक होनहार तथा युवा राजनीतिज्ञ थियोडोर रूज़वेल्ट ने शत्रु पर रफ़ राइडर्स के एक साहसपूर्ण आक्रमण का बड़ी सफलता से नेतृत्व किया। जब क्यूबा में इसके कुछ सप्ताह उपरान्त स्पेन का एक और जंगी बेड़ा नष्ट कर दिया गया तब स्पेन ने मुकबाला करना बन्द कर निया। इस युद्ध में कुल तीन मास लगे। कैरिबियन सागर में स्पेन के टापुओं पर अमेरिका का अधिकार हो गया और सितारों तथा धारियों वाला अमेरिकी ध्वज सुदूर मनीला में भी फहराने लगा।

सन्धि-वार्ता के समय संयुक्तराज्य-सरकार को एक महत्वपूर्ण निर्णय करना पड़ा। क्या वह क्यूबा के अतिरिक्त बाकी सभी अधिकृत स्थान को लौटा दे ? या फिर उनमें बस्तियाँ बनाकर अपना साम्राज्य स्थापित करे ? इस पर बड़ा विवाद हुआ; बहुत से अमेरिकी लोगों का कहना था कि दूर-दूर के प्रदेश अपने संग मिला कर देश आधारभूत सिद्धान्तों का विरोध कर रहा है। इन देशों के सम्वन्ध में यह सम्भावना ही नहीं है कि वे कभी स्वाधीन भी होंगे या राज्यों की हैसियत प्राप्त करेंगे। कुछ अन्य लोगों का विश्वास था कि विस्तार तथा इन बस्तियों को प्राप्त करना राष्ट्र के विश्वशक्ति बनने के लिए 'प्रकट प्रारब्ध' (मैनीफेस्ट डेस्टिनी) ही है। उनकी धारणा यह भी थी कि इन देशों के असहाय लोगों को स्पेन की दया पर छोड़ना बड़ी क्रूरता होगी। इन सब बातों को देखते हुए प्रेसिडेण्ट मैकिनले ने यही निर्णय किया कि ये बस्तियाँ स्पेन को लौटाई न जायेगी।

इसके परिणामस्वरूप स्पेन को प्युर्टोरिको, गोग्राम तथा फिलिपीन संयुक्त-राज्य को देने पड़े और १९०९ के प्लैट संशोधन के अनुसार क्यूबा अमेरिका संरक्षण में एक गणराज्य बना दिया गया। इसके अतिरिक्त संयुक्त-राज्य ने हवाई टापू को भी अपने साथ मिला लिया और १९०० में इसे एक अमेरिकी प्रदेश के रूप में शामिल किया गया। इससे कई वर्ष अमेरिका के धार्मिक प्रचारकों ने वहाँ जाकर अपनी बस्तियाँ बनाई थीं।

अमेरिका के नये 'साम्राज्य' में सबसे बड़ा प्रदेश फिलिपीन द्वीपसमूह ही था जिनकी जनसंख्या ७५ लाख थी। अपने नेता एमिल्यो आजिनाल्डो के नेतृत्व में फिलिपीन के लोगों ने स्वन्त्रता प्राप्त करने के लिये स्पेन से युद्ध किया था। अब उनका संघर्ष नये शासकों के विरुद्ध हो गिया और इस भांति लड़ाई शुरू हो गई जो चिरकाल तक रही और जिसमें बड़ी विशेषता यह थी कि पहाड़ों और जँगलों में सख्त छापामार युद्ध हुए। अमेरिका से ५०,००० से अधिक सैनिक भेजने पर कहीं फिलिपीन के लोगों का यह द्रोह शान्त हुआ।

इसके अतिरिक्त अमेरिका चीन की समस्या में भी उलझ गया। यूरोप के कई शक्तिशाली देशों ने इस अभागे देश को अपने व्यापारिक 'क्षेत्रों' में विभक्त कर लिया था जिनसे वे अपने निजी लाभ उठाया करते। इसके विरुद्ध चीनी लोगों की एक संस्था 'बाक्सर्स' ने सभी विदेशियों को मार देने, या उनको अपने देश से भगा निकाल बाहर करने का यत्न किया। १९०० के इस बाक्सर-विद्रोह में चीनियों ने पीकिंग में ब्रिटेन का राजदूतावास घेर लिया और अन्त में एक अन्तर्राष्ट्रीय सेना ने चीनियों को वहां से भगाया, इस सेना में फिलिपीन से लाये गये अमेरिकी सैनिक भी थे। परन्तु संयुक्त-राज्य ने अन्य राष्ट्रों की अपेक्षा चीन के प्रति अधिक मित्रता के भाव दिखाये, क्योंकि जब चीन सरकार को इस विद्रोह के कारण तावान देने पर विवश किया गया तो संयुक्तराज्य ने अपने भाग की रकम उन चीनी विद्यार्थियों की शिक्षा के लिये दे दी, जो अमेरिका के कालिजों में शिक्षा पाना चाहते थे। इसके साथ ही संयुक्त-राज्य ने 'खुले-द्वार' की नीति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अपना रसूख इस्तेमाल किया। इसके द्वारा चीन का विभाजन रोकने पर ज़ोर

दिया गया था तथा यह भी कहा गया कि "चीन की प्रादेशिक तथा शासन-सत्ता का मान किया जाय" ।

× × ×

१९०० में अमेरिका अपने देश के भीतर आर्थिक समृद्धि तथा सम्पन्नता के पूर्व ज़ोरों पर था , कोयले, लोहे, इस्पात तथा अनाज का उत्पादन बढ़ता जा रहा था, आयात से निर्यात कहीं अधिक था और एलास्का में सोने के प्रचुर मात्रा में मिल जाने के कारण मुद्रा सुदृढ़ हो गयी थी इन परिस्थितियों में प्रेसिडेण्ट मैकिनले को पुनः चुनाव जीतने में कठिनाई न हुई और उसने फिर से डेमोक्रेटिक उम्मीदवार विलियम जैनिंग्स ब्राइन को हरा दिया । 'बड़े-बड़े धन्धे' देश को बड़े वेग से उन्नति के पथ पर अग्रसर कर रहे थे ।

१९०० में मैकिनले के साथ थियोडोर रूज़वैल्ट वाईस प्रेसिडेण्ट चुना गया जिसने साँजुआँ हिल की लड़ाई में ख्याति पायी थी । अमेरिका के सारे इतिहास में उसका व्यक्तित्व अपनी एक महान् विशेषता रखता है । एक सम्पन्न घराने में पैदा होकर 'टेडी' रूज़ल्वेट हावर्ड यूनिवर्सिटी का ग्रेजुएट बना और अपने कमज़ोर स्वास्थ्य को सुधारने के लिए वह पश्चिम में जाकर ग्वाले का काम करता रहा । स्पेन और अमेरिका के युद्ध के बाद वह न्यूयार्क का गवर्नर चुना गया । वहाँ पर उसके सुधारों तथा उसकी दियानतदारी से रिपब्लिकन दल के नीतिवान इतने अप्रसन्न हुए कि उन्होंने उसे वहाँ से हटा कर या "ठोकर मार कर" वाइस-प्रेसिडेण्ट बना दिया । उन्हें आशा थी कि अपने इस पद से वह उन्हें कोई हानि न पहुँचा सकेगा ।

शीघ्र ही यह चाल उलटी पड़ी । दूसरी बार प्रेसिडेण्ट बने हुए मैकिनले को अभी छः महीने ही हुए थे कि किसी ने गोली मार कर उसकी हत्या कर दी और राष्ट्र के शासन की बागडोर ४२ वर्षीय रूज़वेल्ट न सम्भाली । वह काम करने में विश्वास रखता था, उसने पद सम्हालते ही 'बड़े धन्धों' के नियन्त्रण की मांग की एक ज़ोरदार विदेशी नीति अपनाने तथा पश्चिम के प्रदेशों को सुरक्षित बनाने व उनको खेती के लिए तैयार करने के लिए आदेश

दिया। उसका ख्याल था कि यदि शीघ्र रोका न गया तो पश्चिम के प्रदेश बर्बाद हो जायँगे। इस नये कार्यक्रम द्वारा समाज के सभी वर्गों का हित करने की चेष्टा की गई थी और यह "ईमानदारी का सौदा" कहलाया।

रूज़वेल्ट ट्रस्टों तथा कार्पोरेशनों के विरुद्ध न था; उन्हें वह अमेरिका की पूँजीवादी व्यवस्था का आवश्यक तथा स्वाभाविक अंग समझता था। वह कानून का उल्लंघन करने वाले 'धनाढ्य अपराधियों' और 'अत्यन्त समृद्ध बने पापियों' को उचित दण्ड देना चाहता था, जो अपने स्वार्थ के लिए रिश्वत देते, धोखा करते और जनसाधारण के प्रति द्रोह करते।

उसके प्रेसिडेण्ट बनने के शीघ्र ही बाद यह स्पष्ट हो गया कि वह जो कहता है सच्चे दिल से करेगा। १८६० में कांग्रेस ने शेरमन का ट्रस्ट विरोधी कानून पास कर दिया था जिसके द्वारा 'व्यापार पर नियन्त्रण' करने के उद्देश्य से संयुक्त व्यापार बनाने की मनाही कर दी गयी थी, परन्तु इस कानून द्वारा व्यापारिक गँठजोड़ रोकना तो दूर रहा, इससे तो व्यापारी दूसरों का नियन्त्रण करने लगे, क्योंकि इसका अर्थ यह लिया गया कि श्रमिकों को हड़ताल करने का अधिकार नहीं है। परन्तु रूज़वेल्ट का इस सम्बन्ध में यह विचार कदापि न था।

जब नार्दन पैसिफिक तथा ग्रेट नार्दन रेलरोडस् ने परस्पर गँठजोड़ करके पश्चिम में रेलों का बहुत बड़ा भाग एकाधिकार में लाने का यत्न किया, तो रूज़वेल्ट ने शेरमन एक्ट की आड़ लेकर एकाधिकार को समाप्त कराने के लिए अदालत में मुकदमा कर दिया। इसमें सरकार की जीत हुई, जिसपर जनसाधारण बहुत खुश हुए। उस समय यह प्रतीत हुआ कि शेरमन एक्ट भी दम रखता है।

१६०२ के ग्रीष्म काल में संयुक्तराज्य में कोयले की खानों में काम करने वालों ने अपने लिए अच्छी शर्तें मनवाने के हित हड़ताल कर दी और खानों के मालिकों ने निपटारा कराने से इनकार कर दिया। जब सर्दी आयी तो कोयले का मिलना कठिन हो गया और उसके भाव बढ़ जाने से लोग सर्दी से ठिठुरने लगे रूज़वेल्ट ने खानों के मालिकों को धमकी दी कि यदि उन्होंने मज़दूर यूनियन से मतभेद दूर करने के लिए निष्पक्ष कमीशन की पंचायत न मानी तो,

खानों के काम पर संयुक्त-राज्य के सैनिक बुला लिये जायँगे। अन्त में मालिक बिगड़े तो सही, पर उनको हार माननी पड़ी और कमीशन ने श्रमिकों के वेतन में दस प्रतिशत वृद्धि करने के लिए निर्णय दिया।

पश्चिम में एकबार फिर रूजवेल्ट ने खास स्वार्थों का विरोध किया। इस बार उसने भूमि के बड़े बड़े खण्डों का विक्रय रोक दिया और उनको सरकार द्वारा सुरक्षित रखा गया। पश्चिम में लकड़ी का काम करने वालों तथा चरवाहों ने इसका बड़ा विरोध किया। यह कदम देश के प्राकृतिक भण्डारों को सुरक्षित रखने के लिए किया गया, जिससे उनको निजी लाभ उठाने वाले ऐसे शोषकों से बचाया जा सके जिन्होंने पहले ही जंगलों के जंगल काट डाले थे तथा बहुत-सी चरागाहों को नष्ट कर डाला था और उनको फिर से ठीक करने का विचार तक न किया। इसके साथ ही रूज़वेल्ट ने बाँध लगवा कर जल सिंचन की योजनाओं को शुरू करवाया, जिनसे बेकार पड़े मरुस्थल, उपजाऊ भूमि में परिणत होने लगे।

रूज़वेल्ट ने जो उत्साह देश के आन्तरिक मामलों में दिखाया, विदेशी नीति में भी उससे कम न था। साम्राज्य विरोधियों ने उसके कामों की निन्दा की और उन्हें उतावला तथा नीति हीन बताया। रूज़वेल्ट तो यह कहता था "धीरे बोलो और एक बड़ा डंडा लेकर चलो," इसे उसकी दूसरी चाल का प्रमाण बताया जाने लगा। फिर भी रूजवेल्ट संसार का एक प्रमुख व्यक्ति बन गया और विदेश में उसका प्रभाव बहुत रहा।

प्रशान्तसागर के दूसरी ओर अमेरिका के हित बढ़ जाने के कारण जल-डमरूमध्य में नहर बनाने की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी। फ्रान्स वालों ने एक बार इसे बनाना चाहा था परन्तु वह योजना असफल रही। यूरोप तथा अमेरिका के पूर्वी तट से पूर्वी देशों को जाने वाले जहाजों को दक्षिणी अमेरिका की छोर से होकर जाना पड़ता था। १९०२ में कांग्रेस ने नहर बनाने की स्वीकृति दे दी; और यह भी कहा गया कि अच्छा तो यही होगा कि कोलम्बियो के एक प्रान्त पनामा में यह नहर बनाई जाय और यदि वहाँ न बने तो निकारागुआ में। फ़ाँसीसियों ने रूज़वेल्ट को इसके लिए तैयार

कर लिया कि वह आर्थिक संकट में फँसी हुई उनकी कम्पनी तथा उसके सामान को खरीद ले, जिससे वे पनामा का मार्ग बनाने का काम कोलम्बिया से स्वीकृति मिल जाने पर स्वतन्त्रता से कर सकें।

रूज़वेल्ट ने पनामा स्थल डमरू मध्य की ५० मील लम्बी परन्तु तंग ज़मीन के लिए एक करोड़ डालर तथा वार्षिक किराया कोलम्बिया को देना चाहा, परन्तु कोलम्बिया इससे सन्तुष्ट न हुआ। उसके विचार में यह मूल्य बहुत कम था। परन्तु इसको स्वीकार करके कोलम्बिया को पनामा से ही हाथ धोने पड़े, क्योंकि वहाँ पर बड़ी सावधानी से आयोजित किया हुआ विद्रोह शुरू हो गया; और चूंकि अमेरिका के जंगी जहाज़ वहीं खड़े थे, इस कारण इस विद्रोह या क्रान्ति को दबाया न जा सका। इस रहस्यपूर्ण विधि से संयुक्त-राज्य ने पनामा के नये गणराज्य से सौदा कर लिया और नई सरकार को वही दिया गया जो कोलम्बिया को देने के लिय कहा गया था। पनामा नहर बनाने का कार्य शुरू हो गया जिसकी गणना सदा निर्माणकला की उत्कृष्ट कृतियों में होती रहेगी।

इस प्रकार की नवीन चालों को जहां अनुचित कहकर निन्दित किया जा सकता है वहाँ उन्हें क्षमा भी किया जा सकता है क्योंकि प्रतिरोध के प्रयत्नों को निष्फल बनाकर एक महान् उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वे आवश्यक प्रतीत होती थीं। चाहे यह नीति अच्छी थी या बुरी, इससे अमेरिका के प्रति उसके छोटे पड़ोसी देशों में विश्वास बढ़ गया; उन्हें अमेरिका के प्रभाव का अधिक विस्तार हो जाने की आशंका हो गई। इस आशंका की पुष्टि उस समय हो गई जब कि प्रेसिडेण्ट रूज़वेल्ट ने मनरो-सिद्धान्त से अपना एक अन्य उप-सिद्धान्त निकाला।

लेटिन तथा दक्षिणी अमेरिका ने अपने देशों की उन्नति के लिए यूरोप से ऋण लिये थे। कई कारणों से वे अपने इन ऋणों को चुकता न कर सके; और यह ऋण वसूल करने के लिए विदेशों से जलसेना के बेड़े उन देशों के बन्दरगाहों में पहुँच गये। इनको रोकने तथा यह प्रबन्ध करने कि दिवालिया देशों पर विदेशी अधिकार न ो जाय प्रेसिडेण्ट रूज़वेल्ट ने घोषणा की कि

अब से ये ऋण एकत्र करने का काम संयुक्त राज्य करेगा और जो पड़ोसी देश उऋण न हो सकेंगे उनके आन्तरिक मामलों की इस भाँति व्यवस्था की जायगी, जिससे वे वित्तीय तौर पर सुदृढ़ हो जायँ। मनरो-सिद्धान्त के इस भांति प्रयोग का अमेरिका के लेटिन देशों ने विरोध किया, क्योंकि इस सिद्धान्त में संयुक्त राज्य की ओर से इस प्रकार का दखल देने के लिए कोई व्यवस्था न थी, परन्तु इससे पश्चिमी गोलार्द्ध में शान्ति व दृढ़ता स्थापित करने में सहायता मिली।

१९०४ के निर्वाचन के समय 'टेडी' रूज़वेल्ट की लोकप्रियता चरम सीमा पर थी, इसलिए अनुदार डेमोक्रेटिक उम्मीदवार आल्टन पार्कर के मुकाबले में वह बड़ी आसानी से जीत गया। प्रेसिडेण्ट रूज़वेल्ट की दूसरी अवधि में विदेश-नीति की सफलता एक मुख्य विशेषता रही। उसने रूस और जापान की लड़ाई बन्द करवाई। सन्धि-पत्र पर न्यू हैम्पशॉयर के पोर्टसमाउथ नामक स्थान पर हस्ताक्षर हुए। उसने मराको के प्रश्न फ्रांस और जर्मनी में भी युद्ध रोकने में सहायता दी। स्वदेश में रूज़वेल्ट ने 'ट्रस्ट-विदारक' नीति को जारी रखा और रेल रोडों पर नियन्त्रण करने के उद्देश्य से और भी कानून मंजूर करवाये।

हर जगह सुधारों की चर्चा थी। "मलवाहक" लेखकों के एक वर्ग ने माँस को डिब्बों में बन्द करने के व्यवसाय तथा खाद्योद्योग में अस्वस्थ-कर परिस्थितियों पर लेख लिखे और इन बुरी बातों को रोकने के लिए काँग्रेस ने कानून बनाये। पश्चिम में यह आन्दोलन ज़ोर पकड़ने लगा कि स्त्रियों को भी मताधिकार होना चाहिये तथा सेनेट के सदस्यों का निर्वाचन राज्य-विधान-सभाएँ न करें जिनपर "बड़े-बड़े औद्योगिकों" का दबदबा है; बल्कि उनको लोग स्वयं चुनें। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए भरसक यत्न करने वाला थियोडोर रूज़वेल्ट यदि चाहता तो १९०८ के चुनाव में पुनः प्रेसिडेन्ट बन सकता था; परन्तु 'टेडी' ने तीसरी बार प्रेसिडेण्ट पद के लिए खड़े न होने की प्रतिज्ञा की थी; और उसके इच्छानुसार विलियम हावर्ड टाफ़ट ने उसी विलियम जैनिंग्स ब्राइन को हरा कर प्रेसिडेण्ट पद प्राप्त किया, जो पहले भी कई बार चुनाव हार चुका था।

× × ×

रूज़वेल्ट ने जो बड़े प्रयास किये थे, उनके कारण, उसके बाद चाहे कितना भी योग्य प्रेसिडेण्ट क्यों न आता, मुकाबले में शक्तिहीन और निकम्मा ही प्रतीत होता। हंसमुख और मोटे टाफ़ट के भाग्य में यही बदा था। वह एक प्रमुख कानूनदाँ तथा नीतिज्ञ था; परन्तु वह लोगों में प्रिय न हो सका। टाफ़ट, रूज़वेल्ट की ही नीतियों पर चलता रहा, ट्रस्टों को उसने अधिक जोर से दबाया; परन्तु उस समय कुछ शक्तियाँ ऐसी भी पैदा हो गयीं थी जो उसको सामर्थ्य से बाहर थीं। रिपब्लिकन दल दो भागों में विभक्त हो रहा था, एक में उदार 'द्रोही' स्वदेश में रूजवेल्ट के सारे कार्यक्रम का समर्थन करते थे और यह मांग करते थे इस कार्यक्रम को और भी तेज़ किया जाय—तट करों में तत्काल कमी कर दी जाय, श्रमिकों के हित में कानून बनाये जायं और अमीरों पर आय-कर लगाया जाय। दल का वर्ग अनुदार था, उन्हें कभी रूज़वेल्ट पर विश्वास न हुआ और वे देश में 'बड़े-बड़े धन्धों' के पुनः व्यापक हो जाने आशा रखते थे।

जब प्रेसिडेण्ट टाफ़ट निरुत्साहित हो कार्य करने लगा तो रिपब्लिकन दल के उदार वृत्ति के सदस्यों ने व्याकुलता प्रकट की और उस पर प्रतिक्रियावादी होने का दोष लगाया। जब वह तटकरों में कमी न कर सका और रूज़वेल्ट के कुछ बड़े-बड़े समर्थकों के स्थान पर अनुदार वर्ग के कुछ व्यक्ति नियुक्त कर दिये तो कई उसके विरुद्ध हो गये और उन्होंने विस्कोन्सिन के सेनेटर राबर्ट एम० लाफ़ोलेट के नेतृत्व में "नेशनल रिपब्लिकन प्रोग्रेसिव लीग" की स्थापना की।

विस्कोन्सिन के गवर्नर की हैसियत से 'लड़ाके बाब' लाफ़ोलेट ने प्रगतिवादी सिद्धान्तों की व्याख्या की थी, और उनको क्रियात्मक रूप भी दिया था। उसने जहां तक सम्भव था, रेल रोड तथा व्यापार का नियन्त्रण लोकहित की दृष्टि से किया, श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा की तथा राज्य में आय-कर लगाया। इसके अतिरिक्त इन प्रगतिवादियों ने मतदाताओं का लोक-शासन स्थापित कराने की चेष्टा की, उनको राज्य-विधान सभाओं पर नियन्त्रण का अधिकार दिया। प्रवर्तन, के द्वारा नागरिकों का कोई भी दल अपनी इच्छा के कानून बनाने के लिए आवेदन-पत्र दे सकता था और राज्य-विधान सभा को

उस पर कार्रवाई करने के लिए बाधित कर सकता था। 'मतगणना' द्वारा लोग पहले के पास किये हुए कानूनों को स्वीकृति अथवा रद्द कर सकते थे, 'वापसी-बुलावे' द्वारा यदि पर्याप्त संख्या में नागरिक चाहें तो आवेदन, कर अधिकारियों को पद से हटवा सकते और 'प्रारम्भिक अधिकार' के अनुसार राष्ट्र के राजनीतिक सम्मेलनों के लिए प्रतिनिधियों का चुनाव करने का अधिकार राजनीतिक अधिपतियों को देने के बजाय मतदाताओं को ही देने की व्यवस्था की गई। लोक-शासन का इस भाँति विस्तार करना उस समय प्रगतिवादियों के कार्यक्रम का मुख्य आधार था और इसे रिपब्लिकन दल के कार्यक्रम में शामिल करवाना चाहते थे।

जिस समय प्रगतिवाद का यह आन्दोलन ज़ोर पकड़ रहा था, उस समय थियोडोर रूज़वेल्ट अफ्रीका में आखेट तथा यूरोप में भाषणों के लम्बे दौरे से लौटा। जब उससे पूछा गया कि आपकी सहानुभूति अपने मित्र टाफ़ट के साथ है या प्रगतिवादियों के साथ, रूज़वेल्ट ने उत्तर दिया, प्रगतिवादियों के साथ। लाफ़ोलेट समझता था कि रूज़वेल्ट उतना ही उदार है जितना टाफट। इसलिए जब उसने देखा कि प्रगतिवादियों ने भूतपूर्व प्रेसिडेण्ट रूज़वेल्ट का समर्थन शुरू कर दिया है और १९१२ की रिपब्लिकन गोष्ठी में उसी को तीसरी बार प्रेसिण्डेट के पद के लिए प्रस्तावित करने का निश्चय कर लिया है, तो लाफ़ोलेट को बड़ी निराशा हुई।

रूज़वेल्ट और टाफट पहले बड़े मित्र थे, परन्तु अब प्रेसिडेण्ट-पद के उम्मीदवार के चुनाव में वे सख्त दुश्मन बन गये। रूज़वेल्ट की लोकप्रियता और उसके महान् व्यक्तित्व के मुकाबले में टाफट ने दल की राजनीतिक व्यवस्था से काम लेते हुए पहले चुनाव में विजय पा ली। इस पर बिगड़ कर रूज़वेल्ट-गोष्ठी से उठकर चला गया और जाते समय उसने एक तीसरा दल शुरू-करने की प्रतिज्ञा की। रिपब्लिकन दल भी इस समय उसी भाँति विभाजित हो गया था, जिस प्रकार १८६० में डेमोक्रेटिक दल।

इसके दो मास उपरान्त रूज़वेल्ट के अनुयायियों का फिर से सम्मेलन हुआ और उसके प्रति निष्ठा के उत्साहपूर्ण प्रदर्शन के उपरान्त प्रगतिवादी अथवा

बुलमूज' दल की ओर से इसी लोकप्रिय नेता का नाम स्वीकृत हुआ। उन्होंने रूज़वेल्ट को याद दिलाई कि आपने तो पुनः चुनाव न लड़ने का वचन दिया था। उनको रूजवेल्ट ने उत्तर दिया कि मेरा मतलब था कि दो से अधिक बार साथ-साथ प्रेसिडेण्ट नहीं बनूँगा। प्रगतिवादियों के कार्यक्रम में उसी भाँति के लोक-शासन की स्थापना के लिए कहा गया था, जैसा कि लाफ़ोलेट ने विस्कोसिन में स्थापित किया था। सेनेट के सदस्यों का चुनाव लोग स्वयं करें, ट्रस्टों पर नियन्त्रण हो और संरक्षण की सुदृढ़ व्यवस्था हो।

रिपब्लिकन दल में इस फूट पर देश भर के डेमोक्रेट दल वालों ने बड़ी खुशी मनाई। बीस वर्ष में पहली बार अब पुनः सत्ता प्राप्त करने का सुअवसर आया जान पड़ने लगा। क्या फिर से ब्राइन को ही दल की ओर से खड़ा किया जाय ? यह महान् वक्ता बहुत बार हार चुका था। डेमोक्रेटिक दल की गोष्ठी बाल्टिमोर में हुए और उसमें प्रतिनिधि सभा के स्पीकर चम्पक्लार्क तथा न्यूजर्सी के गवर्नर वुडरो विल्सन के नाम पर बड़ा विवाद हुआ, कभी एक का पक्ष भारी होता तो कभी दूसरे का। ४६वें चुनाव पर ब्राइन के समर्थन करने पर विल्सन का नाम स्वीकृत हुआ।

डेमोक्रेटिक दल का यह नया उम्मीदवार वर्जिनिया में पैदा हुआ था। वह प्रिन्स्टन का ग्रेजुएट था और न्यूजर्सी का गवर्नर बनने से पहले कालेज का प्रोफेसर तथा अध्यक्ष रह चुका था। वह बड़ा विद्वान् और आदर्शवादी था। वह प्रगतिवादियों की भांति 'बड़े-बड़े धन्धों' के दबदबे तथा ट्रस्टों के विरुद्ध था। "संयुक्तराज्य की सरकार विशेष हितों की पोष्य सन्तान है, यह स्वेच्छा से काम नहीं कर सकती।" यह घोषणा करते हुए उसने शासन व्यवस्था में पूर्ण रूप से पुनर्गठन करने का वचन दिया। इस प्रकार रूज़वेल्ट के पक्षपातियों की ये आशाएं कि उदार डेमोक्रेट विचारों के लोग प्रगतिवादी उम्मीदवार को वोट देंगे, धूसरित हो गयी और नवम्बर के चुनावों में विल्सन जीत गया। विल्सन को ६० लाख से अधिक वोट मिलें, रूज़वेल्ट को ४० लाख से कुछ अधिक, टाफ़्ट को ३५ लाख के लगभग और समाजवादी यूजेन वी० डेब्स को कोई दस लाख।

अमेरिका में लोगों आशंका थी कि उनका 'कालेज-प्रोफेसर' प्रेसिडेण्ट कांग्रेस में मची हुई हड़बड़ी को सुधारने में अशक्य होगा, परन्तु विलसन ने उनको चकित कर दिया। वह 'जनसाधारण' में से न था परन्तु उसका अपना दृढ़ निश्चय तथा अपनी ही सूझबूझ थी। उसने 'न्यू फ्रीडम' शीर्षक से भाषणों का जो संग्रह प्रकाशित किया था, उसमें दिये गये चुनाव के समय के वचनों को बड़ी कुशलता और उत्साह से पूरा कर दिखाया।

प्रेसिडेण्ट का पद सम्भालने के उपरान्त शीघ्र ही उसने कांग्रेस का अधिवेशन बुलाया और सदस्यों से कहाँ "तटकरों में परिवर्तन होना ही चाहिए जिस बात से भी विशेषाधिकार का आभास मिलता हो, उसे समाप्त कर देना होगा।" इसके फलस्वरूप सभा तथा सेनेट ने अन्डरवुड टैरिफ की स्वीकृति दे दी, जिसके अनुसार पचास वर्षों में पहली बार वास्तव में तटकर घटे और विदेश के उत्पादकों को अमेरिकी मंडियों में अपना माल कम दामों पहुँचा कर स्थानीय मंडियों का मुकाबला करने का अवसर मिला। तटकरों में कमी से आमदनी में जो घाटा हुआ, उसको पूरा करने के लिए प्रेसिडेण्ट ने १६ वें संवैधानिक संशोधन अनुसार आयकर लगा दिया। राज्यों ने टाफ़्ट-शासन के अन्तिम काल में इस संशोधन की स्वीकृति दे दी थी।

इसके तीन महीने के पश्चात् १७ वां संशोधन हुआ, जिसके द्वारा संयुक्त राज्य में सेनेटरों का चुनाव राज्य-विधान सभाओं की बजाय मतदाताओं की ओर से करने की व्यवस्था हो गयी। उदारता के प्रवाह के अनुरूप ही इस संशोधन से राज्यनीतिज्ञों तथा अधिकारियों को बड़ा आघात पहुँचा, जो पहले राज्य विधान-सभाओं में सेनेट के सदस्यों के चुनाव की देख-भाल स्वयं किया करते थे।

बैंक-व्यवस्था में सुधार करना विलसन का दूसरा बड़ा कदम था। इस व्यवस्था द्वारा ही देश के अधिकतर लेन-देन का नियन्त्र होता था। प्रेसिडेण्ट ने कहा "यह नियन्त्रण लोगों का नहीं सरकार का होना चाहिए जिससे बैंक व्यापार, व्यक्तिगत और उद्यम के साधन बन जायँ मालिक नहीं।' फैड्रल रिज़र्व एक्ट के अनुसार देश को बारह विभागों में बाँट दिया गया,

प्रत्येक में एक बड़े बैंक की स्थापना की गयी और उसे व्यापारिक परिस्थितियों के अनुसार मुद्रा जारी करने तथा उसका नियन्त्रण करने का अधिकार दिया गया। इनकी पूंजी देश के अन्य बैंकों से ली गयी, जो इनके सदस्य बन गये और सारी बैंक-व्यवस्था की देख-रेख के लिए वाशिंगटन में केन्द्रीय रिज़र्व बोर्ड की स्थापना की गयी, जिसमें वित्त मन्त्री, मुद्रा-सम्बन्धी विभाग का मुख्याधिकारी तथा प्रेसिडेण्ट की ओर से नियुक्त किये गये छः सदस्य भी रखने की व्यवस्था की गयी। बैंकों की उस नयी व्यवस्था द्वारा मुद्रा का कड़ापन जाता रहा और उसने देश की एक स्थायी संस्था का रुप धारण कर लिया जिसके द्वारा संयुक्त राज्य में मुद्रा के मूल्य पर नियन्त्रण का काम होने लगा।

प्रेसिडेण्ट के सुझाव पर काँग्रेस की ओर से निरन्तर ऐसे कानून बनाये गये जिनसे 'छोटे आदमियों' को लाभ पहुँचता था। क्लेटन एन्टी-ट्रस्ट एक्ट द्वारा श्रमिकों का हड़ताल कर देने का अधिकार स्वीकार कर लिया गया और बड़े-बड़े व्यापारियों का यह अधिकार सीमित कर दिया जिसके द्वारा वे एक दूसरे के प्रबन्धक बोर्डों के सदस्य बन जाया करते थे—यह एक पुरानी प्रथा थी और इन्हीं 'उलझे हुए प्रबन्धक-बोर्डों से बड़े-बड़े व्यापारिक गठबन्धन हुए थे। अनुचित व्यापारिक प्रथाओं का पता लगाने और सुधारों का सुझाव रखने के लिए केन्द्रीय व्यापारिक कमिशन की व्यवस्था की गयी। किसानों के लिए फेड्रल लैंड बैंक बनाये गये जहाँ से वे कम दर पर ऋण ले सकते थे। व्यापारिक जहाज़ों पर काम करने वालों के वेतन बढ़ा दिये गये और उनके काम-काज की शर्तें अच्छी बना दी गयीं।

× × × ×

विल्सन ने एक बार कहा था "यह भाग्य का बड़ा भारी व्यंग्य होगा यदि मेरे शासन को मुख्यतया विदेशी मामलों से ही निपटना पड़े"। अमेरिका के संवैधानिक इतिहास में तो वह निष्णात् था, परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक का उसे कोई अनुभव न था। यह सचमुच एक बड़ा भारी व्यंग्य था कि विल्सन ने एक ऐसे समय में शासन की बागडोर सम्भाली जब संसार में बड़ी उथल-पुथल मच रही थी।

सब से पहले मेक्सिको की क्रान्ति ने विल्सन को परेशान किया। वहाँ निरंकुश ह्यूर्टा ने बलपूर्वक शासन पर अधिकार कर लिया और अपने विरोधी जनरल कैरेंज़ा का डट कर मुकाबला किया। यूरोप की सरकारों ने मैक्सिको में बहुत-सा धन लगाया था और जब उन्होंने देखा कि ह्यूर्टा ने देश में शान्ति स्थापित कर दी है तो उन्होंने ह्यूर्टा-सरकार को मान्यता दे दी और संयुक्त-राज्य को भी ऐसा करने के लिए कहा।

परन्तु आदर्शवादी विल्सन को ह्यूर्टा की क्रूर चालों पर बड़ा दुःख हुआ था और उस ने ह्यूर्टा को त्याग-पत्र दे देने के लिए कहा। हालात बिगड़ते गये, यहाँ तक कि अमेरिका की एक सेना ने वेराक्रुज़ पर अधिकार कर लिया। तब ह्यूर्टा ने कैरेंज़ा के पक्ष में पद-त्याग कर दिया। परन्तु वेराक्रुज़ छिन जाने से पश्चिमी गोलार्द्ध के छोटे-छोटे देश स्तब्ध रह गये और उन्हें बड़ी आशांकाएँ हुईं।

अमेरिका से भेजी गई युद्ध सामग्री की सहायता से नई सरकार ने मैक्सिको में शान्ति रखने का प्रयास किया। इस पर कैरेंज़ो का एक और विरोधी पंकोविला भड़क उठा; उसने छापा मारने वालों का उत्साही दल संगठित किया और "अमेरिकनों का नाश हो" के नारे लगाता हुआ वह सीमा पार कर अमेरिकी प्रदेश में आ गया। उसने कुछ सैनिकों और नागरिकों को मार भी दिया। संयुक्त राज्य की सेना ने उसका पीछा किया और महीनों मेक्सिको में उसकी खोज की, परन्तु वह पकड़ा न जा सका और अन्त में उसकी तलाश बन्द कर दी गई।

मेक्सिको का प्रश्न यद्यपि जटिल तथा चिन्ता का विषय था, परन्तु यूरोप में जो कठिनाइयाँ पैदा हो गयीं और विल्सन को जिनसे निपटना पड़ा, उनके मुकाबले में मेक्सिको की समस्या नगण्य थी। अगस्त १९१४ को शक्तिशाली जर्मनी ने दावा किया कि यूरोप के महाद्वीप पर फ्रांस, ब्रिटेन तथा रूस उसे घेर रहे हैं और बाक़ी संसार में भी सभी जगह उसके विस्तार में प्रतिबन्धक हैं और उसने अपने साथी आस्ट्रिया तथा हंगरी से मिल कर 'शक्ति-सन्तुलन' को बदल देने का महाप्रयास करने को उद्देश्य से युद्ध छेड़ दिया। युद्ध का

तात्कालिक कारण यह था कि सर्बिया के एक देशभक्त ने आस्ट्रिया के युवराज का वध कर दिया। आस्ट्रिया ने इसके लिए सर्बिया को दण्ड दिया। उधर रूस बल्कान में अपने साथी स्लाव लोगों की सहायता पर आ गया और जर्मनी ने आस्ट्रिया का पक्ष लिया। इस प्रकार यह युद्ध फैल गया। इटली, ब्रिटेन और फ्रांस ने रूस का साथ दिया तो उधर तुर्की और बल्गारिया दूसरी ओर जा मिले। संयुक्तराज्य ने मॅनरो सिद्धान्त की नीति का आचरण करते हुए, जिसके द्वारा उसने "यूरोप के देशों को परे रखा था", तटस्थ रहने की घोषणा कर दी।

आरम्भ में तो जर्मनी का पलड़ा भारी रहा, बेल्जियम के छोटे और असहाय देश को कुचलता हुआ पेरिस के द्वार तक पहुंच गया, जहाँ उसे रोक दिया गया। अमेरिका के अधिकाँश लोग जब समाचार-पत्रों में साथी-देशों की ओर से अभिमानी कैसर विलियम की सेनाओं के साहसपूर्ण विरोध के सम्बन्ध में पढ़ते तो यह फ्राँस और ब्रिटेन के साथ सहानुभूति करते। बहुत पहले से ही वे उनके साथ निकट का सम्बन्ध अनुभव करने लगे थे।

नेपोलियन के युद्धों की भाँति अब भी युद्धनिरत देशों ने एक दूसरे के बन्दरगाहों पर घेरा डाल दिया और अमेरिका-सरीखे तटस्थ देशों के जहाजों को जो युद्ध-सामग्री तथा खाद्य-पदार्थ ले जाया करते थे, युद्ध-क्षेत्र में पकड़ना शुरू कर दिया। परन्तु जहाँ ब्रिटेन की जलसेना, जो समुद्र पर प्रबल थी, अपने शत्रु की ओर जाने-वाले जहाज़ों को केवल पकड़ लेती और उनको किसी भांति हानि न पहुंचाती वहां, जर्मनी ने पनडुब्बियों का प्रयोग शुरु किया। समुद्र-तल से यह किश्तियाँ चुपके से आती और जहाज़ों को तारपीडो मार कर सरक जातीं; जहाज़ के नाविक तथा सवार वहीं डूब कर मर जाते।

अमेरिका के जहाज़ों पर दूसरों की अपेक्षा कम ही आक्रमण हुए; परन्तु अमेरिका के लोगों को अधिक क्रोध जिस बात पर आया वह यह थी कि विदेशी जहाज़ों के डूबने से जिन यात्रियों की मृत्यु होती उनमें अमेरिकी भी होते। ब्रिटेन के एक बड़े जहाज़ लुसितानिया को जब डुबो दिया गया तो उसमें साढ़े बारह सौ व्यक्ति थे, जिसमें स्त्रियाँ और बच्चे भी थे और इस जहाज़ में एक

सौ चौदह अमेरिकी थे। इस आक्रमण के लिए जर्मनी ने खेद प्रकट किया, पर साथ ही यह भी कहा कि यात्रियों के अतिरिक्त इस जहाज़ में युद्ध-सामग्री भी थी।

प्रेसिडेण्ट विल्सन ने पन-डुब्बी किश्तियों के आक्रमण के विरुद्ध जर्मनी को रोष-पत्र लिखे, परन्तु अस्पष्ट क्षमा-याचना तथा अधिक उत्तेजना के अतिरिक्त उनका कोई परिणाम न निकला। जर्मन इस पर बहुत क्रुद्ध थे कि अमेरिका बहुत अधिक ऋण देकर साथी-देशों को जीवित रख रहा है, क्योंकि ऋण लेकर वे खाद्य पदार्थ और युद्ध सामग्री मोल ले रहे थे और दूसरी ओर मध्य-शक्तियों को स्कन्डेनेविया के तटस्थ बन्दरगाहों द्वारा संयुक्तराज्य से स्वल्प सामान ही मिल सकता था। जब जर्मनी ने समुद्र में अपने आक्रमण तेज़ कर दिये तो अमेरिका में जनमत भी उसके विरुद्ध होने लगा। परन्तु ऐसा होते हुए भी १९१६ में विल्सन इस नारे पर चार्लेस इवान्स ह्यूजेज़ से जीत गया कि "उसने हमें युद्ध से बचाये रखा।"

परन्तु संयुक्त-राज्य को अधिक देर तक युद्ध से दूर न रहना पड़ा। जर्मनी की कुछ योजनाएँ पकड़ी गयीं जिनमें उस दशा में अमेरिका पर आक्रमण करने के लिए मैक्सिको तथा जापान को प्रेरणा दी गयी थी जब वह युद्ध में शामिल हो गया। इसके साथ ही अमेरिका में युद्ध-सामग्री तैयार करने के उद्योगों में जासूसी और तोड़फोड़ के षड्यन्त्र रचे जाने के प्रमाण भी मिले। जब जर्मनी ने अपनी नयी नीति की घोषणा की, जिसमें कहा गया था कि ब्रिटेन को नीचा दिखाने के लिए पनडुब्बी किश्तियों का बे-रोक प्रयोग होगा, तब प्रेसिडेण्ट विल्सन ने काँग्रेस को इस सम्बन्ध में कार्यवाही करने के लिए कहा और ६ अप्रैल १९१७ को काँग्रेस ने युद्ध की घोषणा कर दी।

युद्ध में कूद पड़ने के प्रत्यक्ष कारणों के अतिरिक्त प्रेसिडेण्ट को यह विश्वास होता जा रहा था कि यह युद्ध संसार के लोकतन्त्रीय राष्ट्रों तथा जर्मनी-सरीखे सैनिक तानाशाही देशों के बीच जीवन मरण का संघर्ष बन चुका है। विल्सन ने निर्णय किया कि अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में अमेरिका का काम यह है कि दूसरों का विनाश या उससे घृणा किये बिना लोकतन्त्रीय देशों को

विजय प्राप्त करायी जाय और राष्ट्र-संघ (लीग आफ़ नेशनज़) की स्थापना की जाय, जिसमें विजेता तथा पराजित समान रूप से लोकतन्त्रीय जगत् में भ्रातृ-भाव से रहें। इस प्रकार के संघ में युद्धों के मूल कारण राष्ट्रीयता साम्राज्य-वाद तथा गठबन्धनों द्वारा प्राप्त किये 'शक्ति-सन्तुलन' की समस्याएँ सदा के समाप्त हो जायँगी। १९१८ में सम्भावित शान्ति-सन्धि के लिए प्रेसिडेण्ड विलसन ने जो "चौदह-सूत्री" सुझाव रखा था, उसका आधार यही नीति थी।

इन आदर्शों से प्रेरित होकर संयुक्त-राज्य साथी-देशों की ओर से युद्ध में कूद पड़ा। इस समय रूस पराजित होकर पीछे हट रहा था और साथी-देशों पर बड़ा दबाव था। उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि करने के उद्देश्य से श्रमिकों तथा औद्योगिक को प्रेरित करने के लिए प्रेसिडेण्ट विल्सन को विशद् अधिकार दिये यये। और दोनों ने उसे सहयोग भी दिया। उद्योगपतियों ने मूल्यों में तथा अन्य क्षेत्रों में नियन्त्रण स्वीकार किया और श्रमिक-संस्थाओं ने अनौपचारिक रूप से, हड़ताल करने का अधिकार छोड़ दिया।

यद्यपि अमेरिका अपने साथी देशों को अरबों डालर के ऋण दे सकता था, सामान के जहाज़ों के जहाज़ भेज सकता था, विशेषकर अनाज तो बहुत दे सकता था, परन्तु सैनिकों को भेजना एक समस्या थी। उसकी अपनी सेना थोड़ी थी और सेना संगठित करने, उसे प्रशिक्षण देने तथा पर्याप्त मात्रा में ३,००० मील दूर युद्धस्थल में भेजना एक अत्यन्त कठिन काम था। फिर भी यह काम अत्यन्त त्वरित गति तथा परिश्रम से कर लिया गया। जर्मनी तथा आस्ट्रिया-हंगरी से आकर अमेरिका में बसे हुए लोग भी चुपके से अपने अन्य देश-वासियों की भाँति सेना में भर्ती हो गये। एक साल के भीतर फ्रांस में जनरल जॉन ज्रे पर्शिंग की कमान में ७००,००० अमेरिकी सिपाही पहुँच गये थे, इसके छः महीने बाद उनकी संख्या बीस लाख तक पहुँच गयी।

युद्ध की तैयारी में अमेरिका के इस वेग को देखकर मध्यवर्ती देश (जर्मनी और उसके साथी देश) स्तब्ध रह गये; उन्होंने युद्ध को शीघ्र ही समाप्त करने के उद्देश्य से १९१८ की बसन्त ऋतु में पूरी शक्ति से आक्रमण कर दिया।

साथी-देशों की सेनाओं के सुप्रीम-कमांडर फ्रांस के मार्शल फाश ने जहाँ कहीं भी आवश्यकता समझी अमेरिकी सैनिकों को नियुक्त कर दिया और वे भी शैठुथाइरी और बैल्यूवुड की लड़ाइयों में बड़ी वीरता से लड़े और विदेश के साथी सिपाहियों में उनका बड़ा यश हुआ।

जब जर्मनों का आगे बढ़ना रोक दिया गया तो अमेरिकी सैनिकों को एक पृथक् सेना में संगठित कर, लड़ाई के मोर्चे का एक भाग सौंप दिया गया। भयंकर आक्रमण करके वे सेंट मिहील के बीच तक जर्मनी की सुदृढ़ रक्षापंक्तियों में जा घुसे और आगे बढ़ कर मशीन-गनों से पूरित न्यूज़ अर्गोन तक चले गये। इस आक्रमण में अमेरिका के बारह लाख सैनिक शामिल थे। सभी मोर्चों पर जर्मन हार कर पीछे हटने लगे और ११ नवम्बर १९१८ को युद्ध-विराम समझौते के उपरान्त लड़ाई बन्द हो गई। यद्यपि संयुक्त राज्य इस महान् युद्ध में बाद में शामिल हुआ और दूसरों के मुकाबले में अमेरिका का जानी नुकसान भी कम हुआ, फिर भी अमेरिका ने जन, धन तथा सामान से जो सहायता दी, उससे यूरोप की लड़ाई में साथी-देशों का पलड़ा भारी हो गया और जैसा कि लोग चाहते थे "संसार में लोकतन्त्रवाद सुरक्षित हो गया।"

× × × ×

युद्ध तो बन्द हो गया और जर्मनी को उन प्रदेशों से हटा दिया गया जहाँ पर उसकी सेनाएँ छा गईं थीं, परन्तु शान्ति-सन्धि करना अभी बाक़ी था। इस सन्धि में प्रेसिडेण्ट विल्सन ने अपने "चौदह-सूत्र" रखने का निश्चय किया था, जिनमें कहा गया कि राष्ट्र आपस में गुप्त-सन्धियाँ न करें, वे निशस्त्रीकरण करें। समुद्र पर सबको आज़ादी हो और सबसे महत्वपूर्ण यह कि राष्ट्र-संघ का निर्माण हो। १९१९ के शुरू में ही प्रेसिडेण्ट विल्सन सन्धि-वार्ता में उपस्थित होने के लिए पैरिस पहुँच गये थे।

अमेरिका के संविधान में यह व्यवस्था है कि प्रेसिडेण्ट सेनेट के दो-तिहाई सदस्यों की अनुमति से सन्धि कर सकता है। १९१८ के चुनावों में विल्सन ने देश को डेमोक्रेटिक सदस्य चुनने के लिए कहा था जिससे उसका कार्य सरल हो सके। सम्भवत: उसके कठोर व्यवहार से चिढ़ कर लोगों ने रिपब्लिकन सदस्य

चुने और सेनेट में उन्हीं का ज़ोर हो गया। शान्ति-वार्ता के लिए जाने वाले प्रतिनिधि-मण्डल मे सेनेट के सदस्य न ले जाकर उसने उनको और भी विरोधी बना लिया।

विदेश में विल्सन 'चार बड़ों' के अन्य सदस्यों से मिला—ब्रिटेन के लॉयड जार्ज, फ्रांस के क्लेमैन्स्यु और इटली के आर्लैण्डो। इनके देशों को शत्रु ने बड़ी क्षति पहुंचाई थी, इस कारण उनके विचार विल्सन के उदार सुझावों के साथ मेल न खाते थे, जिनमें कहा गया था कि शत्रु को उदार शर्तें पेश की जायँ। वे कहते थे जर्मनी को अपने किये की सज़ा मिलनी ही चाहिए; वह कोयले और लोहे की खानें छोड़ दे; उसके उपनिवेश छीन लिये जायँ। इनमें से अधिकांश बातों पर विल्सन ने उनकी मान ली ताकि वह राष्ट्रसंघ के सम्बन्ध में अपनी बात मनवा सके।

जैसा कि अन्त में वर्सोई की सन्धि के अनुसार प्रबन्ध किया गया; संघ के लिए नौ सदस्यों की कार्य-समिति बना दी गई; इसमें ब्रिटेन, फ्रांस, संयुक्त राज्य इटली और जापान को स्थायी सदस्यता दी गई। समिति के अधिकांश निर्णयों के लिए सभी सदस्यों का सहमत होना आवश्यक था। आक्रमण की मनाही कर दी गयी; यदि कोई देश सदस्य-राष्ट्र पर आक्रमण कर दे तो उसपर कार्यवाही की सिफारिश समिति करे; यह कार्यवाही संयुक्त आर्थिक बहिष्कार के रूप में हो और यदि इससे कोई लाभ न हो तो यह सैनिक रूप में भी हो सके। इस समिति के अतिरिक्त एक परामर्शदाता सभा, अन्तर्राष्ट्रीय श्रम सचिवालय और न्याय की अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय की व्यवस्था भी की गई यह न्यायालय राष्ट्रों के आपसी झगड़ों में निर्णय देने के लिए है।

जून १६१६ में राष्ट्रसंघ के सूत्र समेत वर्सोई की सन्धि पर साथी-देशों तथा जर्नमी ने हस्ताक्षर कर दिये जर्मनी ने वैसे प्रतिवाद किया कि उचित सन्धि के लिए विल्सन के कार्यक्रम की उपेक्षा की गई है। सबसे पहले प्रेसिडेण्ट विल्सन ने ही हस्ताक्षर किये। उसे विश्वास था कि उसने अपनी ओर से पूरा पूरा यत्न कर दिया है और इस सन्धि के कारण भविष्य में युद्ध

न हुआ करेंगे । हस्ताक्षर दर देंने के उपरान्त उसने सेनेट को एक सन्देश में कहलवा भेजा कि इस सन्धि की स्वीकृति दी जाय ।

परन्तु इस निर्देश का पालन न हुआ । बहुत से सेनेटरों ने इसे अपना निरादर और अपमान समझा और उन्होंने सैद्धान्तिक तौर पर सन्धि के कई भागों पर आपत्ति उठाई । कुछ सदस्यों ने तो राष्ट्र-संघ का ही घोर विरोध किया । वे कहते क्या इससे सार्वभौमिक सत्ता घट न जायगी । ब्रिटेन और उसके उपनिवेशों को छः वोट क्यों मिलें और अमेरिका को केवल एक क्यों ? यदि संयुक्तराज्य इसमें शामिल हो गया तो क्या वह संसार की पुलिस-कार्यवाहियों' में फँस न जायगा ? मैसाटूसेहस् के सेनेटर हैनरी कैबट लाँज के नेतत्व में रिपब्लिकन सदस्यों ने स्वीकृति से पूर्व कई परिवर्तन करने की मांग की ।

विल्सन रत्ती भर झुकने के लिए तैयार न था । उसने घोषणा की कि यदि कोई भी तबदीली की गई तो उससे सन्धि निर्बल हो जायगी । वह सेनेटर की अवहेलना कर लोगों से इस सम्बन्ध में बात करने के लिए पेरिस से लौट आया । अधिक काम और दबाव के कारण प्रेसिडेण्ट अपने भाषणों के दौरे में ही एक दिन थक कर बीमार पड़ गया और फिर कभी सार्वजनिक जीवन में पूर्ण रूप से भाग न ले सका । सेनेटे ने उसपर हठ न छोड़नें का दोष लगाया और सदा के लिए शन्ति-सन्धि को अस्वीकृत कर दिया । इतनी देर में दूसरे साथी-देशों ने इसकी स्वीकृति दे दी थी । दो वर्ष के उपरान्त संयुक्त राज्य ने जर्मनी के साथ एक पृथक् संन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर किये ।

ऐसा प्रतीत होता था कि अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के अग्रदूतों के रूप में काम करने से अमेरिका के लोगों कुछ थक से गये थे । मरणासन्न वुडरो विलसन के शिष्यों की ओर ध्यान न दिया गया जब उसने बड़े खेद से कहा था "संसार का नेता बनने का अवसर हमें मिला था, हमने इसे खो दिया है, और शीघ्र ही इसका दुःखद परिणाम हम सब के सामने प्रकट हो जायगा ।"

———

अध्याय ६

पुनः आर्थिक निर्माण की ओर

१६१८ में युद्ध-विराम-समझौते के उपरान्त अमेरिका में लोगों को युद्धोत्तर संकटकालीन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। राष्ट्रीय ऋण जो पहले १०० करोड़ डालर से कुछ कम ही था युद्ध के कारण तब बढ़कर २५२५ करोड़ डालर तक पहुँच गया था। इतना अधिक ऋण इससे पहले कभी नहीं लिया गया। फिर भी यह आशा थी कि १००० करोड़ डालर का जो ऋण साथी देशों को दिया गया है वह वापस मिलने पर घाटा कम रह जाएगा।

अब लोगों को रूस की ओर से भय पैदा हो गया। १६१७ में क्रेमलिन की बागडोर कम्यूनिस्टों ने सम्हालकर रूस में अपने हाथ मज़बूत कर लिये थे। सावधानी से संगठित तथा संचालित 'गुप्त-अड्डों' द्वारा साम्यवादी आन्दोलन संसार भर में सभी जगह ज़ोर पकड़ने लगा। यह बताना कठिन हो गया कि कौन साम्यवादियों का एजन्ट है और नहीं, विशेषकर जब 'संसार के औद्योगिक श्रमिक' नाम की एक अन्य वाम-पक्षीय संस्था बनी और उसका प्रभाव बढ़ने लगा। परन्तु अमेरिका में शान्ति-कालीन उत्पादन स्तर पर आने तक के कठिन समय में बहुतसे स्वतन्त्रतावादी और आन्दोलनकर्ता जेलों में भेज दिये गये, कई एक को देश-निकाला दे दिया गया।

श्रम-संकट का कारण यह था कि युद्धकाल में चीज़ों की कमी आ जाने के कारण भाव एकदम बहुत बढ़ गये थे। खर्च बढ़ जाने पर श्रमिक वेतन बढ़ाने की माँग कर रहे थे और जान एल० लेविस के नेतृत्व में कोयले की खानों में कई महीनों तक हड़ताल रहने के उपरान्त सरकार ने समझौता कराया था।

१६१६ में पुनर्व्यवस्था के इस समय में संयुक्त राज्य संविधान में १८वां संशोधन स्वीकृत हुआ, जिसके अनुसार मद्य-पेयों का उत्पादन तथा

उनके विक्रय का निषेध कर दिया गया। इसका उद्देश्य चाहे कितना भी अच्छा क्यों न था, परन्तु इस संशोधन से मद्यपान रोका न जा सका। चोरी-छिपे किये जाने के कारण मद्यपान और भी आर्कषक हो गया। चोरी शराब तैयार करने तथा बेचने का धन्धा बहुत बढ़ गया और प्रतिस्पर्धा की होड़ में गुन्डे एक दूसरे से लड़ने-मरने लगे।

ऐसा प्रतीत होता था कि सारे देश का नैतिक पतन हो गया है। युद्ध से वापस आने वाले सिपाहियों ने अपने सम्बन्ध में यह कहा कि 'उनकी पीढ़ी तो यों ही गयी' और उन्होंने कमी पूरी कर लेने की प्रतिज्ञा कर ली। युद्धोत्तर-काल में थोड़े समय के लिए जो मन्दी आयी उससे भी लोगों की उत्तेजना कम न हुई और इसके बुरे प्रभाव से किसानों को कई वर्ष तक कठिनाइयां झेलनी पड़ीं।

× × ×

१६२० में प्रेसिडेन्ट के निर्वाचन के समय मुख्य प्रश्न यह था कि विल्सन ने स्वदेश में जो 'नयी आज़ादी' लायी है और विदेश में राष्ट्रसंघ बनाया है उसी की पुष्टि की जाय या "पहले जैसी साधारण परिस्थिति" बना दी जाय जैसा कि रिपब्लिकन दल के लोग कह रहे थे। वे चाहते थे कि युद्ध के पहले सी परिस्थिति बना दी जाय, अमेरिकी उद्योग की सुरक्षा के लिए भारी तट-कर लगा दियें जायँ अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में कम भाग लिया जाय, अपने हितों की ही अधिक चिन्ता की जाय और मुख्यतया पृथक् रहा जाय। इस चुनाव में पुरुषों के साथ स्त्रियाँ भी थीं, जिन्हें कई वर्ष संघर्ष करने के उपरान्त १६वें संवैधानिक संशोधन के परिणामस्वरूप मताधिकार दिया गया था।

चुनाव के परिणाम से स्पष्ट हो गया कि लोगों को लोकतन्त्रीय आदर्शवाद और संसार की रक्षा के प्रति कोई उत्साह तथा चाव न रहा था। रिपब्लिकन उम्मीदवार ओहियो के सेनेटर वारन जी० हार्डिंग ने अपने विरोधी ओहियो के ही गवर्नर जेम्स एम० काक्स को हरा दिया। हार्डिंग सम्पादक था, और एक छोटे नगर में रहता था। अपने सौम्य तथा लोकप्रिय व्यक्तित्व के कारण वह

'अमेरिकी प्रतिरूप' था जिससे यह आशा की जा सकती थी कि वह देश को सुरक्षित समृद्धि की ओर अग्रसर करेगा।

रिपब्लिकन दल की ओर से शासन सम्हालते ही सरकार ने अपने वचन पूरे करने शुरू कर दिये। उसने तट-कर बढ़ा दिये और संयुक्त राज्य में चारों ओर भारी आर्थिक प्रतिबन्ध लगा दिये। देश के भीतर इसका प्रभाव बहुत अच्छा पड़ा, उद्योग-धन्धों को बड़ा लाभ हुआ, कारखानों में उत्पादन बढ़ा और लोगों को खूब काम-काज मिलने लगा। बेकारी दूर हो गई। परन्तु दूसरी ओर यूरोप के देशों के लिए अमेरिका की मंडिया बंद हो गयीं और इस प्रकार वे उसे माल न बेच सकते थे, जिससे वे डालरों के ऋण से मुक्त हो सकते। आर्थिक विशेषज्ञों ने बार-बार संयुक्त राज्य को चेतावनी दी कि यदि उसे ऋण वसूल करने हैं तो तट-कर कम कर दिये जायँ।

बाकी संसार से पृथक् होने की नीति के अनुरूप लोगों के बाहर से आगमन पर भी नियन्त्रण कड़ा कर दिया गया। न्यूयार्क के बन्दरगाह पर जहां आज़ादी की मूर्ति से लांघ कर विदेशियों की बाढ़ इस शताब्दी के आरम्भ में आई थी; अब वहीं आने वालों की संख्या घट कर नाम मात्र ही रह गई। ऐसा करने पर यह तर्क दिया गया कि विदेश से आगमन रोक देने से अमेरिका के लोगों के लिए पर्याप्त काम रह जायेंगे। इन प्रतिबन्धों को कठोरता से लागू करने में विदेश को प्रत्येक चीज़ के प्रति अविश्वास तथा लोगों में सनकीपन के भाव बढ़ जाने का भी हाथ था।

ऐसा होने पर भी संयुक्त राज्य ने दूसरे देशों के साथ मिल कर निःशस्त्रीकरण कराने की चेष्टा की और ऐसे साधनों से विश्व-शान्ति के लिए यत्न किये जिनसे उसके अपने ऊपर कोई उत्तरदायित्व न आता हो। राष्ट्रसंघ के बाहर प्रधान हार्डिंग के योग्य विदेश-मन्त्री चार्लस इवान्स ह्यूजेज़ ने वाशिंगटन में विदेश के प्रतिनिधियों का सम्मेलन बुलाया। यह सम्मेलन १६२१-२२ में हुआ और इसमें प्रमुख राष्ट्रों ने अपनी-अपनी जल-सेनाओं को एक स्वीकृत योजना के अनुसार घटाना स्वीकार कर लिया। इसके अतिरिक्त कई अन्य भी समझौते कर लिये गये जिनके अनुसार चीन और दूर-पूर्व में राष्ट्रों के हित

निश्चित कर दिये गये जिससे भविष्य में कोई उलझन न हो। एक अन्य सन्धि के अधीन युद्ध के समय में व्यापारी जहाज़ों पर पनडुब्बियों के आक्रमणों को मनाही कर दी गई।

वाशिंगटन कांफ्रेन्स हार्डिंग के शासनकाल की एक बड़ी सफलता थी। अन्त में इस शासन-काल की अच्छी बातें लोगों को कम ही याद रहीं; और अपयश बहुत फैल गये। इस प्रकार के भ्रष्टाचार फिर कभी न हुए; गृह-युद्ध के उपरान्त ग्रांट के समय में हुए भ्रष्टाचार भी उनके सामने गौण हो गये। भूतपूर्व सैनिकों के कार्यालय के डायरेक्टर पर दो लाख डालर गबन करने का दोष सिद्ध हो गया और उसे केन्द्रीय बन्दीखाने भेज दिया गया। दो और अधिकारियों ने छानबीन के भय से आत्महत्या कर ली। इन सबसे अधिक बदनाम 'टीपाट डोम' का मामला था। पता चला कि गृह-मंत्री अल्बर्ट फाल ने प्रेसिडेन्ट को मना लिया कि जल-सेना के तेल-स्रोत गृह-विभाग को सौंप दिये जायं। फिर फ़ाल ने इन प्रदेशों को जिनमें टीपाट डोम और वियोमिंग भी थे। कुछ प्राइवेट व्यापारियों को ठेके पर दे दिये गये। जिन्होंने इस सुविधा के लिए उसे रिश्वत दी थी। सरकारी काम में इस प्रकार के साहसपूर्ण भ्रष्टाचार पर फ़ाल को बाद में एक वर्ष के लिए जेल भेज दिया गया और एक लाख डालर जुर्माना हुआ।

१६२३ में प्रेसिडेण्ट हार्डिंग की अकस्मात् मृत्यु से भ्रष्टाचार सम्बन्धी उसकी चिन्ताएं समाप्त हो गईं; अब तो उसका नाम भी इस सम्वन्ध में लिया जाने लगा था। उसके उपरान्त वाइस-प्रेसिडेण्ट काल्विन कूलिज ने शासन की बागडोर सम्हाली। वह न्यू-इंगलैड का रहने वाला था; शान्त और मितभाषी परन्तु स्वभाव का हठीला था। उसकी दियानतदारी पर कोई सन्देह न था; और उसकी नीति अनुदार रही।

× × × ×

१६२० के उपरान्त इतनी समृद्धि का समय था कि सरकार ने आय-कर में भारी कमी भी की, फिर भी उसकी आमदनी बढ़ती ही गई। सरकारी खजाना भरा था और राष्ट्रीय ऋण २५०० करोड़ से घट कर १६०० डालर

ही रह गया। इस परिस्थिति से सन्तुष्ट होकर प्रेसिन्डेट कूलिज ने आर्थिक दिशा में कुछ विशेष न कर उसे अपनी ही गति पर छोड़ दिया। और उन्होंने एक बार अर्थपूर्ण ढँग से कहा "अमेरिका का काम ही व्यापार है।"

इस स्वर्णयुग की विशेषता यह थी कि उत्पादन स्तर बहुत अधिक बढ़ गया। मोटरें, रिफ्रजरेटर, धुलाई की मशीनें, रेडियो और हर प्रकार की मशीनें धड़ाधड़ बनाई जाने लगीं। ऐसा प्रतीत होता था कि वैज्ञानिक दृष्टि से उत्पादन-कला ने ऐसी पूर्ण सिद्धि को प्राप्ति कर ली है कि उसमें एक क्षण या एक भी गति व्यर्थ नहीं जाती।

इन वस्तुओं की मांग अधिकतर व्यवसायिकों में ही थी, या उन श्रमिकों में जो स्वयं काम करते थे। विश्वास किया जाने लगा कि मांग बढ़ाने के लिए श्रमिकों के वेतन बढ़ने चाहिएँ जिससे वे यह वस्तुएँ अधिक खरीद सकें और इससे अधिक उत्पादन की मांग हो। यह असीम चक्र था—"गरीबों के घर" शीघ्र ही समाप्त हो जायँगे और "प्रत्येक गेराज में दो-दो मोटरें होंगी" ऐसा बड़े आल्हद से कहा जाने लगा था।

समृद्धि के इस आन्दोलन को बढ़ावा देने के लिए उत्पादकों ने बड़े ज़ोरदार प्रचार शुरू किये। साबुन और सिगरटों के गुणों की रेडियो तथा समाचार-पत्रों द्वारा विज्ञप्ति की जाने लगीं और जिस किसी ढंग से भी लोगों को खरीदने के लिए प्रेरित किया जा सकता था, वह प्रयोग में आने लगा। ग्राहकों को बता दिया गया कि बड़ी-बड़ी चीजों के लिए जैसे फर्निचर इत्यादि पहले ही मूल्य चुका देना आवश्यक नहीं—किस्तों में मूल्य चुकाने की बड़ी उदार शर्तें पेश की गयीं हैं।

परन्तु अमेरिका की मंडियां बड़ी होते हुए भी, बढ़ते हुए अमेरिकी उद्योग के लिए पर्याप्त ग्राहक न जुटा सकीं। उत्पादकों के लिए अधिक लाभ प्राप्त करने के विचार से माल का विदेश की मंडियों में भेजा जाना आवश्यक हो गया। प्रश्न यह था कि माल का मूल्य किस भांति चुकाया जायगा? इसका एक तरीका यह भी था कि तटकर कम कर दिये जायें और मुक्त व्यापार हो और इस प्रकार विदेशों को अवसर दिया जाय कि वे अपना माल

अमेरिका में बेचें और उसके बदले में अमेरिकी माल मोल लें। दूसरी विधि यह थी कि उन देशों को अधिक उधार दिया जाय, जिससे अर्द्ध-दिवालिये देश अमेरिकी माल खरीद कर और ऋण में फँस जाएँ। अपने देश के उद्योग की रक्षा के लिए संयुक्त राज्य ने दूसरी विधि अपनाई और विदेश में जहां माल भेजा, वहां माल खरीदने के लिये उधार भी दिया।

१६२४ के चुनाव में रिपब्लिकन दल का अधिक विरोध न हुआ। काल्विन कूलिज ने अनुदार डेमोक्रेट जॉन डेविस को हरा दिया। दोनों दलों के कार्यक्रम से असंतुष्ट होकर एक उदार वर्ग ने प्रोग्रेसिव पार्टी के नाम से दल बना कर राजनीति में भाग लेना शुरू किया। इनको समाजवादियों का भी समर्थन प्राप्त था और इस नये दल का नेता ला फोलेट था। इसका कार्यक्रम यह भी था कि रेलरोडों पर सरकारी मिलकियत हो, और संघ की ओर से किसानों को सहायता दी जाय; परन्तु इसके पक्ष में केवल ५० लाख वोट आये जबकि कूलिज को १ करोड़ ६० लाख मिले और डेविस को ८० लाख।

ऐसा होने पर भी असन्तुष्ट लोगों की पुकारें सारे देश में अधिकाधिक सुनी जाने लगीं। किसानों की दशा खराब थी; युद्धकाल में उन्हें अधिकतम उपज के लिए प्रेरित किया गया था और नई मशीनों तथा अधिक अच्छी वैज्ञानिक विधियों से उनकी उपज और भी बढ़ गई थी। परन्तु अब शान्ति-काल में अनाज तथा मांस संसार की मंडियों में बड़े कम दामों पर जा रहे थे और सरकार ने अधिक उपज में कोई सहायता देने से इनकार कर दिया, जिसके लिए मैक्नेरी-हाजेन बिल में मांग भी की गई थी। अपने विशेष अधिकारों से इस बिल को अस्वीकार करते हुए प्रेसिडेण्ट कूलिज ने घोषणा की थी कि मैं किसानों को ऋण देने के पक्ष में हूँ जिससे वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें; परन्तु साथ ही उन्होंने प्रायः संचय तथा मांग के स्वाभाविक सिद्धान्त में इस भांति दखल देने के विरुद्ध चेतावनी भी दी थी कि सरकार दामों को कायम रखने की कोई चेष्टा करे।

कूलिज के शासनकाल के अन्तिम वर्षों में दो अत्यन्त महत्वपूर्ण घटनाएँ हुईं। पहली यह कि कर्नल चार्लेस ए० लिंडबर्ग ने न्यूयार्क से पेरिस तक हवाई

जहाज़ में निरन्तर एक ही बार में उड़ान की। यह युग का एक महान्तम कारनामा था। दूसरे कैलॉग-ब्राइंड समझौते पर हस्ताक्षर हुए, जिसके द्वारा युद्ध का निषेध कर दिया। फ्रांस और अमेरिका के इस संयुक्त सुझाव पर ५६ राष्ट्रों ने स्वीकृति दे दी कि वे आत्मरक्षा के अतिरिक्त कभी भी शस्त्र ग्रहण न करने की सौगन्ध करते हैं। जब यह समझौता लागू हुआ तो संसार में स्थायी शान्ति की सम्भावनाएँ बहुत बढ़ गईं।

× × × ×

१६२७ में जब पत्रसंवाददाताओं ने प्रेसिडेण्ट कूलिज से पूछा कि वह चार साल और शासन करना चाहेगा, तो मितभाषी प्रेसिडेण्ट ने उत्तर दिया "मैं चुनाव में खड़ा नहीं हो रहा" उसके स्थान पर रिपब्लिकन दल ने व्यापार मन्त्री हर्बट सी०हूवर को उम्मीदवार चुना। वह खानों का इन्जीनियर था और उसने कई वर्ष विदेश में अमेरिकी व्यापार बढ़ाने में बिताये; उसने संसार की मंडियों का स्वयं ज्ञान प्राप्त किया था। वह कुछ औपचारिक तथा हठीला था, परन्तु फिर भी उससे यह आशा ज़रूर थी कि वह बड़ा योग्य शासक सिद्ध होगा और देश को अधिक सम्पन्नता की ओर अग्रसर करेगा।

डेमोक्रेट दल ने न्यूयार्क के गवर्नर एल्फ्रड ई० स्मिथ को चुना। वह न्यूयार्क शहर के एक विनीत कटुम्ब से सन्बम्ध रखता था और बड़ा हँसमुख और शानदार व्यक्ति था। "प्रसन्न योद्धा" ने जैसा कि वह कहलाता था जलशक्ति के विकास के लिए संघीय सरकार की ओर से प्रयत्न करने का कार्य-क्रम लोगों के सन्मुख रखा; परन्तु चुनाव के समय मुख्य प्रश्न स्मिथ का रोमन कैथोलिक मत का अनुयायी होना बन गया और साथ ही वह मद्य निषेध-कानून में कुछ संशोधन करना चाहता था। इन दोनों बातों पर दक्षिण के लोगों को आघात पहुंचता था। वह अभी तक गृह-युद्ध और 'कार्पेटबैग' वालों की स्मृति में डेमोक्रेट उम्मीदवारों को ही वोट देते आ रहे थे। स्मिथ के इस कार्यक्रम पर अमेरिका के प्रोटेस्टेंट मत के लोगों में भी काफ़ी चिन्ता बन गयी। बड़े साफ़ शब्दों में कहा जाने लगा कि यदि स्मिथ जीत गया तो संयुक्त राज्य की नीतियों का निर्देशन इटली में वेटिकन से पोप द्वारा होगा।

चुनाव में मतदाताओं ने बड़ी भारी संख्या में हूवर के पक्ष में वोट दिये और जब से पुनर्निर्माण का कार्य शुरू हुआ था, कई दक्षिणी राज्यों ने अब पहली बार रिपब्लिकन उम्मीदवार को वोट दिये। नये-नये प्रेसिडेन्ट ने बड़े विश्वास के साथ पद सम्हाला, और कहा "अपने देश के भविष्य के सम्बन्ध में मुझे कोई आशंका नहीं है; उस पर उज्जवल आशाएँ लगी हैं।"

निस्संदेह उस समय सभी जगह विश्वास था और लोगों को धन कमाने का एक नया ढंग मिल गया था। बड़ी-बड़ी कार्पोरेशनों की हुँडियां न्यूयार्क के शेअर बाज़ार तथा वाल स्ट्रीट की अन्य मंडियों से बड़ी सुगमता से मिल सकती थीं और व्यापार के बढ़ने के कारण इन हुंडियों का मूल्य बढ़ता ही जा रहा था। एक चिट्ठी या टेलिफ़ोन पर दो शब्द कह देने से दलालों की फर्में शेअर खरीद लेती और प्रतिदिन इनका दाम बढ़ता ही गया। अपनी कमीशन बनाने के लिए दलाल नये-नये सट्टेबाजों से इन हुंडियों का लेन-देन करवाते। वे अपने ग्राहकों को तत्कालिक कुछ लाभ भी दिलवा देते। जिसका परिणाम यह हुआ कि अमेरिका के लोग तथा विदेश के भी बहुत से पूँजीपति अधाधुन्ध इन हुँडियों को ख़रीदते गये, यहाँ तक कि उनके दाम असली मोल से बहुत बढ़ गये।

इसका परिणाम यह हुआ कि १९२९ की शरद् ऋतु से जब इन हुंडियों के मूल्य अधिकतम थे और साहूकार तथा लोग हैरान थे कि यह वृद्धि कब तक रहेगी। अचानक यह सारा व्यापार बैठ गया। सन्देह की एक लहर ने हुंडियों के बाजार को बन्द करा दिया और बड़ी भारी मन्दी ला दी जिसने राष्ट्र को सम्पन्नता से गिरा कर लगभग विनाश तक ही पहुंचा दिया। मंडी में प्रथम गड़बड़ १९ अक्टूबर को हुई। इसके उपरान्त खलबली फैल गयी और दलालों ने अपने ग्राहकों से अधिक छूट माँगनी शुरू कर दी और जब वह न मिली तो जिस किसी भाव पर भी हुआ हुंडियां बेच दीं। दस दिन के भीतर उनका मूल्य पहले दाम का पाँचवा भाग रह गया और लाखों की जायदादें नष्ट हो गयीं।

देश ने बड़ी अस्थिरता में सिर झाड़ा और इस उथल-पुथल के परिणामों का अवलोकन शुरू किया। निस्संदेह धन तो खो गया था, परन्तु सम्पन्नता के

आधार उद्योग तो वैसे ही खड़े थे ! वे अब भी लोगों की सेवा के लिए तत्पर थे। तो फिर चिन्ता किस बात की थी, सिवाय इसके कि जमा किए हुए धन का कुछ समय के लिए नाश हो गया था।

आशावादी लोगों ने कुछ इस ढंग पर सोचा; परन्तु वे यह न समझ सके कि वितरण-व्यवस्था दूषित है और जहाँ व्यापारी अपना माल बेचने का यत्न कर रहे थे वहाँ पर लोगों में माल मोल लेने का सामर्थ्य ही नहीं था। शेअर बाज़ार के पतन से जो संतुलन बिगड़ा तो मंडियों में व्यापार कम ही होता गया। लोगों ने नयी मोटरों के आर्डर बन्द कर दिये, जो नये सूट खरीदने या बनवाने के लिए उन्होंने आर्डर दिया था वे भी रद्द कर दिये, इससे उद्योग धन्धों पर असर पड़ा। उत्पादन बड़े वेग से कम हो गया। कारखाने बन्द हो गये और लाखों लोग मुफ्त में रोटी पाने के लिए कतार में खड़े होने लगे। १९३२ के अन्त तक १ करोड़ २० लाख से अधिक लोग बेकार और हताश थे, बैंक टूट रहे थे रेहनें पहले से हो रही थीं और देश पर आ पड़े इस भयानक संकट का कोई अन्त न दीख रहा था।

यह बड़ी भारी मंदी सारे संसार में फैल गयी; क्योंकि उदार साहूकार 'चाचा सैम' ने उधार देने बंद कर दिये और स्मूट-हाले एक्ट द्वारा तट-कर इतने अधिक बढ़ा दिये जितने वे पहले कभी न थे। जर्मनी का दिवाला पिट गया उसने उग्र फ़ासिस्ट एडोल्फ़ हिटलर पर आशाएँ लगायीं कि वह उसे इस संकट से निकालेगा। इंगलैंड ने मुद्रा का स्वर्ण-आधार बंद कर दिया जिस से विदेशों को सोने के एक औंस के बदले में अधिक अंग्रेजी मुद्रा मिल सके और उसका व्यापार बढ़े। प्रशान्तमहासागर के दूसरी ओर जापान के धनी बस्ती वाले उद्योगी देश ने विश्व-व्यापी संकट से लाभ उठाते हुए चीन पर आक्रमण करके मंचूरिया पर अधिकार कर लिया और इस प्रकार कैलांग-ब्राइंड समझौते तथा अन्य सन्धियों का भंग कर दिया।

व्यापार में मन्दा पड़ते ही प्रेसिडेन्ट हूवर ने अमेरिका के लोगों में यह विश्वास पैदा करने की चेष्टा की कि वास्तव में परिस्थिति बड़ी गम्भीर नहीं है। देश में पहले भी इस भाँति के संकट आते रहे हैं और सम्पन्नता "थोड़ी

ही दूर है" । परन्तु ज्यों-ज्यों लोगों के कष्ट और उनकी ग़रीबी बढ़ती गयी, श्री हूवर ने भी आर्थिक शक्तियों को स्वछन्द छोड़ने की परम्परागत रिपब्लिकन पद्धति को त्यागने का निश्चय कर लिया और निश्चित तथा प्रत्यक्ष कार्यक्रम शुरू किया । उसने कहा कि युद्ध कालीन विदेशी ऋणों की वसूली स्थगित कर दी जाय । उसने कांग्रेस को मनाया कि 'पुनर्निर्माण वित्त कार्पोरेशन' बनायी जाय जो टूट रहे बैंकों को उधार देकर उनकी रक्षा करे । इस भांति रेलरोड़ों तथा अन्य उद्योगों की भी सहायता करे । होम-ओनर्स लोन कार्पोरेशन उन लोगों को उधार देने के लिए स्थापित की गयी जिन्हें यह भय बन गया था कि सम्भवत: उनको अपने मकानों से निकाल दिया जायगा ।

फिर भी हूवर का यह कार्यक्रम अपर्याप्त ही समझा गया । उस समय राष्ट्र आत्म-विश्वास खो चुका था और अस्तव्यस्तता की ओर ही लुढ़क रहा था। जब देश में १९३२ के चुनाव हुए तो हूवर दूसरी बार फिर खड़ा हुआ; परन्तु यह पहले ही निश्चित हो गया था कि उसका शासनकाल समाप्त हो गया है ।

× × × ×

डेमोक्रेट दल ने अब की बार बड़ी ऐसी स्थिति में शासन सम्हाला और न्यूयार्क का गवर्नर फ्रैंकलिन डिलानो रूजवेल्ट प्रेसिडेण्ट बना । वह थियोडोर रूजवेल्ट का दूर से रिश्ते में चचेरा भाई था और एक धनाढ्य व उच्च वैभवशाली कुल से सम्बन्ध रखता था; वह हावर्ड यूनिवर्सिटी का ग्रेजूएट था और विल्सन के आधीन जलसेना का उपमन्त्री रह चुका था । १९२० के चुनाव में डेमोक्रेट दल ने उसे वाईस प्रेसिडेन्ट के पद के लिए चुना था । छोटी अवस्था में पक्षाघात हो जाने के कारण वह अपनी टाँगों से ठीक भांति काम न ले सकता और चलने में उसे बड़ी कठिनाई होती थी ।

डेमोक्रेटिक दल के कार्यक्रम में यह कहा गया था कि परस्पर व्यापारिक समझौते किये जायँगे । केन्द्रीय सरकार की ओर से किसानों और बेकारों को सहायता मिलेगी । बैंकों और स्टाक की मन्डियों पर सरकारी नियन्त्रण होगा मद्यनिषेध समाप्त होगा और सरकारी व्यय कम कर दिये जायँगे । अन्तिम के सिवाय बाकी सभी वचत इस भांति परे निभाये गये कि लोग

चकित रह गये; क्योंकि अब 'बड़े-बड़े धन्धों' को एक ओर कर दिया गया और 'बड़ी सरकार' ने उनका स्थान ले लिया। यह शासन लोगों के जीवन में छा गया। उनको धन दिया गया। आयकर की दरें बढ़ा दी गये, उद्योग-धन्धों में वेतन तथा मूल्य पर नियन्त्र किया गया और किसानों को बता दिया गया कि वे कितने एकड़ भूमि में कृषि करें। यह सभी कुछ नयी व्यवस्था का ही भाग था जिसके लिए प्रेसिडेण्ट ने वचन दिया था।

मार्च १९३३ में प्रेसिडेण्ट के पद से अपने प्रथम भाषण में रूजवेल्ट ने लोगों को बताया "हमें सिर्फ डर से डरना चाहिए।" जिस समय उसने यह भाषण दिया उस समय देश पर बड़ा वित्तीय संकट आया हुआ था, सारे संयुक्त राज्य में बैंक बन्द हो गये थे और मुद्रा चलन बड़ा अस्थिर था और वह भी नकद ही चलती थी। इस गम्भीर परिस्थिति में दृढ़ता से कदम उठा कर प्रेसिडेण्ट ने बैंक कुछ समय के लिए बन्द रखे और उनकी स्थिति का पता लगवाने के लिए पड़ताल करवाई गई। जो चल सकते थे उन्हें जहाँ आवश्यक समझा गया ऋण दिये गये और उनको खोल दिया गया, जो चल न सकते थे उन्हें बन्द ही कर दिया गया।

इसके शीघ्र ही उपरान्त रूज़वेल्ट ने कई ऐसे कदम उठाये जिनके द्वारा देश का सारा सोना तथा चाँदी एकत्रित कर लिया गया और उसे सरकारी खज़ाने के हवाले कर दिया। अब कागज़ी मुद्रा को सोने में बदला ही न जा सकता था; इस प्रकार देश में मुद्रा का स्वर्ण-आधार बन्द हो गया। परन्तु फिर भी मुद्रा काफ़ी सुदृढ़ रही और डालर का सोने में मूल्य घटा देने तथा मुद्रा स्फीति कर लेने पर भी कोई बुरा प्रभाव न पड़ा। सावधानी से नियन्त्रित स्फीति से सरकार को आशा थी कि मूल्य बढ़ेंगे और व्यापार को बढ़ावा मिलेगा।

सुव्यवस्था पुन: बनाने के लिए प्रेसिडेण्ट ने न केवल व्यापारियों की सहायता करने की योजना बनाई, जिससे कि 'बड़ों-बड़ों' को मदद मिले और जो "उदारतावश अपनी ओर से दूसरों की सहायता करें" बल्कि उसने कम आमदनी वालों को भी सहायता दी—जिनकी जरूरतें ज्यादा थीं और जिन्हें

प्राय: "भुला दिया जाता रहा"। संक्षेप में ऊपर और नीचे दोनों ओर से आर्थिक व्यवस्था में धन भरने की योजना बनी जिससे कि राष्ट्र फिर से अपने पैरों पर खड़ा हो सकें।

बड़ों-बड़ों की सहायता के लिए व्यापारियों के लिए 'पुनर्निर्माण वित्त कार्पोरेशन' बनाई गई, जिनको बड़ा विस्तृत कर दिया गया और यह संस्था उद्योग-धन्धों को सहायता देकर उन्हें टूटने से बचाती रही। एक और महत्व पूर्ण पग राष्ट्रीय उद्योग पुनर्व्यवस्थान कानून भी था जिसके द्वारा व्यापारियों में प्रतिद्वन्दता को रोक दिया गया और कठिन समय में भी मूल्यों में कमी न होती। १९३१ में जब यह कानून बना तो उसे उद्योगपतियों तथा श्रमिकों दोनों का समर्थन प्राप्त था।

इस कानून के अनुसार प्रत्येक उद्योग के बड़े-बड़े व्यापारियों ने नियमों और समझौतों के द्वारा माल का एक सा मूल्य लेते, उचित तरीके की व्यवस्था देते और श्रमिकों के लिए वेतन और कार्य-समय निश्चित करते। प्रेसिडेण्ट के आदेश से इनका विशेषज्ञों की ओर से निरीक्षण भी किया जाता और संतोष-जनक होने पर सरकारी विभाग इन नियमों तथा प्रथाओं को लागू करवाता। परस्पर लाभ के लिए इस भांति गठबन्धन का अवसर देने के बदले में व्यापारियों से यह माँग की गई की वे श्रमिकों का यह अधिकार मान लें कि वे अपनी संस्थाओं द्वारा संयुक्त-तौर पर अपने वेतनों के सम्बन्ध में सौदाबाज़ी कर सकें।

दूसरी ओर 'छोटे आदमियों' को केन्द्र की ओर से कई प्रकार से सहायता दी गयी। आर्थिक विशेषज्ञों और कालेज-प्रोफेसरों के एक वर्ग "ब्रेन ट्रस्ट" ने प्रेसिडेण्ट को इस सम्बन्ध में कई सुझाव दिये। देश के इतिहास में पहली बार अमेरिका की सरकार के केन्द्रीय सहायता विभाग द्वारा ज़रूरतमन्दों को सीधे नकद मदद दी गई। जहाँ तक सम्भव हो सकता था नक़द मदद की बजाय बेकारों को कामकाज दिया गया। यह काम-काज दिलवाने के लिए वर्कस प्रोग्रेस एडमिनिस्ट्रेशन और सिविलियन कन्ज़र्वेशन कोर तथा सरकार द्वारा शुरू किये हुए अन्य कार्यक्रमों ने बड़ा काम किया। सड़कें बनाने, बाँध बंधाने

ग्रौर सरकारी इमारतें बनाने का बड़ा काम दिया गया। दूसरी ओर क्लर्कों, लेखकों, कलाकारों तथा संगीतकारों के रचनात्मक काम बाबू लोगों को दिलवाये गये।

किसानों की सहायता के लिए कृषि बन्दोवस्त कानून पास करके कृषि की फालतू उपज को कम कर दिया गया, जिससे अधिक उत्पादन के कारण भावों के गिरने का भय न हो। किसानों को धन देकर अनाज और अधिक पशु-धन पैदा न करने को कहा गया; खेत खाली छोड़ दिये गये और फालतू उपज नष्ट कर दी गई। इस नीति की बड़ी आलोचना हुई। संयुक्त-राज्य और बाकी संसार भर में भी लोगों को अन्न की आवश्यकता थी और वे इसका मूल्य न दे सकते थे और फिर भी राजनीतिक ढंग से कोई ऐसी विधि न सूझती थी, जिसके द्वारा यह अनाज तथा अन्य उपज उनको दी जाती।

सरकार ने दक्षिण के मध्य में टेनेसी नदी घाटी की एक विशाल योजना शुरू की, जो ६४०,००० वर्गमील में फैली थी। प्रथम विश्व युद्ध में वहाँ पर एक बाँध बनाया गया था और अल्बामा के मसल शोग्राल्ज़ में युद्ध-सामग्री तैयार करने के कारखाने बनाये गये थे। जब युद्ध समाप्त हुआ तो सरकार ने उन्हें बचा देने का व्यर्थ प्रयास किया। १९३३ में सरकार ने टेनेसी घाटी संस्था स्थापित की और वहाँ पर खाद तैयार करने और विद्युत-शक्ति के उत्पादन का काम शुरू किया। इस योजना पर अधिक बाँध बाँधे गये और इस प्रदेश के विकास के लिए बिजली के कारखाने बनाये गये। कम दामों बिजली मिलने लगी। जिन बाढ़ों से घाटी में विनाश होता और उन्नति में बाधा पड़ती थी वे रोक दिये गये, कृषि के विशेषज्ञ लोगों को यह समझाने के लिए भेजा गया कि भूमि को किस भांति बचा कर उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। कुछ ही वर्षों के भीतर एक पिछड़े हुए प्रदेश में उद्योग-धन्धे चलने लगे और खेत लहलहा उठे। भविष्य के लिए इस 'नई सुव्यवस्था' के द्वारा सामाजिक सुरक्षा का कानून पास हुआ जिससे बहुत सी साधारण विपत्तियों से लोगों का बचाव हो सके यह कार्य क्रम आज तक चला आ रहा है और इसमें बेकारी का बीमा करने, बुढ़ापे की पेन्शन, आश्रित बच्चों की सहायता,

मोहताजों, अन्धों और रोगियों का मदद करना भी सम्मिलित है। केन्द्रीय-सरकार से धन लेकर राज्य-सरकारें उसको बाँटती हैं तथा इस सुरक्षा व्यवस्था को चलाने में बड़ा कान करती है। इस व्यवस्था में कुछ भाग श्रमिकों, उद्योगपतियों, राज्यों और स्थानीय शासनों का भी होता है।

× × ×

१९३० के बाद 'नई सुव्यवस्था' के इस कार्यक्रम के सम्बन्ध में इसके नेताओं ने यह माना कि अधिकतर यह अनुभव के लिए ही किया जा रहा और समय की मांग देखते हुए इसे बहुत शीघ्रता से तैयार किया गया है। सरकार की इस अपूर्व संवेदनाशील रक्षा योजना के प्रति अमेरिका के लोगों में क्या प्रतिक्रिया थी? अधिकतर इसे बड़ी कृतज्ञता से स्वीकार किया गया और फ्रैंकलिन डी० रूज़वेल्ट उन करोड़ों लोगों की दृष्टि में महान् नेता बन गया जिन्हें उसने कम से कम कुछ समय के लिए तो कष्ट से बचा लिया था। कृषक तथा श्रमिक वर्गों ने विशेषकर उसका समर्थन किया।

दूसरी ओर काफ़ी संस्था में ऐसे भी लोग थे और इनमें अधिकतर व्यापारी थे जिनका शीघ्र ही 'नई सुव्यवस्था' के सम्बन्ध में उत्साह ठण्डा पड़ गया और उन्होंने इनका विरोध भी शुरू कर दिया। इसमें सन्देह नहीं, सरकार मोहताजों की सहायता कर रही थी; यह बड़ा प्रशंसनीय प्रयोजन था और व्यापार भी फिर से उन्नति कर रहा था; उसकी कठिनाइयां समाप्त हो रहीं थीं; परन्तु यह सब धन कहाँ से आ रहा था? यद्यपि कर बढ़ा दिये गये थे, पर फिर भी 'ब्रेन ट्रस्ट' ने विभिन्न योजनायें शुरू कीं थी। उनकी पूर्ति करों के किसी भी कार्यक्रम से न हो सकती थी। इस सम्बन्ध में कहा गया कि देश ने मुद्रा के स्वर्ण-आधार का परित्याग कर दिया है; राष्ट्रीय ऋण अरबों डालर तक पहुँच चुका है और बिना सोचे-समझे इतना अपव्यय हो रहा है कि इससे आर्थिक विनाश की सम्भावना बन जायगी, ऐसी भविष्यवाणी भी की गई।

इस व्यवस्था के आलोचकों ने इसका घोर विरोध शुरू कर दिया और इसे ऐसी समाजवादी योजना बताया जो अमेरिकी विधि के प्रतिकूल है। यह कहा गया कि चाहे टेनेसी घाटी योजना से बहुत से लाभ भले ही हों, परन्तु इसके द्वारा

निजी उद्योग पर भारी कुठाराघात किया जा रहा है। वे कहते कि सरकार को क्या अधिकार है कि वह देश के बहुत बड़े भाग को अपने प्रबन्ध में लेकर विद्युत-उत्पादन करे और इस दर पर लोगों को बिजली दे जिसका निजी विद्युतोत्पादक संस्थाएँ मुकाबला न कर सकें। उनका कहना था कि टेनेसी घाटी योजना देश भर के करदाताओं पर एक भार है और इसपर जो भारी व्यय हो रहा है उसका लोगों को कोई प्रत्यक्ष लाभ नहीं।

'नई सुव्यवस्था' के सिद्धान्तों से मतभेद रखने के साथ-साथ अधिकांश व्यापारी इस बात पर असन्तुष्ट थे कि सरकार उनके मामले में हाथ डाल रही है और इस तरह उनको दबा रही हैं। उदाहरणतः वालस्ट्रीट के व्यापारी इस पर विशेष रूप से क्षुब्ध थे कि हुंडियों तथा विनिमय सम्बन्धी कमीशन उनके बाज़ार का नियन्त्रण कर रहा है।। औद्योगिकों की यह शिकायत थी कि नेशनल लेबर रिलेश्न एक्ट द्वारा संयुक्त सौदेबाजी करने को मान्यता प्रदान करके श्रमिकों को बहुत सुविधाएँ दे दी गई हैं। जब सरकार ने श्रमिकों तथा मालिकों के बहुत से झगड़ों में निर्णय दिया तो उस पर यह आरोप लगाया गया कि सरकार ने संगठित श्रमिकों का पक्ष लिया है, जिनका संगठन उनकी दो बड़ी संस्थाओं के रूप में बढ़ता जा रहा था और वे थीं—अमेरिकन फ़ेड्रेशन आफ लेबर और कांग्रेस आफ़ इण्डस्ट्रियल आर्गनाइज़ेशन।

इस सारे विरोध के होते हुए भी नयी व्यवस्था के विरोधी १९३६ के चुनावों में अधिक बल न जुटा सके थे। लोगों को चार वर्ष पहले रोटी के लिए लगी कतारें खूब याद थीं। और एक भारी बहुमत से प्रेसिडेण्ट रूज़वेल्ट जीत गया। उसके विरोधी कैन्सास के गवर्नर एल्फ़ेड एम० लेन्डन को केवल दो राज्यों—मेन और वर्मोंट में ही अधिक वोट मिल सके।

इस सुदृढ़ समर्थन के होते हुए रूज़वेल्ट ने अपनी दूसरी अवधि में पहले ही सर्वोच्च-न्यायालय से टक्टर ली। इस न्यायालय के न्यायाधीश प्रायः अनुदार विचारों के ही थे, और उन्होंने नई व्यवस्था के बहुत से भागों को अवैध घोषित कर दिया; जिनमें राष्ट्रीय उद्योग पुनर्व्यवस्थान कानून तथा कृषि बन्दोबस्त कानून भी शामिल थे। सर्वोच्च-न्यायालय में उदार तथा विशाल प्रभाव

लाने के लिए प्रधान रूज़वेल्ट ने यह सुझाव रखा कि सत्तर वर्ष की आयु में न्यायाधीश को सेवानिवृत कर दिया जाय और यदि कोई न्यायाधीश ऐसा करने से इनकार करे तो प्रसिडेण्ट को अधिकार हो वह अतिरिक्त न्यायधीश नियुक्त करके उनकी संख्या पन्द्रह तक कर सके।

इस सुझाव पर जनमत ने रूज़वेल्ट का समर्थन न किया। बहुत से लोग समझने लगे कि रोक तथा सन्तुलन के उत्तम सिद्धान्त के विरुद्ध आचरण हो रहा है। सुझाव को अस्वीकृत करते हुए सेनेट ने कहा था कि ऐसा करने से शासन-विभाग की ओर से अदालतों की आज़ादी को भय पैदा हो जायगा। पर एक विचार से इस संघर्ष में प्रेसिडेण्ट की विजय हुई, क्योंकि बाद में न्यायालय ने अपने ऊपर अधिक आक्रमण होने के भय से जो निर्णय दिये वह 'नई सुव्यवस्था नीति' के पक्ष में जाते थे।

उधर १९३७ के प्रथमार्द्ध में व्यापारिक भाव एक दम बढ़ गये और ग्रीष्म में अकस्मात् घट गये; जिसके परिणामस्वरूप बेकारी फिर बढ़ गई। व्यापार के इस पतन का कारण यह भी था कि प्रसिडेण्ट की 'एकाधिकारवादी नीतियों' के प्रति लोगों में अविश्वास पैदा हो गया था; सर्वोच्चन्यायालय का रूप बदल देने की चेष्टा से स्पष्ट हो गया था। ऐसा प्रतीत होता था कि नयी सुव्यवस्था से राष्ट्र की सम्पन्नता सुदृढ़ न हो सकेगी; क्योंकि शान्ति-काल में इसके लिए पर्याप्त धन प्राप्त न होगा। परन्तु फिर भी यह योजना अधिकांश लोगों को निरन्तर प्रिय रही क्योंकि इसके द्वारा 'विस्मृत लोगों' के हित में कानून बन रहे थे। यह कहना कठिन है कि युद्ध-पूर्व की परिस्थिति में "व्यर्थ करने के कार्यक्रम" से मन्दी को समस्या कभी हल हो सकती या नहीं, क्योंकि द्वितीय विश्व-युद्ध में अमेरिका के शामिल हो जाने से सरकार का कार्यक्रम बहुत बढ़ गया। देश में गरीबी का एकदम अन्त हो गया और रोटी के लिए लगायी जाने वाली कतार न रहीं।

× × ×

इस नई व्यवस्था की विदेशी नीति कई बातों में इतनी ही ज़ोरदार थी जितनी कि इसकी स्वदेश कार्य-पद्धति। पश्चिमी गोलार्द्ध में लेटिन तथा

दक्षिणी अमेरिका के देशों के प्रति थियोडोर रूज़वेल्ट की 'बड़े डण्डे' की नीति प्रेसिडेण्ट हुवर ने त्याग कर "अच्छे पड़ोस की नीति" अपनायी थी और अब प्रधान रूज़वेल्ट भी उसी नीति पर अग्रसर हुआ। महाद्वीपों के आन्तरिक मामलों में संयुक्त राज्य की ओर से दखल देने पर जो मनमुटाव था, वह अब नहीं रहा। क्यूबा पर संरक्षण समाप्त करके उसे स्वाधीनता दे दी गयी।

बाकी स्थानों पर भी संयुक्तराज्य ने सद्भावना का प्रमाण दिया। फिलिपीन को यह वचन दिया गया कि उसके स्वशासन के योग्य होने पर उसे स्वतन्त्र कर दिया जायगा। इसके अतिरिक्त विदेश मन्त्री कार्डेल हल ने तटकरों की समस्या का भी डेमोक्रेटों की ओर से समाधान करने की विधि बता दी। कांग्रेस से स्वीकृति पाकर हल ने कुछ देशों के साथ परस्पर व्यापारिक समझौते किये जिनके द्वारा संयुक्त राज्य ने कुछ आयात पर तटकर कम किये और इसी भांति अमेरिकी माल के लिए अन्य देशों में भी यही सुविधा प्राप्त की। इस योजना से व्यापार को फिर से उन्नति करने में सहायता मिली।

उधर इस समय सारे संसार में युद्ध के बादल मँडला रहे थे। यूरोप में एडोल्फ हिटलर ने जर्मनी का फ़ासिस्ट तानाशाह बनने के उपरान्त वह सब कुछ प्राप्त करने का बीड़ा उठाया था जो कुछ वर्सेई की सन्धि के अनुसार जर्मनी ने खोया था और यदि इसमें आवश्यकता हो तो वह सैन्यशक्ति प्रयोग में लाने से भी तैयार था। उसके बैनिटो मैसोलिनी ने भी अबीसीनिया—इत्थोपिया पर आक्रमण कर दिया था। स्पेन में भयानक गृह-युद्ध हो रहा था और उसमें भी फासिस्टों की पूर्ण विजय हो रही थी और उधर एशिया में जापान, चीन में बराबर आगे बढ़ता चला जा रहा था।

अमेरिका के लोग इन परिस्थियों के प्रति प्रायः उदासीन ही थे। प्रथम विश्व-युद्ध के बारे में बहुत से भ्रम दूर हो गये थे; उसके सम्बन्ध में पृथकता-वादियों का कहना था कि यह युद्ध साम्राज्यवादी देशों का संघर्ष था और इसमें संयुक्तराज्य का कोई सम्बन्ध न होना चाहिए था। १९३५ के लगभग यह बातें प्रकाश में आयी कि युद्ध-सामग्री तैयार करने वालों ने अन्तर्राष्ट्रीय

समझौते कर रखे हैं; इस पर अमेरिका में युद्ध के विरुद्ध भाव इतने उत्तेजित हुए कि कांग्रेस ने देश को किसी विदेशी युद्ध में उलझने से बचने के लिए दो कानूनस्वीकृत किये। पहला जॉनसन एक्ट था जिसके द्वारा उन देशों को ऋण देने की मनाही कर दी गई, जिन्होंने अपने कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों का पालन नहीं किया और दूसरा तटस्थता कानून था, जिसके अनुसार उन सभी देशों को युद्ध-सामग्री बेचने का निषेध कर दिया गया जो भावी युद्धों में भाग लेने वाले हों। साथ ही अमेरिका के लोगों को चेतावनी दे दी गयी कि वे युद्ध-रत देशों के जहाजों में यात्रा न करें और यदि वे ऐसा करते हैं तो यह उनकी अपनी ज़िम्मेदारी पर होगा।

जब यह कानून पेश हुए तो प्रेसिडेण्ट रूज़वेल्ट ने इनकी स्वकृति दे दी; परन्तु जब हिटलर ने राइनलैंड में पुनः सेनाएँ संगठित कर लीं और यूरोप पर छा जाने के उद्देश्य ज़ाहिर किये तो प्रेसिडेण्ट ने १९३७ में अपने भाषण में कहा—"संसार में धाधली बढ़ती जा रही . यह नहीं समझना चाहिए कि अमेरिका इसके प्रभाव से बच जायगा"। हिटलर ने यहूदियों की जो यातनाएँ दीं, जो आक्रमणकारी सैन्यसंगठन किया और लोकतन्त्रीय पद्धति के प्रति घृणा के भाव दिखाये, उनसे जर्मनी के भूतपूर्व शत्रुओं में यह आशंका बढ़ गयी कि जर्मन फिर से पूर्णतया युद्ध शुरू कर देंगे। म्यूनिस सम्मेलन में जर्मन-तृष्टि के लिए जो यत्न किये गये वे व्यर्थ हुए। अन्त में जब सितम्बर १९१९ को हिटलर ने पोलैंड पर आक्रमण कर दिया और इंगलैंड तथा फ्रांस ने उसके विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी तो प्रेसिडेण्ट रूज़वेल्ट ने तठस्थता-कानून को मन्सूख करने के लिए कहा जिससे साथी-देशों को सामान भेजा जा सके। कांग्रेस ने यह सुझाव इस शर्त पर स्वीकार किया कि वे दाम नकद दें और माल ले जायँ।

इस प्रकार द्वितीय विश्व-युद्ध शुरू हुआ और ऐसा प्रतीत होता था कि वही परिस्थिति बन गयी है जो १९१४ में थी। परन्तु इस बार घटनाएँ भिन्न प्रकार की थीं। नौ महीने चुपके-चुपके तैयारी करने के उपरान्त जर्मनी के नाज़ी सिपाही अकस्मात् फ्रांस में बढ़ गये, नीदरलैंड्ज़ के अतिरिक्त डेन्मार्क और

नार्वे में भी जर्मन सेनाएँ दाखिल हो गयीं। उधर डंकिर्क के स्थान पर ब्रिटिश सेनाओं को यूरोप से निकाल ही दिया गया।

जब जर्मनी तथा इटली की संयुक्त शक्ति के सामने ब्रिटेन अकेला रह गया तो उस समय यह लगभग निश्चित हो दीखने लगा कि ब्रिटेन या तो आत्म-समर्पण कर देगा, या फिर वह स्थल, जल और वायु सेनाओं के हमलों से पिस जायगा। अमेरिका के लोग जब इंगलैंड के अन्त तक डट कर मुकाबला करने के समाचार पढ़ते या बम्ब से आक्रान्त लन्दन से रेडियो पर प्रसारित भाषण सुनते तो इस सम्बन्ध में लोगों की प्रतिक्रिया विभिन्न होतीं। एक वर्ग, जो इस सम्बन्ध में दखल देने में विश्वास रखता था, कहता "इंगलैण्ड की लड़ाई हमारी लड़ाई है; यदि वह हार गया तो जर्मनी अमेरिका पर भी चढ़ आयेगा"। पृथकतावादी कहते "अमेरिका को युद्ध से दूर ही रहना चाहिए; कोई भी जीते इससे कोई अन्तर नहीं पड़ेगा"।

प्रेसिडेण्ट रूज़वेल्ट को ब्रिटेन के साथ गहरी सहानुभूति थी। सितम्बर १६४० को उसने पश्चिमी गोलार्द्ध में जलसेना के अड्डों के बदले में ब्रिटेन को पच्चास विध्वंसक जहाज़ दिये, जिनकी उस समय ब्रिटेन को अत्यन्त आवश्यकता थी। अमेरिका में बहुत से लोगों ने इस पर आपत्ति की कि इससे तटस्थता की नीति का विरोध होता है; परन्तु उनके भी अधिक लोगों ने सरकार के इस कार्य को सराहा। इसके साथ ही एक कानून स्वीकृत किया गया जिसके अनुसार राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सेना बढ़ाने तथा अधिक कारखानों को युद्ध सामग्री तैयार करने वाली फैक्ट्रियों में परिणत करने की व्यवस्था कर दी गयी।

इस तैयारी के दिनों में १६४० के चुनाव में लोगों का ध्यान प्रेसिडेण्ट के निर्वाचन की ओर कम हो गया। तीन बार निरन्तर प्रेसिडेण्ट न बनने की प्रथा का सफलतापूर्वक प्रतिवाद करते हुए श्री रूज़वेल्ट ने वेन्डल विल्की हरा दिया। कुछ वर्ष पहले टेनेसी घाटी-योजना का विरोध करके सार्वजनिक उपयोग-कन्द्रों के इस नेता विल्की ने लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित अवश्य कर लिया था। गृह-नीति पर दोनों उम्मीदवारों के मत भेद थे, परन्तु

विदेशों के सम्बन्ध में दोनों की नीति समान थी और वह यह था कि युद्ध में पड़े बिना ब्रिटेन को अमेरिका सहायता देता रहे।

१९४१ में भी जर्मनी तथा इटली को हटाने की आशा कम ही थी। उधर जापान सुदूर-पूर्व में अपना अधिकार कर "बृहत्तर एशिया के सम्पन्न सहयोगी क्षेत्र" की स्थापना के लिए उनके साथ मिल गया था। जर्मनी यूनान और यूगोस्लाविया पर छा गया था। इंग्लैन्ड अभी मुकाबला कर रहा था उसपर आक्रमण तो न हुआ था; परन्तु उसका भय अवश्य बना हुआ था।

अपने पद की तीसरी अवधि के शुरू में प्रेसिडेण्ट रूज़वेल्ट ने कांग्रेस को कहा "प्रत्येक यथार्थवादी जानता है कि लोकतन्त्रीय जीवन-पद्धति पर इस समय संसार के सभी भागों में आक्रमण हो रहा है···मुझे खेद से यह सूचना देनी पड़ रही है कि हमारे देश के भविष्य उसकी सुरक्षा और हमारे तथा सभी के लोकतन्त्रवाद खतरे में पड़ गये है·· ···"। तब प्रेसिडेण्ट ने तानाशाही देशों को आगे बढ़ने से रोकने के लिए यह माग की कि उत्पादन बढ़ाया जाय उसने चार स्वतन्त्रताओं के आधार पर श्रेष्ठ विश्व की स्थापना की रूपरेखा का चित्रण भी किया, जिसमें अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता, धर्म की स्वतन्त्रता, गरीबी से मुक्ति तथा आक्रमण के भय से आज़ादी शामिल थी।

प्रेसिडेन्ट ने पट्टे पर उधार देने सम्बन्धी कानून का सुझाव रखा और कांग्रेस ने झट उसकी स्वीकृति दे दी। इस कानून द्वारा तानाशाही देशों का मुकाबला करने के लिए अरबों डालर का माल इंग्लैंड तथा रूस को भेजने की व्यवस्था हो गयी। यह निर्णय हुआ कि युद्ध के बाद जो सामान बच जायेगा वह या तो मोल ले लिया ज़ायगा या फिर लौटा दिया जायगा; परन्तु जो युद्ध में प्रयुक्त हो जायगा उसका मूल्य चुकता लिखा दिया। इसका उद्देश्य केवल यह था कि पराज्य से बचाने के लिए शीघ्रातिशीघ्र सामान समुद्र-पार पहुँचा दिया जाय चाहे साथी-देशों में ऋण चुकाने की सामर्थ्य हो या नहीं हो और युद्धोत्तर काल के सम्बन्धों में बिगाड़ पैदा करने वाले कोई युद्ध-ऋण न हों।

उधार-पट्टे के अधीन सामान पहुंचाने में अमेरिका के व्यापारिक जहाजों तथा जलसेना के बड़े ने बड़ा महत्वपूर्ण काम किया। जर्मनी की बहुत सी पन-

डुब्बियों को अमेरिका के जंगी जहाजों ने गोलाबारी की 'घटनाओं' में रोके रखा अतलान्तकमहासागर में अपनी स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए संयुक्त-राज्य ने ग्रीनलैण्ड, आइसलैंड तथा उत्तरी आॅयरलैंड में जलमार्गों पर अपनी सेनाएँ दी थीं।

अगस्त १९४१ को प्रेसिडेण्ट रूज़वेल्ट और ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री श्री चर्चिल "कहीं समुद्र में" आपस में मिले और उन्होंने 'अतलान्तक अधिकार-पत्र' की रचना की, जिसमें 'धुरी-देशों' पर विजय के उद्देश्यों तथा युद्धोत्तर काल के निर्माण के सम्बन्ध में रूपरेखा निश्चित की गयी। दोनों नेताओं ने वर्तमान संयुक्त-राष्ट्र की नींव रखी और यह घोषणा की कि वे सामूहिक सुरक्षा योजना, अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग तथा निःशस्त्रीकरण के पक्ष में हैं।

यद्यपि अतलान्तकमहासागर में संयुक्त राज्य और जर्मनी के बीच तनाव बढ़ रहा था, अमेरिका की ओर से युद्ध का प्रारम्भ दूसरी ही दिशा में हुआ। जापान, हिन्दचीनी तथा थाइलैंड के फ्रांसीसी प्रदेशों में बढ़ रहा था। संयुक्त राज्य ने जापान को चेतावनी दी कि वह एशिया में और आगे बढ़ना बन्द कर दे। एक समझौते के लिए बातचीत करने लिए जापानियों ने दो दूत वाशिंगटन भेजे।

जब यह बातचीत चल ही रही थी तो जापान के जहाजों और वायुसेना का एक बड़ा दल हवाई में पर्लहार्बर पहुँचा और ७ दिसम्बर, १९४१ को उसने अमेरिका की जलसेना के बेड़े, सैनिक कैम्पों और हवाई अड्डों पर अकस्मात् आक्रमण कर दिया। अमेरिकी सेना इसके लिए बिल्कुल तैयार न थी। शत्रु के बम्बों से एक के बाद दूसरा जंगी जहाज डूबने लगा और दो हज़ार से अधिक अमेरिकी मारे गये। इसके साथ ही फ़िलिपीन, गोआम और अमेरिका के अन्य सैन्य-केन्द्रों पर आक्रमण हुए। क्या पर्लहार्बर नियुक्त अमेरिकी सैन्याधिकारियों ने प्रमाद से काम लिया, या अमेरिका की सरकार ने उन्हें अकस्मात् आक्रमण के भय के प्रति सचेत नहीं किया था, इसका आजतक पूर्ण रूप से निर्णय नहीं हो सका है।

८ दिसम्बर को प्रेसिडेण्ट के आदेश पर कांग्रेस ने जापान के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी । इंग्लैंड ने भी ऐसा ही किया । तब जर्मनी और इटली ने भी संयुक्त राज्य के विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया और संसार के एक भयंकरतम संघर्ष ने अधिक उग्र रूप धारण कर लिया ।

———

अध्याय १०

आधुनिक युग

यद्यपि जून १९४५ से पूर्व संयुक्तराष्ट्र संघ का निर्माण नहीं हुआ था, पर फिर भी इसका प्रारम्भ बहुत पहले हो चुका था। १ जनवरी १९४२ को वाशिंगटन के एक सम्मेलन में संयुक्तराज्य धुरी-शक्तियों के विरुद्ध युद्ध-निरत २५ अन्य देशों ने विजय प्राप्त करने तथा अतलान्तक घोषणा पत्र के आधार पर शान्ति स्थापित करने के लिए आपस में संगठित रहने का वचन दिया था। इस समझौते और युद्ध के अन्त के बीच के समय में साढ़े तीन वर्ष तक एक भयंकर संघर्ष होता रहा।

जहाँ तक अमेरिका का सम्बन्ध है, द्वितीय महायुद्ध के मुकाबले में प्रथम महायुद्ध गौण हो गया। जहाँ पहले युद्ध में अमेरिका ने चालीस लाख सेना तैयार की थी वहाँ दूसरे में १ करोड़ २० लाख सैनिक तैयार किये गये, और इनमें स्त्रियाँ भी थीं जिन्हे युद्धेत्तर काम सौंप गये थे। जहाँ प्रथम विश्व-युद्ध में ३,६४,००० अमेरिकी मरे या घायल हुए वहाँ दूसरे युद्ध में उनकी संख्या लगभग तिगुनी अर्थात् दस लाख तक पहुंच गई। १९१९ में राष्ट्र ऋण २७०० करोड़ डालर था, १९४५ में इस ऋण की रकम दस गुनी से अधिक अर्थात् २७९०० करोड़ डालर तक पहुंच गई थी।

पर्लहार्बर की घटना से पहले अमेरिका में जो युद्ध-सामग्री तैयार हुई थी और जो सेनाएँ खड़ी की गई थीं वह यूरोप और एशिया में दो मोर्चों पर लड़ने के लिए पर्याप्त न थीं। जापान ने पहले आक्रमण करके भारी आघात पहुंचाया; उस समय राष्ट्र युद्ध के लिए तैयार न था प्रशान्तमहासागर में फ़िलि-पीन तथा अन्य महत्वपूर्ण अमेरिकी सैनिक-अड्डों पर जापान का अधिकार हो गया। केवल हवाईटापू अमेरिकी अधिकार में रहा। जनरल डगलस मैकार्थर के

नेतृत्व में अमेरिकी सेनाओं ने फ़िलिपीन को बचाने का बड़ा साहसपूर्ण प्रयास किया। जापानी एलास्का के एल्युपून टापुओं तक पहुँच गये और उनके उत्तरी अमेरिका के महाद्वीप में आ जाने का भय पैदा हो गया। इसके साथ ही उन्होंने मलाया और सिंगापुर से ब्रिटिश सेनाओं को निकाल दिया, डच ईस्ट इन्डीज़ के समृद्ध प्रदेश तथा प्रशान्तमहासागर के कई अन्य टापुओं पर उन्होंने अधिकार कर लिया और आस्ट्रेलिया के लिए खतरा पैदा हो गया। १९४२ के मध्य तक अमेरिका की ओर से मुकाबला सख्त होना शुरू हो गया; नये वायुयान और जंगी जहाज प्रशान्तमहासागर में पहुँच गये। सोलोमन टापुओं में गोआडल कैनाल पर आक्रमण के साथ जापानियों को निकाल कर प्रदेशों पर अधिकार करने और अन्त में जापान पर ही आक्रमण करने का लम्बा और दुष्कर कार्य शुरू हो गया। दोनों ओर से बड़ी वीरता तथा क्रूरता से युद्ध हुआ; जंगलों तथा समुद्रतटों पर सैनिक कैदी न बनाये गये। एशिया में चीन यथाशक्ति लड़ता रहा, उसे अमेरिका से सहायता भी मिली और बर्मा में ब्रिटेन ने डटकर मुकाबला किया और अपने पाँव जमा रखे।

जापान को पराजित करना बड़ा जरूरी था, उधर प्रेसिडेन्ट रूज़वैल्ट यूरोप के युद्ध को भी अधिक महत्वपूर्ण समझते थे। अमेरिका से सहायता का मुख्य भाग वहीं भेजा गया। नवम्बर १९४२ में जनरल ड्वाइट डी० आइजन-हाँवर के अधीन ब्रिटिश तथा अमेरिकी सेनाओं ने उत्तर-पश्चिमी अफ्रीका पर आक्रमण कर दिया और वहाँ से जनरल रमेल की 'अफ्रीका कौर' के जाँबाज सिपाहियों को महाद्वीप से निकाल बाहर कर दिया। वहाँ से विजेता-सेनाएँ रूमसागर पार कर सिसली होती हुई इटली पहुंच गईं जहाँ इटली ने आत्म-समर्पण कर दिया और उसकी सेनाएँ विजेता-पक्ष के साथ मिल गयीं। किन्तु फिर भी इटली के कुछ भागों में जर्मन डटे रहे और उत्तरी भागों से तब तक नहीं निकाले जा सके जब तक कि युद्ध का अन्त न हो गया।

१९४३ में प्रेसिडेण्ट रूज़वेल्ट, प्रधान मन्त्री चर्चिल, रूस के जोजेफ़ स्टा-लिन और चीन के मार्शल च्यांगकाई शेक के बीच कई सभाएँ हुईं जिनमें युद्ध-नीति और युद्धोत्तर काल के लिए संयुक्तराष्ट्र को क्रियात्मक रूप देने की

योजनाओं पर विचार विमर्श हुआ। रूस की सेनाएं जर्मन सेनाओं पर सख्त हमले कर रही थी; उनको दूसरे मोर्चे के रूप में सहायता देने का वचन दिया गया।

यह वचन ६ जून, १६४४ को पूर्ण कर दिया गया और अमेरिका, ब्रिटेन, कैनेडा के सिपाहियों तथा जिन देशों पर शत्रु अधिकार कर चुका था, उनके देशभक्तों ने जनरल आइजनहावर की कमान में इंगलैंड से सागर को पार कर फ्रांस के तट पर नार्मंडी पर हल्ला बोल दिया। जर्मनों ने बड़ा तीव्र विरोध किया, किन्तु उनकी रसद के मार्गों, नगरों तथा औद्योगिक केन्द्रों पर भारी हवाई आक्रमण होने के कारण उनकी युद्धशक्ति क्षीण होती जा रही थी और वे फ्रांस से पीछे हट कर राइन प्रदेश में पीछे हट आए थे।

दूसरी ओर प्रशाँतमहासागर में जनरल मैकार्थर फिलिपीन की ओर बढ़ रहा था और अमेरिका की जल सेना ने गोआम तथा मध्यशाँतसागर के अन्य केन्द्रों पर अधिकार कर लिया। जापानियों को न्यूगिनी तथा पास के टापुओं से निकाल देने के उपरान्त लपेटे और लजान को भी फिर से जीत लिया। शत्रु ने एक बार पूरे जोर से आक्रमण करने की चेष्ठा की परन्तु जलसेना ने उसे विफल कर दिया। केवल चीन और बर्मा में जापानियों ने अपने पैर जमाये रखे। भयंकर लड़ाइयों के उपराँत ओकिनावा और इवोजिमा के टापुयों पर अमेरिकी सेनाओं के आ जाने से सँयुक्त राज्य के हजारों बम गिराने वाले हवाई जहाज जापान के द्वार पर पहुँच गए।

यूरोप में द्वितीय महायुद्ध समाप्त हो रहा था। १६४४ के अन्त में नाज़ियों का आक्रमण विफल हुआ; उसकी शक्ति क्षीण हो गई और उन्हें पश्चिम की ओर धकेल दिया गया। पूर्वी मोर्चे पर भी उनकी स्थिति कोई अच्छी न थी। रूसी सेनाएँ पोलैंड को पार करती हुई जर्मनी में दाखिल हो गई थीं। अन्त में अग्रसर होते अमेरिकी तथा रूसी सैन्य-दल जर्मनी के मध्य में मिल गए। एडोल्फ हिटलर ने बर्लिन में रूसियों के हाथ पड़ने की बजाये आत्महत्या कर ली और यूरोप का युद्ध समाप्त हो गया। जर्मनी में जो कुछ सत्ता अभी बाकी रह गई थी; उसने ७ मई १६४५ को आत्म-समर्पण कर दिया।

इस विजय को प्राप्त करने में प्रेसिडेण्ट रूजवेल्ट ने बड़ा काम किया था, परन्तु वह इस विजय को अपने जीवन में न देख सका। १९४४ में चौथी बार प्रेसिडेण्ट चुना जाने के बाद रूजवेल्ड ने याल्टा में प्रधान मन्त्री स्टालिन से बातचीत की, जहाँ पर यह निर्णय हुआ कि रूस जापान के विरुद्ध लड़ाई शुरू कर दे और इसके बदले में उसे चीन में कुछ प्रादेशिक अधिकार दिए जायेंगे। लौटने पर रूजवेल्ट बहुत निर्बल और क्षीण दिखाई दिया और विश्राम के लिए जर्जिया में वार्म स्प्रिंग्स में चला गया। वहीं पर १२ अप्रैल को अकस्मात मस्तिष्क में रक्तस्राव से उसकी मृत्यु हो गई। इस पर सारा राष्ट्र शोक स्तब्ध और दुखी हो गया। फ्रैंकलिन डी० रूज़वेल्ठ के पश्चात मिसूरी का भूतपूर्व सेनेटर और उस समय का वाइस प्रेसिडेण्ट हैरी एस० ट्रूमैन प्रेसिडेण्ट बना।

प्रशाँतमहासागर में भी युद्ध का अन्त निकट आ रहा था। युद्ध में जापान की स्थिति बिगड़ रही थी, परन्तु उसके पास बहुत बड़ी सेना थी और उसने अपने देश को बचाने का दृढ़ संकल्प किया हुआ था। यदि जापान पर आक्रमण कर दिया जाता तो बहुत जानी नुकसान होता। हो सकता है कि साधारण प्रकार के हवाई हमलों से उसे आत्मसमर्पण कर देने पर विवश कर दिया जाता, परन्तु न तो बम गिराए गए और नही उस पर आक्रमण ही किया गया।

युद्ध के आरम्भ से ही साथी देश और धुरी-शक्तियों में इस बात की होड़ लगी हुई थी कि कौन अणु बम बनाएगा। पचास से अधिक वर्षों से वैज्ञानिक अणु विस्फोट के रहस्यों के सम्बन्ध में खोज करते आ रहे थे। अन्त में सँयुक्त राज्य और ब्रिटेन ने सफलतापूर्वक अपने ज्ञान के आदान-प्रदान से यह बम तैयार कर लिया और ६ जुलाई १९४५ को मैक्सिको के लॉस अलामॉस के परीक्षण-क्षेत्रों में पहली बार अणु बम का विस्फोट हुआ, उस समय ज़ो लोग इस दृश्य को देख रहे थे, वे भयानक कुक्करमत्ता आकार के इस धूम्रखण्ड और इसकी भयंकर शक्ति को देख कर भय से थर्रा उठे।

इसके दस दिन उपरांत जापान को विधिवत चेतावनी दे दी गई कि वह या तो बिना किसी शर्त के आत्मसमर्पण कर दे, या फिर हवाई आक्रमणों से

विनाश के लिए तैयार हो जाय; उस समय इस नये अणुबम की कोई चर्चा न की गई थी। ६ अगस्त को अमेरिका के एक जहाज़ ने जापान के एक नगर हिरोशिमा पर एक अणुबम गिराया। इस नगर के ३,४०,००० लोगों में से १,८०,००० के लगभग मारे गये या घायल हो गये और इस शहर का अधिक भाग खण्डहरों में परिणत हो गया। ८ अगस्त को रूस ने भी जापान के विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया और मंचूरिया तथा कोरिया में सेनाएँ भेज दी। ९ अगस्त को संयुक्त राज्य ने एक और अणुबम नागासाकी पर गिराया जिससे ८०,००० के लगभग लोग मारे गये या घायल हुए। १४ अगस्त को जापान के सम्राट् हिरोहितो ने साथी-देशों को सूचित किया कि वह आत्मसमपर्ण के लिए तैयार है।

१ सितम्बर १९४५ को जिस समय जापान के दूत टोकियो की खाड़ी में संयुक्त राज्य के जंगी जहाज मिसूरी पर आत्मसमर्पण-पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए पहुँचे तो विश्व का द्वितीय महायुद्ध समाप्त हो गया। जापान से समुद्र-पार के सभी उपनिवेश छीन लिये गये और जापान पर भी अधिकार कर लिया गया। संसार में बड़ी खुशी मनायी गयी कि युद्ध का अन्त हो गया है, परन्तु इस खुशी के साथ यह गम्भीर आभास भी हुआ कि अणुबम का सूत्रपात हो गया है—न मालूम उसके अच्छे परिणाम हों या बुरे।

× × ×

युद्धकाल में साथी-देशों के नेताओं में जो गहरा सहयोग था और उन्होंने इसके अनन्तर शान्ति बनाये रखने का जो दृढ-निश्चय किया हुआ था उससे स्वभावतः यह आभास मिलता था कि किसी स्थायी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का निर्माण होगा जो पुराने राष्ट्र संघ से अधिक कार्यसाधक सिद्ध होगी और जिसके द्वारा उनकी योजनाएँ सफलीभूत होंगी। धीरे-धीरे अमेरिका के लोगों ने विचार का अनुमोदन किया और ऐसा करने में प्रेसिडेण्ट रूजवेल्ट को न केवल डेमोक्रेट दल ही का समर्थन प्राप्त था बल्कि सेनेट में बहुत से रिपब्लिकन सदस्य भी इस पक्ष में थे।

प्रारभिक सम्मेलनों के उपरान्त धुरी-शक्तियौं के विरोधी पचास देशों के प्रतिनिधियों की कैलिफोर्निया सान्फ्रांसिसको में अप्रैल १९४५ में एक सभा हुई और उसमें संयुक्त-राष्ट्र संघ का घोषणा पत्र तैयार हुआ। इसके अनुसार आज संघ की जो मुख्य संस्था शान्ति स्थापित करने में प्रत्यक्ष और ठोस काम कर सकती है, वह है सुरक्षा-परिषद्। एक बहुत बड़ी सभा की भी व्यवस्था की गयी जो कि एक विश्व-मंच का काम दे, जहां पर समस्याओं पर वाद-विवाद हो और जो कार्य-विधि की सिफ़ारिशें रखे। इनके अतिरिक्त कानूनी झगड़ों के निपटाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय, एक सचिवालय और एक संरक्षण परिषद् का भी प्रबन्ध किया गया। संरक्षण परिषद् का काम उन देशों या प्रदेशों की शासन-व्यवस्था करना है जहां पर स्वशासन नहीं है, इनमें मुख्य वही देश हैं, जो धुरी-शक्तियों से छिन गये। इनके अतिरिक्त बहुतसी अन्य संस्थाओं तथा कमीशनों को संयुक्त-राष्ट्र के साथ सम्बन्धित किया गया जिस से संसार के कल्याण के लिए उन सभी के काम एक सूत्रित हो सकें। इन में कुछ नयी संस्थाएं थीं और कुछ पुरानी ही। जैसे, अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संघ, विश्व-स्वास्थ्य संघ, अन्तर्राष्ट्रीय बैंक और संयुक्त-राष्ट्र की शिक्षा विज्ञान तथा संस्कृति सम्बन्धी संस्था।

सुरक्षा-परिषद् में ग्यारह सदस्य देशों के प्रतिनिधि हैं पाँच बडे देशों—अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, फ्रांस और चीन इसमें स्थायी सदस्य हैं। किसी निर्णय पर पहुंचने के लिए सात वोट होने चाहिये, परन्तु 'पांच बड़ों' में से कोई भी देश अपने विशेषाधिकार द्वारा सुरक्षा-परिषद्ु के किसी भी कार्य को रुकवा सकता है; इनमें प्रशासन के मामले नहीं है। निषेधाधिकार की विशेष सुविधा से यह स्पष्ट दीखता है कि बड़े-बड़े देश अपनी सार्वभौम-सत्ता का कोई भी अंश छोड़ना नहीं चाहते। और वे संयुक्त-राष्ट्र की सत्ता के सामने अपनी इच्छा के विरुद्ध झुकने के लिए तैयार नहीं हैं।

जुलाई १९४५ को संयुक्त-राज्य की सेनेट ने इस घोषणा पत्र का अनुमोदन कर दिया, इसके अनन्तर शीघ्र ही अन्य राष्ट्रों ने भी अनुमति दे दी और जनवरी १९४६ को राष्ट्र-संघ ने काम करना शुरू कर दिया। नार्वे का ट्रिग्वीली

इसका प्रथम सैक्रेटरी जनरल बना। संघ ने अपना मुख्य कार्यालय न्यूयार्क शहर में बनाने की स्वीकृति दे दी।

लोगों ने समझा कि आखिर अन्तराष्ट्रीय शांति स्थापित हो गई है; परन्तु द्वितीय विश्व-युद्ध के एक वर्ष उपरांत ही लोगों की ये आशाएं दुराशा में बदल गयीं। संसार में दो परस्पर विरोधी आंदोलन ज़ोर पकड़ गए। लोकतन्त्रीय पद्धति जिस के लिए सँयुक्तराज्य तथा अन्य पश्चिमी देश प्रयत्नशील थे और साम्यवाद जिसे रूस बढ़ावा दे रहा था। सँयुक्त राष्ट्र में या और कहीं और भी जो जो प्रश्न सामने आए, हर बात पर दोनों पक्षों में मतभेद रहा। रूस ने पोलैंड और बल्कान में अपना अधिकार बढ़ा लिया था और ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कि ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री विन्स्टन चर्चिल के शब्द हैं, कि युरोप में एक 'लोहावरण' पड़ गया है, जिससे पश्चिमी लोकतन्त्रीय जगत, क्रेम्लिन और उसके अनुयायियों से अलग हो गया है। इस लोहावरण के कारण जिन दो देशों पर वज्रपात हुआ वे थे जर्मनी और आस्ट्रिया। दोनों देशों पर सॅयुक्त राज्य ब्रिटेन, फ्राँस और रूस ने मिल कर अधिकार किया था और इस सम्बन्ध में निरन्तर झगड़े शुरू हो गए कि इन मन्द भाग्य राष्ट्रों को किस प्रकार पुनः एक किया जाए और उनके साथ शाँति सँधियाँ की जाएँ। जर्मनी के सम्बन्ध में चारों ओर बड़े देश सहमत थे कि नाज़ी युद्ध नेताओं पर मुकदमे चला कर उन्हें दँड दिया जाय और जर्मनी का निःशस्त्रीकरण कर दिया जाए परन्तु शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि रूस किसी भी शर्त पर जर्मनी के पुनर्निमाण में योग देने के लिए तैयार नहीं है, सिवाए इसके कि जर्मनी को सम्यवादी देश बना दिया जाए। लोकतन्त्रीय देशों को आशा थी कि औद्योगिक पश्चिमी जर्मनी पूर्व के कृषि प्रधान सोवियत् अंश के साथ व्यापार कर सकेगा जिससे दोनों को लाभ होगा और उन्नति करेंगे, परन्तु स्टालिन ने लोहावरण डाल कर व्यापार में प्रतिबन्ध खड़े कर दिए। इस तरह जर्मनी दो विरोधी भागों में बंट गया।

संयुक्त राज्य अमेरिका और रूस इससे भी महत्वपूर्ण प्रश्न पर झगड़ पड़े। अणु-शक्ति पर नियन्त्रण के सम्बन्ध में सँयुक्तराज्य ने यह पेशकश

की कि अणु बमों का अपना सारा भण्डार नष्ट करने के लिए तैयार है यदि अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण तथा निगरानी का कोई कार्य-साधन ढग स्वीकृत कर लिया जाय। अधिकांश राष्ट्रों को यह सुझाव समुचित तथा युक्ति संगत लगा, परन्तु रूस ने इसी बात पर ज़ोर दिया कि पहले अमेरिका अपने अणु-बम्बों को नष्ट करे और अणुशक्ति पर नियन्त्रण का काम सुरक्षा परिषद् को सौंप दिया जाय। इस सुझाव पर यह आपत्ति थी कि परिषद् ठीक ढंग से देख भाल न कर सकेगी, क्योंकि रूस को निषेधाधिकार प्राप्त है। यदि संयुक्त-राज्य अपनी बम्बराशि को नष्ट कर दे और अधिक बम्ब न बनाने और उधर रूस गुप्त ढंग से बम्ब बनाता जाय और देखभाल कराने से इनकार करता रहे तो जो अधिक शक्ति रूस को प्राप्त हो सकती है, उसे रोकने की विधि क्या है ? इस सन्देह और अविश्वास के वातावरण में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध बिगड़ते ही गये और अभी द्वितीय महायुद्ध के सैनिक घर भी न पहुँचने पाये थे कि निराश भविष्य-वक्ताओं ने तीसरे विश्व युद्ध की बातें करनी शुरू कर दीं।

× × × ×

युद्ध के उपरान्त स्वदेश में संयुक्त-राज्य ने सेनाओं को शीघ्र ही घटा दिया और यथापूर्व व्यापार शुरू करने के यत्न किए। सेना को १ करोड़ १० लाख से घटा कर केवल १० लाख रहने दिया गया। कुछ लोगों का विचार था कि संसार की परिस्थिति को देखते हुए यह एक भयानक गलती थी— परन्तु सैनिक घरों को लौटना चाहते थे और जनमत भी उनके पक्ष में था।

देश ने युद्ध-सामग्री के उत्पादन में ही अपनी सारी शक्ति लगा दी थी, जिसकी परिणाम यह हुआ कि बहुत-सी दैनिक उपयोग की वस्तुओं की कमी हो गयी और इसके साथ मकानों की समस्या ने भी उग्र-रूप धारण कर लिया युद्ध-काल में मूल्य-नियन्त्रण विभाग ने ऐसी व्यवस्था रखी थी कि चीजों की कमी होते हुए भी भाव बढ़ने न पायें

प्रेसिडेण्ट ट्रूमैन चाहता था कि इस विभाग की ओर से भाव निश्चित रहें; परन्तु मालिकों और श्रमिकों दोनों ने इसे हटवा कर राष्ट्र को स्वतंत्र व्यापार के मार्ग पर चलाने की चेष्टा की। युद्ध के उपरान्त शीघ्र ही अधिक

वेतन के लिए हड़तालों का क्रम शुरू हो गया; खानों के श्रमिकों के नेता जॉन एल० भई ने अब भी इनमें वैसा ही बढ़ा काम किया, जिस प्रकार उसने प्रथम महायुद्ध के उपरान्त किया था। कई महत्वपूर्ण उद्योगों में वेतन बढ़ा दिये गये जिसका परिणाम यह हुआ कि उत्पादक यह शिकायत करने लगे कि उनका उत्पादन पर बहुत खर्च आता है और आर्थिक विनाश से बचने के लिए उन्हें चीज़ों के भाव बढ़ाने ही होंगे।

ज़ब प्रेसिडेण्ट ने प्रतिवाद किया तो कांग्रेस ने इतना ही स्वीकार किया कि नियन्त्रण शिथिल कर दिये जायँ; इस पर भाव बढ़ने शुरू हो गये। इसके साथ ही हड़तालों के कारण असन्तोष बढ़ रहा था, देश में मकानों और वस्तुओं की कमी आ गई थी; इसका परिणाम यह हुआ कि १९४६ में कांग्रेस के चुनाव में अमेरिका के लोगों ने रिपब्लिकन उम्मीदवारों को चुना। चौदह वर्ष के बाद जब से कि 'नयी व्यवस्था' का प्रारम्भ हुआ था रिपब्लिकन दल ने पहली वार दोनों सभाओं में बहुमत प्राप्त कर लिया और प्रेसिडेण्ट ट्रूमैन और कांग्रेस के बीच संघर्ष के लक्षण दीखने लगे।

सेनेट का लीडर ओहियो का राबर्ट ए० टाफ्ट था। यह कट्टर रिपब्लिकन था और भूतपूर्व प्रेसिडेण्ट विलियम हावर्ट टाफ्ट का बेटा था। उसने 'नयी व्यवस्था की विषमताओं' को सुधारने का निश्चय किया और दो बातों पर ज़ोर दिया; एक यह कि आयकर में कमी की जाय और दूसरे श्रमसंघों की सत्ता को कुचलने और उनके नेताओं को दबाने के लिए श्रमकानून बनाया जाय।

टाफ्ट-हार्टले कानून प्रेसिडेण्ट ट्रूमैन के विरोध के होते हुए भी मंजूर हो गया। इसके द्वारा श्रमिक और मालिकों के बीच सौदा करने की शक्ति का संतुलन करने की चेष्टा की गई। यह कहा गया कि राष्ट्रीय श्रम-सम्बन्धी कानून के फलस्वरूप श्रमिकों का पलड़ा भारी रहता था। इस पुराने कानून से जहाँ मालिकों के अनुचित व्यवहारों को रोका गया था वहां नये कानून द्वारा श्रमिकों के अनुचित व्यवहार पर रोक लगा दी गई। इसके भी आगे बढ़कर 'बन्द दुकान' की प्रथा बन्द कर दी गई जिसके अनुसार मालिक केवल श्रमसंघों

से ही उनके सदस्य-श्रमिक लेकर अपने काम पर लगा सकते थे। हड़ताल करने से पहले ६० दिन की अवधि बातचीत द्वारा मामला निपटाने के लिए रखने की व्यवस्था की गई और श्रमसंघों के पदाधिकारियों को यह हलफनामा देने को कहा गया कि वे कम्यूनिस्ट हैं। श्रमसंघियों ने 'टाफ़्ट-हार्टले-दास श्रम कानून' का बड़ा विरोध किया। बाद के अनुभव से प्रतीत हुआ कि इस कानून से श्रम-आन्दोलन को कोई हानि नहीं पहुँची, केवल श्रम-संघों के अधिकारियों को आघात पहुँचा।

प्रधान ट्रूमैन की ओर से विरोध होने पर भी रिपब्लिकन काँग्रेस ने आय-कर घटा दिये सदस्यों का कहना था कि वह आयकर बहुत ज़्यादा हैं। प्रेसिण्डेट ने यह युक्ति पेश की कि राष्ट्रीय ऋण २५००० करोड़ डालर हैं: इसलिए आमदनी के सभी साधनों की आवश्यकता हैं। इसके अतिरिक्त उसने यह भी बताया कि इस समय के अन्तर्राष्ट्रीय तनाव को देखते हुए सुरक्षा के प्रबन्धों पर अधिक व्यय होना चाहिए।

सशस्त्र सैन्य-शक्ति को अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए काँग्रेस के नेताओं ने यह सुझाव रखा कि सभा का सैनिक शिक्षा दी जाय, परन्तु यह सुझाव स्वीकृत न हुआ, क्योंकि लोगों ने विरोध करते हुए इसे सैन्यवाद की दिशा में एक कदम बताया। परन्तु कांग्रेस इसमें सफल हो गई कि स्थल, जल और वायु तीनों सेनाओं को एक मन्त्री के अधीन रखा जाय जिससे रक्षा विभाग में अधिक समन्वित तथा सर्वतोमुखी योग्यता की व्यवस्था हो सके।

दल को १६४८ के चुनाव की प्रतीक्षा थी। इसमें सफलता के सम्बन्ध में उसे बड़ी आशाएँ और विश्वास था। सोलह वर्ष उपरान्त इस दल का शासन स्थापित होने की सम्भावना स्पष्ट दिखाई दे रही थी। व्यापार की स्थिति अच्छी थी, आयकरों में कमी होने पर भी साधारण लोग धन बचा नहीं सकते थे क्योंकि भाव बहुत बढ़ गये थे। ऐसा प्रतीत होता था कि देश में असन्तोष है और वह शासन में परिवर्तन लाने के लिए उद्यत है।

× × ×

अतिशय संपन्नता उच्च मूल्य और बढ़े करों इस विचित्र समन्वय का कारण आसानी से समझा जा सकता है सरकार यूरोप में साम्यवाद को बल-पूर्वक बढ़ने से रोकने के लिए "शीत युद्ध" पर बहुत व्यय कर रही थी। सोवियत् की शक्तिशाली सेनाओं ने रूस की तीमा पर स्थित बहुत से राष्ट्रों के लिए आतक पैदा कर दिया था; इनमें तेल-सम्पन्न ईरान और महत्वपूर्ण स्थिति का देश टर्की भी था। चेकोस्लवेकिया में रूस की सेनायें सीमा पर खड़ी थीं जिससे कोई विरोध करने का साहस ही न करे, और इस प्रकार वहाँ पर साम्यवादी विद्रोह सफल करवा दिया गया और एक सुदृढ़ लोकतन्त्रीय देश पर लौहावरण पड़ गया। यूनान में साम्यवादियों और सरकार की सेनाओं में गृह-युद्ध ज़ोरों पर जारी था; उधर इटली और फ्रांस में सुगठित साम्यवादी आन्दोलनों से खतरा पैदा हो गया था रूसियों ने पश्चिमी बर्लिन जाने वाले रेलमार्गों और यातायात के अन्य साधनों को बन्द करके पश्चिमी देशों को बर्लिन से निकाल देने की चेष्टा की, परन्तु संयुक्त राज्य और ब्रिटेन ने बर्लिन के अपने भागों में हवाई ज़हाजों द्वारा सामान पहुँचाया। इन सबसे बढ़कर यह बात भी प्रकट हुई कि रूस ने भी अणुबम बना लिये हैं।

द्वितीय महायुद्ध की भांति अब भी अमेरिका ने अपने मित्र देशों को एकवर्गाधिकार शासन के आक्रमण के विरुद्ध सहायता दी। यह नीति ट्रूमैन-सिद्धान्त में स्पष्ट कर दी गई और इसके परिणामस्वरूप यूनान और इटली को सैनिक तथा अर्थिक सहायता दी गई। इस बात के लिए प्रेसिडेण्ट ट्रूमैन की कुछ आलोचना अवश्य हुई कि उसने संयुक्तराष्ट्र संघ से अनुमति लिये बिना ऐसा क्यों किया, परन्तु इसके उत्तर में यह युक्ति दी गई कि जब तक संयुक्तराष्ट्र संघ कार्यसाधक रूप में इस समस्या का समाधान करने का यत्न न करे तब तक अमेरिका को अपनी ओर से ही इस सम्बन्ध में कार्यवाही करनी होगी।

यूरोप के आर्थिक संकट से निबड़ने के लिए विदेश-मन्त्री जार्ज सी मार्शल ने १९४७ में मार्शल योजना प्रस्तुत की। यूरोपीय पुनरुत्थान कार्यक्रम नाम की इस योजना का अभिप्राय "किसी देश या सिद्धान्त का विरोध करना नहीं था;

बल्कि भूख, गरीबी, निराशा और अस्तव्यस्तता को समाप्त करना था।" विदेशी-मन्त्री मार्शल ने यह माना कि यरोप के उद्योग, और कृषि-व्यवस्था को युद्ध से अत्यन्त हानि पहुँची है और उसमें साम्यवाद को बढ़ने का अवसर मिलता है और उनको पहले की भाँति अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए पर्याप्त सहायता देना आवश्यक है। इसलिए उसने रूस सहित सभी यूरोपीय देशों को आमन्त्रित किया कि वे मिलकर यह बताएँ कि उनके अपने पास क्या साधन हैं और उन्हें बाहर से क्या सहायता चाहिए, संयुक्त राज्य अमेरिका उनकी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए उधार और सामान देगा।

स्टालिन ने मार्शल-योजना का साम्राज्यवादी बताया और उसने न तो इसमें रूस को भाग लेने दिया और न अपने पिछलग्गू अन्य देशों को। किन्तु फिर भी पश्चिम जर्मनी सहित सोलह देशों की पेरिस में एक सभा हुई और उसमें पुनरुत्थान की एक योजना तैयार की गई। अमेरिका ने इसके लिए १७०० करोड़ डालर दिये। अमेरिका के उद्योगपति पाल जी० हाफ़मैन नेतृत्व में मार्शल-योजना प्रायः सर्वत्र सफल रही; पश्चिमी यूरोप के देशों ने परस्पर सहयोग से काम किया और अमेरिका की सहायता से उन्होंन ध्वंसित आर्थिक व्यवस्था का पुर्ननिर्माण कर लिया। इससे पश्चिमी देशों में साम्यवादी दलों का ज़ोर घटता ही गया।

इस प्रकार विश्व-नेता बनकर संयुक्त राज्य ने पश्चिमी यूरोप से सामूहिक सुरक्षा के लिए एक समझौता भी किया जो उत्तरी अतलान्तक समझौता कहलाया। यूरोप के महाद्वीप पर संगठन का यह आन्दोलन शुरू हुआ और अमेरिका ने इसमें अग्रदूत का काम किया। चौदह देशों ने आपस में किसी पर भी आक्रमण होने की दशा में सहातता देनें का वचन दिया; इनमें ब्रिटेन, फ्रांस, इटली, कैनेडा, यूनान और तुर्की के अतिरिक्त लेटिन अमेरिका के भी बहुत से देश आ गये, क्योंकि लेटिन देशों ने परस्पर एक समझौता किया था। उसमें एक सदस्य संयुक्त-राज्य भी है और वे अमेरिका को युद्ध में सहायता देने के लिए वचनबद्ध हैं। उत्तरी अटलांटिक समझौता-संघ १९४९ में बन गया और जनरल आइज़नहॉवर इसका प्रथम सर्वोच्च सेनापति

नियुक्त हुआ। इसका मुख्य सैनिक कार्यालय पेरिस में बनवाया गया। इस प्रकार संयुक्तराष्ट्र संघ के भीतर ही सैनिक धड़े बन गये—एक ओर स्वतन्त्र राष्ट्र थे और दूसरी ओर उनके चक्र में पड़े हुए देश।

× × ×

अमेरिका के लोग प्रेसिडेण्ट ट्रूमैन की विदेशी नीति का द्वितीय महायुद्ध के बाद के संकटकाल में समर्थन ही करते रहे। १९४८ के निर्वाचन में रिपब्लिकन दल ने घोषणा की कि यदि उनका उम्मीदवार न्यूयार्क का गवर्नर थामस इ० डोवी चुना गया तो वे भी उसी विदेश नीति को अपनायेंगे। श्रेष्ठ वक्ता डीवी शासनाधिकारी के रूप में बड़ा सफल रहा था। १९४४ के चुनाव में प्रधान रूज़वेल्ट ने उसे हरा दिया था। १९४८ के चुनाव में रिपब्लिकन दल की ओर उसके साथ कैलिफ़ोर्निया का गवर्नर अर्ल वारेन था।

इस बार चुनाव में डेमोक्रेट दल के लोगों को बड़ी चिन्ता हो रही थी; अमेरिका के करोड़ों लोगों में पहली बार टेलिवीज़न पर यह चुनाव-आन्दोलन शुरू हो गया। स्वदेश की समस्याओं पर रिपब्लिकन बहुमत वाली काँग्रेस ने प्रेसिडेण्ट ट्रूमैन को निष्प्रभ बना दिया था। इससे अधिक महत्व की बात यह थी कि डेमोक्रेटिक दल के दक्षिण और वाम पक्ष दोनों ही प्रेसिडेण्ट के विरोधी हो गये थे। दक्षिण-पक्ष दक्षिणी राज्यों में था, वहाँ पर ट्रूमैन के उन यत्नों का लोगों में बडा विरोध हो रहा था। जिनके द्वारा केन्द्रीय सरकार की ओर से कानून बनाकर नीग्रो लोगों को और अधिकार दिये जा रहे थे। वाम पक्ष का नेता हैनरी ए वैलेस था जो रूज़वेल्ट के समय में वाइस-प्रेसिडेण्ट था और जो रूस के प्रति नर्म नीति अपनाने के पक्ष में था। वैलेस प्रसिडेण्ट ट्रूमैन के शासन-काल में वाणिज्य मन्त्री रह चुका था; परन्तु उसने खुले आम प्रेसिडेण्ट की नीतियों का विरोध किया था और उसे मन्त्री पद से हटाया गया था। १९४८ में उसने डेमोक्रेटिक दल से सम्बन्ध तोड़ कर एक नयी प्रगतिशील' पार्टी बनायी थी; जिसको अमेरिका के कम्यूनिस्टों का समर्थन झट प्राप्त हो गया।

ट्रूमैन यदि चाहता तो डेमोक्रेटिक दल की गोष्ठी में जातीय भेद-भाव को दबाने वाले रागरिक अधिकारों के कार्यक्रम पर ज़ोर न देकर दक्षिण के

मतदाताओं का समर्थन प्राप्त कर सकता था। युद्धकाल में नयी व्यवस्था के फेयर एम्पलायमेंट् प्रेक्टिसेज़, कमीश्न ने नीग्रो तथा अन्य अल्पसंख्यक जातियों को काम पर लगाने में बाधक प्रतिबन्धों को समाप्त करने की चेष्ठा की थी। ट्रूमेन चाहता था कि काँग्रेस इस आशय का कानून बनाकर इस नीति को कार्यान्वित करे। वह पोल-टैक्स को भी समाप्त करना चाहता था, जिससे बहुत से दक्षिणी नीग्रो तथा श्वेत जाति के निर्धन लोग मतदान न कर सकते थे।

दक्षिण के प्रतिनिधियों ने नागरिक अधिकारों के कार्यक्रम का घोर विरोध किया और यह आग्रह किया कि नीग्रो लोगों के लिए अधिक सुविधाएँ एवं अधिकार प्राप्त करवाना राज्यों का अपना काम है, इसमें केन्द्रीय सरकार का दखल नहीं होना चाहिये। उनका कहना था कि संयुक्त राज्य सरकार चाहे कैसे भी कानून क्यों न बनाये, उनसे दक्षिण में जातिभेद की समस्या स्वयमेव हल नहीं हो जायगी। उन्होंने यह भी बताया कि नीग्रो लोगों ने शिक्षा, सरकारी पदों और मकानों के सम्बन्ध में पिछले कुछ वर्षों में पर्याप्त उन्नति कर ली है।

जब प्रेसिडेण्ट ट्रूमैन नागरिक अधिकारों के प्रश्न पर दृढ़ता से अड़ गया तो दक्षिण वालों ने पृथक् हो कर राज्यीय-अधिकार दल बनाया और प्रेसिडेण्ट पद के लिए दक्षिणी कैरोंलाइना के गवर्नर जे स्ट्राम थर्मांड को उम्मीदवार खड़ा किया। अब चुनाव में चार उम्मीदवार थे—डीवी, ट्रूमैन, थर्मांड और वैलस। ज्योंही चुनाव-आन्दोलन ने ज़ोर पकड़ा, लोगों का यह अनुमान था कि रिपब्लिकन दल बड़ी सुगमता से जीत जायगी क्योंकि विरोधी बँटे हुए हैं। इसीलिए उनके उम्मीदवार गवर्नर डीवी ने न तो अधिक प्रयास किया और न ही विवादास्पद प्रश्नों को ही छेड़ा। इसके विपरीत प्रेसिडेण्ट ट्रूमैन ने सारे देश का चक सिरे से दूसरे सिरे तक दौरा किया, जिसमें टाफ़्ट-हार्टले कानून की निन्दा की, रिपब्लिकन दल की 'निकम्मी' काँग्रेस की कटू आलोचना की, साम्यवादियों का कठोर विरोध करने की सरकारी नीति की सराहना की, नागरिक अधिकारों का समर्थन किया, किसानों को अधिक सहायता, तथा समाजिक सुरक्षा की अधिक सुविधा के वचन दिये। प्रेसिडेण्ट ने आंधी की भाँति देश का भ्रमण किया, लोगों की अपनी भाषा में उनको समझाया और चुनाव

के दिन ऐसी विचित्र घटना हुई, जैसी अमेरिका के राजनीतिक इतिहास में अन्यत्र मिलनी कठिन है।

जब मतगणना हुई तो ट्रूमैन के पक्ष में ३०३ निर्वाचक थे और गवर्नर डीवी के पक्ष में १८९, थर्मांड को ३९ और वैलेस को कोई भी वोट न मिल सका। राज्यों को अधिकार दिलाने वालों के प्रचार के होते हुए भी दक्षिण में अधिक वोट ट्रूमैन को ही मिले और वैलेस की तुष्टीकरण नीति लोगों को बिल्कुल मान्य न हुई। किसानों और श्रमिकों ने अपने समर्थन से डेमोक्रेट दल का पलड़ा भारी कर दिया जैसा कि पहले भी उन्होंने 'नयी व्यवस्था' के समय किया था। काँग्रेस के दोनों सदनों में डेमोक्रेटिक दल का बहुमत हो गया और ऐसा प्रतीत होता था कि प्रेसिडेण्ट अब 'समुचित व्यवस्था' का अपना कार्यक्रम शुरू कर सकेगा।

दूसरी बार प्रधान बनने के उपरान्त अपने प्रथम भाषण में ट्रूमैन ने विश्व-शान्ति की स्थापना के लिए अमेरिका की विदेश नीति के एक अन्य पहलू की घोषणा की 'चार प्रमुख कार्रवाइयों' में यह चौथी थी और इसे चतु:सूत्री योजना के नाम से पुकारा गया। इसके सम्बन्ध में कहा गया "यह एक नयी बृहद् योजना है जिसके द्वारा अपनी वैज्ञानिक प्रगति तथा औद्योगिक उन्नति से लाभ उठा कर कम-उन्नत तथा पिछड़े देशों के विकास तथा उनकी उन्नति में सहायता दी जाएगी"। टैक्निकल मदद देने के कार्यक्रम से अमेरिका को आशा है कि वह संसार भर में जीवन-स्तर के उन्नत करने में सहायक होगा। इसके द्वारा रोगों को समाप्त करने, व्यर्थ पड़ी भूमि को कृषि-योग्य बनाने, प्राकृतिक भण्डारों से काम लेने तथा देश-देशान्तरों में ऐसा ही अन्य लाभकारी योजनाओं को बढ़ावा देने के लिए काम करने के लिए कहा गया।

परन्तु उधर स्वदेश में पद सम्हालते ही प्रेसिडेण्ट ट्रूमैन को निराशाओं का सामना करना पड़ा। नयी काँग्रेस स्वभाव में बहुत अनुदार सिद्ध हुई और उत्तर के रिपब्लिकन तथा दक्षिण के डेमोक्रेटिक सदस्यों के गठबन्धन से मुख्य विधान-कार्यों में बाधाएँ पड़ीं। बजट में कटौती करने के यत्न किये गये

श्रौर शासन-प्रवन्ध में अपव्यय तथा अयोग्यता की शिकायतें बड़े जोर के साथ की गयी।

ट्रूमैन शासन के लिए इससे भी बुरी बात यह हुई कि विस्कोन्जिन के रिपब्लिकन सेनेटर जोज़ेफ मैंकार्थी-सरीखे लोगों ने यह दोष लगाये कि शासन के और विशेषकर डीन एचिसन के विदेशी-विभाग में साम्यवादी एजन्ट और उनके प्रति सहानुभूति रखने वाले भरे पड़े हैं। बात यहाँ तक बढ़ी कि यह दोषारोपण किया गया कि उस समय भी कई अधिकारी साम्यवादी एजंट थे तथा उनके प्रति सहानुभूति रखते थे जब कि 'नयी व्यवस्था लागू हो रही थी तथा जब द्वितीय महायुद्ध हो रहा था, और औपचारिक रूप से रूस के साथ सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण थे। विशेषकर विदेश-विभाग के एक विश्वस्त अधिकारी एल्जर हिस पर मुक़दमा चलाने और उसे दण्ड देने से लोगों को इस भय का एक प्रत्यक्ष प्रमाण मिल गया कि राज्य शासन में जासूसी और देश को हानि पहुँचाने की योजनाओं का जाल बिछा है।

ज्यों-ज्यों "अन्तर्राष्ट्रीय तनाव" चलता रहा संयुक्त राज्य ने साम्यवादी दल तथा तत्सम्बन्धी संस्थाओं को दबाने के लिए नये-नये कदम उठाये। उन पर यह प्रतिबन्ध लगाया गया कि वे अपने-आप को सरकार के पास दर्ज करायें और अपने कृत्यों का व्योरा दिया करें। १९४९ में एक मुकदमा चिरकाल तक चलता रहा और इसमें साम्यवादी दल के दस नेताओं पर यह दोष सिद्ध हो गया कि उन्होंने संयुक्तराज्य सरकार का शासन समाप्त करने का षड्यंत्र रचा है, और उन्हें जेल भेज दिया गया। साम्यवादियों से सहानुभूति रखने के दोष में कुछ व्यक्तियों और दलों की स्थानीय तौर पर छान-बीन और पूछताछ भी हुई। कहीं-कहीं यह आशंका भी प्रकट की गई कि यह अन्धाधुन्ध पूछताछ करने वाली समितियों ने व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के अमेरिकी सिद्धान्त के लिए उसी भाँति खतरा पैदा कर दिया है जिस प्रकार १७९८ के एलियन (विदेशी) तथा सिडीशन (राजद्रोह) एक्टस् से हो गया था। दूसरी ओर यह युक्ति दी गई कि अमेरिका को अपनी सुरक्षा के लिए ज़रूर कुछ करना चाहिए और उसकी न्याय-विधि साम्यवादियों की न्याय-विधि से निस्संदेह कहीं अच्छी है।

जब संयुक्त राज्य में साम्यवाद की समस्या गम्भीर प्रश्न पैदा कर रही थी—एक ओर देश को हानि पहुँचाने वाली कार्रवाइयां थीं, दूसरी ओर कानून की समुचित विधि का विरोध हो रहा था; ठीक इस समय कोरिया में स्वतन्त्रता पर एक विभिन्न प्रकार का आक्रमण होने लगा।

× × ×

द्वितीय महायुद्ध के उपरान्त एशिया में बड़ी उत्तेजनापूर्ण तथा उलझी हुई घटनाएँ घटीं। संयुक्त राज्य ने कुछ वर्ष तक वहाँ की परिस्थिति को सुलझाने का यत्न किया; फिर वह वहाँ से हट आया; परन्तु अन्त को उसे उस महाद्वीप के मामलों में पहले से भी अधिक उलझना पड़ गया।

फ़िलिपीन को स्वाधीनता प्रदान करने के अपने वचन का पालन करते हुए अमेरिका ने ४ जुलाई १९४६ को इन टापुओं को स्वतन्त्र कर दिया। आर्थिक सहायत के बदले में नये गणराज्य ने अमेरिकी सेनाओं के प्रयोग के लिए अपने यहां महत्वपूर्ण सैनिक अड्डे दिए।

युद्ध के उपरान्त जनरल मैकार्थर को जापान का सैनिक गवर्नर नियुक्त किया गया और जापान के लोगों में अनेक लोकतन्त्रीय प्रक्रियाएँ प्रचलित की गई। सम्राट् हिरोहितो को शासक रहने दिया गया, परन्तु संविधान नया बना, जिसके द्वारा एक ऐसा विधान-मण्डल बनाया गया, जिसे पुरुष और स्त्रियों दोनों ने चुना था। १९५१ में रूस का प्रतिरोध होते हुए भी जापान के विरुद्ध युद्ध में शामिल देशों ने उसके साथ शान्ति-सन्धि कर ली। इस सन्धि के अनुसार जापान ने अपने टापुओं के अतिरिक्त बाकी सभी प्रदेशों पर अपना अधिकार छोड़ दिया। इस सन्धि-पत्र को जिस पर जापान ने हस्ताक्षर कर सन्तोष अनुभव किया, संयुक्त राज्य के विशेष दूत जॉन फास्टर डलेस ने तैयार किया था। इसके उपरान्त जापान ने प्रशान्तमहासागर की सुरक्षा में सहायता देने के लिए सैनिक अड्डे संयुक्त राज्य को प्रदान कर दिये।

चीन में अमेरिका की,नीति इतनी सफल नहीं रही। युद्धकाल में अमेरिका ने यह प्रयत्न किया कि चीन को स्वीकृत सरकार के प्रमुख च्यांग काई शेक

ग्रौर चीन के साम्यवादी नेताग्रों में गठबन्धन करा दिया जाय। साम्यवादी देश के एक बड़े भाग में छापामार युद्ध कर रहे थे। संयुक्त राज्य का उद्देश्य यह था कि चीन के सभी लोगों को संगठित कर जापानियों के विरुद्ध खड़ा किया जाय, परन्तु इसमें वह ग्रसफल रहा।

रूस ने च्यांग के साथ एक समझौता किया था फिर भी जापान के साथ युद्ध के उपरांत उसने चीन की साम्यवादी सेनाग्रों को प्रचुर मात्रा में युद्ध-सामग्री भेजी ग्रौर साम्यवादियों ने राष्ट्रवादियों पर पुनः ग्राक्रमण शुरू कर दिये। ग्रमेरिका में बहुत से लोग यह समझते थे कि च्यांग की सरकार में जो भ्रष्टाचार फैला है, उसी के कारण उसकी सेनाग्रों का उत्साह शिथिल है ग्रौर हौसले टूटे हुए; पर ऐसे भी कई लोग थे जो कहते कि चाहे च्यांग में बहुत त्रुटियाँ हैं, फिर भी उसे ग्रधिक सहायता देकर साम्यवादी लहर को रोका जा सकता है। दूसरी ग्रोर साम्यवादियों ने भूमि-सुधारों के जो वचन दिये उनसे उन्हें लोगों का समर्थन प्राप्त होने में बड़ी सहायता मिली।

ज्यों-ज्यों चीन में संकट बढ़ता गया, ग्रमेरिकी सरकार को विश्वास हो गया कि चीनी लोगों के समर्थन के बिना चाहे कितनी भी सैनिक व ग्रार्थिक सहायता क्यों न दी जाय, च्यांग को बचाया नहीं जा सकेगा। इस कारण ग्रमेरिका की सहायता निरन्तर घटती गयी। ग्रन्त में च्यांग ग्रपनी बची-खुची सेना लेकर फार्मोसा भाग गया ग्रौर चीन पर साम्यवादियों का ग्रधिकार हो गया।

द्वितीय महायुद्ध के ग्रन्तिम दिनों में रूस ने जापान के विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया था ग्रौर उसकी सेनाएं जापान-ग्रधिकृत कोरिया पर ग्राक्रमण कर ३८° ग्रक्षांश तक बढ़ गयी थीं। तब संयुक्त-राज्य ग्रौर रूस में यह समझौता हुग्रा था कि ३८° ग्रक्षांश के दक्षिण में जापान की सेनाग्रों से ग्रमेरिकी सेनाएं ग्रात्मसमर्पण करवायेगी ग्रौर उत्तर में रूसी। युद्धके दिनों में इससे पूर्व यह मान लिया गया था कि कोरिया को पूर्ण रूप से स्वतन्त्रता दे दी जायगी।

परन्तु रूस ने इस प्रायद्वीप के ग्रपने ग्राधे भाग को छोड़ने की कोई इच्छा न दिखाई ग्रौर उत्तरी कोरिया को साम्यवादी बनाना शुरू कर दिया। संयुक्त

राज्य ने यह मामला संयुक्त-राष्ट्र की बृहत्सभा में रखा, जिसने कोरिया में स्वतन्त्र सरकार की स्थापना के लिए सारे देश में चुनाव करने का आदेश दिया। परन्तु अपने अधीन उत्तरी कोरिया में रूस-अधिकारियों ने चुनाव करवाने से इन्कार कर दिया, और निर्वाचन केवल दक्षिणी कोरिया में हुए। नये गणराज्य का प्रधान सिग्मिन री को चुना गया और संयुक्त-राष्ट्र ने उसी की सरकार को सारे कोरिया के वैध शासन के रूप में मान्यता प्रदान की। इसके उपरान्त वहां से अमेरिकी सेनाएँ हटा ली गयीं।

इस समय तक रूसी अधिकारियों ने उत्तरी कोरिया में एक कठपुतली "जनतन्त्रीय गणराज्य" की स्थापना कर ली थी, एक सेना शिक्षित तथा सज्जित कर दी और अपनी सेनाओं का बड़ा भाग वहाँ से निकाल लिया कोरिया पर पूरे ज़ोर से हमला कर दिया।

संयुक्त-राष्ट्र की ओर से तत्काल कार्रवाई की गयी। जब सुरक्षा-परिषद् का अधिवेशन हुआ; तब रूसी-प्रतिनिधि ने उसका बहिष्कार किया। परिषद् ने संयुक्त राष्ट्र के सदस्य-देशों को कहा कि "कोरिया पर सशस्त्र आक्रमण का प्रतिरोध किया।" लोकतन्त्रीय देशों के लिए यह भारी भय तथा चिन्ता का विषय था क्योंकि यदि यहाँ पर साम्यवादी सफल हो जाते तो एशिया में फिर भी इसी प्रकार के आक्रमण करने का मार्ग खुल जाता। विशेषकर फ्रांस अधिकृत हिन्दचीन में जहाँ कि साम्यवादियों ने बड़े ज़ोरों से गृहयुद्ध शुरू कर रखा था।

प्रेसिडेण्ट ट्रूमैन ने संयुक्त-राष्ट्र के निर्देश पर बड़े साहसपूर्ण और निर्णायक ढंग से कार्य किया। उसने घोषणा की कि अमेरिकी सेनाएँ दक्षिणी कोरिया की सहायता करेंगी; उसने यह आज्ञा भी दे दी कि सप्तम जलबेड़ा चीन और फार्मोसा के मध्यवर्ती सागर में रहे और उस प्रदेश में युद्ध को फैलने से रोके। संयुक्त-राष्ट्र ने तब ट्रूमैन को यह अधिकार दे दिया कि वह कोरिया में संयुक्त-राष्ट्र की सेनाओं का नेतृत्व करने के लिए कमाण्डर नियुक्त कर दे और उसने यह काम जनरल मैकार्थर को सौंपा। अमेरिकी सेनाएं जापान से

युद्ध-स्थल में भेज दी गयीं और संयुक्त-राष्ट्र संघ के अन्य सदस्य-देशों ने भी शीघ्र ही अपनी सेनाएं और सामग्री वहां भेजी।

युद्ध के प्रथम दौदे में तो उत्तरी कोरिया की सेनाओं ने संयुक्त-राष्ट्र की सेनाओं को कोरिया से लगभग निकाल ही दिया था। सिओल पर अधिकार करने के उपरान्त वे पूसान तक बढ़ गयी थीं। परन्तु सितम्बर १९५० में मैकार्थर ने प्रत्याक्रमण करके इन्चीन में जल-थल नभचर सेना उतारी और शत्रु के एक पार्श्व पर प्रहार शुरू कर दिया। संयुक्त-राष्ट्र की सेनाओं में उस समय अधिकतर दक्षिणी कोरिया तथा अमेरिका के सैनिक थे। उन्होंने सिओल पर पुन: अधिकार कर लिया। ३८° अक्षांश को पार करके वे उत्तरी कोरिया में दूर तक बढ़ गये। उनके अग्रिम दल मन्चूरिया की सीमा पर यालू नदी तक पहुंच गये।

इस समय चीन के साम्यवादी "स्वयं-सेवकों" के एक बड़े समूह ने संयुक्त-राष्ट्र की सेनाओं पर आक्रमण कर दिया और उन्हें पुनः ३८° अक्षांश के दक्षिण में धकेल दिला। रूस ने इन्कार किया कि इस आक्रमण में उसका कोई हाथ है;परन्तु अधिकांश प्रेक्षकों को इसमें कोई सन्देह नहीं था कि यह आक्रमण रूस के ही आदेश पर हुआ था। बहुत दूर तक पीछे हटने के उपरान्त संयुक्त-राष्ट्र की सेनाएँ फिर सम्भल गयीं। घोर-युद्ध करते और उत्तरी कोरिया तथा चीन के सैनिकों को भारी क्षति पहुँचाते हुए वे ३८° अक्षांश तक बढ़ गयीं और वहां पर पहुँच कर स्थिर हो गयीं।

अब संयुक्त-राष्ट्र के समक्ष समस्या यह थी कि इस युद्ध में चीन के हस्तक्षेप का क्या किया जाय। कुछ समय से जनरल मैकार्थर का सुझाव यह था कि चीन के तट पर पूर्ण नाकाबन्दी करके विजय की प्राप्ति का यत्न किया जाय। च्यांग के सिपाहियों को फार्मोसा से लाकर युद्ध में भेजा जाय और शत्रु के उन हवाई-अड्डों पर गोलाबारी की जाय जिनके सम्बन्ध में उसने कहा था वे मंचूरिया की "सुविधा-जनक आड़ में" हैं। यह विचार आकर्षक तो था, परन्तु संयुक्त राज्य तथा संयुक्त-राष्ट्र के अन्य देशों ने इसका विरोध किया, क्योंकि डर था कि ऐसा करने से तीसरा महायुद्ध आरम्भ हो जायगा। जब मैकार्थर का यह कथन

बहुत ज़ोर पकड़ गया और उसने खुले आम ऐसे बयान दिये जो संयुक्त-राष्ट्र की नीति के विरुद्ध थे तो प्रेसिडेण्ट ट्रूमैन ने उसे सेनापति के पद से हटा दिया और वह स्वदेश लौट आया। उस समय उसके सम्बन्ध में बहुत विवाद चल रहे थे, परन्तु राष्ट्र में उसका बहुत सम्मान हुआ।

जून १९५१ में संयुक्त-राष्ट्र में रूसी प्रतिनिधि-मण्डल ने यह सुझाव रखा कि "लड़ते हुए देशों में युद्ध-विराम-सन्धि के लिए बात-चीत शुरू करायी जाय।" इसे दोनों पक्षों ने झट मान लिया और ३८° अक्षांश के पास ही केसाँग में बात-चीत शुरू हो गयी। परन्तु इस सम्बन्ध में झगड़ा खड़ा हो गया कि युद्ध विराम की रेखा कहां पर हो और युद्ध-बन्दियों का क्या किया जाय। साम्य-वादियों की मांग थी कि सभी युद्धबन्दी अपने-अपने देश को लौटा दिये जायँ, परन्तु उत्तरी कोरिया के हज़ारों सिपाही जो साम्यवादी नहीं थे, वापस जाना नहीं चाहते थे। यह प्रश्न बड़ा जटिल था और बात-चीत चलती रही; उधर २५०,००० अमेरिकी सैनिक संयुक्त-राष्ट्र के झण्डे के नीचे ३८° अक्षांश पर लड़ते मरते डटे रहे।

× × ×

जिस प्रकार अमेरिका के लोगों ने प्रसिडेण्ट ट्रूमैन की यूरोप-सम्बन्धी नीति का समर्थन किया था उसी भाँति उन्होंने एशिया से साम्यवाद को दूर रखने के लिए उसका साथ दिया। परन्तु ज्यों-ज्यों कोरिया में जान की हानि अधिक होती गयी, राष्ट्रीय ऋण बढ़ता गया और यह समस्या जटिल होती गयी कि बढ़ा युद्ध शुरू किये बिना लड़ाई किस प्रकार जीती जाय, त्यों-त्यों लोगों की आस्था सरकार में घटने लगी।

इस असन्तोष को रिश्वत और भ्रष्टाचार के समाचारों ने और भी बढ़ा दिया। देश के आय-विभाग के बड़े-बड़े अधिकारी आय-कर न देने वालों पर मुकदमे चलाने की बजाय उनसे रिश्वत ले रहे थे। पुनर्निर्माण वित्त-कार्पोरेशन भी बदनाम हो रही थी, वहां पर कांग्रेस के सदस्य और अधिकारी उद्योग-पतियों को उद्योग-ऋण दिलवाने के बदले में कई प्रकार से कमीशन ले रहे थे। यहां तक कि न्याय-विभाग की भी कटु आलोचना हो रही थी कि

उसने कैन्सास शहर के पैण्डरगास्ट की भ्रष्ट राजनीति व्यवस्था में वोटों के छलबल की पड़ताल करने में उत्साह नहीं दिखाया। यही यह स्थान था जहाँ प्रेसिडेण्ट ट्रूमैन ने अपना राजनीतिक जीवन शुरू किया।

१९५१ में संविधान का २०वाँ संशोधन स्वीकृत हुआ जिसमें कहा गया था कि भविष्य में कोई प्रेसिडेण्ट दो से अधिक बार पद पर नहीं रह सकता या फिर दो वर्ष से अधिक समय तक एक बार और फिर एक पूरी अवधि प्रेसिडेण्ट रहने के उपरान्त उसको यह पद नहीं मिल सकता। यह संशोधन "उस व्यक्ति पर लागू न होगा जो उस समय प्रेसिडेन्ट हो जब कि इस संशोधन का सुझाव रखा गया"; परन्तु ट्रूमैन ने घोषणा कर दी कि वह पुनः चुनाव न लड़ेगा।

१९५२ के चुनाव का आन्दोलन कुछ जल्दी ही शुरू हो गया। सेनेटर टाफ्ट ने रिपब्लिकन दल की ओर से उम्मीदवार खड़ा होने की इच्छा एक वर्ष पहले ही प्रकट कर दी। टाफ्ट का स्वभाव कटु तथा विश्लेषणात्मक होने के कारण वह अधिक लोकप्रिय कभी नहीं हुआ, और पृथक्तावादी प्रवृत्ति के कारण उसकी आलोचना भी होती रही। परन्तु फिर भी वह योग्य राजनीतिक नेता था और उस समय रिपब्लिकन दल पर उसका नियन्त्रण भी था।

रिपब्लिकन दल का उदार तथा अन्तर्राष्टीय मामलों में रुचि रखनेवाला एक वर्ग अधिक प्रभावशाली उम्मीदवार की खोज में था; इस वर्ग के नेता मैसाचूसेट्स का सेनेटर कैबट लॉज जूनियर था; वह यूरोप में उत्तरी अतलांतक सन्धि संस्था के मुख्य कार्यालय में जनरल आइज़नहॉवर के पास गया और उसके राजनीतिक विचारों के सम्बन्ध में पूछा। आइज़नहावर राष्ट्र के सर्वश्रेष्ठ युद्धकालीन नेता के रूप में विख्यात् हो चुका था और उसने अपनी राजनीतिक प्रवृत्ति के बारे में कभी कुछ नहीं कहा था। १९४८ में डेमोक्रेट दल के प्रतिनिधि भी उसके पास गये थे ताकि वे उसे अपने दल की ओर से उम्मीदवार खड़ा कर सकें।

लॉज और उसके सहयोगियों को बड़ी प्रसन्नता हुई जबकि आइज़नहॉवर ने अपने को रिपब्लिकन घोषित कर दिया और कहा कि यदि लोग उसे चाहते

हैं तो वह चुनाव में खड़ा होने के लिये तैयार है। जब यह स्पष्ट हो गया कि उसे रिपब्लिकन दल की ओर से उम्मीदवार खड़ा किये जाने की बड़ी सम्भावना है तो जनरल ने यूरोप में अपने पद से त्यागपत्र दे दिया और चुनाव के आन्दोलन में भाग लेने के लिए अमेरिका आ गया।

टाफ्ट और उसके पक्षपातियों ने आइज़नहॉवर के पक्ष में बढ़ते हुए जनमत को विचलित करने की पूरी चेष्टा की। कॉन्वेशन के 'धुएं से भरे' कमरों में उन्होंने टाफ्ट का पक्ष सबल बनाने का भरसक यत्न किया। परन्तु आइज़नहॉवर के समर्थक वर्ग को दबाया न जा सका और पहले ही चुनाव में उसका नाम स्वीकृत हो गया। वाईस-प्रेसिडेण्ट के लिये कैलिफोर्निया के सेनेटर रिचर्ड एम० निक्सन का नाम प्रस्तावित हुआ।

प्रेसिडेण्ट ट्रूमैन के उपरान्त डैमोक्रेट दल की ओर से प्रधान पद पर जो आना चाहते थे उनमें टेनेसी का सेनेटर एस्टस केफॉवर भी था जिसने अपराधों की छान-बीन करने में टेलिविज़न पर राष्ट्र भर में ख्याति पायी थी; इसके अतिरिक्त वॉईस-प्रेसिडेण्ट एल्बन बर्कली, जार्जिया का सेनेटर रिचर्ड रस्सल और पारस्परिक सुरक्षा-व्यवस्था का प्रमुख अधिकारी एवरिल हैरीमैन भी था। पर इनमें से कोई भी उम्मीदवार प्रेसिडेण्ट ट्रूमैन को पसन्द नहीं आया; उसने इलीनॉय के गवर्नर एडलॉय स्टीवेन्सन को चुना।

स्टीवेन्सन ने राजनीति में नये-नये ही कदम रखा था; परन्तु उसने काफी ख्याति पायी और गवर्नर के पद पर भी उसकी बड़ी सराहना हुई थी। ख्याल था कि डैमोक्रेटिक उम्मीदवार के रूप में यदि उसको खड़ा किया जाय तो दल के साथ जुड़ा हुआ भ्रष्टाचार का लाञ्छन छिप जायगा। यद्यपि स्टवे सन प्रधान पद के लिए खड़ा होना नहीं चाहता था, परन्तु दल के दबाव में आ गया। दक्षिण के वोट प्राप्त करने के उद्देश्य से डेमोक्रेटिक दल की ओर से वाईस-प्रेसिडेण्ट के लिए अल्बामा के सेनेटर जॉन स्पार्कमैन को उम्मीदवार चुना गया।

१९५२ का चुनाव-आन्दोलन इस दृष्टि से अपूर्व था कि किसी भी उम्मीद-वार को राजनीति का अधिक अनुभव न था, जनरल आईज़नहॉवर को तो इस

सम्बन्ध में कोई अनुभव था ही नहीं। जब यह आन्दोलन बढ़ा तो अमेरिकी लोगों पर जनरल के सरल और सीधे-साधे शब्दों में विश्वास प्रकट करने वाले भाषण हुए जो स्टीवेन्सन के स्वदेश तथा विश्व के मामलों पर योग्यता, वाक्पटुता और औपचारिकता से परिपूर्ण भाषण का विरोधाभास के रूप में थे।

इस आन्दोलन में मुख्य प्रश्न थे—कोरिया, भ्रष्टाचार और 'समुचित व्यवस्था'। पहले दो प्रश्नों पर आइज़नहॉवर का पक्ष भारी था; सैनिक होने के नाते एसा प्रतीत होता था कि वह कोरिया की कठिनाइयों को अधिक योग्यता से सुलझा सकेगा और उसने वचन दिया था कि यदि वह चुना गया तो वह देखभाल के लिए स्वयं कोरिया जाएगा। भ्रष्टाचार के प्रश्न पर स्टीवन्सन का पक्ष कमजोर था क्योंकि चाहे वह स्वयं अत्यन्त दियानतदार था परन्तु वह प्रेसिडेण्ट ट्रूमैन द्वारा चुना गया उम्मीदवार था और वह अब उसके लिए पूरे ज़ोर से यत्नशील था।

'समुचित व्यवस्था' के प्रश्न पर स्टीवेन्सन ने रूज़वेल्ट और ट्रूमैन की परम्पराओं को चलाने का वचन दिया। पर यहाँ भी वह अपने विरोधी से आगे न बढ़ सका। आइज़नहॉवर ने स्पष्ट रूप से मान लिया कि "छोटे आदमियों" को जो सामाजिक तथा आर्थिक लाभ पहुँचे है वे डेमोक्रेटिक दल की नीतियों का परिणाम हैं और उसने उन्हीं नीतियों पर दफ़तरी राज, कम-दफ़तरी विलम्बीकरण और रिश्वतखोरी रोकने का वचन दिया।

दक्षिण में अभी डेमोक्रेटिक दल का ही ज़ोर था और वहाँ के लोग इस संघर्ष में बड़ी रुचि ले रहे थे। युद्ध-नेता के रूप में जनरल आइज़नहावर बड़ा लोक-प्रिय हुआ था। वह टक्सास में उत्पन्न हुआ और उसने दफ़तरी राज और अत्यधिक केन्द्रीयकृत सरकार पर जो आक्षेप किये उनके कारण ऐसा प्रतीत होने लगा कि वह राज्यों को अधिकार देने के पक्ष में है। दक्षिण के लोग यह सोचने लगे कि क्या यह सम्भव है कि 'घृणित' रिपब्लिकन दल उन्ही सिद्धान्तों पर डेमोक्रेटिक दल से भी अधिक दृढ़ता से चले जो जैफरसन तथा कल्हौन ने अपनाये थे।

दक्षिण को समुद्र की तह में तेल के प्रश्न पर विशेष रुचि थी। टैक्सास, लुइसियाना और फ्लोरिडा (और कैलिफ़ोर्निया) के तटों पर समुद्र के नीचे तेल के बड़े भण्डार मिले, जिनसे काम लेकर लाभ उठाया जा सकता था क्योंकि वहां अनुमानतः ४००० करोड़ से लेकर २५,००० करोड़ डालर के मूल्य का तेल है। तेल के इन भण्डारों पर किसका अधिकार समझा जाय—निकटवर्ती राज्यों का या केन्द्रीय सरकार का ? तीन बार इस पर सर्वोच्च-न्यायालय केन्द्रीय सरकार के पक्ष में निर्णय दे चुका था।

इस बार चुनाव के आन्दोलन में जनरल आइजनहॉवर ने यह कहकर दक्षिण का समर्थन प्राप्त कर लिया कि राज्यों को 'ऐतिहासिक सीमाओं' के बाहर तेल निकालने का अधिकार दिया जाय; अर्थात् कलिफ़ोर्निया और लुइसियाना के तीन-तीन मील तक और टेक्सास तथा फ़्लोरिडा साढ़े दस मील तक राज्य तेल निकाल सकते हैं। गवर्नर स्टीवेन्सन ने इसका विरोध किया। उसने घोषणा की कि समुद्रतल के भण्डार संयुक्त राज्य—सरकार के हैं और इन पर अमेरिका के सभी लोगों का अधिकार हैं; हाँ इतना हो सकता है कि संलग्न राज्यों को लाभ का कुछ भाग देने की कोई विधि निकाल ली जाय।

अपने मानचित्रों, आंकड़ों और तालिकाओं द्वारा राजनीतिक भविष्यवक्ता आइजनहॉवर-स्टीवेन्सन—चुनाव के निकट आ जाने पर एक दिन पहले यही अनुमान लगा रहे थे कि मुकाबला सख्त होगा और उसका परिणाम कुछ भी हो सकता है। चौबीस घंटे बाद ही वे बड़े आश्चर्य में पड़कर सोच रहे थे कि उनकी भविष्य-वाणियां किस प्रकार गलत सिद्ध हुई हैं।

आइजनहॉवर की बड़ी भारी जीत हुई। उसके पक्ष में निर्वाचक-मण्डल के ४४२ वोट आये और स्टीवेन्सन के पक्ष में ८९ और जनसाधारण में कोई ३ करोड़ ४ लाख लोगों ने आइजनहॉवर का समर्थन किया और २ करोड़ ७० लाख ने उसके विरोधी का। "दक्षिण की मजबूती" टूट गई; क्योंकि वर्जिनिया, टेनेसी, टेक्सास और फ़्लोरिडा ने रिपब्लिकन दल का समर्थन किया। गवर्नर स्टीवेन्सन के पक्ष में ९ राज्यों ने अधिक वोट दिए; वे पश्चिमी वर्जिनिया को छोड़कर सबके सब दक्षिणी राज्य थे और पश्चिमी वर्जिनिया भी

तो दक्षिण की सीमा पर स्थित है। गवर्नर ने चुनाव के आन्दोलन में अत्यन्त शानदार ढंग से काम किया जिससे लोगों में उसके प्रति मान और स्नेह के भाव बढ़े। परन्तु अमेरिका के लोगों ने यह निश्चय कर लिया था कि बीस वर्ष डेमोक्रेटिक दल का शासन रहने के उपरान्त अब अवसर आया है जबकि राजनीतिक व्यवस्था और शासन में कोई परिवर्तन लाया जाय।

× × × ×

२० जनवरी १९५३ को आइजनहॉवर ने वाशिंगटन के कांग्रेस-भवन में संयुक्त राज्य के ३४ वें प्रेसिडेण्ट का पद सम्भाला। प्रायः शान्त और हंसमुख रहनेवाले व्यक्ति ने अब प्रेसिडेण्ट पद से कठोर और गम्भीर मुद्रा में राष्ट्र को सन्देश दिया "मेरे देश के लोगो ! संसार ने और हमने निरन्तर चुनौती देती हुई शताब्दी का आधा भाग बिता दिया है। हमें सभी भाँति यही प्रतीत होता है कि आज भी अच्छी और बुरी शक्तियां उसी भाँति एक दूसरे के मुकाबले में खड़ी हैं जिस प्रकार वे कभी इतिहास में मुश्किल से थी। हमें बुद्धि और सूझ-बूझ से काम करना हैं; हमें मेहनत से काम करना है, समझाकर विश्वास दिलाना है और दृढ़ निश्चय से प्रचार करना है, अपने कार्यों का सावधानी और सहृदयता से मूल्यांकन करना है। यह सत्य हमें सदा अपने सन्मुख रखना है कि अमेरिका संसार में जो कुछ करने की आशा रखता है, वह पहले अमेरिका के अपने हृदय में हो जाना चाहिए।"